

६५. ल त गेच्छीयं ज्ञान मन्दिर, षयपुर

श्रीगुरुभ्यन्मः

THE HISTORY OF JEYSALMERE

श्री श्री १०० श्री हज़ूर अन्वर महारावल जी श्री
बैरीसाल जी साहब वहादुर जैसलमेरा ची शों के

अहदमे यह रतहास

जिसका नाम



सेवक लखन चन्द जी ने बहुत बरसों की महनत और प्राचीन
समय के इतना ही सरकारी कागजात से इकट्ठा करके श्री महता
नथमती साहब वहादुर मदारुल मुहाम अर्थात् प्रधान
राज्य जैसलमेर की आज्ञा अनुसार बसहायता से तैयार किया
और सम्बत १२० विक्रमी मेषिन्ध करवा की आज्ञा अनुसार

चिराग जिस्थान वराजपूताना गज़र यंत्रालय
अजमेर मोल्वी मुहम्मद मुगाद अली होशियार

का कृत्य धक्का के प्रबन्ध से रूपा

॥ श्री ॥

श्रीगुरुभ्यन्मः

कवित स्तुती

धन्य वह्न भाधीस धन्यविह्वलगिधारा
सातू धन्यस्वरूप-सर्गा भगपार उतार्गा ॥
धन्य वैह्वतवाधर्म धन्यजेजनउरधास्यो ॥

कृष्ण नाम द्रढ कियो सवै जंजालनिवास्तो ॥
पुष्टिप्रकासप्रगटे प्रलुआपकृष्ण श्रीअंसको
दासनुदासमैहूंसही श्रीवलभकेवंसको

दीहा

मेरेमनमेंतुमवसो ऐसीक्युं कहि जाय
यातेचहमन आपकेलीजै चरन लगाय ॥

दफे १ दीवानमूतानथमलजीकेखान्दानकाइतहास ॥ ब
कार्वार्डिकांहाल

इतहास

जाहिरहो कि भर्थाभंदकेदखनगुजरातदेसमें हलवदमोरीवामीस्तरमें सोम
वंसीकोमझालामकवांरागोत्रकेराजपूतोंकापुरानाराज ॥ १ श्रीजोगोपालजीनेहोदे
भारकोदेकरआपजैगोपालगढसहरवसायाज्यधानीकरीइनकेकुं ॥ २ धर्म
पालजीवोदेसहीत्यागकरगढकिरोहरमेंभाटीरावश्रीकेहजजीपासआधिऔर
गढनानरावनवांरागबहोरोसेलेकरराजवाधा ॥ ३ देहराजकीकेदीवानश्रीस्वत

पदमहीने गढविक्रमपुरमें जैन का मन्दिर सी०८८८ सावरा सुदि ५ बनाया ॥ ४ शिवसिंह
 जीने बार्दे के शारकुं की शाही महारावलजी श्री देवराजसिधजी से करी ॥ ५ हरराव
 जी गढ नानरागा छुटनेसे महारावलजीमौसूफ पास देरावरमे झारहे अवलनम्बरके उस
 रावो मेराव भय रावरकी गांसपट्टे मिलनेसे कोमटावरी कहलास ॥ ६ माघोरावजी ॥ ७
 रावमालदेजी श्री देवराजसिधजीके साथ गढ लुहूवे आस और साथ ही श्वर्ग सिधास
 इनके छोटे बेटे अनाडजीके तोटावरी राजपूत है और वरे ॥ ८ राव हमीरजीको महारा
 वलजी श्रीमंघजीने म्हेस्रीया सान्सकारके दीवान की पुत्री परनाथ दीवान किया जब से
 मला की कुलदेवी चांपरा की कुलदेवी वगुरुविशाको गुरमानते है म्हेस्रीया मे ७३वी
 बांपटावरी जो ४०० घर यहां व फ्लोकार्ण पाली व हूज वगैरे मुल्को मे है सो हाल श्री
 म्धजीके हालमें लिखा है (१) हमीरजी (२) मुरादास (३) राजसी (४) मूलचद (५)
 विजैराव ६ साराग (७) शामकार्न (८) दामोदरदास (९) केशवदास जो मूलराज रतन
 सो के साकामे नवाचउचडयान को मारकर आपसी जुभार हुवा (१०) जस्वतसिध दूदे
 तिलोकसीके साका मे मो (११) गगाधर (१२) मथुरादास श्री चडसीजीके वक्तु मे मारे गस
 (१३) मुजानसिधके दो पुत्रमें वडे (१४) बरजंगजी (१५) ठाकुरसी (१६) सपनदासके ४ पुत्र
 (१७) गगादासके ३ पुत्र बडा घुरकाने महारावल भीमसिंघके दीवानघा राज वन्यातमे
 बहुत मज्जादावांधी नवसे वा युसफाना म्हेस्रीयाके नामते है बक्यावाचते है रसे याप
 घुरकादुर (१८) हरदास (१९) हेमराजके छोटे पुत्र तिलोकसीके नस्वत सिध का जीव
 राजोत (२०) मुरादासके ३ बेटोके याप मुरदासोत है (२१) जरादास (२२) बन जी (२३) अर्जुनसिग
 जो (२४) प्रतैसिंघके फतैसिंघोन व पाचबेबेटे भीमसिंघके भीमसिघोन दुर (२५) जैक
 स्न जी (२६) सरूपसिंघजी (२७) साल्मसिगजा वडे नामी यामी दुर (२८) लछमनसिध
 जी (२९) सजीतसिध नी जोसदरसायपर है (३०) उमदसिग (३१) मुरतान ॥ मुजानसिग
 के छोटे ॥ १४ सगजी ॥ १५ ठाकुरदास ॥ १६ बानजी ॥ १७ सदरानके छोटे बेटे का याप

कुलद्वरिया ॥ १८ देवचंद्र ॥ १९ पचानजी ॥ २० सूर्जमलके मंभलेबेटे वंद्रावन के-
 केई घर आगे में है जैशालमेरियां से संगपिान हींरहा परं गोयंदाणी कहति है ॥
 तीसरे भागचन्दके भी गोयंदाणी है ॥ २१ गोयंद जी मोजेने हड़ार्द में क्लोचों के कटक-
 से वितकुनाय बाकीभारके आपही काम आगे उहांतलार्द पर दोबडी साल वचौतरा सं०
 १८२८ में नथमलजीने बनाया दोबेटे यहारूदास वअवैराज के गोयंदाणी है ॥ २२ ॥
 यहारूदास ॥ २३ घनजी ॥ २४ दामोदरदास ॥ २५ बालकिसन जीने श्रीबालमकुन्दजीकी
 सेवा पधरार्द सो विराजे है जबसे हरपीडी में वसीहत करते हे कि श्रीठाकुरजीकी सेवा व श्री
 हज़ूर साहबको भी ईश्वर समझकर वंदगी तन मन से करली और सालमचन्दजीने इतनी बधती
 कही कि किसीकी वुरार्द मत करे अगर कोई वुरा करे तो भी उसकी भलार्द करके शरमिंदह
 करना चुनाचे सेवाके धरागीने आजतक तो ऐसेही निभादी है ॥ २६ सरदारमलजी ॥
 २७ अजवरामजीके बड़ा सालमचंदजी बछोटा ॥ २८ विजैचन्दजी ॥ २९ नथमलजी
 जो ६ वर्षकी उमर सं० ३ से नौकरी अच्छी देने लगे तो इज्जत व कदर पाति २ सं० १७ में बड़ा
 चापकी जगे दीवान होकर सं० १६ में असते फ़ादिया फेर ९ महीना कैद बडंडहुवा बाद
 जनाव कलां साहब बहादुरजी पास वकील गये साहबमद दू पूरा हुस सबहाल किताब व
 रपोट में लिख कर सनद खुशानूदी व राजकी सची खैर ख्वाही का खरीता व खत लिखा दिया
 फेर सं० २१ से दीवानका काम करते करते सं० २७ में छोडा तदपि श्रीजी साहबकी उमर -
 दराज़ हो कदरदानी व निरंतर म्हरवानी से दीवान इनकोई वरता और ज़ाब रज़ीडंद साहब
 से सलाह व सिफ़ारिश करके खैर व मीर मुनशीको बुलाया जब फेर सं० ४० जेठ सुदी १२
 तीसरी रफ़े दीवान होकर व मूजिब हुकम आकायनामदार सं० ४१ के मिघर वदी ९ से म्हसूल
 साधर का नये कायदे मूजिब जारी किया कि जबसे फ़जाने में नगद रुपये आने से दीवान को
 कामका बडा ही आराम हो गया फेर मान्त्र श्रीहदोंके अगले हिसाबका तो चोपानीया बनवा
 लिया और आयं देनया हिसाब हरवक्त तैयार रहनेकी तजवीज़ बहुतही सुगम कर दी-फेर

ज्ञानदनी आवादी मे तरकी और रईयत के आसूदगी व सुधारे की वाव मे सदहात दरवारे
 कई तो जारी करी जिनका खुलासा मौके पर लिखा है व कई खिरवर कवी कि मुनासिब वक्त
 पर जारी की जावेगी ज्युई इस साल प्रभुको कृपा से मुगदवर आई कि पलीवाल जाय-
 विसनोई चमार वगैरे हजारो घरदलकंगैर से आकर आवाद हुस और बहुत दूर दूर के-
 लोग आने को तयार होये चुनाचे कई तो आकार मिलगये व कई अरजी व कागद मौजूद
 हैं त्याइ० हांजा मे बहुत से नये कुवे व बधा तयार हुये ॥ व आमदनी मे भीषातर पुवा
 तरकी भई करजा भी करी व १ लाख रुपये के उतारा गया इसकी हाजरी जनावरजी डय
 साहब कर्नल पोवलट साहब बहादुरजीको मालूम होने पर साहब मौसूफ ने साहब कला
 बहादुरजीको रपोट मे अपना फयरजा हूर किया कि हमने नथ मलजी की दीवान किया
 जिससे यह नतीजा भ्वा इस बात से अदेवस या मुक्त पोरा व बदरब्बाह लोगो को ररक
 पैदा हुआ तो खार्द न खार्द शिकायतां व काम मे हरकता करने लगे उनका भी किसी
 तरह से हतक व हरजन ही कर के फायदा हा।कया जिससे दीवानी फोजदारीका काम
 मुस्त चलने लगा इसका तो वन्दो बस्त जनाव साहब मन्दूह से मदद लेकर करना च्याहा-
 परन्तु ४ साल तक मुतवातिर कहत सालिया और १॥ वर्ष से ती मात्र कारवाई ही अवतर
 हो गई लो भी बहुत से निकल गये अगरचे माल पर सात तुंता रूका वगैरे के रुपये करी व
 १ लाख लोगो मे लेना है सोजमानां अच्छा आने से वसूल होगे लेकिन विलफेल तो आ-
 मदनी धबने व रच ज्युदे लगाने व राय विरा होने कर्जो करी व ६० हजार के होगया ॥
 अपमरला चारी है और कहावत सच है कि नर ची तीरी तीर है हर ची ती तत काल । जिग
 किये स्वर्ग लोक को बल् प्होचे पाताल ॥ मगर काररवाई की तरफ इन्साफ की निगा
 ह से गौर किया जावे तो बखूबी मालूम होता है कि मुलाजमान आल व अपदन फिस
 ४० पीछे तनखा के सिवाय बधताई व जगली खर्ची मे कितने रुपये मिले है तथा हर
 एक काम व कारखानी मे और हर एक देहात व कोम व जमीन पडीन वगैरे मे कहा

तक निगाह पहुंचाकर केसी नीयत से उन्हा २ तदवीरें सोची हैं और षेती बढारो - व
 रईयत को इ। गेर से बुलाने व सीर वायां को बुलाकर के वां के वास्ते देहा त देषाने व विम
 पूनम चन्द को भेजकर कर सा बुलाने और से से ही वैपार की तरकीमें और बहुत वरसों-
 की गई हुई रियाया पलीवाल साहूकार सुनार वगैरे की आमदरफ्त में सरकारी षाष
 व आपस के कारजे वगैरे तकलीफात मियाने में वगैरे २ कहां तक को शिशों की गई मगर
 श्री वरांग कर सहेवां जैसे सब उपाय यह लागये सेवा व महे सरीयां की आमदरफ्त के
 काम थायी हांसल न हुई जिसका सब व ऊपर लिखा ही है अब भी श्री रूश्वरा नाथ
 जमाना अच्छा करै और हाकिम बक्त सिद्क दिल से काम में मदद दे कर लोगों को
 हुकुम व कायदे के या वन्द और खैर ख्वाही व सुधार की तरफ रजू करै तै उ मे द-
 कवी है कि रोज व रोज तरकी होकर चन्द साल में आवादी रुचन्द व आमदनी-
 सह चन्द वल्के ज्यादा: और लोगों को आशम व फ़ायदा व हर तरह का सुधार भी
 षा तर ख्वाह आसानी से हो सक्ता है और नथमलजी के शरीर में बहुत मुदत से बी-
 मारी के वायस काम की संभाल जैसी कि चाहिये नही हो सक्ती और षयाल भो गूंगे
 को सपना सा हो गया है मालूम होता है कि जमाना अच्छा बंध जावे तो इस्तीफ़े की
 अर्ज करेगे शुभं ॥ ३० कलेयारामलको गोद लिया ॥ * ॥

श्री गुरुभ्यन्मः श्रीरामकृष्णायन्मः

दफ़े २ तवारीष महाराजगानरियासत जैसलमेर ॥ व

जुगाराफिया मुल्क माड

सेवक लखमीचन्द वल्दपेतसीने म्हाता नथमलजी दीवान राज मोसूफ़ की सहा
 यता व काबिराज शिक्जी दानजी महता अजीतसिंहजी परोहित बुधलालजी व्या-
 स गणोस दासजी म्हेता इंदराजजी की सलाह व मदद से बनार् सो सब साहवांन पसे
 करी सं० १८८५ का बैसाख सुद ३ वार अगु मुताबिक तारीख ३ मई सन १८८९ ई०

यह किताब वाचने व सुनने वाले से बीनती है कि तहरीर वगैरे में नुक्स हो सो माफ फरमावे क्योकि अब्जल तो मैं कीर्इ इल्म पढाहु आनही कि १ जवान में तहरीर-व कायदे से नकसा करता दूसरे तवारीखी हाल भी पूरा पूरा हाथ न लगा - कहते है कि सब हाल की ह्यात थी सो जनाब यडसा हव वहादुर तजुमा करने को लिये थे उस का खुलासा बद्खुदी ही बहुत तहकीकात करके टाडना मेमे लिखा है परंतु वो किताब पीछी न आई सुना है कि मेवाड में १ जती पास थी सो बीकानेर में जती पास है वो मांगने की तदवीर करी मगर पतान लगा लाचार दूसरी किताबों में मुखतलिफ हाल दरखा व वाकिफ वारों से सुना जिसका सोथ वारके थोड़ा २ खुलासा इस में लिखा है तद्दीप इतना तो बेशक है कि दूसरी किसी १ किताब में नही है ॥ और जुगराफिया तो नया ही बनाया है जिसमें कुहरेश के गाम बडानी मरा आबादी वनीवान मदिर जुगर नदी दररख घास चारे तक वगैरे २ जो इस वक्त मौजूद है सब लिखा गया है गामों की आमदनी का हाल मालूम नहीं हो सका सो आयं दे के लिये तरकीब ठीक निकाली है सो हो गई तो मालूम हो जावेगा सिवाय इस के बाज्ज बाते जैसे मारवाड रपोट में है

यह किताब वाचने व सुनने वाले जिस बात के गृहक हीं सूची पत्र दे पकर समझते और कार मुखतयार की तो भूत वर्तमान की वाकपी के सिवाराज बलोगी के आराम व फायदे के लिये आयं दे बरतने की जीजो राये इस में मौके २ पर लिखी है गौर से देख कर या जिवजानें व हो सके सो करे शुभम् ॥

इतने शब्द आदि के एक बर्ग से लिखे हैं सो वाचने में खयाल रहे । इ० लाका ॥ कुं० वर । प्रो० हित । प्र गना । सं वत । ता शिव । ठा० कुर । ख डीन । उ० फ । को० स । फू वा । फु० ट । मी० ठा । त लाव या तलाई । बेरीयों । पु० र्त । पू० र्च । अ गिन । इतिगा ने कृत । प अम । य यव । उ त्प । ई शान । गा० व । जमीदार । भो मिया - कई । यब्द अक याने अइसे लिखे है सो तहरीर में हरूफ वांचने चाहिये

अथ बंसावली श्रीमद्भागवत अनुसारेण

प्रथम १ श्रीआदि नारायणजी के नाभि कमल से ॥३ ब्रह्मा ॥४ अग्नि ॥५
सोमसे । चंद्रवंसहुआ ॥६ बुध ॥७ पुरूरवा । चक्रवतीहुआ । तस्म । पुत्र । कः । शु
क्रायु ॥ सत्यायु । रय । ज्य । विजय ॥ ८ आयु ॥ पाटबैठा ॥ तस्म ॥ पुत्र । च्यार
॥ रंभ ॥ अनेन ॥ रज ॥ ९ निधूष । पाट ॥ १० ययाती ॥ तस्म ॥ पुत्र ॥ च्यारका
वंसचला ॥ अनुसे । अनवंस ॥ दुधु ॥ सेदुधवंस ॥ मलेकुहुवा ॥ तुरवंससे ॥ तुर
वंस ॥ ११ यदु । पाटवीथा । परन्तु । पिता । की ॥ विष्ठीत आज्ञा । नही । मां
नगौसे । पिताकी । गादी । नहीं । पार्द । न्यारा । राज । बांधा ॥ घादब । कही
जे ॥ यदु के । होयपुत्र । हुवे ॥ शहस्राजीता राजावांसे । सहस्र । जुध । जीते ।
१२ क्रोष्ट । पाट बैठा ॥ १३ क्रजमान ॥ १४ स्वाती ॥ १५ उस्तक ॥ १६ चित्र
य ॥ १७ सशिवंदु ॥ १८ प्रथुश्रवा ॥ १९ धर्म ॥ २० उष्णा ॥ २१ रुवीक ॥
२२ ज्यामघ ॥ २३ विधर्म ॥ २४ क्रथ ॥ २५ कुंत ॥ २६ ध्रष्ट ॥ २७ निव्रति ॥
२८ दरसाह ॥ २९ व्योम ॥ ३० जीमूत ॥ ३१ विक्रति ॥ ३२ भीमरथ ॥ ३३ नवरथ ॥
३४ दसरथ ॥ ३५ सकुन ॥ ३६ कारंभ ॥ ३७ देवरात ॥ ३८ देवसन्न ॥ ३९ मधु
४० कुरुवंस ॥ ४१ अनु ॥ ४२ पुरुहन्न ॥ ४३ आयु ॥ ४४ सात्वतके पांचपुत्रहुवे ॥
भजमान ॥ देवाग्रध ॥ महाभोज । का । भोजबंशि ॥ व्रषा ॥ ४५ अंधक । पाट
४६ भजमान ॥ ४७ विदुर्य ॥ ४८ सूर ॥ ४९ समी ॥ ५० प्रतिहन्न ॥ ५१ स्वयं
भोज ॥ ५२ हृदीक ॥ ५३ देवमीठ ॥ ५४ सूरसेन ॥ ५५ वसुदेव के कडेपुत्रराम
धानेवलंदेकजी जो श्रीशेष भगवानका अवतार औरदूसरे ॥ ५६ श्रीकृष्ण
चंद्र ॥ जे पिकुला हाल मुखतस्मिर नीचे लिखाहै ॥

श्रीकृष्णचंद्रपूरीपुर्षोत्तिअवतारका हाल वेदपुराणादि सब शास्त्रों
से जाहरहै मथुरासे द्वारका पधार राजधानी करी कुनरापुर के राजा

भीष्मक की पुत्री रुक्मणी जो लक्ष्मी को अवतार के स्वयंवर में मात्र राजा जमा
हुं श्री कृष्ण चंद्र भी पधारे तो सत्कार नहीं होनेसे क्रतु कैथ के घर डेर किया
स्वर्ग से इंद्र ने रुक्मणी भेजा वहां ही राज्या भिषेप हुआ जरासिंध के सिवाय
सर्व राजावा भेटों दी बाद लवाजमा पीछा भेजा । १ मेघाडवर कन्नर खलिया कि
यह रहेगा जब तक राज बगा रहेगा सोमोजूद है इसीसे कन्नाला जादमव रा-
जावां मेशिरोमरा है तथा कुलदेवी कालिका को साहरो कहते है श्री कृष्ण की
साहिता में जरासिंध से स्वागच्छे छाई जबसे स्वांगच्छियां व स्वागीयां करीजी ।
२ प्रद्युमन कामदेव को अवतार । ३ अनुरुध । ४ वज्रनाभ को अर्जुन के साथ-
भेजा सोमयुग में राज बैठे बाकी सब यादवां को लेकर प्रभास गए जहां यादवा-
स्थल हुआ । ५ प्रतिबाहु । ६ उग्रसेन । ७ मूरसेना मूरखेन के गीद प्रतिबाहु के दत्तवाहु के
बाहुवल कावेद्य । ८ नाभबाहु बैठे । ९ सुबाहु शिकार को गम सुवर के पीछे पाताल
पधारे वहां वाराह भगवानु का दर्शन हुआ जबसे सुवर की तलाक है और नाग क-
न्या परन्या जबस्य सु नारा मरा व नाग मरायां का हार देकर कहा कि दूजा विवाह
मत कीजे फेर कुंवर रज हुआ बाद दूजा विवाह सै भर में राजा की बेटी सुभाग सुंदरी
से हुवा जजस लेखा पाताल गई और कुंवर को वरदान दीया जिससे पृथ्वी -
समुद्र तक तुरको से जीत धरती लीवी फेर दी पुत्र हुस १ खीर का नूहा समा सरवर
या सोरठ देश गुजरात में भोमीया जादम है पहिले गिरनार में राज था दूसरे जदभा-
रा का जादव माता अबा की कृपा से वे याने डांग बहेडे का राजा हुआ अब करोली
हैं । ११ रज कुंवर राणी सुभाग सुंदरी अजेन के राजा वैरशी की पुत्री स्वप्ने में गज-
सिरा गारीया देखा राजा करी कुंवर गज प्रतापी हुआ ॥ रवुरासान के बाद शाह फ
रीद शाह से दो जुध जीते श्री स्वांगीयां जी की कृपा से फेर ३ कुंवर हुस भोमजत
तावाव सैन विक्र सैन । १२ गजवाहु श्री स्वांगीयां जी की आज्ञा से युधिष्ठिर सबत

सुभागा सुंदरी का नाम सुभागा सुंदरी है जो राजा सुभागा सुंदरी की पुत्री थी।

४ अवसर मुकाम को डीग कहते है वगरते कि यह वही डांग हो जो दसाके भरथपुर में है ॥ वन्द. सुगद अछी हो गिया

३०८ में गजनी वसार्द गढ़ बगाया दोहा ॥ तीन सत्त अत शक धरम वैशाषे सित
 तीन । रवि रोहिणा गज वाहु नै गजनी रची नवीन ॥ १ ॥ खुरासान की महर रू
 से फोज आर्द कुंज सहर में लडाई हुई ३००० तुर्क ४००० हिन्दु खेत रहे फोज साही
 भागी गज की फतै हुई जब से पश्चिम का पात स्हा कही जे ॥ कंठ्र पकेल राजा क
 शमीर से जुध जाच्या सोन हुआ कन्या परन्या फेर श्री स्वांगी यांजी कही तुरकों का
 खून बहुत हुआ है सो अब वह बधेगे तेरे पीले से गजनी छुटेगी । १३ रुज सैन । १४
 प्रति वाहु से गजनी छुटी । १५ हस्त वाहु । १६ वाहु बल । १७ सुभाय । १८ देव रथ
 । १९ प्रथी स्हा । २० मही पत । २१ मजाद पत वहादुरी व दातारी में नाम मशहूर
 किया ७ लारव सवार थे गजनी भी लीवी थी ॥ जे हल भाट को क्रीड पसाव दी या
 ॥ मात्र राजा जमा करके जिग किया सग परा की मजाद बांधी पंजाव में हकूमत
 जमाई थी । २२ सेवात सैन । २३ सूर सैन । २४ उदी पसैन । २५ अप्राजित ने गजनी
 व पंजाव व काबुल में आध यवनां से लिया ॥ अब घास सहर बसाया ॥ मथुरा लाहोर
 मुलतान गजनी वगैरे बहुत से मुल्क में राज रहा । २६ कनक सैन । २७ सुमन सैन
 । २८ मधवान जैत ने मथुरा में राजा जमा करके जिग किया और अब घास में शबाव दी
 व बागात् महलात् बगाया । २९ क्त सैन । ३० भगवान सैन । ३१ विदुर्य । ३२ वि
 क्रम सैन ने पिंडीरां को निकाल कर लाहोर में राजधानी करी मथुरा खाल से रकी ।
 ३३ कुमोद सैन के कुं० गज सैन का वेटा । ३४ वृज पाल राज बैठे पंजाव में वनपुर गढ़
 बनाया और वंगाले के राजा हरि सिंह से जुध जीता ॥ यवना को हिन्दो स्थान में आनि
 नहीं दिया । ३५ वजीत जी के कुं० ८० में २७ का वंस चला पांचवां कुं० । ३६ मूरत पाल
 राज बैठे । ३७ रुकम सैन । ३८ कनक सैन । ३९ उत्रा सैन गजनी में पाट लाहोर खाल से
 । ४० प्रोवायत सैन । ४१ प्रत सैन । ४२ राम सैन । ४३ सूर देव । ४४ देव सवाय । ४५
 शंकर देव । ४६ सूर्य देव । ४७ प्रताप सैन । ४८ अबनी जत । ४९ भीम सैन से गढ़

वनपुर व गजनी कुटी लाहौर मथुरा अवधामें राजगृहा ॥ यवनांसे जुधमे सतलज
 परकामप्राया । ५० चंद्रसैन यवनासे वैरलिया । और पंजाबके राजावोको तावै कि
 या । ५१ जगसंवात लाहौरमे पाट । ५२ वैरा । ५३ देवसके कुं० नही था जगसवात के
 कुं० कांकलदे का पोता । ५४ मूलराजमथुरामें राज । ५५ रायदेव । ५६ सतुरावके कुं०
 नही था अवधामसे कांकलदे के वंमका । ५७ देवनंद लाहौरमे राज । ५८ जगभूप
 । ५९ बुध । ६० रोहतास । ६१ प्रतसैन । ६२ महोतन । ६३ वासुदेव । ६४ अलभारा
 । ६५ वीरसैन । ६६ सुभेव मथुरामें पाट । ६७ सूरतसैन । ६८ गुराप्रयोध लाहौर ।
 ६९ जगमालके भाई भार्यसैनको मथुरामे धभा सतीदानने चूककिया और यवाने
 के राजा ब्रजपालको मथुरा दी उन्होने ३१ पीडी राजकिया । ७० भीमसैनके कुं०
 अरसिंहका वेटा । ७१ तेजपाल । ७२ भूपतसैन । ७३ रसानपके ग्यार्वे कुं० रत्नसी
 यवनांसे गजनीसे कर पिताकी आज्ञासे न्यारा राज वाधाहनके कुं० सालवाहनने सा
 लकोट सह्रवसाय रहवासकिया । ७४ चंद्रसैन । ७५ मूलमन । ७६ लालमन
 । ७७ सारंगदेव । ७८ देवरथ । ७९ जसपत । ८० जगपत । ८१ हसपतने विक्रम
 सम्यत २मे हसारगढ बराह्य राजधानी करी ॥ तीर्थापर घाटववाग बराया । ८२
 देवाकरसे ४६ । ८३ भारमल सं ७९ । ८४ खुमारा सं ९५ । ८५ जर्जन सं ९२६
 । ८६ जुजसैन सं १५२ । ८७ गजसैन सं २९० कुलदेवीकी आज्ञासे कुं० सालवाहन
 को श्रीज्वालान्तीकी यात्राके बहाने भेजकर शालवाहरागढ बनाय राजधानी करार
 और हंशारमें हकूमत जमार । ॥ पिडी गजनीमे रहै ॥ सह्रसे ५ कोस पर यवनांसे
 भारीलडारहुदं वारशाह ९ लाख आदमियो और गजसैन ३० हजार लोकासा
 थ परलोककी सिधाए पीछे चादशाहका शाहजादा जलालुदीन बहुत पोतजले
 कर ग्यायानव गजसैनका भाई सहदेव कई दिन लडे वशाका करमे गजनीमे
 बादशाहका सूबारहा ॥ शालवाहरा सं २५१ शालवाहरोमें राज बैठे-

तस्मिन् १२ में बड़ा रिशालु तो फिर ताही रहा बहुत राजाओं से जुद्ध बचो सर जीता-
 वाज २ की कन्या परन्या परं ० १ राजा भोज की पुत्री सिवाय सब का त्याग किया कि
 जिस का जिससे शक हुआ उसको उसके हवाले की दोहा: फूलवती हठीयो धस्यो
 धारु धस्यो सुनार । सांगादे सतराखीयो राजा भोज कुमार । १। इनसे रिशालु ने
 बहुतसे प्रश्ना किये सब कामा कूल जवाब दिया प्रश्नोत्तर रूप्यः कोन कूलते तुछ-
 कोन काजलसे कारो - कोन लोहते कठन - कोन सोनासे सारो - कोन ^{संगन} विक्र परउंक - कोन
 महाराते माती - कोन ^{कलंकी} रवि परतेज - कोन ^{सूस} अग्नि से तातो - कोन ^{सपूत} दूधते उजल - कोन ^{कुचन} जिभ्या
 अमृत भरी अर्थ ^{ज्ञान} बतावो इरातिरां ^{क्रोध} सकारते पहिली कवन गरी ॥१॥ ^{जस} दोहा •

कहान अग्नि में जले कहान सिंधु समाय । कहान अवलाकरसके काल कहान ही
 धाय ॥ कोन ^{धर्म} पुर्षजननी बिना कोन ^{मनु} मोत विन काल । कोन ^{सुत्र} सागर पाल बिना कोन ^{नमो}
 मूल विन डाल ॥२॥ की ^{नीर} घीयाचो पडी की ^{तब्या} वालो वीरा । की ^{पवन} कषासा कां वला-
 की ^{नर} ठंडो नीरा ॥३॥ अलाहाजुल कयास बहुतसे प्रश्नोत्तर होचुके तो कुंवरबोल
 कि चुन्डी का पल्ला पानी में भिगोय चिराग पर जलावो सो पानी जल जावे चुन्डी
 को दाग न लगे चुनाचि से साही किया फेर कुंवरंगीने भी कहा कि आपही पघडी
 का पल्ला से जलावे जब कुंवरने भी ऐसा कर दिरवाया इसकी वार्ता बहुत लम्बी मश
 हूर आमहै कि चारों डूम वगैरह सब जानतेहैं ॥ दूसरा कुं० वालबंधराज बैठे -
 बाकी धमांगद - सीहवछ - कालक - पार्व - रूप - सुषेण - लेख - जसकरा - नेम
 - भामाट - नोपक - गंगेव - जोगेव - यह १३ ही दूसरे राजावां का मुल्कलेकर
 राजाभये सो पंजाबमें पटियाला . कपूरथला . नायगा . महेसर वगैरह पहाडी
 राजाहैं कड़ेका तो डिकाना बहालहैं कड़े वीत गये और जीहैं पटियाला . कपूरथला .
 वगैरह अगरचे शिष वगैरे मतके वाइसर राजपूतानेमें रिशतेदारी नहींरही ताहम
 जैसलमेरको अपना बुजुर्ग जानकर ऐसा ही बरतावरसवतेहैं और यह रिया स्तै - ॥

॥ अलाहाजुल कयास बहुतसे प्रश्नोत्तर होचुके तो कुंवरबोल कि चुन्डी का पल्ला पानी में भिगोय चिराग पर जलावो सो पानी जल जावे चुन्डी को दाग न लगे चुनाचि से साही किया फेर कुंवरंगीने भी कहा कि आपही पघडी का पल्ला से जलावे जब कुंवरने भी ऐसा कर दिरवाया इसकी वार्ता बहुत लम्बी मशहूर आमहै कि चारों डूम वगैरह सब जानतेहैं ॥ दूसरा कुं० वालबंधराज बैठे - बाकी धमांगद - सीहवछ - कालक - पार्व - रूप - सुषेण - लेख - जसकरा - नेम - भामाट - नोपक - गंगेव - जोगेव - यह १३ ही दूसरे राजावां का मुल्कलेकर राजाभये सो पंजाबमें पटियाला . कपूरथला . नायगा . महेसर वगैरह पहाडी राजाहैं कड़ेका तो डिकाना बहालहैं कड़े वीत गये और जीहैं पटियाला . कपूरथला . वगैरह अगरचे शिष वगैरे मतके वाइसर राजपूतानेमें रिशतेदारी नहींरही ताहम जैसलमेरको अपना बुजुर्ग जानकर ऐसा ही बरतावरसवतेहैं और यह रिया स्तै - ॥

* अवसही लफ्फ सरमोरनाहनहे पहाडी रियासत मशहूरहै ॥ बन्दः मुरार अलोअफीअनहू

होशियार जमाना साज बहुत है चुनाचेबादशाहाना दिल्ली व सरकार दौलत मदार
 अगरेजी की मदद व हाजरी करने से खिलत खिलता व तगमा व लके मुल्क बहुत
 सा पाया है ॥ जोगीरान गोरपनाथ व पूर्णा भगत की कृपा से अटक पर भारी महला
 त व बागात व किला बनाया पिता का बैरले गजनी में दरबल किया जलालुदीन का
 सूबा गाजीखान १४७०० लोक से और १०००० हिन्दू खेत रहे ॥ कुठ्याल व धकी
 गजनी में बैठा व आप पीछा आय स्वर्ग पधार जब बाल बंध साल वाहरा आण कुठ
 भूपत को गजनी में रक्खा जिसके पुत्र चिगता के पुत्र देवसी भाऊ रवीमखान
 नहार जुपाठ धारसी बीजल भर बाद मुल्क लेने वयवनी की सोहवत से चुन
 खारे के ऊजवक बादशाह की शहजादी से शादी करी उस काल डका शाह मुहम्मद
 खुरखारे का बादशाह और चिगते के आठ ही बेटों का चिगता को ममुसल्मान हुआ
 फेर बीजल के बेटे गौरी ने बलख से ४० कोस गोर शहर वसाय बादशाह हुआ और
 कोम गौरी कहीजे दिल्ली में गोरियों ने अचल बादशाह की ॥

१८९ बाल बंध सं० २११ दिल्ली के राजे जैपाल की पुत्री राजकुं० वसेभरके
 राजा की पुत्री बिलैकुं० चहुवान वगैरे १२ रानी थी ॥ पुत्र १० बडे नामी भसम्क
 पाठवी श्रीभाटी नी दूसरे समाजी सिंधदेश में गढ सम्बाहरा बसो मेर बनाया पडेहा
 रो को जीत कर जामपद वीली कोम समात में मौजे नगर थैटे किले कोट में सं० ९०१
 लारवा फुलारणी हिन्दुवा सूर्ज कही जिया नेक वरुष वदातार से सा हुआ कि आज
 तक सुबह को लारखे फुलारणी की विला कहे है इन फे वंस में कोम जाडेजा का देश कल
 वनगर भुज में राज है उन्हो के इतिहास में दूसरी तरह लिखा है जिसका हाल अलग
 लिखा गया ॥ तीजे मगरीये के ५ बेटों के कोम मगरीये कहीजे ॥ चौथे कल
 राव कलूर कोट कराया २ बेटों के कल रहे ॥ पांचवे जभाजंभला कोट कराया ७ बेटों
 के जभा ॥ छठे भैसंडेच के भैसडेच ॥ सातवें लधडके लधड ॥ आठवे जेहूजां व धकोट

कराया जेहूँ हुआ ॥ नवमें भूपत का हाल ऊपर लिखा गया ॥ दशवे अक्षरावका
 पोता भाट गिरराजके खोलेदिया भारीजीसे आदिजेह तक आठों हीके वंशके
 भाटी कहीजे आगे यादव कहलातेये ॥ * ॥ ९० भारीजी सं० ३३६ लाहोर-
 ७ रानी पड़े-हार मंडोर के राजा भीमदेकी पुत्री हंशावती वराजे पुनपालकी पुत्री
 कछुवार्दे वपड़े-हार ऊडजांमकी पुत्री वगैरे ॥ छोटा कुंवर सिंगराव ने कस्बा सरसा
 उर्फ सरसापंजाबके कांठे आवाद किया ॥ सं० ३४२ में गढ भटनेर वनाय राजधानी
 करी ॥ बघेले राजा वीरभानको मारकर दाकरा जुद्ध जीत कुनरा पुरलूया और १५
 प्रवाडे जीते ॥ कुं० मसूरगवके सारा कासारा जाट हुआ और अभैरज अभौर
 गढ कराया अभौरीये भाटी है ॥ * ॥ ९१ भूपत सं० ३५२ भटनेर रानी राठोड
 राजा चंद्रकी पुत्री गढ महेवा - पुवार राजा सूर्ज की पुत्री गढ आबू - ॥ कुं० भांभरा
 सी व अतैराव का अतैराव भाटी है ॥ * ॥ ९२ भीम सं० ३५५ भटनेर रानी ५ दूया-
 राणी राजामेघकी पुत्री दयापुर पटसा गोडराजा मांराकदे की पुत्री गढ श्रीनगर-
 चावडी राजा लखरासीकी पुत्री कछुवार्दे राजा पालरादेकी पुत्री नरवर वडगूज
 राजा हरी सिंहकी पुत्री ॥ * ॥ ९३ सतौराव सं० ४१६ भटनेर रानी चहूवांरा राव
 सियाजीकी पुत्री कछुवार्दे राजा आसलदेकी पुत्री चावडो गोड गोहलोत
 कं० फूलराव भांरासी ॥ श्रीस्वांगीयाजीके वरदानसे गजनीलीवी तथा पंजाब
 में हकूमत जमार्द शहर मुलतान वीरानथा सी आवाद किया महलात वही मंदिर-
 श्री आदि नारायण जी व श्री नरसिंहजीका तथा लाहोरमें भी भारी मंदिर बनाया-
 भटनेर में ४ वावडो ववाग बनाया श्रीगंगाजी पर सदावर्त वगैरह बहुत पुन्य किया
 ॥ ९४ खेमकर्ण सं० ४५४ भटनेर ३ रानी गोहलोत पुवार गढ पूगलकी मक-
 वांरागी गढ विठंकेकी ॥ कुं० मांडरा जूहूड ॥ * ॥ ९५ नरपत सं० ४५२ लाहोर
 ३ रानी सोलखरागी - तुवर दिल्लीकी - तुवर ॥ कुं० गजू व बजू दोनोंके राजा का

तकारार हुआ हजारा मनुख मेरे जब सब की सलाह से मे घांवर रूत्र तो गजू के
 और राज कजू के रहे नामी सरदार रूत्र के साथ बुरवारे गए सुवर मारने से वादशाह
 गाराज हुआ जब अर्ज कर आई कि भाटी वपडे हारे के सुवर की तलाक है पूजा के
 लिये जीता पकड़ा है फिर श्री स्वागीयांजी की कृपा से सुवर जीता दिरखाया नय सुवश
 हो कर फोज साथ दी सो कजू से मुल्का लेकर गजनी लाहोर, अवधास में राज किया
 और हंशार व भटनेर कजू को दिया । बाद कजू के जो गढ नर वर के काछ वाये रा
 जा पाल गादे का दीहता कुं० मूलराज व भंडु डांग व हेडे वालों से जुद्ध जीत कर
 मथुरा मे राज बैठा ॥ * ॥ ९६ गजू सं० ५३२ लाहोर ० रानी पडेहार गाराा सुमे
 सकी पुत्री गढ मंडोर मकवाही राजा मांघ की पुत्री दइयाणी राजा सूर्ज की पुत्री
 व ४ दूसरी । लाहोर काराज कु० लोमनराव को दे कर आप गजनी बैठे ॥ कुं० सार्गी ॥
 ९० लोमनराव सं० ५३१ कुवरानी पुवार राजा वीर सिंह की पुत्री गढ लुद्रवा ॥ कजू
 का कुं० भंडु बुरवारे से वादशाह जादी को ले आया जब ईरान, खुरासान, बुरवारे से
 फोजां आई ० लडाई के वाद गजू गजनी में लोमनराव लाहोर में मूलराज मथुरा
 मे भंडु हंशार मे जगसवाय भटनेर मे शाकावार के काम आये दुतफा लाखे आद
 मी मेरे व धायल हुए पांच गढ छुटे । यवनां व यादवां के हर्ज माने में बहु तसी लडा
 दयां हुई और यादव जीतते रहे यवन हिन्दो स्थान का मुह देरव न सका इसका हाल
 किताब शाह नामे व गौरु मे लिखा ही है आखिर कई यादव ही ज मुल्का के लालच से
 यवन हो गए वाद बोचड आने से अवफते मंदर हे । फिर ममा मंगरीया लखड ।
 कलर । जंभू चगौरु बहुत मुसल्मीन हुये कई हिन्दु रहे व कई भाटी वैपारी व जाय
 व गैरे आनजात हुए । लोमनराव का कुं० रैरासी मे घडंबर रूत्र व आदि नारायण का
 स्वरूप जो श्री कृष्ण चंद्र के सिव्य है लेकर भाग निकला था व ह स्वरूप हमारे श्री गढ
 जैसलमेर टीकमजी के मंदिर में विराजे है हरराजो तो की वारतका तो हर दसमी की

५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

* हम जब रान १००० ई० मे जैसलमेर को गए थे तब श्री नी दुर्ग मद्रावा वन व रीसान जी मारु की दुर्ग वन से - रस
 मे पाठ्य वर वच की भी न्वात (वर्तन) की थी ॥ मुहम्मद मुहद जहां रोगा मंडी रान न पुना मन व जन्म

रेवाडी यानी पूजनकाठाठ दशेरे मूजिव होताथा फेरही मुजरमालुमवगैरेरीत
 थी अवतो सिर्फ पात्र मंदिरमेंगवें तथा श्री हराम साहिवां के प्रोहित तिलककोरज
 पंचशब्दीयासाथहोवैहैं ॥ भाटी कामुल्कगजनीचकतोको-मथुरावेयानेकेया
 दवोंको-दूजादेशपंजाबयाकों पडेहारों पिडिरों वाराहों भालों वगैरह कोदेवार
 फोजांपीछीगईं ॥ २॥ ९२ रावरेगासिसं० ५३५ ॥ ९९ भोजसीसं० ५५६
 १०० मंगलराव सं० ५७६ विरवे में मुमरावाहारा गढवनाय राजवांधा रोरनी
 पडेहार रांगा मूजकीपुत्री गढजूना पुवारराजा सांवतकीपुत्री गढ मंडोर १९कुं०
 हुस यवनों की फोजां आईं जवमंगलरावजी कुं० मंडमरावकोले भागे दूजाकुं० मंड
 श्रीधर के घरमें छिपे टाकमती दासकी चुगली सेवादशाह तलव किये जवसेठ ने
 कुं० खालरसी मूठराज शिवराज को तो जावोंके फूलकी नार्दयांके केवलेकी कुंभा
 रांके परनाम सी खालरसीका खोलहरी मूठका मूठजाट केवलेकाकेवलाकुमार
 हुआ ॥ १०१ मंडमराव सं० ६१६ पुवारा की धरती किनारे दरीयाव रुकडेके सं० ६५६
 में गढमरोट वनाय राजवांधा । पुंगलसे पुंवारां जांधे से भुरां लुद्रवे से सोद्रा पुवारां
 बिठंडे से वाराहां वगैरह राजावों टीका भेजा और धार से सोढा हाजर हो कुंवरनी
 के विवाहकानारियल दे तावेदार हुस जवसे सोढा अब्वल दर्जे के भाटीयों मूजब
 उमरावहैं और हर पीडीमें राजा सोढें परगीजणों से खांपलायक बनीरही वर-
 ना-चवन होजाते क्यों कि उनको परनातेथे सं० १९०० मेंठा । राज श्रीकेस
 रीसिंहजी साहवां तलाक लिखवार्ड कि अबकोई चवनको परनावे तो दूजा सोढा-
 उनकोजातिवाह करै नहीं तो भाटीजाति सोढांसे संग परानरखवें । तथा जो
 पडोसी पुवार वगैरह अदावतखते मान्नकीनेस्त नाबूद किये ॥ १०२ सूरसैन-
 सं० ६६७ मरोट ७ रागी । चहुवांरा राजा सुजानकी पुत्री गढ से भरमकवागी राव
 सिंचलकी पुत्री ५ दूजी ॥ १०३ रजुराव सं० ७०२ मरोट ३ रानी । सोलरवणी

राजामंडराकीपुत्री गढबिरनाल गोंवलरावजामकीपुत्री गढखेड-भालीरा-
 जाआभडकीपुत्री गढहलवद ॥ १०४ मूलराज सं० ७१३ मरोट ३रानी-रुईयांणी
 रावघारुकीपुत्री दोगरापुर पुंवारराजाउदैराजकीपुत्री गढमंडीर तुवरराव शंदर
 कीपुत्री गढसातलमेर । कुं० गंगेव घोडड काघोडड हुवा । मुमरावाहरा-
 व भटनेर पीछालिया ॥ १०५ रावउदैराव सं० ७३९ मरोट ७रणी-बोडागोरणा
 केसवदासकीपुत्री गढपाटरा सोलखराणी रावदेपालकीपुत्री गढतोडा ५ दूजी-
 कुं० सिंगराव कासोगरावहै तीजेजालरासी ॥ १०६ मंभमराव सं० ७६६ मरोट
 होराणी श्रद्धाली २ बावेली गजासमनकीपुत्री गढथरादकी । कुं० जैगो गलीनीजे मू-
 लराजकेबेटे लउवे कालरुवा चूहलका चूहल चोथे राजपालकेबेटे गोगीकेखगर
 का खंगर घूकडकाघूकड कुहरीयेकाकुलरीया वगैरह उभेचडा मुसलमानहै ।
 परन्तु नवरत्रिमें स्थापना वगैरे हिन्दुपराकीरीतकरैहैं । कुं० केहर व मूलराज ने
 सोवतके ५०० घोडे पाडे सो जालोर केदेवडे अरुग्रासी कीपुत्री परनीजेजबव्या
 गमें दिये मूलराजकीपुत्री धाराहरावजशर्यके कुं० चूनेको परनाई ॥ १०७ राव-
 केहर सं० ७१६ मरोट ४ रणी सोनगिर झाली पुवार सोलखराणी-पाटवी-
 कुं० तिराऊजी हुवा । छठे कुं० जामके वंशकावाशियां भाटिया जोसाहुकारा
 मेलायकहै हालअलहदालिराहै । दूजे कुं० उतेराव के सोमकासीम और स्ते
 सेजीये वीरै अजे काउतेरावभाटीहै । तीजे कुं० चनहडके केलड़ भारू भो
 ना शिवदास का चनहड ॥ चोथे कुं० खाफरीयेके दोबेटों कारखाफरी
 याव अहीमके ३ बेटे का अहीमहुआ - कोटकिरोहर सं० ७२७ जेष्ठ वदि ५
 करया वाददेवी तिगोटीयो की आज्ञासे बडे कुं० तिराऊ के नामसे कोट
 तिगोट बनाय शहर बसाया राजधानी करी व तगोटीयो देवी कामंदिरवना
 यासोमौजूहै स ७७७ प्रतिष्ठापुरकोटवरातां बाणह फौजांलाया सोहार

गया ॥ १०० राव तराजी सं० ६२ तराोट १५ रांगी सोलखणी राव उ-
 दयारत्तकी पुत्री गढ जांधै गेहलोत राव भोगादत्त की पुत्री गढ चीतोड १२
 दूजी ॥ देवी बीझासराणीयों की कृपासे कुं० विजैराज हुआ इब्बवताय गढ की
 आज्ञा करी सो सं० ८७३ में गढ बीझाशोट कराया तथा फोज कर चडे. सो बि
 ठंडे के वाराह बहुतसे मारे बाको भागे फतह पाव विजैराव पीके आस फेर वाराह
 लांगाह वगेरह फोज कर आस जय श्री स्वांगीयों जी चूड. दीवी जिससे जुद्ध जीते
 चूडाला विजैराज कहीजे फेर वाराह राव जूने के पुत्र नांईयें साथ हुसेन साह की
 भेजी गजनी के बादशाह की फोजां मुल्तानसे आई जब देवी पालंब के रूप विजैरा
 व के घोडे की किनोती बीचमें बैठ जुद्ध जीताया फोजां साही हार तलाक रवाय
 पीके गद्दे जबसे पाटवी घोडे पर पालंब का चिन्ह मंडै है बहुतसे भाटो काम आ
 एव भागे तथा आनजाति हुये । कुं० माकड़ के मोल्ले व महेपे कामाव. ड सूधार
 और आलके ४ बेटा देवसी थिरपाल भूरासी देवीदास बीझाशोर में सांटां चार
 गो से रेहवारी तथा राखेचै के राजपाल का ५ बेटे गजदूध कल्पांरा धनराज
 नांटे हेमराज कारखेचा साहूकार और मुला रागा चूडा तीनों ही का मह
 जन महे श्री मुलारागा चामक हुअे । कुं० जैतुंग के बेटे रतनसी व च्याहड ने
 कीर बिकसपुर सूनाया कक्के किया फेर च्याहड के बेटे कोल्ले गा० कोलासर व
 गिरराज ने गा० गिरराज सर वसाया जैतुंग कहीजे और प्रतापी हुअे केई गांव
 वसाए सो हिनोज है । तराोट में श्री लक्ष्मी नाथ जी का मंदिर कराय तराजी तो
 सेवा अखतियार करी विजैराव राज बैठे ॥ १०८ कुं० विजैराव सं० ७७ । ७ कुं० व
 रांगी भुटी राव जजे की पुत्री गढ जांधै दरियागी राजा भोज की पुत्री गढ पार
 कर पडेहार राणा जीवरा की पुत्री राठोड राजा लखरा की पुत्री वाराह राव
 भाराजी की पुत्री गढ विठने ॥ ४ कुं० देवराज माराकराव गाहड घोडड हुए

चूड़ कै प्रताप १००० तलवार गैब से चलती थी। इरान खुरासान के बादशाह
 व भाला वाराह वगैरे से २२ प्रवाडि जीते भाला पुवारं वगैरे की जमीन द्याद ॥
 गद तरांग मरोट किराहूर भयनेर मुंमरावाहण वीझरगोट में राज रहा
 पुवारं भाला वाराह वगैरे ने सलाह कर भंवर देवराज को नखेर भेजा जान
 विठडे गर्द वहां चूकहु आ १३ सो लोक से विजैराव काम आये श्री स्वांगीयां जी के
 हुकम से देवराज को राई काने गले भाग सो खेत में प्रोहित देवायत को सो पगया
 सोने दान करन लगा पीछे से वाहर आई पागी वीला यहां से सांठ टुकलासहुई
 वाहारु वां पूछा चोर यहारहा देवायत कही ५ बैठे छुटा मै हूं वहारु वीले भेले
 जी मो जव दो दीजने बैठे देवायत कावेटा रतनु देवराज भेला जीम्या जिस से रतनु
 चारराहुए सोपोल पान पाट बा है और दूसरे बैठे का प्रोहित आज तक जी इज्जत
 व मुसाहिब हर और दो पर रहते हैं । वाराह पुवारं भाला वगैरे की फोनां तरांग
 ट आई तरांग जी साको कर काम आर छुहु गड छुटे स० २५२ मे ॥ तथा राइ
 के नेग के कहने से देवराज की माता श्रीपादि नारायण का स्वरूप व मेघाड बरुन
 ले कर पीहर गड जाधै गर्द देवराज भी वहा आकर १० वर्ष छिपे रहे फिर देवायत विठ
 डि गया देवराज की सामू रवासे मिला और वाराह से वचन रावल जोगी रतन्ता थ
 सिद्ध की मार फतले देवराज की वहां ले गया जोगी राज तो कशमीर गये थे मरर कं
 था वरस कुंपा की झोली रवाकी मैडी में थी जहां देवराज सोता था ५ महीने वहा हु
 रड वना कही जेजव झोली चुराके मैडी की प्राग लगाय जाधै चले गये पीछे से जी
 गीराज विठडे आये वाराह वं रवा कही झोली नलगई सिद्ध वीले नसीब में थी उ
 स को मिली । देवराज जो उपवास कर कुल देवी आराधी जव प्रणाम हो राज तेज
 बढ़ने का बर्दान व शत्रु जीतने के लिये खडग दिया उससे ५२ प्रवाडि जीते पीछे ही
 हर पीरही में फतह पार्नुनाचे चड सी जी से दिल्ली में इस खडग के प्रताप बादशाह

राजविराजे दोहा सिद्ध बचनवरपाथके सिद्ध भस्म देवराज । रतन्नाथ हथ ति
 लक किय कहुँ भूपति शिरताज ॥ १ ॥ जबसे आज तक राजराभिषेक में अबल
 भेषजोगीका मुद्रावों चोला आसा खड़ाउ बगैरह धारे सो तो आयसजी आस के
 मरको है फेर दान पुन्य करके राजा परो की पोसाक पधराय श्री आदि नारायणाय
 ने श्री लक्ष्मी नाथजी व श्री स्वांगीयां जीका दर्शन करके आम दरबार में तरवत विरा
 ने जब खूनका तिलक भाटी करे बाद कुंमकुमका तिलक पाद पुरोहित करे और तोषे
 की सलामी व भैर धाव व नजर नोछावर हुये है तथा इत्नी निशानी जोगीकी मौजूद
 है कि गढ़ में कोटा २ अन्नपूर्णी के नीचे रतन्नाथका ध्यान और तंबू किनातव घोडे
 केटापुर वहरकारे की छडी दूंगीका फूँदा भगवा और दो ठकाणा १ आयस का
 मठ श्री दरवार साहिब के गुरु २ दरीया नाथकी बावडी वाले राजवीयो के गुरु है पाद
 उत्सव में वगमी के कार्य में नाथोंका सत्कार सबसे पहिले होता है । देवराजजी
 बड़े ही प्रतापी हुस नवकोट पुवारों के लिये जबसे नवगढ नरेस कहीजते है फेरतो और
 ही बहुतसे गढ़ व प्र० लीये तथा जहीद किये सो नीचे लिखे है ॥ तराोट के सेठ जस
 काराधारके राजाके गुरुर पर जवाब दिया कि मेरे मालिक देवराज पास स्वेत हाथी वी
 रह बहुत ठाठ है राजने सेठका घर जह किया और गलेकी हडी में वाली हालके कहा
 कि हाथी लायां कूटेगा सेठ ने आकर सब हाल कहा सुनते ही देवराजने प्रतज्ञाली -
 कि धार लूटके पानी पीकंगा फोन फोज कर चडे १२५ कोस पहुँचे जब हम राहि
 योंकी अज्ञसे आटेकी धार बनाय उसमें सेली के वगेरे १४० पुवारों की मार जलपिया
 वहां धारवी नामसे गांम आबाद किया सो मौजूद है फेर वहां जा कर लड़ाई जीत धर
 लूटी पुवार अन्न भानको साथ लाये । लुद्रके राजा जस भान का प्रधान पुरोहित
 विमलाकी सलाह से शादीके बहाने १२ सो जानी फी दरवाजे एक सो शहर लुद्र
 पुर पटरा में दाखिल हो लुद्रों की मारके राजधानी मुकर्रिकरी और विमले की

किलेदारी व गगाजल की नोयारी और ब्रह्म भोज में दक्षिणा कड दौराबंध परदेश
 वैठों को भी देने का तांबा पत्र कर दिया सो आज तक है विमले की औलाद को म-प्राचा
 र्क पुष्करणा ब्राह्मणा है फेर महायवल सबल सिंह जी गाम मौकला तशांस्त दिया-
 ॥ गढजालोर सोनगिरे को देरावर भांनेज दर्रियों को मंडौर पडे हारो को दिया
 नवकोटी मारवाड में अंगरा फेरी दूजा गढ लुद्रवा पूगल सातलमेर किरोहर भटने
 र-वीद्वारगोट मुमरावाहरा मरोट किराडु पारकर राहूडी भरवर वगैरे खाल
 सै रखे थे ॥ **कृप्या** ॥ देवराज थपेदुरंग लुद्रवां आप घर लास संमबाहरा-
 त्रय सिंधूनो पारकर जमान भडजालोर हु भजे मारे नृपमंडौर गढ अज-
 मेर हु गंजे पूगल गढ लीधो प्रथम कतल बिठंहे की जिये देवराज भूपचढते दिवस
 रतनु अज्ञा धरली जिये ॥ १ ॥ एसे ही दातारी में सानी नहीं रकबा चुनाचे ताला
 व प्र० रामगढ में दादा तराकजी के नाम से तराकसर व पिता किजै रावजी के नाम
 से किजडासर व आपके नाम से देरासर तथा प्र० देवामे कोट से पश्चिम को सडे ट
 रागीजी के नाम से लकीसर ववेशाले से ४ कोस किराडु के नजदीक देराप्र-
 जहां अब देराप्ररा गांव है सिवाय इसके और ही परगनों में कहीं तालाव व गढ व
 कुवां व गाम बनाये और प्रतिष्ठा याने बडा जिंगकर के एक दिन में इतना दान कि
 या ॥ **दोहा** ॥ क्रोड-दुज्जारे अर्ब रूक पैसठ लारव पसाव । दीधा सिंह देवराज सी
 शिषे भाटी राव ॥ १ ॥ (**कृप्या**) शिषे भाटी राव अर्ब रूकाल्लु अपे शिषे भाटी राव को
 उ देहगाथपे शिषे० क्रोड दीय भाटां दिघी सात क्रोड रूक साथ तिका पिगा विप्रां
 लिथी कोट रूक दूजा कवि कवि कवित दूम उच्चै सता दान भाटी विना कौन भूप
 दूजा करे ॥ २ ॥ कई गांम शांस्त वपेटे दिये तथा मुतफर्क दान दिया सो कहां तक
 लिखा जावे को कि इमर इमर कथा वरस कृपा के बादस द्रव्य चाहे जितना हो सक्ता
 थ ॥ १२१ वर्ष राज्य किया बाद शकार गये थे कोम चन्सु के कटकसे सापली में

मुकाबिला हुआ १४० भाटी वराव मालदे जी भाला साथ सं १०३० मिघर सुदि स्वर्ग पधारे ॥ राजगारी मंधजी बैठे और २३ वर्ष राज किया यहां ज्यादः वर्ष गुजरने का रब्याल हुआ और तलाश करी तो सुना गया कि नोगी राज का वरदान था- तथा १ पोथी में संवत् जैशल जी तक पीड़ीयों में कम बेश भी लिखा है सिवाय इसके यह भी करीन कयास है कि देवराज के पाटवी कुवर के नाती था शयाद मंध के ने का पोता होगा कि हकदार वाजिब गारी बैठने से बेटा हुआ तथा इसी जमाने में नंद अनंद के सम्बत् का फर्क ९९ बाहु वर्ष का प्रथी राज रासे में लिखा है न्युं- होगा खैर क्यों ही हो यहां तो श्री दरवार की पोथी मुजब लिखा है ॥

१११ महारावल श्री मंधजी सं १०३० सुद्धवे

१ पुवार	हंसावती	राव गजरांजी		१ वाकु जी	
२ सोनगारी		राव बिसल जी	गठुजाला		
३ चाकडी	राज कुं०	राव भांरासी	पाटगा		
४ सोलखगारी	शिशै कुं०	राजा समजन		२ राजपाल के वंश	
५ सोटी	बिले कुं०	रागा म्हे रावरा		कालोहा बुध	
६ सीसोदगारी	राम कुं०	रागा अडसी जी	गटचीतिड	पहोड -	
७ चौहान	मालपा कुं०	राव भांरा			
८ पुवार	रंग कुं०		गठुजना		
९ गेलीत		राव कल्यांरा	खेड		
१० पुवार	हैम कुं०	राव धारु जी			

१ मयपुरा वावमरास २ हमीर जीतारवा

अवल यंनों पर चडे. १००० को मार कर बैर लिया कर भाटी खित रहे बहुतसा वित- लाये पीके राज बैठे । राव मालदे के बेटे हमीर को सब नरहसे लायक राज काज के-

समझा परन्तु दूर अदेशी से सुनासिख्यान कार दीवान महल पुरुपोतमटासकी बे
 टीपरनाय महजनमहेसरी याने टावरी मुंता किया और वचन दिया चलके त
 लाकवारी कि भाटी के राजमे दीवान तेरी ही ओलाद का होगा जबसे मुखतयार
 तो भाई वंगैरे और भी हुंसे लेकिन दीवान तो टावरी ही रहा नाम हर पीडी के नकरी
 में लिरवे है वाकी हाल अलहदा लिरवा गया मगर अब बहर हाल आयद को उमेद
 नही है तथा हमीरजी ने खुर्दयाले में लारव रूपये की हूलदी पैदा करी जिस संकोट
 बरकडीन का नाम लारवीगा हुआ तथा मलकी ओलाद के ४० परमखव कोठारी
 है और अबसे वाजे २ राजकी नोकरी मे तवेला वदकूम तो पर रहे है ॥ सिधमे नाले
 पर मुंथ कोट बनाया कई पुशतों वाद अमोरों सिंधने ले कर उषड का कोट किया
 सो हिनेज है ॥ वहाहा काम व्यास था कोट खोय आया जब देश पार किया सो मेडंत
 नारहा ॥ * ॥

११२ महारावल श्री वाळुजी स० १११३ लुद्रवे

१	सोलखराणी	राजकुवर	राजावलभसेन	पारगा	१	दुसाज	१	सूखेदारचंतीर
२	पुवार	फवलवती	राजा नौधरा		२	(सिहरावकासिंद्राव)	२	रजकु०
३	चोहान	हसकुं०	राजा भैरुंजी	अत्तमेर	३	वैपैणवकापाहु		
४	पडेहार	जामकुं०	राणावी ललदजी	महोर	४	इराधका इराधा		
५	देवडी	पवैकुं०	रावनाटाजी	सीरोही	५	सूलपसाकामू		
६	सोही	विलेकुं०	रागाणवदेजी	शमकोट		लपसा		

वाळुटी नामी कोट बनाया था जिस्वा निशान शाहागद से पश्चिम ४ कोस पर
 नौजूद है ॥ कई घोडे सौदागर से खरीदे उसके कहने से कुंवर दुसानव इराण
 नगर छटे जावर गाजीखान बलो चको जो बहादुरी मे इच्चा धामा मारके १४० घोडा
 गैग की लारे ॥ फेरगांम बहे डे के राना जडा का नौ सौ रवाचीयो समेत मार -

बिक्रमपुर के जैतुंगां का वैर लिया और शहर लूट बहुत सा बित्त लाए ॥
 दुसाज्ज इगाधा सिंह राव तीनों भाई खेड के राजा प्रताप सिंह गोयल
 के परने ॥ सिंह राव के नाम से कस्बा सिंह रावजी रोहोडी से ८ कोस है आ-
 वाद कर मस परगने बकार याने गाम २४ सूर्यदों को खैरात में दिया सो हिं-
 ज उन्हों के पास है । तथा सिंह राव के पुत्र सचेराव का वेटा भालेराव के वेदे
 रत्ना व गजहथ ने मंडोर के पडेहार जगन्नाथ को मार सांछां वगैरा बहुत सा
 माल ले आये ॥ कुवर वपैराव के पुत्र पाहू व मांडरा और पाहू के सोढल
 का वीमसी तलपसी को महारावल कालरा ने देश पार कीये सो सीरोही
 गस वहां वीमसी पहाड में जोगी राज से पौर सापाय पीछा आय बिक्रम
 पुर से फोज लेके चढे सो खोरवरी से खार बारा मस १४० गामों के बजोर्डियों
 से मुल्क लिया त्वा दिव्य जाल जो पूगल से ८ कोस है हर कायम कर रहबास
 किया जब से वह देश पाहू बेरा कहलाया ॥ तथा पवेराव ने प्र० रामगढ में ब-
 पडासर नामी तालाब बहुत भारी बनाया सो मौजूद है ॥ पंडां बाहु जी ब्राह्मणों
 की फर याद पर चढे सो खाडाल में करीमखां को मस ५०० बलीचों के मारे दोसो
 भाटी खेत रहे फते पाई ॥

११३ महारावल श्री दुसाज्जजी सं० ११५५ लुद्रवे

१	सीसोदराणी	खलकराजी	डुंगरपुर	१	जैसलजी	१	मानकुं०	सोरोही
२	गोयल	लषमादे	खेड	२	बिजेरावजी पाद	२	सतूकुं०	
३	चौहान	राजकुं०	सौंभर	३	पवाजी कापवा			
४	तुवर	मानकुं०	दिहली	४	पहोडजी			
५	ईपाराणी		देरावर					
६	चावडी							
७	सोदी							
८	रांगावत							
		रांगामोकलजी	मालवे					

सोढदिश लूटे था पिंडान्नाकर गांमपुहडी पास डा० हमीरको ७००
 ॥ नोगीरान्नकी कृपा वपाह सोढलकी सलाहसे छोटे कुं बिजेराव को राज
 नी गजनी के साह अलाउदीन गौरी के भाई शहाबुद्दीन

जारे ॥

११४ मगरावल श्रीलाडो विजेरावजी सं० ११७९ लडवे

१ पुवार	रामपुर राजा तिलोक वर- चन्द्र	धारनगर	१ भोजदे याट	१ लाकू
सोसोदरा	सिंह कुं रावल करारि सम् सीजी योत	गढचीतोड	२ रहाडकी काराहाड वडे भूपतका २० हाजावे भेजले हरराजका २० वी कानिर मे छोटि करी दयकन २० ठिप गांवरो राब की जो २० से परसे १॥ कोसरहे जमीरारायाह मोहमद खहे	२ लाग तको राक्तिवो के समाजमे जा वे थी सकदिन भोजदे जीपी के गये जबश्च परियो कि नि वश होखु कह गई आकाशमें
३ चौहान	गराजा नारा सीजी	वीव	३ हटे जीका ह्या	
४ नावडी	रावलुरानी		४ मगलनी कामंगलीया कोषकी वमोन मे कोट नानरा पजहा सब सहा गट है बरवसा	
५ सोलष राी	राजा सिपजी सिंहजी	अनहलपुर पररा	५ भीवरा भीया भीदी	

२ के रान्ता तिलोक सिंह की पुत्री परन्या वहासी सोदिया रागानी व सोलखी

सिं का पुं नौपाल भी परनीजन आये थे रांगौजी

नोरख चौरव होनेसे कई मन का पूर बाकडीयों में ड लाया व अपार

नेसे लांभा कहाया ॥ और पाचवां बिवाह पाटरा सिद्धराज नौसि
 की पुत्रीसे हुआ जब सोलखीयों पुवारो सीसोदीयो वगैरे ने बादशाहके

से उन्नभड किवाड कहासो किड दहनोज है ॥ मौजे रादे के पास वि
 नामी तालाब व शिव का मंदिर सहस्रलिंग बनाय वडा जिग वदान किया
 व दोहा कहा न्यौही है दोहा यह सह हातै पांखती भूप अनेदगभाल

आयो धरणी बंधायसी विजंडा सररी पाल ॥१॥ कुंवर मंगल राव का मंग
 लीया मुसलमान हुआ दोहा तैसुं वैडेगे सुंमरा लांझो विजेराव । मागरा
 ऊपर हथडा वैरी ऊपर घाव ॥१॥

११५ महारावल श्री भोजदे जी सं० १२०४ लुद्रवे

१ सोलखराणी	विलैकुं०	राजागहलदेव	गढपाटगा	कुंवर नही हुआ			महारावणी
२ सोढी	शुभकुं०	राजाजाम					
३ चौहान		राजाविजेपाल	नीमरांगा				

नगर थटे से शहाबु दीन की फौज मजूर खान व करीम खान साथ कुजरात में सो
 लखियों वगैरे पस्जाती से उत्तर भड किवाड के लिहूज से वनांनराणों के वचाव का
 लिये लडाई करी जोगी के बचनां व वार्द राज लारु वलांग के आप के बाइ स
 ७०० लोक साथ शाका करके भोजदे जुझार हुए सो हनीज फूजीजै हैं बहुत यव
 न व मजूर खों भी फोत हुए श्रीजैसलजी फौज साथ थे सो राज वैटे जब राहू की
 लूट फौज से पीछे ली सोरठा गौर शहाबु दीन भिडीयारावल भोजदे ।
 लंक उमर रखलीन वारै सैनवलुद्रपुर ॥१॥

११६ महारावलजी श्रीजैसलजी सं० १२०९ लुद्रपुर पटगा

१ सोढी		राणा हंशराज	पारकर	१ कालराजीपाखीवा पर पाहु वीमली- तलपहीने छोदे कुकर	१ सामकुं०		महारावणी
२ पडेहार	उदैकुं०	रावभारा	गढनांगोद				
३ चौहान	विलैकुं०	रावचनड	नीमरांगा				
४ वाधेली	जामकुं०	राव नोधरा	गढपावा				
५ पुवार		राव धारुजी					

सं० १२१२ आंवरगा शुदि १२ लुद्रवे से ४ कोस पूर्व गोरहरे पहाड पर गढ की नोंव
 दी जिससे गोरहरा और सं० १२१९ में राजधानी करी जैसलराजा का नाम मेरव

कहै है पहाड को सो जेसलमेर वतीन रवूँ पहाड के वाइस तिरवूराग कोट व
 त्रकुटाचल वत्रकुटगढ भी नाम है गढ लुड्रवातीन दिन मे दूया था जिससे भा
 री गढ बनाना वाजिब जानकर दुंगरी मोलासर पर काम जारी किया था जब ब्राह्मण
 ईसाने जो १२० वर्ष की उमर व दिवामे भी ब्रह्म था ॥

यह जगा बताई कि श्री कृष्णचंद्र व अर्जुन ब्रह्माके जिग ब्रह्मकुंडों पर-
 आस जब दूसपहाडी पर आकर चक्रसे जेसलनामी कृवा किया सो हिनोजेहे ॥
 तथा पत्थर पर दोहा लिखा कि ॥ जेसलनामा भूपती यहु बंशी इक थाय । कोई
 काले अंतैरे सथरहेसी आय ॥ १ ॥ दिखाकर कहा कि श्री कृष्णचंद्रके बचन
 है कि यहा राज अचल रहेगा जेसलजी बहुतरबुश हुय ईसाको गढ से पश्चिम आय
 कास पञ्जमीन दीवीथी सो ईसाल कहीजेहे ॥ चानीया व बलोच भारी कटकले
 देश लूने को गाम खूडो आये की खबर होताही पिडा पधारे कटकके मांझी-
 वगैरे को मारे और दूसरे डोरी २ कहने वमुह में घासलेने से जन्दा बचे ॥ जेसल
 सरतालाव बगाया ॥

११० महारावलजी श्री शालिवाहनजी संवत १२२५ गढ जेसलमेर

१ सोदी	विलेकुं	गारागानोदर	अमरकोट	१ वीजखेदेपाट :		
२ चावडी	उदैकुं	राकजांझारपी	राजगत	२ बादरुनीका वाइरांगव झाभने ॥		महाराजजी
३ राठोड	भाराकु	रावधूबड		३ दूसराजकावेशमन- रूपपसहीगजावकरी ज के गोदगया		
४ सीसोदगी	राजकुवर	भूरणावैसिह	गढपीतोड	४ सोवननीका मोकल गा० मोकले		
५ बाघेली	सूजकुं	रावफुंजाजी	गढपीगोर	५ चंद्रकावपूषणनेजई पासवागिपंडादाजे- मन्नासुप्यारी परनी निदाठाजतिथासन्ना सुप्यारदूस		
६ देवडी	-	रावमूडरगास	गढसंगोही	६ सातलनीका मराजन गा० म्मा जलार		

१ दसकुवेदीमन १००० ई मरमनेभी कितिके गान्धरदेखा था ॥ २ दन् मरम्बर मूदर प्रली म्दोरर ठजपूतना गानरप्रवे-
 ३ धानेनासल नाने म्द गानाजी पादो वनी म्दानकाहाग कुरु अरलेके राद परा म्दरारदे गा ॥ म० मु० अ० दी०
 ४ वदी कपूरपना जो पजावमे वकिदे ॥ म० मु० अ० दी०

निसरर सक प्रजनरेरे कि प्रया नागी प्रता ने वसाया था - अज्ञा प्रजा का नाम प्रोरोप पराद को सत्सकनने करुदे सभिये श गोर करुणाया ॥ म० मु० अ०

छोटे कुं० चंद्र का कपूर खले राज कोम शिष्य है श्री दरवार साहिबां को कुतुर्ग
समझ कर सेसाही बरतावरवते हैं टीका नूता सोगात वकील वगैरे आना
जाना बरवूबीजारी है सं० १९१४ मन १-५७ ईस्वीके ग़दर में सरकार दौलत
मदार अंगरेजी की खैरखाही व मदद दिलोजानसे करी कि सरकार ने महरबानी
व क़दरदानीसे फ़रज़िंदख़ास कारिबताब व तग़माऔर रू० लखनऊ में कर्दला
खका मुल्क इनाबत किया चंद्रसे आज पर्यन्त गादी धरों के नाम अलग लिखे हैं
पांच में कुं० हंसराज कावेरा मन्तरूप नायगां के राजा बछुराज की गोद गया सोरासे
में फ़ोत हुआ कुं० वाराणा हामला थी पलासके पेड़ नीचे पुत्र पैदा हुआ सोगादी
वेडा जिससे पलासिया भाटी पहाड़ी राजा वाजे हैं बाकी नस्थनामा बहां ही गा
जालोरके सोनगरो से जुद्ध जीते और चोराके काठी जग भान को बफ़ात
दे बहुत सा वित्त लाये गामडा भलेसे पश्चिम १ कोस पर तालाब व जपरठकांन
बनाय बहुत सा दान किया ७ गाम उद्गादिम । और सुना है कि गाम को रडे
काठा कुर बुध भाटी चंद्रा मुल्क लूटा था खेड में राठोड राय पालने कैद किया
याने रोहोडीया इसी अरसे में बरसडे मावल की वेटी श्रीमाने चारनसे सारी की
तलाकरवाई जब राय पालने अपनी बेटी करके धोरसे चंदे को परनायरो हो
डीया चारन किया उसकी औलाद का राठोडों का पाट बाट रोहोडीया मशहूर है
इसका बदला लिया कि तालाब की प्रतिष्ठा परस्कराठोड को बहुतसा द्रव्य देके
अपना ठोली उगाके जो मथुराजीसे साथ है शामिल किया । बलोच खिदर खान
से खाडालमें जुद्ध हुआ खिदर खान घायल व ५०० बलोच खेतर है व ३६०
लोक साथ पिंडां स्वर्ग पधारे । कुं० विभलदे पार वैठबाद दो माह के धभाने चूक
किया जब जेसलजी का बडा कुं० कालराजी राज बिराजी ॥

॥ याने सरमार नाहन जो जिले कांगडे में है और इनदिनों वहां के महाराजा श्रीशंभेर प्रकाश साहू-जी० सी० एस० आदि
है ॥ सुहम्मर मुराद अली होशियार अफी अनरू ॥ याने मारकर ॥ म० मु० अ० हो ॥

११८ महाराजलजी श्री कालराजी सम्बत १२४७

१	वाघेली	भाराकुं	राव हराज	गठ थपट	१	चाचगदेजी पाट	१	रंगानु राम
२	चौहान	सोनकुं	राव धारजी	-	२	पालगा केजसोडजी क- मल पूजा से शिव प्रथा को छ पुत्र वसक पीडी पन- का बरदान दिया ॥ इन्हो- पति को बली ॥ रजनीया ॥ सागरा ॥ चगगा ॥ थ- सकनी नयन दास ॥ इन चारों के वशकाजस हर मण हर है -	२	गंगाकुं चद्रा
३	सीसोदगी	मजबकुं	राणा प्रथुमस- जी ॥	गठ ची- तोड -	-	-	२	वत कुपर
४	सोटी	रत्नकुं	राणा आसलजी	भमरकोट	-	-	-	-
५	गोयल-		राव जैतमाल	खेड	३	जेचन्द के एक लूगागका जेचन्द है वृषी कर्मसी के लास को सो हटने दोबानि- कमसो - गगमसी का ही हटें	३	नाया
६	चावडी	मूर्तिकुं	राव दूधानी	भारवाँ	४	अधराव का भरा कमस पिचम चद्र	४	-

रजनीया ५०५५५

शालिवाहराजीके बैर लेनेकी सलाह करो सो सुन कर माथेलै से रिबरवान ५०००
करकसे चढ आस खडा लका वित्तलीया अब कालराजी बहुत फौजले चढे - सो
रिबरवानको मरा ५०५ बलोनोको मारे और ९०० घायल किये २०० भारी काम
आस परन्तु वित्त छुडाय परवाडे जीत बहुतसा धोडा पडा उले फतेकाडं वाक्जा
ने पीके पधारै

११९ महाराजलजी श्री चाचगदेजी स० १२६६

१	गोयल		राव हदफ	खेड	१	नेजजी कुवार परे रसत फर- माई रा पुत्र हुअ्र मक जितसी ॥ इले करणा पाट - रु चरागी भमर कोट चारही पा सो ब नाराज वेदा जब आ करे ये से वहा दि कु म्मे से मेरा पु हारावनी और मानस के पना फा राती कसो दे मारना था दि- गढी ये ल नहीं दिया था मुनावे गे साही किया	१	राजकुं
२	सीसोदगी	रंशकुं	रावल पूजा	डुंगरपुर	-	-	-	-
३	डाडी	मूर्तिकुं	राव सतरागेरे	महलगर	-	-	-	-
४	सोटी	जामकुं	राणा मीर	-	-	-	-	-
५	राठोड		रावती डोजी	खेड	-	-	-	-

सु ०

राघटचर वरी भद्रानुर्नर्ह जो अर रलाके मारवाड मे है ॥ मरन्द माराद पसी हो शिपार ॥

सोढा वचांनिया ववलोच मुल्क लूटेया चुनाचे नगर थटे केरास्ते में भाटिया-
बुलाकीदासकामाल रूपये ५ लाख कालूराजवफौजकर पिंडां पधारे १६००
चांनिया ववलोच को मारकर माल मुहूर्त वरवर्च दंड में माल सवेशी पीछा किया
फेर अमर कोट के सीढे (१३००) को वफातही वाकी तावेदारी में हाज़र हुस अर्ज
करी किराठोडों ने गोंयलों से खेड कीनली वराव छाडा हम से भी अदावत रावते
हैं फौरन वहां पहुंचे तो छाडाजी ने बसलाह कुं० तीखाजी फौज र्वर्च दे वेटी पर
नाय मुलह करली। कुं० तेजका बड़ाबेदा जेतसी तो बादशाह की नोकरी में अहमद
बाद गया और कर्ग अमरकोट से आकर राज बैठा ॥

१२० महारावलजी श्री करनजी सं० १२९९

१	सोढी	हंश कुं०	महपाल	पारकर	१	खरशासैनजी पाट	१	भानकुं० नर वकिराँजा	सारांजी
२	पडेहार	कंवलावती	शरणा	डुजा					
३	गठोड		राव	छाडा		खेड			
४	वाघेली	केसवकुं०	राजा	मैरंगरा- जी		गटवांधे	२	जसकुं० के	
५	भाली		भगवानदास		२	सतरंगदेकालूराख		करवायां	
६	चौहान		राव	धारुजी					

नागोर वाटी के बाराह भगवती प्रसाद पर मुजाफर खान सूबेदार ने जुल्म किया
किजबरन उनकी वेटी परन्या वदेश से निकाला सो यहां आवाजवपनाहदी और
पिंडां पधारकर मुजाफर खांको मारा ५०० पठान १३०० भाटी काम आये शहर
नागोर लूटा और भगवती प्रसाद वगैरे वारा हों को पीछा आबाद कर उसकी
छोटी वेटी पर नीज पीछे पधारे ॥

१२१ महारावलजी श्री लखरासैनजी सं० १३२७

१	सोढी	सुगरादे	राराहेस्त	अमरकोट	१	पुनपालजी पार	श्रावणरनजी
२	चौहान	प्रेमकुं०	राराहेस्त	वाव	२	कल्यांरा	
३	सोनगरी		रावकांडडे	जालोर			
४	सोरी						
५	से०						
६	से०						
७	से०						

काकलुद्रजानतेथे गरुजालोरके कांडडे कोरांगी वकुं० केजहरसे (२) पहरके वायदे औठी भेजके बचाया । श्री स्वांगीयोंजी के आपसे सानिये होवरागी सोढी केवसी होनेसे सोढे ही सोढे पास रहतेथे वेईमानों ने श्रीजीको चूककरके सोढीजी से कहा कि तांहुने भाईयोंमें चायैजेनां राजडे सोढीजी हिकमत अम्लीसे ७ बीसों सोढों कोबुलाके १ महलमे बंधकिये और भाटीयोको श्रीजी कीलासदेखा कर कहा कि एक २ सोढासकर गधाबाधके कोटडीके कुवामंडालो चुनाचेस सही किया ॥ × ॥

१२२ महारावलजी श्री पुनपालजी सं० १३३१

१	पडेहार	पैपकुं०	राणाअरराज जी -	बेलवा -	१	लखमसीके राणागदे	रासोदरजी
२	देवडी	जामकुं०		सीरोही	२	भोजेजीका पूगलीचा	
३	सोढी		राणाअरपाल	पारवार	३	परहेजीका चरड	
					४	सुरागरावजीवल्लूगाराव	
					५	रगधीरजीकारराधीरंत चानगदेजीकेसुपरतेहजीका विदानेतसो जा राज देटा ॥	

राजनीत नही चलीगी से सीहड़-विक्रमसी ने जैतसी जी को अहमदाबाद से बुलाकर राज दिया और पुनपाल जी किसी गांम में जा रहे ॥ फेर कुं-लखमसी का बेरा रांगागद आली हिम्मत हुआ जमीयत कर चढे सोगद भरोट जोड़ियों से व पूगल भीलों से व मुंमरा बाहगालेकर रावबरा बैठे हुंजे बुंवरों की औलाद के दू० बीकानेर में हैं तथा रावरांगागदे के कु० सादो जी-बडग ही बहादुर हुआ मुफ़्तिसलहाल अलहदा इतिहास में लिखा है ॥

१२३ महारावलजी श्री जैतसी जी सं० ११३२

१	सोढी	रामकुं०	रांगासोभल	पाकर	१	मूलराजजी पाट	साम्राज्य
२	राठोड	फूलकुं०	रावतीडीजी	खेड	२	रतनसी काकुं० घटसी	
३	सोलपणी	सिरागा	रावदेपाल	पोखंडर		जीतो पाट बैठे अकानड	
४	चीहान		रावदूवा	गटपावा		देकाकांनड-उन्नड	
५	सोढी					सत्ता की लाहमीणोगादे	
६	से०					खांयांहुई राव हाबूर वस	
७	से०					ला वकाला वगोरादे वरुमी	
८	बाई		रावशिवनारायण			रां में हैं ॥	

राजयाने हुकूमत कुं० मूलराज वरतन्सी करते थे नामराखने के लिये मुल्कों में धाड्य पडने लगे बादशाह की ५५० खचरों पर मोहरें नगर छटे से मुलतान व माजी साहिबा मक्के जाती को लूटली जब सं० ३९ में फौज शाह रिवलजी की फौजे १५ लाख नवाब महबूबखां दिल्ली से - और करीमखां अलीखां मुलतान से ले आये १२ साल लडे मूलराज का कुं० धनु राज फौज पर धावा भाखा वरस हु पाखवारहा सं० ४९ में जैतसी जी मरे

गढ़मे ही रागहुआ रसजमानेमे प्रधान वसरदार जैचन्द राहुड-जै-
 तुग पाहु भराकमल सीहूड तथाजसोड- आसकन वगैरे कडेही अक-
 लमंद वसूरनीरथे आसकन कारसुरवतारथा प्र० वकारकारु २५०००)
 उडानेकी भूठी तुगलीपर तिलो कसी ने मारनाचाहा तोवसलाह श्रीमूलराज
 जीकी माजी साहिबा आसकन नाराजहोकर ईडरजारहाथा सोही आकरशा-
 कामे शालि हुआ ॥

१२४ महारावलजी श्रीमूलराजजी सं० १३४९

१	बाघेली	रामकुं०	रावपावलजी	थराह	१	देवराजजीकेकुं० ह मीरकातोपुर्जनिलष हनीरोत गौररुजके- रुजीयासो घंडसी जीकेपाटवेहा-	२	राजकुं० सामकुं० गौरजोकंबारीधी	केशवसमी
२	चौरान	राजकुं०	यकरकेहस्त्री		२	धनराजजी	राठोड साय		
३	सोढी	जसकुं०	रागासतपाडी	अमकीर	३	वनराजजी	बोयसोतवेदारी		
४	पडे-हार	सूर्जकुं०	रागापावलजी	मंडोर			मेघेशाकाकीसचा हहोनेपरशारी करीउनकेहाथो सेकवलहुई॥		
५	कडुवाही	साजनदे	रावकस्यारा						
६	सोढी								
७	से०								

वरय १॥ में सामानहो चुका तो कारसुरवतार सीहूड- विकमसीने मोती-
 दलाय सूहीपोके दूधमे मिलाय गढ़से फेंके फोजवाले खीरसमभ निरासहो
 पीकरवाने दुसथे भारीभीमदेने १ लंघैसे सुरनार्दमें कहाया कि तोतहै फौरन
 लौट आये रतनसीजी नवाब महबूवरवा से पघडी बदल भारीथे हमेशारातको
 सलाहकरतेथे कुं० घंड सी वकानड- का बाजूसी पासो दिह्ली लेगये मूलराज
 काकुं० देवराजके पुत्र केहरवहमीर नानेरे मौजे हायरा मे पडे हारारो रूपडे

पास थे सो बचे बाकी सब शाका में काम आये हज़ारों और तेँ क़तल करके
 दूजे दिन मूलराज रतनसी वकांवर भांवर प्रधान वगैरे कई हज़ार लोक
 के सरया कर गढ से निकले अद्भुत जुद्ध में स्वर्ग गामी हुस नवाब करीम खां-
 अली खां वफोज़ शाही के लोग बेतादाद मरे वघायल हुस गढ में बादशाह
 का थाणा बैठा सोरठा शाह फ़ीरोज़ जलाल मूलरत्न जेशान गढ । शाकी
 की धकराल तेरह से इकावने ॥१॥ जसोड कावेटा दूदा हो तिलोकसी-
 इस मन्शा से ले निकले थे कि फेर शाका करेगे पारकर में बैठे कर दोड-ने लगे
 रसद वका गज़ गढ में न जाने दिया जब पांच में वर्ष थारो वाले गढ छोड-ग-
 ये की खबर ९ फ़कीर जो नवाब के साथ था पोहकारा से बिछुडा उन से सुनते
 हो राठोड-जगमाल खेड से ७०० गाडे सामान के रवाना करके पिंडां गांम भूः के
 पार वपडे में जो शहर से ५ कोस है देपारा टालने को रहा था और रतनुं आस
 राव के इत्तला देने से दूराव तिलोकसी पारकर से रवाना हो रस्ते में पाहू तोले
 के पास बहुत सवार थे आधाराज देना कर साथ ले गढ में दारिक्ल हुये-अर
 गाडा भी पहुंचा सामान लेके जगमाल को कहलाया कि आप जैसे गनायत
 हो सो ऐसी मदद दें - गाडों वालों को पेटीये का गेहूं एक २ घोवा सहज
 नीसेर २॥ होगा दिया जब से भूः वगैरे गांमों में इस तोल का माप मारणा
 नाम से जारी है और भूः का बेघारा भी कहावत रह गई ॥ फेर जगमाल-
 भी आकर मिले और पीछे जाते गांम सांगड-वखोलेचा चारों वीठु के देगा
 थे सो सही रवे पर लैत लाल थे कई पुस्तों बाद महारावल भीम दिल्ली से-
 पीछा आकर तांवा पन्न कर दिया ॥ तिलोकसी ने तोला को वफात दी ॥
 और रतनसी ने रतनसर तालाब शहर से १॥ कोस वासगथी के रास्ते में बनाया



१२५ महारावलजी श्रीदूदोजी सं० १३५६

१	सोटी	रारागधडी	अमरकोर	रत्नसीजैतसी होतकाकुं० धड सीजीरत्नगारी विराजे ॥	मसवतसिषजी
२					
३	मागसीयांगी				
४	राठोड	शकुरराजसी	सेतरावे		
५					
६					
७	कर्मसोत		रवीवसर		
८					
९					
१०					
११					

नगर घटे के पहाड मे कुगरा बलोच जो देव था मारकर लरवी घोडि योपौर
 शहर जालोर व सीरे ही लूट के बहुत सामान व गुजरातसे ५००० भैसां व पारन
 से बर्ग तथा हांशी हंसार व भटनेर से साढा व गौरै माल लाये अलाहाजुलक या
 सदिल्ली के नजदीक मौजै रेवाडी से बंधांपकडी अजमेरेके थारोसे जुद्धजीत
 नागोर का देस छूटा और मुकाबिलेमें तिलोकसी ने कही पीठ नहीं दिरवाई
 जो जो माल लाया दूदेजीने फौर्न दातारीमे दे दिया मुदा कि दूदे तिलोकसी
 ने बहादुरी व दातारीमें नाम किया ॥ दूदेजीका शाला मौजै सेतरावे कार-
 ठोड हापा राजोतसे तिलोकसी चौसर खेलते हाथमे चूडे की चोल करी-
 हापा नाराज हुय कराहसे सांढां ले गया पीछे से तिलोकसी गांम ओटीनीये
 पहुंचकार १५० राठोडो साथ हापे कोमारा दूदेजी नाराज हुपा कि शाकाका

वैरा पूरा करो जब तिलोकसीने मुल्कों में वहां तक लूट मचाई कि मुकाम-
 अजमेर में एक गूजरी दूधलेदार बादशाह अलाउद्दीन रिबलजी के जाती
 को लूटी और खासा धोड़ा लाया जिसपर नवाब कमालदीन लखनऊ व मलक
 काफर मरहटा बहुत फौजले आये कः साल लडनेके बाद अर्जुनहुर्द कि अब
 कालकी जुवार रही है याने गढ में रसद न रही जब रागी कर्म सोतके सिवा-
 मात्र औरतों हर कौमकी को अगाड़ीर वाने दाराय पीछे से ५५०० लोक साथ
 शाका कर स्वर्ग पहांचे यवनवेतादादरेतरहे जसोड उरैने बडीवहादुरी
 करी कि शिर पडे बाद कई यवनमारे फेर गुली नोरवनैसे थडःपडा सो-
 देवली बिलामाथेकी दरजी पूजे है रागीजी ने चारा हूफेजी शादू से जोवरदा
 ई कवीसरथा कहा कि रवीवसरसे आप साथ आते कांचली देने का बचन लि-
 याथा सो अब दो याने श्रीदस्वारका शिरलावो हूफेजी ने नवाब से दूदे जी-
 का शिर मांगा नवाब बोला सांगी पहचानलो हूफेजी कहा शिर बोलेगा चुना
 चेविडदावनेसे मुंड हूस्सा दोहा सांद् हूफे शीवीयो साहब हुज्ज नसल्ल
 बिडःदां माथो बोलीयो गीतां दूहा गल्ल ॥१॥ माथो लाया जब रागी साहि-
 बासत्ती हुई और गढ में बादशाही दरवल हुआ ॥ सोरठा ॥ रिबलजी-
 अलाउद्दीन अर्जुनशाल तिलोकसी । शाको भारीकीन तेरे से अठसठ
 में ॥१॥ सेसेही दूसरां मुल्कों में भी बहुत जगह शाका किया गढचीतो
 डः सं० १३३१ में सीसोदीया रांगा गदलखमरासी वकुं रत्नसी आदिले
 १३ पीढी झडी गढ पावे मुल्क गुजरात में पत्तेजी चौहांन गढ आवू में
 अडःसी पुवार गढ जालोर में बीरमदे सोनगरे गढ पाटरामे अर्जुन सो-
 लंवी गढ गागहूरा से अंचले रवीची जगरे २ ॥ दिल्ली से घडसी जी
 इकेला भारीयो से मिलने को जैसलमेर आते थे मंडावर से १ नाईके साथ

होनेसे मौजे खेड के बागमें जाकर कुंजगमालसे मिले बाद मलीनाथ
 जी पास कई मही नारहे खेड पर बादशाह की फौजे आई और लडाई हुई
 फौजे तो हार कर पीछी गई इसका हाल मुफसल बीरमारा में लिखा है -
 छडसी जी ज़रमो से अचेतथा मलीनाथ जी की बेटी विमलादे जो श्रीसे ही
 परनायोडी यहां ही थी हम बगल करी तो चेत हुआ तब विमलादे ने अरज
 करी कि मे ताबेदार हो चुकी हूं छडसी जी कही मे कुवारा हूं फौजबजगमाल
 की पुत्री कमलादे से शादी करके विमलादे को भी रवली फेर मलीनाथ जी
 को सलाह से दोनो रांगियो को खेड में छोड़ी और जैचंद के बेटे लूराग को
 दू बीकानेर से वरहाड बंगरा के बेटे पनराज को जेशल मेर से बुलकर सा
 थले दिल्ली गए दोनों ही वरदाई आज्ञान वाहु जो धार तो थे ही किसमत
 की खूबी से गजनी बुखारे के बादशाह के इकाकी जीता व मस्त हाथी की जे
 किया व कवांरा जो करामात की थी चढकर तोड़ी और बादशाह को पक
 डाय जिस पर दिल्ली के बादशाह महरबान होकर गजनी का जैतवार खिस्त
 दिया और कहां मांग तो छडसी जी ने माफ माग कर जैसल मेर मिलने की अर्ज
 करी बादशाह ने फारमाया कि गुजरात वगैरे दूसरा मुल्क ले भूरवल मेर मे क्या
 है मगर छडसी जी ने कहा कि बुज्जगो का ही वत्त मिले जवनव महोरा फारमान
 वरि वलत व दोरास छोड़े और की व फील जंझीर वतलवार कयार वगैरे अला
 किया सोले कर जेशल मेर से पूर्व कोस १ मगरे परखेरा कर फारमान नवाब को
 भेजा नवाब बोला तीन हुकम आने से गठ मिलेगा एक शकुनी बोला
 कि आदमी भगव दिये काम सिद्ध होगा इतने में दिल्ली से बबर हुकम लाया
 कि गठ मत देना छडसी जी ने वागजले कर बबरों की कबरे यहां ही करी सो वय
 मगरा मशहूर हुआ फेर नवाब के बेटे को कुंभारी के घर में पकडा जब नवाब ने

गढ तो खाली कर दिया पर बचन लिया कि बाइशाह नाराज हुआ तो
 मैं यहाँ आरहूंगा चुनाने नवाब पीछा आया जब कज़ीर का खिताब व
 नहर कोट बनकारा वगैरे कुर्ब दे कर उमराव किया सो श्री अखै सिंह
 जी के अहद तक तो आठ मिसलों में रहा मगर शक होने से हाकम भी-
 रवा गया था श्री मूलराज जी के जमाने सं० १२२० में हाकम व्यास सत्तराम
 व कज़ीरों ने किल्ला दावद पोत्रों याने बहावलपुर के नवाब को देना चाहा
 तो फलीधी का थान वी जैतसी ने कहा कि खर्च में दूंगा किल्ला मत दो परन्तु
 देही दिया जबसे कोम कज़ीर लायक न रही नहर-किशनगढ-मूरागढ
 नाचरो बरसलपुर वगैरे में कोटवाल कहलाते हैं और जैतसी को बुलाक
 र-वराणत में बसाया फेर शहर में सगपरा कराय नोकरी में रखा जबसे था
 नवी आज तक जी रूजत अहो दीं पर मौजूद हैं ॥

१२६ महारावल जी श्री घडसी जी सं० १३७३

१	गठोड	विमलादे	रावमलीनाथजी	खेड-	। कुबर नहीं हुआ श्री मूलराज जी के कुं देव राज का कुं: के हस्ती राज वैठा ॥	गंगाधर
२	से०	कमलादे	कुंजगमालजी	से०		
३	वाधेली		राव अहारु जी			

शाका के समय मुल्क वीरान कर बहुत से कुंवे वताला बबुराये तो डाये ये सो
 पीछा आबाद करने की पूरी २ कोशशकी पर था जैसा न हुआ ॥ जसोड के
 बेटे पोते वगैरे भाटी फरंट रहे जिससे मली नाथ जी के कुं कूपा वजग पाल
 को जो श्री दरवार के साले थे खेड से बुलाकर पास रखे और कोठडा बबहाऊ
 मेर वगिराब मस परगने देकर आठ मिसलों में नगर बंध उमराव किये

वझहरमें हवेली बनवारी श्रीहरवारके अरीठ पञ्चपाचार
 णी शक्ति देवलने मिटाया और कहा कि कुंमरकी धारदेरवो जहां
 पाज बांधजो तो अखै पुन्यवउमर नाम रहेगा चुनाचे घडसीसरता
 लाव बरागाया वहांजसोड तिमैके बेटे आसकरन चूककियासो शिर
 गिरने ब्राह्मचोडाभगाय गढमें आगिरा जबदागमे रांगीकामलादे
 वदो खवाससत्तीहुई और रांगी विमलादे ने बडी हिम्मतवहोशि
 यारी करी किजसोडजातिवानाम भाटीओंके भायकी बहीसे निक
 लाया वतिमैकी औलाद का गढमें रात नरहेकी तलाक कराई । और
 गांस छांयरासे केहरको लडकपनेमें जंगलमे सोते पर सांपनेकून
 कियाथा प्रतापीजानकार सबीसब बुलाकार राजबैठाया तथा सब
 तरह राजका बन्दोवस्त करके छः महीने बाद तालावकी प्रतिष्ठा करा
 यसत्तीहुई सं० १३९२ मे ॥ सुल्कदहियाका तो सालींको दिया
 पूर्बजसोडो दबाया कि शिकारही नहीं लेने देते उत्तरजैतुंगमहेपै
 को कि जिसने बिरवैमें तन मन वधनसे हाजरीकरी थी भेजा कि दबा
 सके सो तेरा है पश्चिमकालूराग वपनराजको देना न्याहा तो अर्ज-
 हुईकि कुकराजको भीरवैगे यावस जबमहेपे को तो लिखा कि ९
 कागजपूगी पीछे अगाडी दबावे सोतेरा चुनाचे मोजेचनुसे आगोराह
 सीये की सांठपर सवार होकर वीठनोक तक पहुँचेथे । लूराग वपन
 राजको कहा कि सकदिनमें घोडा फेरले बीचकी जमीन तुमारी सोलू
 राग तो गांस पारेवरके चौकीसीमें रहा और पनराजने ४० कोसके धेरे
 मे जोरहाडकी मझादूरहै लेली जबपुरांना गामवालो नाखलसेररा

१२७ महारावलजी श्रीकेहरजी सं० १३११

१ सोढी	सूजिं	गंगा नौधरा	१ सोमके तरे पुत्रोंका सोमदुआ	१ राजकुं० महारागाला
२ चौहान		गंगा अलसी पावा	१ रूपसी २ देवराज ३ रतना-	स्वामीकी परनाया म्
३			४ जेतमाल ५ भोजदे ६ जीवो	ची तोड.
४			७ पर्वत ८ राजो ९ खेतसी १०	२ किजेकुं० देवडे रावको
५			जेसो ११ महाजल १२ हरखो	परनाया गढ सीरोही
६			१३ वीर्मदे ॥	३ कल्याणकुं० रेवडेके
७			२ लखमराजी पाट	रावल जगमालको
८				परनाया
९			३ केलराके २४ पुत्र मघ १३ का	
१०			बंश चला जिसकाहाल अस्म	
११			लिरवा ॥	
१२			४ फलकराके जैसेका जेसा भाये	
१३			मावाडमें उमरावगाम लवेरे-	
१४			वावडी वगेरे तथा सांवतसीके	
१५			सपीया व सांवतसी दुआ	
१६			५ सातल	
१७			६ किजो	
१८			७ तराके गोपालदे कागो	
१९			पालदे दूजे राजपालके ल	
२०			खरा पालकीर्त सिंह साधार	
२१			८ तेजसी का तेजसी	
२२				
२३				

महाराजसिंह

छोटा भाई हमीर के कुं० जैतसी वलूरा कारा को पास रखा था मेवाड में
 कुं० भलमेर के रांगो कुं० बेकी बेटी से जैतसी की सगाई हुई सो परनी जरा-
 जाते रांगो नी साले के भ्रमारी से नाई को ओरत कालिदास कणयलाल
 मेवाडे की खबर मंगाकर ९ मन्जल शौलीतर्फ वड वरसाय पीछा आ
 ते गाम सूजडे- राव रागागदे के प्रधान सांखले म्हेराज की बेटी परनी जै
 यह खबर होने से रांगो जी तो बेटी की शादी गागरा के खीची अचले से
 करी और यहां से श्री दरबार ने कंवरो को कहलाया कि मुंह मत देखा वो-
 जब दोनो साले ९ तो श्री रोही देवड- राव रतन सी वदूसरे सांखले अलराण
 जै को साथले पूगल जाय राव रागागदे से कहा कि ९ कोट दोगे ज्युं हीलेगे-
 दस पर तकारा हुई जैतसी वलूरा कारा वदोनों साले वगैरे ४ सो मनुष्य
 दुतर्फे मर्गा गस रावजी काला ओढ तीर्थ न्हाय यहां आस श्री दरबार श्री
 दिगरायजी के दर्शन को पधारे थे रावजी को गाम रासलो में बैठाया आप
 मांत्मी को पधारे काला उतराय फरमाया कि कुवर आपही के थे बेवकूफी
 से मरे अन्दे शा मत करो फेरने जलमेर लाय शरी पावदे सीखरी जब पू
 गल गस सांखला म्हेराज अलराण के मरने वरावजी के वोललां हां रो
 बिलाई धरणी मरे है से नाराज हुय रांठोड- अर्द्ध- कमल पास जा रहा ॥
 कुं० केलरां नी रांठोड- मली नाथजी की पुत्री परनी जै वहा साले जगमाल
 से आपके बैन की सगाई करी श्री दरबार नाराज हुय नब लुद्रवे में व्याव
 कर के केलराजी यहां से रवाने हुसं सो शहर से १२ कोस पूर्व आशराणी
 कोट की नीवदी फेर सिगराव सातल महपालोत् की सलाह से ७ सौ स-
 वार साथ मुल्क का बन्दोबस्त करने को गस सो गढ मस परगना कई तो
 हुकम अदूली से और कई अजसरे नो कब जे किये चुनाये अवल तो

विक्रमपुरमें दरबल कर बड़े भाई सोम को कोट की एक जगाम ग्राधी ही
 तथा पली वालों का गाडा साथ था सो भोजा व बाप वगैरे कई गाम वसाए
 फेर खर लागी कि राव रांरा गदे की सोढी मुलतान के नवाब को बुलाती है
 जब हिकमत अमली से गढ़ पूगल में का विज हुय सोढी को भीत में चुनाई
 और सोढे सादी करने की तल्ला क करी सो १८ पीडी बाद जूझार सिंह राव
 विक्रमपुर व धनराज राव बसलपुर का परनीजे - कोट मरोट व खारवा
 रा में पका अमल करके कोट नांनराग व मुंमराग बाहरा में थाराग बैठा य
 किले देरावर में दरिबल हुय दरीया व तक हदूद जो आगे थी कायम
 करी पीछे कोट किरोहर व माथेला व मुंमराग बाहरा भीतावे किया तथा
 गढ़ भटनेर दरबल में लेकर किसी कदर प्र० हिन्सार में भी अमल किया
 अलाहाजुल कयास कारर बाई कामुफ्रसिल हाल प्रलाहरा इतिहास में
 लिखा है ॥ १ केलराजी के बहादुरी व अकबाल की खूबी कहां तक लि
 खी जावे वाद शाही फरमान में राव किलजी लिखा है बड़े ही प्रतापी व
 स्वाम धर्मी हुय केलराजी के छोटे भाई तराजी का कुं० राजपाल वा
 उम्मेर साथ रहा उसको १ गढ़ देराग कहा था परन्तु दोनों स्वर्ग बामी हुय
 केलराजी का बडा कुवर चान्चाजी राव हुआ सो भी बडा बहादुर था चुना
 चे वजोर कालू से भारी जुद्ध जीता फेर राजपाल के बेटे किरत सिंह ने वीष
 से का घोडा ४ चुराय जो दये लूगे को सो पा खोरवरो का कट कलूगे का
 ५० घोडन व बित्त ले गया जब चान्चेने खोरवरो के राव कालू थिरपालोत के
 वफात दी उसकी पुत्री किरत सिंह को परनाय मुल्क ले दीया फेर किरत सिंह
 के बेटे पोते मौजे बूर क पूरथल सलेमपुर अर्डकपुर वगैरे में रहे बादशा
 ह अकबर ने इन्हों को तुरक किया तदपि कई पीढी तक भाटी पैकी रीत

बरतेथा यानेदीवाली होली आखा तीज दसेरे कोजैसलमेरकीतरफ सलामकर गादी पर बैठेथा । चाचाजीजैसलमेरहाजरहुसश्री जीसेसलामकर रावपिरो का शर पावले गया बाहजंझ बाघेकीनाल सपर सहतासे कुमकलेकर गढसातलमेर केराठोड ब्रजाग केतीनो कुंवरो कोपकडा कईराठोड मारेगये तथा ३सौ घरसाहूकारो केलेजा कर पूगलदेरावर सुमराबाहरा में बसास और ब्रजाग केतीनो पुत्रो को परधानो केपरनाय पीछेसातलमेर भेजे । केलगाजीके २४ पुत्रो मे १३कावशचला और बडे प्रतापी हुस केलगा बरसिष रवीया- किसनावतवगैरेखापोमशदूरहुई तथाबरसलपुर-विकमपुरवगिरराज सर ग्रांधी बागडसर सिखडां बावडीवगैरे बहुत सेगाम जो इ० हांजा मे है शजरे व नकशे में लिखे अलावेइसके इ० वीकानेर वमारवाड में बहुतहै । कु० विक्रमायत् भी विकमपुरके रावबडे ही दातारसूर्य का दृष्टी वबरदाईये १दिनतालावपर इकेलेखडेये १चारन हुप्रम- नों के सिरवानेसेआकर कई छोडे मागे कि इसीवक्त दे जबसूर्य काआण धनकिया तो १४० छोडे आमोजूर हुसजब १सालकारवर्ष भीदेकरसबघो- डेचारनकोदेदिये-

१२० महारावलजी श्री लखमराजी सं० १४ ५१

१	सोडी	भीमकु	रागराजपाल	पमरकोट	१	वैरसीजीपाट	१	राजकु०
२	बाधेली	नर्वदे	रावजसपाल	सारापुर	२	रावतरूपसीकारूपसीइसकेकु० मडलीक	२	चपापु०
३	भाली		राजाजैसल	हलवद	३	राजधरकाराय धर	३	मोतीकु०
४					४	सादूलका परबत		
५					५	बूभेका कूभा		
६					६	अमएजी		
७								
८								

काजीमलनेरिखीने रावीका
रायसेपकड हिलापरान्न
बाएशरनेरकाफइ। नसेके
रापरकराफइसे सोप्र भेदे
काफलायाभेकरवदे ॥

सुजानसिंह

श्रीलक्ष्मी नाथजी का स्वरूप मेड़ते में जमीन से प्रगटे और सेवग से राफल के गाडे पर यहां पधारे तब गढ में मंदिर बनाय सेवा महाजन महेसरीयो परस्व नितर खर्च कारज से मुकरिग के अलावा न्यात में शादी गमी व जमीन के बिकाव वगैरे पर लाग व मनोर्थ भेट वगैरे का पैदा खर्च का भंडार व हिसाब का संभाल १२ ही से ठरखते है परन्तु चंद साल से हिसाब नही हुआ हज़ारों रुपये लागों में है सो अब रसीत दबीर होगी कि पैदा बधै वहिसाव हर वक्त साफ़ रहे से ही टीकमजी रगा छोडजी आदि का भी होगा - और पूजारा सेवक मजकूर के बंश का १० ही धुडा हर महीने बारी से करता है सं० १४९४ में प्रतिष्ठा घाने भारी जग व बहुत दान पुन्य किया जब से राज का मालिक श्रीलक्ष्मी नाथजी व उनका दीवान महारावलजी है जैसे उदैपुर में रावल बापाजी से आदिले मालिक श्री इकालिंगजी और दीवान महाराजीजी । व्यास राम रिष देवरिष दि ली से आस श्रीजी के अदीठ पञ्च मिटाया जब पुरोहित पैलाज की बेटी लखुवी रे की वैन वगडी से देवरिष का विवाह कर पाट व्यास कीया उसके ध्वरो का वारीब २२०० घर है १ पोपे का जोधपुर शहर व इलाके में १००० व दूजे जूडे का बीकानेर ३२५ व तीजे नउं का यहां व देशावरे २०० व गदा धर का इलाके किशनगढ में है नउं के परपोते हरखे व्यासाई छोडे और भतीजा मधुबन काशी जी से विद्या पढ आया जब महारावल श्री अमर सिंह जी ने पाट व्यास किया उसकी औलाद के हनोज है ॥

१२९ महारावलजी श्री वैरसी जी सं० १४९६

१	सीसीदगी	अगरकुं	रावपूजाजी	मुंगरपुर	१	चाचोजी पाट	१	भाराकुं	वसुंजी
२	सीटी	साजनकुं	राणा नोहर		२	जगेजी काकेलायचा			
३	राठोड	पेपकुं	राणा भोजराज	गुडे	३	मैलेजी का भेसडेच -			
४	चावडी		राव देसल		४	वराारजी			
५	झाली	राजकुं	राव अलसी	बठवारा					
६	चाहान	सजकुं	राणा भोजराज	वाव					

गलतनामा

जो

भुद्धाशुद्धपत्र

जोकि प्रथमके छपनेसे मात्रा चर्नके लिखाय मजमूलमेही बहूत गलतये रही सोतो पाठकजन
त्तमा कराये और जो दृष्टामे लिखा है सो किताबमे सो फारकलमसे लिखा फेर पंढगे तो ठीक
होगा औ गौरीसीदी दो लकीरो के बीचमे एक प्रथम तो सफेका दूसरे मतरका तीसर फरि
मे जितवे हर्फ से पाँछे गलती है सो हर्फ भी लिख कर फेर चर्न लिखे हे जिसे विदीये नगी है
सोतो गलत औ साफ है सो सही समझेगे औ भ्रमगनात् व देहात् की कौफि यन मे हाल चर्न
तो लिखा है सोतो दुवारह छपनेमे ठीक होगा इसमें कहा तक लिखा जावे =

प्रथमभागतवारीखमें

सर्वीनीच) वेकुठवासी ॥ १६-१३ ॥ नुहे हो ॥ २-२७-२० ॥ ही ॥ ३-१-३२ ॥ सापदाको ॥ १-२-२७ ॥ डांके
व ॥ ३-११-१० ॥ ठपा ॥ ३-१४ ॥ ००३ ॥ नि वंटा ॥ ३-१७-३० ॥ के) सिवाय ॥ ३-२०-२९ ॥ ले) की ॥
३-५-२० ॥ सु-हुं ॥ ३-५-२६ ॥ ही) युधमे ॥ ५-१-१ ॥ आ) म ॥ ५-५-२६ ॥ ई) की ॥ ५-१४-
लो) ग ॥ ५-१६-१७ ॥ वि) रा रुध ॥ २-१६-२० ॥ ने) से ॥ ६-२-२९ ॥ र) के) कू ॥ ६-६-१४ ॥ मंग डाठा ॥
६-६-२२ ॥ वा) यसायरात् के महसल ॥ ६-१५-७ ॥ म) आलाहकनसे ॥ ७-१३-३२ ॥ हे) इस्मे भी हे ॥ ७-२६-
१० ॥ हे) पणतवारीख जो कि चद्रयश अनिपगोच यजुर्वेद माध्य नीशारवा गुरुगर्गाचार्य ये
पवशांडित्यस्य है ॥ १०-१-२६ ॥ १) न ट ॥ १४-२-१३ ॥ पा) मोवश बेलीया भाट जो जागा ३० मेवा
डमे कोमवडवा है औ राणीमगा ३ हाजा गा नीरवसे ॥ १४-२-१२ ॥ हुहा मय
नही धरलाटी स्वग धाय जस पाटी पाटिया जि के राजिद भादी राव ॥ १६-१६-३१ ॥ ही) दु० पमरोणो
वरसानय गटजेसल नदगाम रानी सोदी राधिका शुर्यद जादम सोम ॥ १७-८-२३ ॥ कु-द ॥ १७-
८-२७ ॥ ली) कागो गली है ॥ १७-२२-१० ॥ घा) पुर हुई ॥ १८-३-२ ॥ दा) दे ॥ १६-६-२१ ॥ मे वारा हो के ॥
१६-७-३२ ॥ इ) तामे रतनु को बद्र भातो लाई सो वाहरुचों को चौर यतानी थी पर देवराज नू जो हे
नहार था ॥ थपड मारी कि मरजे है वा भी इये हास चौर ने दाने कि नारो नयस भागिन हसवाली
कि देवर थे भूराव हुया हुसो इस्मे सक होने से १६-१३-१० ॥ वा) रट ॥ १६-१६-६ ॥ जी) पाच ॥ १८-२-
२१ ॥ ग) जेरां ज्या ॥ २२-८-५ ॥ मे) कोठा २ कोठार ॥ २२-१४-२ ॥ ७) नि ॥ २२-२०-१० ॥ फो) राजवेसेट का
घर ॥ २२-२२-१० ॥ हो) कर ॥ २३-८-१३ ॥ रो) आव फेरी पाण ॥ २४-७-१४ ॥ वा) हुं नय ॥ २७-२०-२७
स) चडाले बिजेरावका ॥ २७-२१-५ ॥ व) परकोटामे पत्थर पै स काहे सो विरामसे ३३६
वर्ष पीछे भारतीजी से भाटका लिखत ये सो दे ॥ २७-२१-१४ ॥ हु) स थ ॥ २८-२-८ ॥ जा) उस समय जमर
कोटमे सोटा समराजी दानारी व शूरतामे फाद ही था उस समय धनी होने का ॥ २७-२०-२१ ॥ रो) जो
सिगे ही से पर नीज पधार नय कु ने धउ वा की सलाह से गटमे नही अनदीया सो नलाव पैर हे ॥
कहा कि गोला सखता पावेगा न्यू ही हु मा कि ३६ ॥ २२ ॥ १२ ॥ माण) थां पी ॥ ३० ॥ २२ ॥ २३ ॥ आ) जा नि
लोकसी की पगुली पराके पगूटे व पगुली के बीच मेलका नोडी सो क्लिक सीने सताम र्य
सो गन्ध कर्क देश छोडना चाहा तव द्वाजोन म्या फनाग कर कहा ॥ -

॥३०-१०-६ था) १दाहूहाजीने ॥३०-१०-६ था) भुवंग को पगसे लताडा तो कू भीसही कीया सो समस्याक
 री कि ॥में जाणं दे सं लीयो- (हुंका) विष हर ऊपर पाव भो क्षिहली थी मोतणी भावे खाव सखाव ॥
 उनसे ॥३०-२-३६०) खारा तव परि द्या से यह चान हो कर ॥३०-२-३०३) श्री. दड सीजी हीलडे सो
 ॥३०-२-२६० या) जिसें याद शाहन भंगी की चाडी से लिखा था था- ॥३१-२-१० या) श्रीं उसे वहन
 सृजिय सब सामान देकर सुसराल गां ० अमर कोट पो चाई जद ॥३१-२-१० म) रं कुम ॥३०-२-३
 पा) जो लुइ वा के रह वास से है ॥११४-४ रा) श्री मना ॥३१-३-१ रा) जस वंत ॥३२-६-१० द) जै दे ॥३२
 १४-११ व) ऐसे ही वीकाने रके लीये श्री कर्णजी का वेष था कि पूगल से बुराई वीदासर पै फौज श्री
 रगत की मोल पाश स्वनी की डुकान वनी व के पेड का होना श्री रवजी र खुलना से राज का अरव
 निया रज विगा सो हुआ ॥३० ॥१५-६ डी) कल्याणपुर उ० ॥३० ॥६ जी) तग दशामे भुसरार सो
 जैन वर रथे वहां कुं अमर सिंह जी जन्मे सो आंवर भंडार ते द्रव्य मिला जव दान पुराप कर्के जनी अत
 रबी श्री ० ॥६३-१०-७ आ) जव सो दी सती होने आप दीया कि इस राज में निज स्वार्थी सुखी श्री
 प्रभु स्वार्थी अत में दुखी होगा सो ऐसे ही हुवे हैं ॥६४-१-११ र) वप्रोको गुरु ॥६६-१-१६ सं-१६
 १७ उ० ॥६७-२२-३३ व) दान ॥६८-१-१६ से जो मा शात भाई था ॥६९-३-११ म) देही ये वें ॥७१-२-६ से
 श्री गज सिंह जी साहवों ने श्री रत्न सिंह जी साहव से पीला दिलाया परंत वने उन्हे के रहा श्री ॥७१
 ७-१० डे) वेटके ॥७६-७-१६ का) वेटा ॥७१-८-४ स) पेंड इष्ट मित्र ॥७२-२६-२० कि) महा सिंह जी
 के ॥७२-१६-२६-२) में तो ॥७७-६-३ ज) से कीया ॥७४-२२-१० द) सफे १२८ ॥७५ ॥६-६ देव चंद ॥७५
 १२ १२ दे) वेडेर देव चंद ॥७६ श्री देवी सिंह जी के अहलखाने में कुदत हैं डाटे रघु दी जो मिडे जघों
 हिन दे डि सदे हैं ॥७८ श्री राणा वत जी) इन का जन्म विहा विधा न स्वर्ग वास महीने अषाढ ही में हु
 आ- ॥८०-४-५ ड) सो गां वासाणी सो ॥८०-१५ १५ व) वोलें सिंह गवोला सि ॥८०-२२-७ त) में
 वें वमून ॥८०-१-१० जी) कीतो महा के वरावर श्री महा के नीचे ॥८१-१३-२३ ए) तथा किस नगर से
 निहता माई दास जी भी इसी काम को सोगत व खरीता ले आये थे ॥८१-१७-३५ हे श्री वूटी इंदोर -
 रत्नलाम भरतपुर वगैरह से टीका तो नहीं तहरी जारी है श्री डंगरपुर विहा वहु आ परंत तहरी रव
 रीता की नहीं है ॥८४ ॥१३-२३ वां) से ॥८५-१०-३३ जै) वीदासर दा चहादुरा सिंह जी व ॥८६ ॥१-६ रे)
 सब सामान ॥८६ ॥१-२६ श्री) केशरी सिंह जी व श्री ॥११३-१-५ ड) अरी को ॥८६-२-२४ या) सो यह हैं
 कि वशी अत नामा में श्री हल संसही कराय लिखा था है कि नथमल जी मुख नार व को नल में देणी
 रखे ॥११३-२०-२४ ये) तव ॥११४ ॥१२ सुरु में) श्री केलाजी ॥११४-२२-३४ री) सो ॥११५-३-२६ हे) श्री
 १५-६-२७ ये) परं ॥११७-१२-१६ ड) श्री जिसें से ॥१२१-२-५ तौ) पूर्ण कर्ण प्रतीत ॥७ छप्प सीचाणे इ
 र समय दोड कपोत देवायो ।

॥१९२२-अतमे) रोसीहीनक से श्रीभुजीकोवीनती करी दूहा-खांगकीया विध २ सकल चौरा
 सी लख चाल कृष्ण कायती भीभकर प्रहमनही तो पाल ॥ श्री श्रीजी साहवोंके ५४ रईसो से भिन्न
 थी सो सब साहव सल्ला लेते थे ॥१९२३-६-१) महा रावलजी श्री वैरी शालजी साहवोंने रावलो तो
 की वेदी डोलने देने की मनसा से महा राज श्री प्रतापसिंहजी सहा से जो सं ४४ मे जेसल मेर प्राये
 थे सल्ला करी तो कहा कि हमने तो वेदी गा केठा को दी है जव श्री मानसिंहजी की वाई का वि
 हा कुडले रावजी से डोगे कराया कि अब राज घी बरावलोन सारी खे गिनायत को घरे बुलाय क
 न्या परनायदे =

॥भाग दूसरा युग राफियादिहालान्तमें ॥

॥१९२०-५-७ हे) सो राक चर्न से लिखा है ॥१९२०-३-७ न) अ ॥ १३७-२) श्रीजी साहवो ने सेठजी
 को आबुजी पै बुलाये तो भीन प्राये ॥१९५०-१३-१४ हे) थली पीमे भजान भनुष नहीं चलता सो
 कि मागा चूके सो रेतमें दब मो है ॥१९६२-१३-१०) म्होर जात वेदी म्होर को ही जदै हैं ॥१९००) सू
 ना गां की कैफियतमें) खाडाल मे गां २४ सो २० वस्व ८४ हुरा ये सो डुरव सू सं १६० से घटने
 लगे फेर सं ८८ मे श्री राना वतजी साहवाके धउवाकचोलाने गा खीवल सरमे ड्र को हड्डो से पि
 टवार तव सब गावों कनलाक कर निकले व आपदिया कि हमारे गावोंमे घटे ही गा फेर श्रीजी ह
 गुर साहव गा जे सराणी पधार कर पीछा यसाया पर घटने ही गये सो थोडे काल मे चीज ही नहीं रहे
 गा प्र वापवधे हे सो २४ खेडे से जुदे है ॥१९६९ सूना गावों की कैफियतमें) इन गावो के केलण
 विकनपुर रावजी की सल्ला से रूपावत का कटक लाया सो चारुटा भोजराज मारे गये जव
 गा वीराण डुरो सो जमीन दे कर वैर कदा श्री ठा जेठमलजीन पिता के वैर में रावजी को ही मारा
 श्री श्री दरवार से गावो की सीमा ही निकलवादी पर केलण गावो में नहीं वसे- राजकी रकम
 टीलाडा नुता ति शालान जराणा ३ पीडी सेवाकी ल्हेना है ॥ सफे १८८ वाप स १९१ सीहडस-
 १९२ लाठी ॥ ये तीनु परगना समूल ही लिखा है सो नम्बर (१) १) (फ) काजुदा हे चीच मे लकी
 र खींच कर हासीया पर प्र कनी ॥२०० मे गलती जादे हे ॥२०१-१६-२२ रु) गांडे फी गांडे जित ॥२०२
 १९-१ व) ह ॥२०२-१५-५ न) रामगठ ॥२०३-५-२० र) घ ॥२०३-१०-२५ ल) गुलावागिरने ॥१
 २०३-२०-८ न) ई तीन सार से तीन तक ॥२०४-७-२२) हक हां का ॥२०५-८-३० तो) धौं भा ख ॥२०६
 १८-२० मु हा दा ॥२०७-२१-५ र) खम व व ॥२०९०६-६ जी) के सहन में साहवो ने ॥२१०-१४-७
 कं लाव ॥२१०-१७-८ ज) राजें ॥२११०-२१-४ वा) काल्का जुनि मे चौया ॥२१३-१०-८ के) दगा गो
 रो रे की मो कनी रामजी के =

॥२१३-२०-१५स॥ वेंसें ॥ (२१६-२१-१६स) रेंदे मल ॥ (२२५-६-८ली) वॉलें ॥ (२२५-११-१६स) सीपा
 ॥ (२३३में खेटे बहुत हैं ॥ २३४-१६-२७द) गींभें में चान ॥ २३६-१०-१भी) औस वालों कं ॥ (२४५-४-१
 डि) षडे ॥ (अजायदवातोंमें) तथा पाती भी कजाल ही करते हैं कि चाल व शिकारी तो जनावा का
 खोज भार व पानी में से निकालते ही हैं और बाज २ सखसतौ चौ पापे की नसल पांच पुसका भु
 रागव परम की चीतते हैं व १ पागीनें चौरके हाथका च न आटे में देखा था फेर कडे वर्ष वाट र्गी
 का हस्त आटे पै लग सो देख के पकड़ लीया औ पशु परवेरुका खोज देख के नर मारी व गर्भ वर्ता है
 न्यु कह देते हैं औ बाज २ रोसे भी है कि दूर र्गामों की दिशानक शांभं लकीर ज्युं चताते यजरुतमें
 सीध परजाते भी है - औ रोसे ही थे किल्ली का गान दूर से सुन कर उन्में कुंवारी पनीं व हामला
 या विधवा वौरह जैसी २ जि त्री रहे कहेते थे = ॥ (२५४-२१-१३न) मोनी खची दर्जी जाने हें ?
 औ चैत वद १ छालो डीकी वाडी में श्री भेरुजी के यान मालियों का मेला व धूम रहते हैं सो पुफर
 ज्युं कि ॥ (२५५-१०५स) तंकेत ॥ (२५७-१-६को) नांयें ला व ॥ (२५८-२०-२४न १६ १६ ॥ (२६८-
 १५-३ ला) लीका ल ॥ (२६० अंतमें) दूहा - तज वेद रह इहु ल निय सित माधव मास लष्मी वर
 सेवक लषम किय पुर्न इति हास ॥ (पुनः ॥ गृह पुग नीधि अजल मधु क्लम चौथ कुज स्वात् मत वइ
 म्हां मद सुगदमें छप कर भयो विख्यात (१८२ विष्मपुर का दो इति हासमें) १ रहें

तीसरा भाग मौल बीजनिंठी कही लिखा है सोधना जरूर नही

॥ अधी प्रामें ॥ (२-१-१८में) रहतौ नने खा दी जाये ॥ (२-४-६ ह) नो करी में रखें तो ननखा दी जाय
 ॥ (२-१९-२२से) १८ आदमी ॥ (२ अलमें) सोत नोट व इ० सिंधमें हैं ॥ (५ में नीमा नामी ॥ पं
 में कीरें कीर्द ॥ पं ३ में स्हरें गैरें हरां सहरें गोर हरा पं ६ में जांयों जांया ॥ पं ८ में हीते हैं कडा
 ते हैं ॥ पं ९ में भंजिंटे भहेटा ॥ पं ११ में हंची चधी ॥ औ बहा का पुत्र काक व चवन के आन्यम रहने
 से काक नय व चुधी का काला कही ज्या ॥ जमीमानं १ पिछला हालमें ॥ (१-४-११ रा) जों ज
 ॥ (२-६ अंतमें) बुंराई वडु आई ॥ (२-७-११ सहरवान ॥ (१-१० अंतमें) वमें वडे ॥ (४-१६-२३नें)
 लंगोयां लीया ॥ (५-४-२७ रा) जों ज ॥ (५-२१-१४ व) भी ॥ (६-२-१४ क) ही ॥ (६-१-२० सी) जों न
 ॥ (६-५ अंतमें) हें की ॥ (७-५-११ व) टीहु ॥ आदिके सफा ४ तकमें ॥ (२-१०-१० ही ॥ (२-१८-१० गो)
 रें ॥ (४-१४-२६ ज) नै ह

४-१६-१२ के, मता व स्वात ये ॥ पिछला हालमें ॥ (१-४ अंतमें) ३-३ ॥ (४-२०-२ ना)
 वि व ॥ (७-१२-५ क) वि दः ॥ (५-१६-३ के) थु ॥

मंडोर के राठोड राव रिड मलजी तो गढ चौतोड में मारे गए कु० जो धाजी भाग कर यहा आ रहे मंडोर मे सीसोदियो का दरवल हुआ था यहां से फौज साथ देकर मंडोर लेदी जब जो धे जी कहा दोहा सुपहन वांगढ वैर सीपिड आरि देयरा प्रबोध । राव मंडोवर रावियो जे सरगा गत जो ध ॥ १ ॥ तवै कमध लख मरा सुतन नरपति माड नरेश । निज ऊपर कर जो धने दीध मडोवर देश ॥ २ ॥ राशियों के नाम से मंदिर सूर्यजी वरत्नेस्वर महादेवजी का व कूवा बूलीसर उरफ बुला वरांगीसर गढ में बनाया ॥

१३० महारावलजी श्रीचान्चोजी सं० १५०६

१	राठोड	इगाभैकु०	शेखाजी	गढईडर	१	देवीदासजी पाट	१	पेमकु०
२	चौहानहा	विलैकु०	राव जैतसिंह	मांडल गढ				
३	राठोड	रूपकु०	राव जोधजी	मंडोवर				
४	देवडी	विलैकु०	राव सांरदास	सीरोही				
५								
६								
७								
८								
९								
११	सोढी	जामकु०	राणा प्रियाग	अमरकोट				

मसौ

अमरकोट परनीजरा पधारे सोढां चूक किया दोसौ भाटी साथ पिंडां स्वर्ग सिधाए कुं० देवीदासजी फौज कर गए राणा मांडरा मस सोढा ५ सोको मारे वैर लिया और गढ पाड ईटां लाय महल दे राशर में लगाई पीछे राज वैठे और सोदाता वेदार्गि मार-

१३१ महारावलजी श्रीदेवीदासजी सं० १५१३

१	सीसोदगी हलकु०	रांराकुंभाजी गढचीतेड	१	जैतसिंहजी पाट	१	पहोपकु०
२	सोढी सदाकु०	रांरासुजाराजी	२	घडसी		
३	झाली	राजजोगीदास झालावाड	३	शातलकाशातलोत		
४	चौहान दाडमदे	राव कांनड	४	पातल		
५	गोडं	राजामालदे अजमेर	५	मदेकामदा	२	रामकु०
६	चौहान भांराकु०	राजजसवंतजी	६	ठाकरसीकाठाकरसोत		
७			७	रांमुंकादेवीदासोतगाम		
८			८	सगाधरीमें		
९			९	दुदेकादुदा गामडा		
१०				चरी याने सीसोरी		
११				पर बेड। बकुवाश्च		
१२						
१३						
१४						

सिवनदास

चानियावबलोचमुल्कलूरेया पिंडापधार १३०० कोवफातदीभारी प्रवाडगे जीते । बाहडमेरोवकोटडीयोकोचप्रमनुमाईकरके महेचोसेदंड वडोला- लियावहांहीरवबरलगी किराठोडरावबीकाजी - पूगलकी जमीनमेंगढ बनातेहैं फौरनवहांपधारेवीकाजीतो भागगण गढमिसमार कर किवाड- तोवरसलपुरके दरबाजेमेंलगाया तुलांटयहांलाकरसदर सायरमेंरबी- वादपूगलरावजी श्रीदरबारकोतो धोरवादेतारहा किगढनहींहोनेदूगा-

मगर शक्ति करनी-जीकी मरजीसे वीकेजीको मना नकिया जिससे ग
द वीकानेरवनगया ॥

१३३ महारावलजी श्रीजैतसिंहजी सं० १५५३

१	बाहडमेरे	लारुमेरे	रावतरतीजी	बाहडमेरे	१	कर्मसीजीरिन १५५१	१	मानकुं० श्री-
२	सोटी	सिरागा	वैरसी		२	जवैरा		रीही रावमा-
३	राठोड	सूर्जकुं०	रावतवशीदा	इडर	३	लूगाकर्णजी पाट		लदे कोपरना
४	भाली	जसकुं०	राजाभारंग	नीकडी	४	नरसिंहदास		या -
५	चावडी	राजकुं०	रावसावत	जसपुर	५	मैरावरा	२	वीरकुं०
६	हाडी		रावकांडदे	माडलगढ	६	मंडलीकवाजैतसी		
७					७	हगत		
८					८	मैराजका स०		
९					९	वैरीसालक स०		
१०					१०	प्रतापसिंहजीका सथाट		
११					११	भानीदासका स०		

गारास

भाटी, सोठे बाहडमेरे मुल्क तो लूटे ही थे खासकर रवरीगैमे नजैत शरसेकु
जी काघोडाहीले गये तो भी दरवार नेकुछ नकिया कुवरजी नाराज्ज दुस नवा
बगलीरवां पासखंधार गस और पगडी बदल भाई दुस इसअरसेमें वीकानेर
की फौज आई शहरसे ३ कोस त० राजबाईपर कई दिन रही फेरगाम सोम
ले आई लूटवार पीछी गई १ दिन श्रीदरवार शिकार पधारे थे १ वहाला-जहां
जीगरा है बाहडमेरे रावतकेतानेपर सं० ७०मे तलाबकी बुनीयाद डाली-
वजैत बंधवंधेका नाम दियाकाम शुरू हीथा किपिंडांस्वर्गपधारे कर्मसी-
जीगादीविठे बाद दिन १५के लूगाकर्णजीखंधारसे २ सोपठानसाथ लास-

कमिसेजीको उठाय आपराजविगजे पठानयहां रहे सो सिपाही ख नधारी मशहूर हैं ॥

१३३ महारावलजीशीलूगाकराजी सं० १५८६

१	राठोड	हंशकुं०	राव जैतमल	गढईडर	१	मालदेजीपार	३	रामकुं० जोधपुर	मशहूर सिपाही
२	सोढी	जामकुं०	राणाकुंभक		२	हीमलीदासका रावलोत शिराकरनीतमरोदीवा -	२	मालदेजीको पर नाया -	
३	राठोडवी	अमृतकुं०	लूगाकरा	वीकानेर	३	रायपालका स०	२	उदैपुर म्हााराणा	
४	भाली	सूर्जकुं०	राजाचंद्रसेन	वीकानेर	४	सूर्जमलका स०		वैसिंहजीको पर	
५	सीमोद	शरसकुं०	महाराणासां	गढचीतोड	५	रायमलका स०		नाया	
६			गाली		६	हुर्जनशालका स०	३	ऊंमांदे जोधपुर -	
७					७	शिवदासका स०		महाराजमालदेजी	
८					८	दूदो जीका दूदा		को परनाया म्हा	
९					९	हरदासजी		राजकहीमितो भा	
१०								रमली के वास्ते	
११								आसथेजिससे	
१२								महाराजसाथन	

भाटी सरदार सायरके रूपये बांट लेते थे सो रुज गारकर के सायर में आना ही बंद किया । जैतबंधतयार हुआ परन्तु केलबनारहा जब गढमें कोठार भव राडावडन खीरसर वीरसर विलावल अंन पूरा मीडी बगैरे बडे ही नामी बनास । गुरु पलीवाल हरजाल था इसवक्त पुरोहित खेतसी खेतपाल के दृष्टसे वेदीके नीचे गधेका मुंडबता नैसे पुरोहित गुरु हुआ सो है ई प्रतिष्ठाका मुल्कों में द्रशितहार भेजा कि जो जो हिन्दु जमाने की गर्दससे मुसलमान हुए है इस जिगपर आवेंगे हिन्दु कर लिये जावेंगे चुनाचेसे मारी

हुआ और वाहर मेरसे रावत जी हाथो मे अठी चौ डाल कर हाजिर हुआ श्री दरवार ने फरमाया कि अदेशामत करो तुम्हारे ताने से यह भारी काम तुरत बन गया । वधके दूसरी तरफ वागलगाया सो बडा वाग वबाडी कहीजे है वध के नीचे रामाल नामी नालामे ज्यादे वारि शसे पानी भांवरखाय गिरने की अजब कौनियत होती है और ज्यादे वर्षा की सिफत है कि वाडी भवरीये आई परन्तु बडी कवाहत है कि वंधका पत्थर अनचडके कारणा पानी निकलजाता है सो गोकनेको अगाडी दूसरा वध घडे पत्थरोका बधाया परन्तु नरुका अब गौर करने से मालूम हुआ कि दोनो वंधोके बीचमे पत्थर भरे है सो निकाल कर बीचमे या अगाडी मिट्टी भरा दी जाके जरुके गातेने वायश के सिवाय वागव बाढीयो के कुवो मे पानी ज्यादे रहने से बडा फायदा राजव मालीयो वगैरे काहोगा इसकी लागत भी कुछ ५ हज्जार रुपये तक है जिस्मे तालाब बहुत खुदेगा व वाग भी मिट्टी गिरने से बधजावेगा सं० १९४१ मे इसकी तजवीज भी करी थी परं कहतसाली यांने नहीं होने दी रामनालकी हवा सरद व वाग की सबजी आबु जीसे भी बढकर है मगर जगह बहुत तंग है इसबाग का आंबजोधपुर महाराज मालदे जी कार गये थे वदलालेने पूगल रावजे सिंहजी को भेजे सो मडोर के बाग मे ३ दिन रहे फेर हर पेडके नीचे तो १ कुल्हाडा और ऊपर १ कापडारख कर चले आये गात है कि वाडी यानही ब्रह्म वैरावत ओढाडे की धो रुपगार तथा कोठार से है कि जोधपुर महाराज श्री तरवत सिंहजी साहिवां भी देखकर फरमाया कि ऐसा किल्ला व कोठार दूसरी रियास्तो मे नहीं है सं० १६०७ मे नवाब अलीखां जो श्री दरवारके पगडी बदल भाई थे खंधार कूटनेसे यहां आय कि शनघाटर है और कहा कि हुसोरानी साहिवांसे मिलना चाहती हैं दरवार ने कहा अच्छा जब महाजान गढ मे आई तो दगाथा फौरन रागीयो कतल की गई

और कई अधर्मीयों को मारकर श्री दरबार दोसो भाटी दोसो खंधारे १ सौ
दूसरे लोग चार्गा भाट पुरोहित कामदार वगैरे साथ स्वर्ग पधारे इस असे में
कुं मालदे जी बागसे आये नवाब को मारे बांका लोग जो बचे थे किल्ले से निकाल
दिये ॥ गीत ॥ अली बिना कुगा दुंग आंग में माल बिना विधम अली मरे ॥
यह प्राका आधा हुआ कहते हैं कि इस गढ में साढा तीन प्राका होगी जिसमें
१ मूलराज रत्न सी का दूजा दूजे तिलो कसी का और आधा यह हुआ १ फेर
ज्ञानी जाने कब होगा पुरानी सारवी है किः हल चल दुनी हे कं प हुय ही सी-
दई का फेर। बाधो रुधो जावसी जादवां जैसल मेर। १। ऐसे ही सारवी थी कि ॥
आथुरा उ उगुरा पांचे को से गांव । औ पालटे औ मंडे सो जे सान गढ नांव ॥
२॥ सो तो मिली ज्यो ही सिंध की सारवी मिली ॥ के कार के कहरा उ भर देई द
जडे तडे सिंध डी तो खो भूग भेरी द ॥ तथा शहर मुल्तान की सारवी है कि
॥ हंसपुर जगपुर सांमपुर चौथा पुर मुलतान । बल्ल भजते घडे सी आरा पुर
मुलतान ॥ अब कहते हैं कि ॥ आथुरा उ उगुरा पांच को से गाव । पालटे
औ मंडे जैरो औ लापत नांव ॥

१३४ महारावलजी श्री मालदेजी संवत १६०७

१	वाहडमेरी		राव पनराज	वाहडमेर	१	श्रीहरराजजी पार	१	कनककु०	महाराजजी
२	वीकीजी	राजकु०	राव जैतसीजी	वीकानेर	२	भानी रामजी			
३	भासी		देवी रामजी		३	खेतसीजी कार खेतसी होत			
४	जोधजी	सूजकु०	राव मालदेजी	जोधपुर	४	नारागादासजी कानागारादसोत			
५	सीसोदराजी	चैनकु०	रा गाउदेसिंहजी	उदैपुर	५	सेसमलुजी का सेसमलोतव- मालदेयत			
६	सोदी	नवलकु०	रागा मूर्जमलजी		६	केतसीजी कानेतसीहित गान	२	सोनकु०	
७	देवडी	जैतकु०	राव हमीरजी	सीरोही		रत्नरीवसी			
८	चावडी	माराककु०	भीमदेजी		७	मुंगरसीजी का मुंगरसोत गाम			
९	मेड तराजी	लारुकु०	ठाः जैतसीजी	मेडता		पांचू २० वीकानेर			
१०	चौहान	पेमकु०	राव मांडराजी	कल्याणपुर		पूरगा मलजी			
११									
१२									
१३									

कुं० सुलतानसिंह जी दिल्ली गए बादशाह अकबर शाह ने कसबा फलोधी मस परगने इनायत किया नेरावतचन्द्रसैनजी १० हजार सोनईयाले कर ठिकारगा पहो करगा गिरवी रखाथा जिसपर जोधपुर की फौज आई सोहर के पीछे गई कोरडा रवालसे करके फेरबाघजी को रांगा थापीया । अमरकोट कारांगा गंग को जेर हुकम करतबेदारी में रखा सो जैसलमेर में ही फौत हुआ । बाहड मेरो को नसीहत दी । धोलेर के अगाडी सतीयों के पगथां ऊपर मूल बनाया सोहर राज जी का मालीया मौजूद है । तथा रवा कडीयों को हवेली शहर में बना दी ॥

१३६ महारावलजी श्री भीमजी सं० १६३४

१	वीकीजी	फूलकुं०	राजारयसिंह जीकी वैन	वीकानेर	१	नथुसिंहजी ७ वर्ष का था श्री दरबार देवलोक पधारे रानी		
२	मैडतसी	लालकुं०	राः प्रातलजी			वीकीजीकुं० कोलेकर फलोधी जारही चंचक याज्ञरसे		
३	सोदी	हंजूकुं०	राः राजसिंह			कुवरजी फौत हुआ वीकीजी वीकानेरगई फलोधी में वीकी		पुरी
४	महेची	राजकुं०	रावल कल्याण मल	जसोल		का दरवलर हायहां से तो वीकी		
५	चौहान	विलैकुं०	रागा प्रथीराज			जी के नाराज होने कालिहाजर		
६	वीकी	अजबकुं०	नाराहादास			रवा जोधपुर वालो ने फलोधी ले		
७		सुजानकुं०	राजानारागाद स	ईडर		लो जवसे मस परगने उनके		
८	कछुवाई	रतनकुं०	राजा भेरुदास	आवेर		काबजे में है ॥		
९	राठोड	हीरकुं०	राजामानसिंग	किस्नगढ़				

पिंडो सं० ३६ में दिल्ली गए वीकानेर महाराज रायसिंहजी के भाई प्रथीराज जी कहा दोहा दूजारजाशाहरे करमें लेदारी ॥ भाटी भीम छोडा यही नवरोजे नारी ॥ चुनाचे सेसाही किया कि बादशाह अकबर शाह ने नवरोजा लेने की तलाक लिरवदी और कसबारी होडी भये किले बंखर व परगना किनारे

सिधतक बरवशिः करी सरहूद कानामरावलदंग हनोजकहीजेहै - तथा
 रिवल अत भारी वहाथी वधोडा तलवारकटार अता फरमाया । जैसलमेरमें
 पका गढ बनाना शुरु किया था सो ३ दरवाजा सूजपोल व गरोगपोल उर्फ
 भूतापोल वरगपोल उर्फ हवापोल ववैरोशाल आदि ७ बुर्ज व कमरकोट
 वमहलात वगैरेमें ५० लाख रुपये लगे फेर आप दिह्लीसे पीछे पधारे जवका
 मबंद किया कि दूसरा कोई भी आवे तो मैं मैदानमें बैठा जवाब दे सकाहूं और
 दिह्ली का धनी आवे तो कैसाही गढ हीरहसके नहीं फेर घडीसस्पर नीलकंठ
 महादेव का मंदिर बनाया बाद मनहरदासजी ने ९२ बुर्ज पका कचा बनाय
 कुल ९९ बुर्ज से गढ सम्पूरा किया सो मौजूद है सानी नहीं हुवा का गीतरै कि
 गीत संसार कहै पतसाह साभलो शिरपा कडे निकोसमसेर आजबने
 दुनिया न ऊपरे मानकवर नै जैसलमेर । १। कवरो गुर बड गात कलाव-
 त् जग सुढ नयरा पतीरा जोय गोरहरे सारी खनि को गढ नृप मनहर-
 मारी ख नकोय । २। वाह प्रलव जोध अतुली वल मौजस मद जादम मन मोट
 मान मरुर सिर हर मडली का कोरु सिरे तिसु रागा कोट । ३। खाग त्याग
 मीरुता नवर खंड जादम सारी रवो जैसांरा मनहर तरागा भुजा डंड मो
 टा मोटा बुरजो तरागा मडारा । ४। ॥९॥ नगर थटे बादशाही
 फोज खान खाना साथ श्री दरवार वीकानेर महाराज कु० दलपत सि
 ह जी रहे सिंधदेश का बन्दोवस्त अन्धार रवा बादहू हर पीडी में दरवार
 के भाइयो मेंसे कोई साहब नोकारी में बनारहा आरिवर में श्री जसवंत सि
 ह जी के भाई हरि सिंह जी रोहड़ी से आश श्री तेज सिंह जी को चूक वारके
 आप भी मारे गये की खबर पहुंचते ही उसदेश वालों ने २० चाने १ दम
 उठा दिये ॥

महारावल कल्याणदासजी नामके राजा हुए कहवत है कि मनजासी कल्याण
रो-अजांमंडाई अध- कु० मनहरदासजी राजकाज कीया

१३७ महारावलजी श्री कल्याणदासजी सं० १६५०

१	पाटमदे			१ मनहरदासजी	महारासजी
२	अमृतदे				
३	कोटडेची	मरघकुं	करमसी	कोटडे	
४	मथेची	लाडकुं	रावल दुहो	जसोल	
५	सोढी	सिरैकुं	ठा: मानसिंह	अमरकोट	
६	वाहडमेरी		रामसिंह	वहाडमेर	
७					
८					

१३८ महारावलजी श्री मनहरदासजी सं० १६५०

१	जोधी	उदैकुं	ठा: केसरीसिंह	भाद्राजरा	१ कुंवरनहींदुआ-	१ उदैकुं जो	अमरास
२	मेडतराणी	सदाकुं	ठा: केसवदास	रेयां	महारावलजी	धपुरराजा	
३	सोढी	अतरंगदे	गंगाभोजराज	अमरकोट	मालदेजीकेकुं	जी गजसिं-	
४	चोंपावत	सुजानकुं	ठा: गोपालदास		भोनीदासजीके	हजीकोपर	
५	कोटडेची	सींहदे	गंगाजोगीदास	कोटडे	संगजीकाकुं	नाया	
६	पोकाराणी		राव नीवाजी		रामचंदजीराज		
७	झाली	गुलाब	इरादसिंह		वैठा ॥		
८	बीकी	रतन	सुरजमल				
९							

जब श्री भीमकी रानी कुवर कोले गई तो सी हड्ड रघुनाथ व हमीर
दुर्ग दास वगैरे सरदारों ने श्री कल्याण दास जी से गादी बैठने का कह
सो नहीं माना और कुंवर जी रजु हुआ परन्तु जती खिलवत में था इष्ट
के हुकम से बोला कि १४ वर्ष गढ़ में बाहर न रहें ॥ बलोज्य वंगुलखान
बिक्रमपुर राव के भाई हुआ बेखौफ मुल्क लूटे था । खेत सिंह जी के
बेटों ने राज लेने की सलाह बिचारी सो दयाल दास जी ने अर्ज भी कर दी
परन्तु रघुनाथ की सलाह से दयाल दास जी को बाडी में चूक कराय-
पग के अगूठे से खून का तिलक किया कि काके जी के राज तिलक
की मन में थी इससे राज का हक सबल सिंह जी का वाजिव हुआ कि
मन हर दास जी पगायता दिया ॥ वर्ष १४ के बाद मन हर दास जी
पिंडां नाचरो पधारे त० राज वाराणसी पर ५ सौ बलोचों सुधां बंगुलखान
को मार मांभे सादूल व भूपत खावडी येका कि जो दिल्ली से आते
को बंगुलखान ने मारे थे वैर लिया प्रवाडे जीते दो सौ भाटी मरे ॥ फेर-
तो हर ४ तर्फ पका बन्दो वस्तर खा उस जमाने में तरफ पूर्व को स ४२
गाम मडले से अगाडी वारत का गाम व न्हेरु वनाला वगैरे व ओटोनीया
उच्च पधरा सांस्न दिये और दक्षिण को स ४४ गाम हरसानी से आगे
तथा पश्चिम को स १२५ सिंध में रावल दंगत तक व उत्तर को स १२५ कि
लै देरावर व पूगल का इलाका और बीच में कमी वेश याने वाहडमेर
जूना पारकर वगैरे २ तक दरखल इस राज का था सो आर्दन अक बरी
में लिखा है और हर परगने में बहुत से गाम वगैरे तथा गाम नीवारा
मकानात वगैरे जही दवनाये बाद हर पीडी में घर की फूट के वा इस फ
लोधी प होकरा आदि बहुत सा मुल्क कब्जे से निकलता गया हां श्री

गजसिंहजीसाहिबोंके इकबालसे किष्णागढ़ व शाहगढ़ मगबद्धिया-
 छोड़ घड़सीया व धोठडु पीछा आया जिसका हाल मौके पर लिखा है ॥
 गढ़में म्हेलात व घरसीसरमें सर्वोत्तम भवन महल व बडे वागमें रानीजीके-
 नामसे कूवामानसर व महल बनाये जोधपुर वालोंने बादशाहका फरमान-
 भेजाया कि पहो करणी पीछी दे दो मगर जवाब ही नहीं दिया सं० १७०४
 में स्वर्गयाने बाड़ी पधारे तो वह जती सूली कूंगर से सवारी देरवने लगा उसी
 जगह रुकडा २ मरसिया कहता २ छार्द महीनेमें मरा सोठा कर २ भगवा-
 काप देखा लोकि रागनु देवां मन भगवों माबाप कर ग्यो राव कल्यान उत्
 ॥१॥ इस वक्त सबल सिंहजी तो नानेरे किशनगढ़ महाराज रूप सिंहजी
 पास थे रामचंद्रजी राज बिराजे ॥ मूंगरीनिभसे खडी न बुज व मुहार दे
 खकर कहा कि दोनों १ घर चाहिये जब छोटा भाई खेतसी जीने पया मु-
 हार का नज़र किया ॥ इस जमानेमें ३ मंगरीया शबिरडीयाने ४ फकीर वि
 की योंने करामात दिखवाई चुनाचे १ने तो जो उसकी सांढी भाटी चोरले गये
 राजसे दादरसी नहुई जब ६ महीने बाद त्रपोलीयेके पास मालीया गिराने का
 वोल निकलतां ही दीवार फटी फोरन उसकी बहिन ने रो क दी सो चिराड मौ-
 जूद है दूसरे ने दरीयावके वीचरेती का टिवा करके साधियोंको बचा लिया-
 तीजेने मौसम सरमा में जालीयां पै पीलु लगाया ४ ने तनाजे परकोम मही
 रांको देस पारकीया बैत एक बिकीयो इम बांगी जैजांधोरे रमे चकः हैः
 महङ्गारी जैदरीयाव मैकी ठिकाः हैः पनुवांगी जैकुमधी कीमकः हैः
 जूरागारी जै म्हरलंघायालक इन्होंकी औलादके १००० घर २४ पांडोंमें
 बिकीया मशहूर है ॥

* नोट - यह चिराड (सादराड) दीवारकी नीवसे लेकर ऊपर तक साफतौर पर नज़र आती है सैकड़ों वर्ष
 इस वाकजूरे फटे जानके दीवारको कुछ लुकसान नहीं हुआ मने भीसन १८८९ में इसको देखा था ॥ मः

१३९ महारावलजी श्रीरामचंदजी सं० १००४

१	सोढी	चांदकुं	ठा भोजराज		१	सुंदरदासजी	इसच्याक	१	रामकु०	
२	पातावत	लक्ष्मकु०	ठा देवीदास		२	दलसाहजी	की पौसाद		वीकानेर-	
३	सोढी	अस्जनकुं	गरासासनसि	अमरको	३	चक्रभुजजी	वादेरावरा		रान्नाको	धुं
४	राठोड	पुरहादे	पा देवीदास		४	रायसिंहजी	सोगडीयाले		परनाया	
५										
६										

हे और महारावलजी मालदेजी के कु० बेटे तसीजीके दयालदास जी का कु० सबलसिंहजी राजबैठा

सबल सिंह जी दिल्ली जाकर बादशाह शाहजहां से राजका फरमान लिखाय फौज ले आये परगने बाप त० सर पर लडाई कर फीके गये जब रघुनाथ वदुरंगदास वगैरे सरदारों ने सबतरह लायक ववाजिब जानवार राजदेने का बचन लिखा कासिरकी भूलसे कागज़ नरावत सबल सिंह के हाथ-जोधपुर महाराज श्रीजसवंत सिंह जीको पूगा जब धोरवा दिया कि फौज साथ देवां जैसलमेर आपको आयां पहीकरां म्हांकी पाकी देदी जो फेर सबल सिंह जी यहां आय राजबैठे ॥ जोधपुरकी फौज पहीकरां आई यहां दुराजे होनेसे मदद नहीं पूगी भाटी प्रतापसिंह खांपजे तसी होत जो कि लैदारया ११ मनुष्यासे काम आया दरवाजेके आगे चौतडा मौजूद है पहीकरां में मर ८४ गामोके जोधपुर का दरवलहुआ ॥ रामचंदजीको देरावर भेजे इनके माधोसिंहजी २के किशनसिंहजी २ रायसिंहजी से देरावर सिकारपुरके कुरेसीयाने दावद पोत्रे खान फतै खान लेली जब मौजे गडीयाले इलाके बीकानेर में आरहे रु २०) रोजका रायसिंहजी के रघुनाथसिंहजीके जालमसिंहजी तक तो नवाब खान बहावलखान दिया फेर भीमसिंहजी २के वभूतसिंहजी २के नथुसिंहजी २के वूलीदानजी

में हनोज़ जारी है सरहद सिंध में दोहा सरवर भरवर रोहड़ी साकोर
 सीयां । श्रीलीरावल अमरसी पैली भरसीयां ॥१॥ भाई राजसिंह
 जी दिह्ली गया बादशाह आलमगीर याने औरंगज़ेब से फ़रमान लेने पहे
 कारा व फलोधी का हासिल करके बादशाह की फ़ौज साथ ले दिह्ली से
 चले रस्ते में नवाब से कहा था कि बड़ी जंग होगी परन्तु जोधपुर आया-
 तो राठोड-दुर्गदास किला छोड़-महाराज अजीत सिंधजी को लेके पहा
 डों में जा रहे और राजसिंधजी किले में जाकर फ़ौज से लड-मरे पीछे नवा
 ब किले में दरवल किया कोई बर्ष तक जोधपुर व मुल्क मारवाड-बादशाह
 के खाल में रहा इस से पहे कारा व फलोधी में जैसलमेर का कब जान ही
 हो सका कहवत सच है कि भारी भोला है सो से से बने हुसमत लव को रवो
 बैठते हैं और सिरफ़ दूराखीला पगो से बात रखरानी व बहादुरी कररगो-
 को ही भारी मतलब समझ रहे हैं ॥ रामानंदी साधु दूरातरामजी सिद्ध
 को गुरु मान कर ठिकाना रामकूंड व मंदिर श्री रघुनाथजी का बनाय सरगा
 किया सो हनोज़ है ठिकाने में महंत पालखी नशीन नंगर हैं तथा गजबों
 का दूध दही व पराया जावे विलो वरान होवै वगैरे म्रजादां बांधरी तथा लां
 गसरत व रामदडो व भगतालोती नोरवडी नलुद्रवेके कुंवै खनुके नज़
 दीक है पटे किया और इलाके जात के साधों पर हुकम वजुरमाना महेंतजी
 का है तथा पुरोहित जेठमल व ब्यास पहे कारदास व भारीया बस्तपाल व
 चारा देहा वगैरे इस मंडली में थे बस्तपाल ने सक कूवा व एक कुन्नी बनाया
 और देदे ने तलाव देदान सर नीव देकर म्हेता गोविंदां गिथों के सुपरद कि
 या सो भारी बन गया व बनता जाता है श्री दरवार ने सिद्धजी से बीनती कुं
 वर होने की की तो सिद्धने कहा कि ४१ दिन मेरे पास मत आना पर छठारखे ही

* इसी देदान सर तालाव पर जो जैसलमेर से मगरवी गोशे में है महेताजी श्री नथमलजी साहवरी वानरिचासत-
 वसुसांचे क किला व हा ज्ञाने पुखता घाट और उम्दार इमार्ते वनवा है जिन में से था ह और साधु वगैरे आराम पाते हैं तालाव
 को भी महेता साहवमी सुफने और डां कराय है चुनाचे वाह मरीने निहायत शक़ाफ पानी इस में रूता है। मः मुराद अली

दिन पधारे सिद्धजी कोटडी में मंत्र साधता था वतपमें भी धूजता था सो तप
 तो ओढ़ने की गूदडी को दिया कि राजासे बाते करके पीछा ले लूंगा गूदडी
 धूजने लगी सो हनोज पूजी जैहै और दरबारसे कहा कि मी आरतकनही
 आते तो एक पुत्र प्रथ्वी जीत होता अबहोगे तो १८ परन्तु एक देसी राजार
 हेगा चुनाचे से साही हुआ ॥ रमता गुसाई हरबस गिरजी आरनाथो
 से ज्यादे सिद्धाई दिखाकर इकार कराय कि अब कि सी साधु अतीतवगैरे
 को यहारहने से मनानकोरे इनके चेलालाल गिरजी महंत हुआ ११ पीडी हुई
 नगरहते हैं शहरसे बाहर काजी कातकीया था जहां भूतेस्वर महादेव -
 स्थिापकर मठ बनाया सो सहर ज्यादे आवाद होनेसे अब म्हांतोके वासमें
 है ॥ ता० अमरसागर काबंधव ऊपर अमरेस्वर महादेव का मंदिर व महे-
 लात व अमरबाव नामी वावडी वरानी जीके नामसे अनोपवाव वगैरे ठकोना
 सं० १७५६ में बनाय बडा दान पुन्य किया ॥ वीकानेर पर पौजले रास
 वरसलपुर विकामपुर रावसाथये दोलडाई जीते मौजे जंजुतक हद मुकर
 करी थी और पूगल राव हाजिर नहीने से सजा देकर आयं दे तावेदारीमें हा-
 जिर रहने का पका बन्दो बस्त कराय फेर कोटडीया व बाहड मेरा हुकाम-
 अदलीसे पेश आर जब वहा पधारे गोशमाली करके कदीम मूजव तावे
 दारी करनेकी नबिशत लिखवाली- ॥ थईयात के चालेसे रुघनाथ सी-
 हड को चूक हुआ घर लूटा सांढी रगाई जब पाली का गाम २५ ठानी वी-
 रानंकार तलाकर वायसुवारी देस से निकले थे जबसे आलके वंशमेरे बासा
 रवांचाला चूहा नही पहरे है सं० १५१५ मे ठाकरो राजा श्रीकेसरी सिंह जी-
 स्थाने बाघजी सीहड को भेजकर तलाक भजाय रहवारीयो को पीछा-
 बुलाय गाम रावते मोढे वसाय वर्ग सोया फेर तो बहुत साराई का देस मे-

आरहू तथा पापसी हड दीवालीका तिवार नही मानते है कोमचारों की परवरश वखातर यहां तक थी कि १ बार क हृत साली में चारा कटक कर काराह से सरकारी बर्ग ले गए तो पिंडां पधार फी खांद रुव्या वीस खुरी-कादे पीछी लीं तथा ९ चारणा के बैर में गाम वेसाले के बाहड मेरे साहवे को मरवाया - अलाहाजुल कवास आरिवर वसीयत में महाराज कुमार को चारा वरिआया की भलां वरा दी - ॥

१४२ महारावल जी श्री जसवंत सिंह जी सं० १७५९

१	महेची	रूपकुं०	रावलभासल	जसोल	१	जगतसिंहजीकुं० पदरह- लतफरसाई १ भातुधसिंहजीपार-	१	वदनकुं० उदै
२	सोढी	सूर्जकुं०	गाराजैसिंहजी	अमकाई	२	अपैसिंहजी पाट ३ जोरावासिंहजी- कारामसतोयणवलोत -	२	सुरसगासगरम सिंहजांकोपरना या सुरतकुं०
३	कोढेची	जतनकुं०	गाराहरीसिंह	कोरडे	३	ईसरसिंहजीकागाम लाठी -	३	इंद्र कुं०
४	सोढी	राजकुं०	ठा:गंगदास		४	तेजसिंहजीवकुं० सवाईसिंहजी- पुधासिंहजीकेपाठवठायागामलुहारपी		
५	बावडीयारणी	रंभाकुं०	ठा:सादुलसिंह	गोराव	५	सरदारसिंहजीकागामषारीयेवमार- वाड-मेरावलोतभगवानसिंहोत		
६	चौहांन	लाडकुं०	गाराजसिंह	बाव				

भाटी व सोढा मुल्क लूने बहुकमअदूली कारने व अनीत चलने में धुंधमचाई जब अद्वल तो भाटीयों से सोढा नारणीतों को मरवाया बाद भाटी बलूद्दास्को त-वअन्वले महासिंह सूर्जोत वपीथे पचांनोत व दुर्जनका नरामोत व कम लके सोत व मूलचंद्र राजसिंहोत व गैरे कोतो त० सरपर केलराणों व रसीगों से और तेजमाल रामसिंहोत को गामहाबूर में वफात दिराई और उदैसिंह राम सिंहोत सरसे भाग निकला भीलमाल व गैरे के भीलांको साथ लेकर मुल्क लूट ता रहा फेरामकुंडा के महंत इरातरामजीरी मारफत कर मेलगा ॥ खेड के राठोडों को शिकस्त दे फौज खर्च लिया - बडाकुवर जगतसिंहजी के ३ कुं० हुस पीछे सातवीं शादी उदैपुर महाराणा जैसिंहजी की पुत्री सूर्जकुं० से हुई

वहां राणावासमें कुबर्जीके तसवीरकी तारीफ़ हुई कि मानो कामदेवको अवतारहै जब महाराणाजी बोले कि और तो सब बातें ठीक हैं ठिकाना कहीं मी हैई पर रिजक याने खजाना नहीं है जिसपर कुंवरजी ने गामकुलधरोके पत्नीवाल पर १ कोठे रोला-ख रुप्ये की हुंडवी लिरवी राणोजी साहिबो डाकवैठाके औठी भेजा तो पत्नीवाल कहीं-मेरी मेवाह मे दुकाना है वहा ही रुप्ये लेलेते इतनेके लिये यहाक्यो भेजा मगर खैर जिससिके का हुकम होलेजा वो कोठडी खोलकर रुप्ये दिरवाये औठीयो पीछे जाकर अर्जकारीतो महारानेजी फ़रमाया किसेसी रईयत है सच्चारखजाना उनका है पीछे पधारकर कुवरपदों में महल बनाये थोडे ही दिनों में स्वर्ग पंधारे ३ कुवरानी दोखवा स-सती हुई ॥ महता अर्जन सिधको जोधपुरकी मदद भेजाथा पर रिसाके बीचमें-

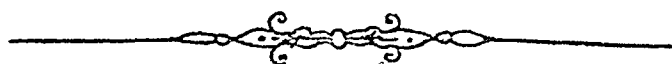
डेरकर अबल महाराणाजी वालो उदैपुरसे मिला फेर महाराजाजीसे मिलकर हिकमत अमलीसे दोनो रईसोंकी सुल्हे कराय आया पीछे से भेद खुला तो दोनो राजा वोने अहसानमानने कारवरीता भेजा जब अर्जनसिंहकी दीवान किया ॥ श्रीदरबारकादे हात हुआ जब तेज सिंहजीने ईसरसिंहजीसे कहा कि बुधसिंहदावर है नाजरो डावडि योका हुकम उठाईजे नही आपराजवैठे इन्हीने इनकार किया तो आपसुं ह धोया लेकिन सवारी साथवाडीगया पीछे से बुधसिंहजी राजवैठे जब तेजसिंहजी वागी हो वावडीसेवाला २ सिधमेंजारहे और देसलूते थे ॥

१९३ महारावलजी श्रीबुधसिंहजी स० १७६६

१/सोटी	रुषमाव	नहारषा		कुंवरनहीं हुआ		फतेसिंहजी
--------	--------	--------	--	---------------	--	-----------

बाद १२ सालके तेजसिंहजी गामकुलधरोसे अस्नीलिरवी किकसूर माफ करवे व महेश्वरानी आकर बचनदे तो कदमे हाज़र होष जब अर्जनसिंहजी को भेजा सो जिंदा मारकर पीछे सिंधचले गये फेर दो बर्ष बाद भीतरसे बुधसिंहजीको जहर हुआ और तेजसिंहजी आपराजवैठे सो नावाजिद जानके रोहडी भस्वरसे कावाहरीसिंहजीअपे

श्री अरवै सिंह जी को राज बैठाने की सलाह विचार सं० १२ आया वरि १३ घडसीर
 पर तेज सिंह जी को चूक किया जबसे तालाब की काम में श्री दरवार नहीं पधारें हैं ही
 सिंह जी भागे पीछे से नायक लघा पहुंचा श्री तेज सिंह जी के चेत होने से कहा काका जी
 मरें नहीं पर जांमडे जाकर फररी दरवाई से पहिले ही गाम मूलाने में मारे गये और तेज
 सिंह भी फोत हुए बाद कुं० सुवार्द सिंह जी राज बैठे जब अरवै सिंह जी भागे गाम छोड के
 पास घोडा थका गया सो छोड के बड के पेड पर चढ बैठे और दरबारी कुसला वगैरे जा पहुंचे
 चामगर पिंडा की तपस्था व कुसले की खैर ख्वाही से यह तो पीछे चले आये पिंडां पै-
 दल गाम खूहडे के नूंगर में जाकर पोकरी शिवदान को बुलाय लारवरा के खंधे स
 पार हो साकडे पधारे जबसे पोकरी कहते हैं कि ऊंठ हां साकडे से मौजे ऊजलां हो
 कर घाटे में जा रहे फेर १ वर्ष में सरदारों के लिखने से पीछे आ राज विराजे भेर घाव सु
 नते ही सुवार्द सिंह जी हाथ बांध कर हाजिर हुए तो १ महल में रहवास दिया घोडे ही असे
 में सरदारों की बेवकूफी के कलाम पर देवी कोट से यहां पधार सुवार्द सिंह जी को सुधाम
 भेज सवासब पीछे गए सरदारों से कहा कि चाहे सो कर सकी हो सरदार समझ कर -
 डरे और आजजी करने लगे फेर तो मुल्क का बन्दी वस्तु बरि आया की परवर्ष खातर
 रखा ह करते रहे १ वक्रे की चोरी पर ही पिंडां फोशिश करके सुदूर की हकुर सीव चोर को
 सजा फरमाते थे जिस से मुल्क की सरसवजी बरि आया आसूद ह हुई और चोरी धाडे
 का नाम ही नहीं रहा परन्तु पहिल बखेडे रहने से सिंधका मुल्क बहुत सा मियां क-
 लौडे ने दबा लिया ॥ तथा रावलोत दौलत सिंह के वैर में चेला सर पर सुंदरदास
 वगैरे सोढों को मार कर कहा कि उन के भाई में हूं फेर राज सिंह की बेटी पर नीजे
 और शादियाने बजवाये ॥



१४६ महाराजजी श्री अरवि सिंहजी संवत् १७७९

१	सोढी	वनेकुं	ठा राजसिंहजी	श्रीमूलराजजी	अमरकुं	नागोरमहा
२	से	भीमकुं	रागाहमीरजी	अमरकोट	राजवपतसिंहजीकोप	नाया स १८०१ जानमे
३	कोरडेची	सरूपकुं	ठा भैरुदासजी	कोरडे	खुसालसिंहजी	पने हजारनोकथाफि
४	सोढी	वपतकुं	से	खुडडी	रतनसिंहजी	गद लंगे परशरमिदा
५	महेची	वदनकुं	रावतअजरसिंह	जसोल	गामलाठीश	चांदकुं वीकानेरमहा
६	जोधी	सरूपकुं	ठा सूरज, मल	पायोधी	गुमानसिंहजी	राजराजसिंहजीको
७	चौहान	सोनकुं	शरणापचाराजी	चाव	किगोदविराज	परनाया =॥
८	से	लालकुं	ठा नानसिंह	होयीगा		३ औरवनेकुं महाराज
९	जोधी	फूलकुं	महाराजपजात	जोधपुर		कुं राजसिंहजीकोस
१०	कारमसोत्तवपतकुं		ठा जसकरनजी	तांतुवास		१८९८ मे परनाया स
११	सोढी	राकुं	ठा	तारुधीर		१९ मे शारोआया
१२	सोढी	हरकुं	इसरदासजी	आली		४ विजैकुं जोधपुरमहा
१३	वाडमेरी	वनेकुं	रावतलालसिंह	वाडमेर		राजकुं फतेसिंहजी
१४	सोढी	वराकुं	मनवरदास			को स १८१२ मे परना
१५						या स १० मे शारो
						बुलाया ॥

फतेसिंहजी
गो. प. र. राजसी
सिंहजी

पाट परोहताई वालजी की ही जवसे बालजीके पोते पाट पुरोहितहैं वीकानेरसे वाइराज चांद कुं व भारोज अजवांसिंहजी सं. मे यहा ग्यारहे जोधपुर महाराजश्री वरवतसिंहजीका जनाता व कुं. विजै सिंहजी तो यहा आरहे और श्री हरचार यहां पघारे सो पिडांतो गदका बन्दो वस्तरखा और महेता फते सिंहका श्री वरवत सिंहजीके साथ भेजा सो दक्षिणायो सेलडार्ड मे मुडवे पर काम ग्याया क्वी मौजूद है सुंद कटई मे जोधपुर से गाम हरसी या डा रुप्ये पाच हजार वा मिलाया ॥ वाडमेरके ठा साहिबको

विक्रमपुरराव हरनाथसिंहजीके वचनोंसे बुलाकर मरवायाथा जबसेकहवतहै कि वचन
 जिके रावजीका इसबाबत महाराजबरवतसिंहजीराठोडोंसे रावजीकीनिसबतद्रशारा
 किया कि यह वह है रावजी अर्जकरी कि धागीके हुकमसे बापकोभी मारनेमें दोषनहीं म-
 हाराजसाहब सुनकर चुपहोगये पलीवालोंसाहूकारोंवगैरे रईयतसे सालियांनेके रुपयेले-
 नेकीतादादवांधरी मनमतेकालेना छोडा सिका महम्मदशाहीथासो अरबैशाही संवत
 १८१२में मशहूरहुआ इसकाहालटकसालके जिक्रमें लिखाहै मौजे गिरावमें कोट व-
 वेसाले तथासेतराउ में गडी बनाई औरसं० १८१४में धनराजोतोंकोखास्ज किया सोमहे
 वे गया अवआरंगमें है और कोटखालसेकरके सं० १८१९ में स्वर्गपधार्ताजेसागज
 सिंहववीरमको पीछा बरवशा औरआधीपैदारालमेंलेगीकर शिवमें कचेडी करायहा
 कमरवा फेरगरीबनाथका थानबनाया तथानागुडरांके नाथको नवरात्रीकालगमान
 आसबाबडीके नाथां मूजबकरा दिया सो हनोज़जारीहै तथाडाहालीमें सोटेजी वरजको
 गडी बनाई ॥ औरचौहोटगियांने खोखरोका विगाड किया जबपिंडांपधारकरसजा
 ही फेरतावेदारजान कदमेलगाया औरश्रीकाकलका थानबनाय दूधवीनाडी खुर्दाई-
 केलामेघराजके विरवैमें चाकरी पूगायासोकेले हेमराज की बदलीमें सेठ कियेवज्जाने-
 में घरे पधार कुरबदिया ॥ विक्रमपुररावहरनाथसिंह फोतहुए बाद कुंभकाराजवरन
 रावहोवीकानेरसे साजिशारवनेलगा सं० १८१६में कुंभाको वफातदे कोटखालसे कि-
 या सं० १८ में सफ़रसिंह लाडखानोतकोदिया ॥ खुदाआबाद सिंधका कलोडा मियां
 नूर महम्मद बेयाथारमहम्मद का सं० ११६७ हिजरी तारीख १२ सफ़र मुताबिक विक्रम
 सं० १८१० में बहुतसे फौजलेआयाकि जैसलमेरको धपुरलंही गा शहरसे ७ कोस गाम-
 नेहडीये आतेही सवारीकाघोडा मरा फेरमिये केपेर में दईहुआ श्रीतेमडेरायके भोपी
 सेकहनेलगा किबीवडीयां झुल्लो औरचावोसोलो मेंपीछाजाऊंगा परन्तु मरही गयाजना
 जाले फौजपीछीगई की खबर आई जबमहाराजकुमार श्रीमूलराजजीरस्तेसेलौ उआये

हवापोल आगे त्रपोलियाऊ पर अरवै बिलास महल वराड विलाव अरवैपोल वगैरे मकानात शहरमें वसंडप वाडी में और गढी मौजे देवैवरवाभैमे बनाया ॥ वाहडमेरेसेजो सीसाचोरो कोबुलाके गामटे हीये वलुइये मे वसाये किदे सावरी मालकी कोताही काहु खरईयत की नहो ॥ राजबिराजे जब गढ व मुल्कके सिवा खजाना वसामान कुछ भी नया क्योकि मुइत तकराजमे गडबडरही जब ईसरी सिंह जी वगैरे नेरवूव हाथ माराया फिरफ हिम्मतव होशियासै लारवो हय्ये वालाई खर्च हीनेपर भी आगला कस्जा उतारा औरसवतरह कादारवसामानके सिवा खजानेमें २५ लारवहय्ये नकरुछोडकर वैकुण्ठधारे ॥

१४५ महारावल जी श्री मूलराज जी

स० १२१९

१	चापावत	दगादकुं	ठा: सिरसिंह		३	१	श्रीरायसिंहजी स० ४० मे	१	रामकुं	मूलां हस्तु सहनु स्थातोके देखने ववातो के सुनने से साफ २-जाहिर है कि हरपीडी मे राजके धरियायो तो भारी यो की परवाश व मुल्क की तरकी मे हदसे परेकोशिशकी है और भारी मुल्क वरवाद करने याने राजको स्वागत देनेके लिये जमीन दू सरे राजकी करते रहे है वासवार रसवक्त मे तो राजही
२	कोरडेची	फूलकुं	ठा-वीरमरे	कोरडे			दाई मरीना राजकिया - महल कुवर १ वाहडमेरी १ धभैसिंहजी २ किसनावा २ जालम- महाराजजीकी २ सिंहजी स० १२२९			
३	चौहान		गुरागाजेसिंह जी	वाव						
४	चापावत	फातेकुं	ठा मानसिंह जी	पटोकराणा	५	२	खालसिंहजी नानेरे घोडे सेगिरमरा	२	मूलाकुं रतला मके रजनाप दमसिंहजी को	
५	जाधी	लाडकुं	ठा नथराज	पाटोधी			जैत सिंहजीके परिवार- कानकशानीचे खिरवाहै	३	कल्पाशाकुं रतलामकुव रप्रतापसिंह जी को सं० १५ ४० मे परनाथा	
६	महेची	साहिबकुं	ठा ईसदसि	जसोल-	६	३				
७	जोधीजी	रूपकुं	राजावहादुरसि ह-	किसनगढ स० १२२९						
८	सोढी	मयाकुं	ठा सुलतानसि ह							
९	चावडी	धुमानकुं	ठा रुघनाथसि ह							
१०	कोरडेची	सिरेकुं	ठा दुस्ननमाल	कोरडे						

पासेवाना चाड पावा मट्ट जीउ जेडा अशु मूलां हस्तु सहनु स्थातोके देखने ववातो के सुनने से साफ २-जाहिर है कि हरपीडी मे राजके धरियायो तो भारी यो की परवाश व मुल्क की तरकी मे हदसे परेकोशिशकी है और भारी मुल्क वरवाद करने याने राजको स्वागत देनेके लिये जमीन दू सरे राजकी करते रहे है वासवार रसवक्त मे तो राजही

गमाने तक नौवत पहुंचाई थी कि सरदार तो मुल्क लूट रो में यहां तक रहे कि छोटा भार्गवपुर
 परमसिंह जी भी बगावत का डंका बजाते थे सैनामौका पाकर पड़ोसियों ने मुल्क दबाना शुरू
 किया चुनौचे देरावर को जागीरदार जो न्यारो राजसमभता था यह देस लूटने व आपका वंशो
 वस्तार करने को हावद पोत्रे नौकर रखे थे उन्होने किले देरावर व मुमगावाहन वीं झरोठ
 व सरोट व गैरेलेकर सं० २० में नहवर तक आपहुंचे और केहरांगी हावद पोत्रे बुटे बहादुर खां
 ने दीतगढ नामी किला दूलाके राजा में बनाकर कसबा आबाद किया था और अमीरानसिं
 धने पश्चिम ४० कोस पर चानराव की जगह सं० २२ में किला सहागढ व परगने में घडसी
 या बछीया छोड तथा म्होरावरी में तले घोडड पुर कोट घोडडु. सं० ४७ में बनाकर बहुत सामु
 ल्क दबालिया था और इधर जोधपुर वालोने भारीयो के चाले व कोट डीयो की वद माशी
 से सं० १८२६ में परगने शिवकोटडग व सं० ३७ में खावडीया रावत धनराज की वे ई मानी-
 से कोट गिराव गैरे में यहां के हाकम म्हांता भानी सिंह को निकाल कर कब्जा किया यह
 से फौजगर्द तो महाराज श्री बिजै सिंह जी ने आधे राा किया मगर कई वर्षों के बाद महाराज
 जकुंवर व भारियों के फितूर होने से उन्हों का दरवल जम गया हरचार तरफ से सामला गौर-
 तलब हुआ जिससे फौज करनी व क्त फुरसत पर मुनह सररखी और अदल भारियों को रस्ते पर
 लाना विचार कर सं० ३८ में विकमपुर राव सेर सिंह को जो बीकानेर की हिमायत से हुकम अदू-
 ली करते थे पिंडा पधार कर स्वर्ग भेजा और नहार सिंह के बेटे जूझार सिंह को राव किया दू सी-
 तरह दूसरो के लिये भी मनशा थी पर बाजों ने और ही बढकर हरामखोरी की कि सं० ४० में मकर
 शंक्रांतिके रोज भारियों के बहे काने से महाराज कुंवर राव सिंह जी महेता सहूप सिंह को-
 मार कर राज बैठा श्री दरबार को महल रुवा निवास में कौर कीया बाद महीने द्दार्डे के सरदार-
 आपस में फूटे गाम बाहूटा कुर अमै सिंह जी के कुं० मेवजी साथ जंझून आली व गैरे कई सर-
 दार व तरांगोर के उन्ड-व धारांगां रो के वंभरे व गैरे ने श्री दरबार को राज बैठाया और कुंवर जी व-
 कई सरदार वागी हो कर मुल्क लूटने में धुंध मन्चारी सं० ४१ में पूगल पर बीकानेर ने कब्जा-

किया अगर चेरवकी नेतलवार नहीं बाधी वलाके फौज आई जव वज कर काम आवे पीछे गढ-
 खालसे रहा सो सं० ४१ में सरदार कदमेलगा वाद सं० ५३ में कुवरजी को जोधपुरसे बुलाया पर
 दुतरफामनरवामिलने नहीं दिया कोट देवे में जारहे तथा भंवर ज्यैसिहजी वजालमसिहजी
 को बाहु मेर पिडा पधार बदमाशो को सजादेकर साथलाय कोट रामगढ मे रवे ती नो ही ने
 रहलत फरमादे तो श्री दरवारके दिलमे कुंवर व भंगो के दुख व भारीयो के फैलसे ये सीनाउमे
 गालिबहुई कि मात्रकारखाने राजके अन्नर होगये खुलासा हाल टाछ नामेमे है सं० ४० मे व्या-
 स मनजी दास जो वेगडे बेटा के श्री पुज्य के सिस जो वसका ज्यलदास को अहमदाबाद श्री
 पुज्य पास ५६ विद्या सीरवगो को भेजा श्री पुज्यने दृष्टके परताप व्यासजी को देरवते ही-
 नामसे बतलाया फेर कुंड ली देरव कर नृपव कुंवर व दीवान की थी ज्योही कही कि दीवान-
 को तो मार डालान्तपकी के दकार के कुंवर राज वैरा है परन्तु राज तो नृपही करेगा कुवर की
 उमर कम है पीछे व्यासजी को विद्या सिरवार सोवनर ही है ॥ महाराज श्री विजैसिह
 जी के दरसे भंवर भीमसिहजी व न्यापावत सुवार्द सिंह जी डा. पदो कारा जोधपुरसे भाग
 कर सं० १० ४५ मे यहां आवे श्री दरवार ने बहुतरवातरहारी मे रवे और कहा कि आप तुर्ची-
 राजा होगे खुनाचेर महीने महाराज के फौतशेने की खबर आई जव भीमसिहजी को श्री
 रायसिहजी की वार्द सरागार कु० परनाय साथ जावते के जोधपुर पहुचा राज व नविशत लि-
 खदी और धा भाई सेर सिंह को रव गये थे कि शिवकोटडा गिराव आपका पीछा लेलें-
 जिमपर यहा से म्हेता भानीसिह को भेजा सो गिरावकी गडी पाडी फेर रावत जी व राज को
 पीछा कायम कर एक वुरज वसक कूवा कारा दिया और शिवमे भी हुकाम मुजब कबना होत
 ही पर० जोधपुरसे श्री मानसिहजी तो गढ जालोर मे जारहे और राठोड सरदार सववागी-
 हो यहा अरजिया धर्म दृष्ट बहुत सी लिखके भेजी कि आप की मददसे वचाव होगा और आ-
 पका परगना व गाव पीछे देवाया हम महाराज का सलाम करेगे जब श्री दरवारने वीकानेर
 महाराज श्री सुरतसिहजी को भी सलाहमे शामिल कर के खातरी का जवाब भेजा या-

और कहलाया कि श्रीमानसिंह जी राजा होंगे तथा श्रीमानसिंह जी को भी दस हजार रुपये
 खर्ची वारस मयाराम साथ भेजकर यही कहलायाथा इस सबबसे चवाररवाली गया कि
 चोरवे में आके शिवसे फौज पीछी बुलाली पीछे संबत ५१ । ५२ में चोडावत बहादुरसिंह जो
 धपुरका थारागं लाया और भीमसिंह जी साहब अहसान व अपना वचन भूलके यह वदला
 देना चाहा ॥ कि फौज भेजके जैसलमेर ही लेलेना मगर नियत का फल मिला कि सं० ६०
 में फौज हुस श्रीमानसिंह जी सा. राजविगजे ॥ जो धपुर की फौज अमरकोट खोय पीछी आती
 गामवी झोराई लूटी जब यहां से फौज गई सो गाम सावरी दल लूटकर महे चांवगैरे से फौज ख
 च लेवा हडमेरो को भी गोशमाली करी ॥ पुष्टिमाराग श्रीवल्लभ कुलके सेवक हुस जब मेश
 हरमें ब्राह्मण पुष्करौ वसाचोरे और महे श्री भाययेवगैरे श्रीहरराय जी की अष्टी हुई और
 श्री गिरधारी जी आदि शेवापधरायनेग वगैरे मजादवांधी ज्युं ही होवे है ॥ तथा जीव रथा -
 से सीररवाई किन वरात्रिमें देवी की पूजामें भै सेवक को वेतादाद होते थे सो सिर्फ ७ महिष
 वकई बकरे के सिवा मारने की तलाक वतां वापत्र लिखकर रईयत को सीं पी ॥ श्रीनाथ जी का
 दर्शन सं० १०५० में श्रीगंगा जी परमन्तं ० ६५ में पचादे: जो धपुर महाराज श्रीमानसिंह जी
 से मिलना हुआ और आपसमें बहुत ही मोदरहा भंवर जी श्रीमहासिंह जी के तीसरे कुंवर
 श्रीगजसिंह जी को बलंद अकवाल जानके सं० ६१ में सुवराज कर कुंवर परदे वैठाये वाद राज
 पर तबीयत रजू हुई और सं० ७२ में पेशी नगोई करी कि ७ ही कुंवरो की जन्म कुंडली देखकर
 फरमाया कि नम्बर १ । २ वैशाव होंगे ४ । ५ वा आयु कम है व ६ । ७ राजकाज करेगे ज्युं
 ही हुस व्यासलखमीधर को दिल्ली भेजा सो मारु मुशतवाले आया सं० ६६ में फौज रवाना
 करी तो फज्जर अली खां वल्ल वहादर खां यहां आय रूपये ५० हजार किलादीनगढ व २५ हजार में
 सामान दीया जब किसनगढ नामररवा श्रीलक्ष्मीनाथ जी का मंदर वनाय कोटमें थारागा का
 यम करके फौज नहवर गई ५ महीना लडी किला छूटने पर था इस अरसे में खबर लगी कि
 दिल्ली आगेरे वगैरे मुल्कमें सरकार अंगरेजी का पक्षा अमल हो गया है यह सत्ता हठानकर फौज

पीछी बुलाली कि अहद नामा करके जितना सुल्क गया है सरकार दौलतमददारी-
 मदद से सब पीछाले लैगे ॥ भाटी दौलता सिंह जी वधानवी मोती रामजी को दिह्यी
 भेजे सं० ७४ मुताबिकसन १८१८ दिसम्बर ता १२ सरकार दौलतमददारी अग्रेज-
 काम्पिनी बहादुर से अहद नामा जनाव नवाब मो प्रह्ला अलकाब मार कुदूस आफहेस
 किस्त गवर नरजनरल वहादुर के हुवानसे चार्लस व हाफलस मदकलफ साहब बहादुर
 टिगज ॥ रियाया परवरी काहदसे परे खचालथा ब्रह्मनो आदि शहर के मात्र कौमो मे
 लेन देन व्यवहार कजगे जमीन के झगडे वशादी गमी मे खर्च वगैरे रीतर स्मरूपक के साथ
 पड पावके लिये मूजादवाधी सो हनोजजारी है और दाना वगरी वलोगा दुवासे खैर से यादकर
 रहे है हा बहुत मुद्रत पाने जमाने की हवा वदलने व कई गतो और तो के अखतियार मे रह
 ने से बिगडी हुई है सो अब उमेद कवी है कि श्रीजीसा हवी की उम्मर दराज हो सब तरह से स्व
 याल फरमा कर रईयत के सुधारे व खर्च के निभाव वगैरे स्की नजवीर्जे कारवै हीगे चरना-
 पूरी खरावी है तथा लावारस कामाल राज मे लेना अलीन किया कि उसके गोद लेना या पुन्य
 लगाना सो अब मुक्त खोरे खाते है उसके करजे तक भी नही देते सो मुनासिब है किराज मे तो
 लेना अलीन ही रहे परन्तु मुक्त खोरे नरवास के जहां तक होसके घर व से तो खूब ॥ चरना खु
 व्रात ये से लगे कि सबका भला हो ॥ मवाना तजदीद की बडी सो कथी नका सीकी भात नवी-
 वज्जै हाथो से वना देते थे व फामील जैल कमठा हुआ ॥ गठ में रा का दीय पानी का व
 म्हाल सभानिवास मस पाई वागजहा अमर म्हाल व पत्तर वाग था ऊपर मोती महल व मूल
 विलास व सर्वोत्तम विलास वगैरे व कुवर पदो मे तवेला व महलात व कुवर जैत सिहजी का
 डेरा और तलेटी मे भवर म्हासिंह जी का डेरा व शहर पनाह मस कई कुर्ज व श्रीदेव चंदे सर
 मद्दा देव कामदर और चडसी सर मे गढी सं० ३५ मे ॥ तथा श्री गिरधारी जी व चाके वेहारी
 जी आदि १९ स्वरूपो कामदर वल्लभ कुल के वम्हालात बहुत उम्मा व मदर देवी गववा व-
 गोखनाथ वगैरे का सं० ५४ मे तथा खवास आठ ही की हवे जीयो ॥ तथा शहर से बाहर-

पश्चिम दरवाजे से १० कदम पर श्री हनुमानजी का मंदिर और पौन कोस त० गंगासागर मण्ड
 महालात सरकारी बकई ठिकाने और लोगों के व श्रीगणेशजी का मंदिर सं० ५५ में और देको
 सपर तालाब व कुंवां झालरा व गौरे व नीज मूलराजसागर मण्ड महालात व बंगला मंदिर व गौरे-
 सं० ३६ में जहां पुरोहित जगानी व माली व साये तथा जीरांन पर वहे महाराज का मंडप व
 मल्के के दरवाजे पास राधा कुंड उफ़ी मूल तलाब व पौन कोस दिसईमान सं० १२२९ में कि
 स्नघाट जहां वंधाबंधने से कई बरे व मालियों का गाम हुआ ॥ तथा माजी श्री सोढी जी साहि
 बा की तरफ से सं० १२२९ में कुंवा रामसर मण्ड चौकी कोठा वंगला व श्री सीतारामजी का मंदिर
 जैपुर के उस्तो से बनाये और सीरामाजी श्री चुहानजी के नाम से कुंवा चुहानसर व महेता
 सालमसिंह जी की हवेली तथा इलाके जातमें कोट मूहनगढ व मंदिर श्री लक्ष्मी नाथजी
 का कोट देवी कोट व गाः वीभोरार में कोट फ़तैगढ व कोट लखा व मंदिर देवी जी गडी ही गलाजगढ
 गाम महाजलार में कोट खुर्दयाला कोट रामगढ व मंदिर श्री बलदाऊ जी का समके तडे
 व सोभ व मंडाई व खाभे में गढी और तीर्थों पर श्री गोकुलजी श्री मयूरजी श्री द्वारकाजी
 श्री पुष्करजी श्री गिरराजजी की तलेटी श्री सोरभजी श्री ब्रंदावनजी में जगावों सं० ६२ वै-
 साख वद २ ॥ महेता सामसिंह ने अर्ज करी कि रुप्ये ८० लार व सालमसिंह जी व १२ लाख
 धीरतसिंह व दोलार व मेरे पास हैं सोले रावे वरना मेरा जीव सालमसिंह लेवेगा चारवा ने ज़ादीं
 का घर विगाडेगा श्री हज़ूर ने फ़रमाया कि यह धन तो तलेटी के कोठार में है सं० ७३ में सामसिंह
 कोट किस्नगढ में जा बैठा और हुकम नही मान गोलगा महेते जी अर्ज करी कि कोट ही गमावेगा
 ज्वराज श्री तेजसिंह जी सह पौज ले गये सामसिंह को जीवदान का बचन दे कर निकाला श्री
 मौजे राम देहे में जा रहा फेर महेते जी ने श्री महाराज कुमार श्री राजसिंह जी साहिवों की रवात से
 बुलाया सो कुंवर पदों में मारा गया श्री जी साहब सब शास्त्र गथा ता वीति निपुरा वडे ही रां तारये
 पंडितों व कवीयों ने मूल बिलास आदि कई ग्रंथ बनाये जिसमें से मुश्ते नमूना अज़र वर वारेयाने
 की रत्न लिहमी का संवाद इसमें लिखा है ॥ यह महाराज वलसाहब इन्साफ़ परवरी में मशहूर थे

चुनाचे दो मुकदमों के इन्साफ का अहवाल जो आपने पौसल किये थे नजीरके तौर पर हम नि-
हायत दूर हसरके साथ जैल में लिखते हैं ॥ १- सिचके दो लषी सेठ थे १ने १० हजार रुपये
गेकाड बहीमे दूसरेके लेखे मडे है दूसरे की वहीमे जमानही सो झगडते २ दोनो सेठ बी-
कानेर दिल्ली जैपुर पाली वगैरे हो कर यहा आस और कहा कि हम सिफ सही इन्साफ देख-
ने की ही झगडा उठाया है सो चिट्ठी लिखनाया आधे आधे करने वगैरे से से न्याव मजूर नही
जब ओसवाल † की सलाहसे दोनो की वहीके पाने काटेमे तुलवास तो सु द्यायलैह-
की वहीका १ पाना जो उसी तारीर वके मेल का था १॥ रत्ती भारी हुज्या व हररुफ भी १ ही कलम-
से नये लिखे मालूम होनेसे कहा गया किवेशवार कमजमाथी सो उरानेके लिये नया पाना ना-
ला है ॥ सु द्यायलैह ने सच्चे इन्साफ की हद से परे तारीफ करी और दोनो सेठ शुक्र कजाते २ अपने
घर गये ॥ श्रीजीसाहिबोने † की काजी कालवाव व न्यात स्मधी तहरीर काजी
के हाथसे लिखीजाने का कुर्व अता फरमाया सो ता इनोज जारी है ॥ २- गामका ठोड़ीका
१ पत्नीवाली से खेतमे १ साहूकारने रुप्ये चूबनाले कर खत परकोयले मेलकीरे खीची थी -
सोकपडे से साफ कारदी फेर पत्नीवाली कावेदा परदेससे आयाजवरखत देरवाकर रुप्ये मागे उस-
ने कहा मेरी म्हाने दे दीस है अदालतमे दोनो की वते सुन कर खत का पाना पानीमे भिगवाया
तोलकीरै दीखपडी साहूकारकी बहीरवार्ज की गई †

नकाशा महारावलजी श्री मूलराजजी साहिबो के कुवर जैत सिंह जीके परिवारका

ठाकुर				महल				चार् राज			
नम्बर नाम पिता	काम नानिष	सन पैदा	सन फीत	नम्बर व कोम	नाम	लकाव व नाम पिता	ठिकाना	सन शादी	नाम	सन शादी	किससे किस ठिकाने
जैत सिंहजी	चापा चन्			१ सोदी	श्रीगणकु	दुर्गादासिंह अरुसिंह	हरसोला				
				२ वणो	च्यदहु	सामसिंह	वगणोडे				
महासिंहजी	सोरा			१ गवन्	दस्तकु	मूलचन्द	पारी		१ चापा हु		
जैतसिंहोत				२ सोदी	राजकु	वीरमदेय	डाहना		२ मुलाव कु	१०००५२ गुगा१२	पेटे मद्रावराम सिर-जी

नकाशा महारावलजीके कुवर जैत सिंहजीके परिवारका नकाशा महारावलजीके कुवर जैत सिंहजीके परिवारका नकाशा महारावलजीके कुवर जैत सिंहजीके परिवारका

तेज सिंहजी महासिंहोत	नरा वत	१२३३ सिं	१ सोढी	जीतकुं	वीरदास	सुरताना उ	२	विन्त कुं:	१९१०	वीकानेरमहाराज श्रीसरदारसिंहजी
			राणाव त	सागागा कुं:	महाराजेशिव दानसिंहजी	वाघोर	१८०६	हुवाम कुं:	से०	से०
देवी सिंहजी से०	से:	१२२९ आसा	१ वाह- उमेरी	से०	रा: पदमसिंह	वाहड मेर	१	जतन कुं:	१८९६	जैपुरचंद्रावतवलवं तसिंहअननसिंहोत
							१	मदन कुं:	१८९६	वूदीरनेजेसिंहजी
श्रीगजसिंहजी साहबजविरा जे-		१२२७ सा								
फतेहसिंहजी से०	नरा वत		१ सोढी	पतुकुं:	सरूपसिंह	सुरतान उ	०	०		
जोधिसिंहजी से०	से:	१२०९	१ से:	राजकुं:	सेरसिंह	डाहली	१	अजव- कुं:	१९०९	झालरा पाटरा राज रांराामदन सिंहजी
केशरीसिंह जी से:	सोढा	१८६९ सावासासुरदे	१ मेहेची	अभैकुं:	मालसिंह जी	जसोल	१८८९	१ उदैकुं:	१९१८	जोधपुरमहारा जश्रीतरवतासिंह जी
			२ सोढी	विकैकुं:	मदनसिंह	वलेहाउ	१८९४			
छत्रसिंहजी से०	से०	१८७९ मोषसुरदे	१ मेहेची	पनैकुं:	मालमसिंह	जसोल	१८८९	१ फूलकुं:	१९१८	जोधपुरमहाराज कुवारप्रतापसिंहजी
सेरसिंहजी केगोद			२ सोढी	यादन कुं:	गजसिंह	रागाग देर	१९०१	२ रायकुं:	१९३२	से० भंवरफतेसिंह जी
								१ मानकुं:		
भीमसिंहजी केजसिंहोत	से:	१८७४	१ सोढी	०	आनडसिंह	रुहडी	१			वाघोरमहाराज समर्थसिंहजी
			२ से:	मोतुकुं:	से:	से:				
मानसिंहजी से:	रागा वत	१९०० सावासासुरदे	१ वीकी	गोपा- लकुं:	भगवानसिंह	मही	१९१५ भा:ब:६	२ जडाव कुं:	१९४४	कुडलेझालाराव सवादेसिंहजी
			२ राजा वत	सिरैकुं:	किसोरसिंह	जगरूप देसर	१९१६	३ हरकुं:		

				१ महेशी	रायकु.	अश्वराज	नसोल	१९२७		
				४ सोढी	यादलकु	विजेसिंह	सुरता नाउ	१९२८ म्हा		
११	उमद सिंहजी	वाहड	१९२०	१ सोढी	अश्वराज	उदेंसिंह	दीकमरा	१९२९		
	देवीसिंहोत	मेर	१९२०	२ सोढी	पजवकु	धानजी	डाहाली	१९१८		
१२	अनाड सिंहजी	मे.	१९२०	१ सोढी		हरदेवानजी	रागाव		२	भायवु
	स जोधसिंहजीके			२ से	गुलावकु	मे.	मे.			
१३	सरदारोसिंहजी	वीका	१९२०	१ चापा	महेतकु	शमानजी	देंगाोक	१९२४		
	उमदसिंहोत	मे	१९२०	२ सोढी	चादकु	विस्नसिंह	पुहडी	१९२७		
१४	सालमोसिंहजी	मे	१९२०	१ से	सादलकु	महेडसिंह	सुरागर	१९२२	१	हवाकु
	से								२	सुरवती
१५	खुशालसिंहजी	सोरा	१९२०	१ से	राजकु	गभजीसा	पुहडी	१९२६		
	मे.					हवदनात	म्हा			
	कृत्रसिंहजीके			२ चापा	गुमानकु	मेघजी	पीलवे	१९४२		
	गोद			वत			महासुत			
१६	सिपरानेसिंहजी	मे	१९२०	१ झाने	दलवकु	बझारसिंह	वारडावत			
	अनाडसिंहोत			२ सोढी	रायकु	अरवजी	माहली	१९२५		
१७	गर्जनसिंह	मे.	१९२०	१ पचा		धीरवसिंह				
	हमतीसिंहजीके			गोपत						
१८	जसवतसिंहजी	मे.	१९२०							
	सरदारसिंहोत									
१९	जुवारसिंहजी	मे.	१९२०							
	मे									
२०	सुरानसिंहजी	मे	१९२०							
	सालमसिंहोत									
२१	सामसिंहजी	मे.	१९२०							
	खुशालसिंहोत									
२२	दानसिंहजी	बापाव	१९२०							
	मे.	त								

१४६ महाराजा धिराज महारावल जी श्री गजसिंह जी सं० १८०६

१	सोटी		ठा: सादूलसिंह अमकोर	१	विजैराज जी सं० जन्म वर्ष	सालासिंह जी - हिमालासिंह जी - रत्न सिंह
२	से०	मोतुकुं०	ठा: सरूपसिंह सुरतानाड		डोर कारहलत करी	
३	कोटडेची	म्हाकुं०	ठा: सोभासिंह कोटडे		। भारू के सरी सिंह जी का कुव	
४	वाहडमेरी	सूजकुं०	ठा: भीमसिंह वाहडमेर		र श्री राणा जी त सिंह जी सा	
५	सोटी	हरीयाकुं०	ठा: जैसिंह लखधीर		हवराज विराने	
६	कनेति	साहवकुं०	ठा: भोमकारन कांराणडे			
७	गणावत	रूपकुं०	महाराणा श्री उदैपुर			

पासेवाना पात्र लिख्मा ॥ सं० ७७ में वीकानेर की फौज गाम वारू लूट ठा: जान सिंह जी को मार पीछी जाती का शक होने से म्हेता उत्तम सिंह जी कोट विकमपुर के जावने को गया तो राव अनाड सिंह जी वें अदवी पेश आने से श्रुवह कवी हुआ कि वेशक वीकोमे साजिश है - हिकमत अमली से कोट खाल से कर हाक मरवा राव जी गाम गडी आले गया और मस्जिद चक् से फोट हुग कर्द वर्षो बाद छोटा भारू शिब जी सिंह जेसलमेर आया पर कोट देना वाजव नही जाना क्यों कि सं० ७७ में कोट पर डाका डाला था जिस से भरी सन रहा फेर सं० ९७ में गाम वरू रहवास दिया तो भी सं० १९०० आस्वन में वीकानेर की मदद व बरसी गी कोले के कोट में दारिख हुआ जब ठा: राजा श्री केसरी सिंह जी स्हा व म्हेता उत्तम सिंह जी विसन सिंह जी फौज ले गए छ: महीने लडने के बाद फागुन सुद ११ राक जी अगैरे मुफसरो को जीवदान दे कोट से निका लेराज का थांराण कायम किया सं० ७६ में गाम काराणडे पर नीजे उन के वकील रस्तर व र्च देन किया था सो म्हेते जी मांगा तो ठाकुरों वकील को कैद किया जब श्री जी साहिवां र व र्च माफ फर माय वकील को छोड़ाया ॥ पीछे पधारते गाम को डिया सर में पलीवाल मान्न गामों के थे भारी सरदारों के जुलमों की अर्ज करी कि रवेत सी जी के कुं० मेघ जी गाम ऊं मे के ब्राह्मण का तमा मजे वर जबरी से लिया १ वीटी अंगुली काट के लेली जिस पर रवेत सी जी व सरूप सिंह रवां प

उदै सि होत वरामदान मोटे को फतै गढ में और मेवजी को जैसल मेर मे चूक हु आ दूनाटा उदै
 सि होत बिबै निकले ॥ ईसी अरसे में उदै पुरसे नालेर आया जवज नानी सवारी तो शहर को-
 करार पिंडो देवो कोट से ७ सवार साथ सातवे दिन औन वक्त लगनके उदै पुर दारि वल हु ये चवरी
 वधार त्याग वगैरे में द्रव्य ज्यादे रवर्चने से वीकानेर महाराज श्री रत्न सिंह जी साहब व किशतग
 द- महाराज कुंवार श्री महोकम सिंह जी कोर शक हु आ घास पर तकार करके दोनो रईस लड
 नेको चटु आये जब भाटी सरदार भी वगैरे इत्तला श्री दरवारके मुकाबले को त्याग हु महराराज
 जी श्री भीम सिंह जी साहब व महाराज कुमार श्री जवाना सिंह जी स्हा को रववर होते ही साथपुरे
 के राजा जी वगैरे सरदारो को भेजके कहलाया कि अगर भाटी थोडे प्रादमी समझके आप दोनो
 साहिब जोर मारते है सो खयाल आपका खाम है मुदा किलडार्ड नही डीने दी और दोनो ही
 को सीख दे दी श्री गोसाहिवा को ५ ॥ महीने वहारवे हृदसे कमाल मोद व अपनन्द रहा ॥
 स० २० काती वद ११ मोती महल मे महता सखि मसिंह जी को खियै भाटी आ नाने चूक किया-
 पर ० जान नही निवली फेर टाका दूने से चैत सुद १५ ज्योत हु आ इत्त ५ महीने मे लखी सप्ये का
 द्रव्य म्हेते जीने धाटी रूपा वगैरे साथ निकाला सोरूपातो मधुराजी जाकर वद लगाया और दूसरे
 पुरोहित चारी वगैरे का पका पत्ता भी नही और ज्यवरूपे का वेटा गोरधन दिलसे सफार करनी
 चाहता भी है लेकिन किसी का विस्वास नही करता अपना कुमोत माग गया तो भी किसी परत ही
 मत नही दी ॥ ग० २५ में सोटा भाटी वाहड मेर वगैरे गाम रवा भालूडा जव अमरसागर से पि-
 डाखा भे हो हर सारा पीपारे सरदारो कसूर माफ मांग माल पीछा दे ना किया वहा ही खवर लगी
 कि वीकानेर की फौज आई फौरन जैसल मेर पधारके पुरोहित विहारी लाल जी को वापे भेजा
 या कि वीकानेर राज की सांदां भाटी विहारो हासोत वगैरे लाया है सो पीछी भेजावे गो और मुज
 मो को सरह मजो दे गो फौज अगाडी न आवे पर ० फौज मुसाहब वीका वैरी साल जीठा मह
 जनव सूरंगा अभौसिंह अमर चद वगैरे ने नही मान कर गाल मारने लगे कि कपाट तुलाट
 के रवज घड सी सरकी परा घट जो जेवर से लरी हु है लूटेगे उदै पुर मे वागड परत करार-

X नोट - म्हेता साल मसिंह ग्याह वर्ष की चममे अपने बापकी जगह व नीर सुतर हु आया नवान होकर म्हेता
 मजदूरने अपन बापके वतल करने वाली बोट दू २ कर माघ महारावल मूरान जी के बेटे राय सिंह और शैने पोता १

होने से अपमान हुआ था सो खार भी अब निकालेंगे चुनाचे देस का बिगाड करती हुई फौज १० हजार बीकानेर मराजमीयत हा: पही करी जैसलमेर से ५ कोस गाम वासरापी आई और कई आंचड कर गाम भोजक बडा गाम व देवी कोट व हठा व गैरे लूटा जब सुका बले को फौज भेजाई सोलडार में श्री स्वांगीयांजी के अदीठ चक्रों से ५ सो आदमी व

सूगंगा नम्बर दो मारे गये छत्री मौजूद है तथा कई घायल हुए जब फौज तोपें छोड के भागी इस तरफ का सिर्फ रामचंद्र सोढा व बोलसिंह राई मरा और खोसों के जमीदार साहबवां का वेटा मिठुवां घायल हुआ जमादार बोला सेसे हंगामे में कई मिठु फटेगा मुदा कि वेदे का कुछ स्वया लनकर के खूब लडा जिस पर नकारा व पालखी बगसा गया वाकी फौज पीछे गई कि पोहकरा

लूर हीलीनी परं ० हा: बाघजी खेत सिंहीत ने बबाई सरिस्तेदारी के बचाई गाम थाट पर लडाई कर फते का उंका बजाती हुई पीछी आई ॥ दोहा जातां जुगां नजावसी आ

सी के दिन याद । भडक मधां नही भूलसी वासरापी को बाद् ॥ १ ॥ जबसे बीकानेर में कहवत होगई है कि कोई किसी पर किसी तरह से जोर जुल्म करे तो उसको कहे कि साला वासरापी की लडाई में किठे हो ॥ सं० ९१ में सरकार दोलत मदार की तरफ से कर्नेल नवलियम

साहब बहादुर ने श्रीजीसाहिबां व बीकानेर महाराज के मुलाकात कां काड के गाम गिरराजसर व गडियाले के बीच में कराई जब रुप्ये टाई लार देस के बिगाड किये के ठहराये थे सो तो श्रीजीसाहिबा नहीं लिये और महाराज से पूगल का ठिकाना राव रामसिंह जी को पीछा दे राया ॥

साहबां न युद्ध पियन अबल जनाव कलां कर्नेल लाकर साहब बहादुर सं० ८८ में यहाँ रौनक अफरोज़ हुस जबसे यहां का वकील कलां साहब की विदमत में रहता है बाद आज तक जो साहिब बहादुर जैसलमेर शहर व डलाके में तशरीफ लाये सो अलग लिखे हैं ॥ साहिब कलां को सलाह से सं० ८९ में छाकुवों को सजा देने के लिये ५ सो सवार साथ युगेहित त ६१२

को भेजे सो मौजे सराधरी में रहे बाद् डीसै व भुजीयै से फौजां व जमीयतराज मारवाड आते १८५५ - रावत भूपसिंह व गैरे बाहुड मेरो को पकड लेगस और किले भुजीयै में कैदा १८५५

१८५५ - अबैसिंह व धां कलासिंह को जहर देकर मार डाला - तेजसिंह देवीसिंह फतहसिंह को जिला वतन किया और रवुद गजसिंह जी को तख्त पर विवाया महेता सालमसिंह जी ने सातर व नडका एक अजीब और ऊंचा मकान अपने लिये १८५५

जैसलमेर का उमराव जानकार कैरु भुजमहारा औ श्रीदेशलजी नेजामनी कारके -
हुडाये और भाटी सरदार जो जो बार्गी थे यहां दो दी हफ्तर होने से बचाए गए मगसुजब से-
कटवा बधाडे का नाम ही नही रहा इसबाब तख्तीता खुशानूदी मसखिल अत व फील-
जंजीर एक श्रीसरकार दौलतमदार की तरफ से आया और मुल्क मालानी का सरकार
के खालसे होकर रुजंद साहिब वहादुर के मातहत वहाडमेर मे हाकम रहता है और वहाड
मेर वेशाला चहोदन जो कदीम से जैसलमेर के ताबे है सब तरह से बरताव विकमपुर वर
सलपुराव याने उमरावा मुजब चला आया फेर नमालूस क्यो कार अलम समभा गया है
स० १८५५ मे मोजै वाप इ० हाजा व फलीची इ० मारवाड की सरहद जनाव लडलु साह
ब बहादुर निकाली और पत्थर सीव पर ररवास फेर जो धपुरवालो दूसरा पत्थर औली
तरफ ररव कार झगडा डाल दिया है सो हने जसफार्द नही हुई तथा गामरा वडी इ० हा
जा व हडवा इ० मार वाड की सीव मालीयत साहब वहादुर निकाली पत्थर मौजूद है ॥
काबुल का बादशाह मुजाबल शाह सं० मे यहां आये किसन घाट डेरा किये प्रांजो
साहब डेरे पधार चहुत ही सतकार किये आया फेर स० ५१ मे आये जब ही गलाज मे याने पड
सीसर पर मुकाम कार रवाना हुय सरकारी फौजो का तुल पर गई जब यहां से ऊद साथे देगे
वगैरे हर तरह से मददी गई और अमीरान सिंध ने वे मददी वारी फोज पीकी आई जब लडाई
हुई है दरवादे व मीरपुर के अमीरो जो पकाड ले गए मुल्क सरकार के खाल से किये रैवर सुग
का अमीर अली मुराद खां रैवर खाती कारने से बने रहे व दगलस्तान जाकार कदम बोसी हा
सरकार आग बाद कर्दु चर्पा के स० २० मे सरकार दौलतमदार ने सनद दी की कि जो मुल्क
शब मीर साहब के कब्जे है नसलनवाद नस्तन रहेगा ॥ स० ५५ मे सरकार दो नतमदार के
हुकम से ठा राजश्री कत्रसिंह जी फौज ले गये किला चौरहु मससाव आपाटं म जायम कि
या बाद मीर अजी मुराद खा का खास रवेली सुमार यहा ग्या कार कूचियां वोट स्हागट घड सी
या वकी पा छोड मस परगने सं० १५०० के मिघर मे दे ग्या जब से खाल से है स्हागट का

† ब तीया नोट - जैसलमेर मे बनाया जानि मने नां नो दिरसे ए जने बा र हत रा प म्ने का साहब अर नमान सार्वरिये
नरसन १८५५ ई० मे हन मन्त्र मेर को गे पं से ना बह नी नो ह से न्हे ना मो धी हने नो देगे वरुं दे मे पं का व नूर तीन रन्द मार दे ने १

उपाय अह्ला गया सिरफ़ दो उद्यमवर आस १ तो कुंवा बनाया सो गाम पक्का हुआ दूसरा चौ-
 पाये का काम ठीक हुआ ॥ मेसे ही हुकम का रवया लया कि अब लतो वेजा हुकम नही देते
 थे और जो हुकम दिया तो सब ने माना ही परं० जिस किसी ने नही माना आम नाकर के शहर
 वदे ससे बाहर गया तो किसी काम नां गा नही हुआ उन्होने ही लाचार होकर हुकम मंजूर की
 अरज़ी भेजी तो फ़रमाया कि भला ई आवो जब पीछे आगम चुनाचे भारी उदै सिंही ततेज
 मलोत वकेलगा जसो डग वजो सो सान्योरो का तो हाल खुलासा लिखा गया है और राज श्री
 उमेद सिंह जी व उंनडों का जाम आम दरवां व सिपाही खंधारी व सुबा व चुहुडा म्होर व रूपसी
 व श्रीदी पल पन्नु व मुहार का सिपल आदिले शहर के पींजारे चमार व भंगी व देवी कोट वी-
 झीरार्द के डेढ भी निकले थे हां शहर के साहूकारो ने हर ताल डाली जब पिंडा पधारे खातरी-
 फ़रमाय उनके करे मू जब २२ कलमां का परवां ना उसी जगह लिखा दिया था मेठ वी सानी-
 सदा गाम जी को दिल में होल हो गया तो परवाना ही पीछा नज़र किया फेर श्री गिरधारी जी
 का मंदर जो टयाथा बनाने के लिये व का वन यलाने को चीरा भी सहर पर कर दिया व दरतारों
 खैर खुवा ई हाज़री देवार्द कि किसी तरह फ़ितूर किये की माफी हो अगर्चे हाः साहिब
 भीत सखी देते थे परं० होल नही मिया जब परदेश गया और ब्राह्मन पुष्करो आमने से ता
 लाव पर जारहे तो हज़ूरी गंगा दास को भेजकर पीछे बुलाये थे ॥ सं० १९०४ पोहो सुदि
 में जनाब कलां साहब करनैल सदर लैन साहब बहादुर यहां त शरीफ़ नारा श्री दरबार को सर-
 कार दौलत मदार की तरफ़ से खिल अत यहां ही से लेकर दिया दिन २० मुकाम बहुत ही खुशव
 महरबान रहे ॥ सं० १९०८ में जोधपुर जैसलमेर के मुक़दमा चोरी धाडे के फैसल हुसपुरो
 हित सरदार मल जी गये थे हुतर फ़ाजून मुक़दमा रद करके रुप्ये ८ हज़ार दिये ॥
 वर सिंह शिकजी सिंह के बेअदवी का शक पक्का हुआ जब ठाः राज श्री छत्र सिंह जी सहा फ़ोन
 ले गस सो गडी पाड गांम वजूर वालसे कीया शिकजी सिंह इव्वी कानेर में जार हाथा वाद करे
 साल के गाम वजू का आधठाः जेठ मल जी गिरराज सरवालों को वरवशा सो भारी गाम है ॥

महममसुर अली शोशियार खेयराज पूताना अर अजमेर

वकीयानोट- हलाक करनेको अवतार लिपा है वह इबात उंगली के मानिन्द मोटे कलम से जर्द रोशनार्द से लिखी हुई है वाक़द सौ साल
 राजलेके ये सो मासुम होती है कि अभी लिखी गर्द है हर चन्द करने लोट मात्र वगैरे ने मरेला मालमिनेर को जालिम और खरवाग लिखा है लेकिन

स० १९०५ मे कछु भुज मिरजा महाराजो श्री देसलनी से दोस्तो हुई वाहड मेर केरा वभूल सिंह
 की मार पातरी का ग्याथा स० २० मे टीका गना वादना पूरी घर वट याने वकील सांगानदा का नुवा
 थाना जाना बन रहा है फेर प्रागमल जां विशेष प्रीती बटाई चुनाने वार् रान का विवाह वसलाह
 श्रीजी साहिबां स० ३३ मे वीकानेर महाराज श्री नूर सिंह जी साहिबा से प्रो० गिरधारी खालजी
 की मा हुष्या और श्री खैघार जी भी श्रीजी साहबाको अपना सुन्नरा समझ रहे है ॥ वीमारो
 सं० ६ के ग्यापाद मे हैना वस० ९ के सांगले मे तपकी से सदहा ग्यादमी फोन हुस ॥ स० १० मे
 केलरा बटी के केलरा तिसाला वरवी परादी खौरवरा हलोय खिखदीया किसरारान वारु व
 उदै सि होत तेजमालोत जो पडो सी है जवरन जमीन की नवे है सीवनिकाली जो वनव वारु की
 तरफटा राज श्री कृत्र सिंह जी साहा व वसीयां की तरफ दीधान सालम चद जी गरा तो उदै सि-
 होत तेजमालोत हुकाम अदली से पेश आरा और बागी हो जो धपुर व ग्याव जी नालसी गर-
 जन बाकासाहब ने हुकाम दिया कि श्री दरवार का हुकाम उठालो जब पीछा आय और जी लिरवी
 कि सीवां निकल वारी व मुकरु मो कारुथ्या भाना मजूर है और ग्यायन्दा चोरी व हुकाम अदली
 नदी कोरे जो अब कर मे लगाये मगर उस साल सीवा नहीं निकली वाद सं० १५ मे श्रीजी साहिबा
 देवी कोट लाठी नाचने का देरा कराया देवी कोट मे दीवान सालम चद जी फोन हुस और नाचने से
 श्री कृत्र सिंह जी सा बाहु पथारे सीवा निकाली सो केलरा नामं चूर वर चिखै निकले वीकानेर
 में रह कर देश लूटा काना चिस्तोई को मारा ॥ स० १० मे सीवा व नगर नामं चूर वर पीछे चाम
 तथा स० १५ मे दरवारी व सीवांकी तरफ महेतानथ मल जी जावर खौरवरा दी की सीवानिका
 ली और कोटा समूल ७ गा० की जमीन बाघनीका दवाई थी सो खान से वर गाम गेहु लिरवा दिया
 सं० १२ मे मौजे वाप के खडी नधी गारा व दांधीया के गेहु वापर जो धपुर की फौज आई तो भी
 जमीन वार के महेता विस्त सिंह जी ने गेहु ले ही लीया फेर राजदी से चपडासी ग्यावा लडाई न
 होने दी और जाधपुरी प्रो की ज्यादती की रिपोर्ट करी ॥ जैपुर से वैद्य राज भटजी गोकुल नाथ जी
 को वनाय ग्रध रारा जीतरत्न माला तयार कराव व्यप्र भीम जी व देवी दास को पढाया ॥

सं० १२ में मौजे लखुवाले के हावद पोते खान साहब के मामे आकिल महम्मद सरदारवां ह
 सरदांवां वगैरे नाराज हो कर आये उनसे कहा कि रहना ही तो रु० २५) अरबै शाही कि जिनके रु०
 ४५) हुण रोज़ व १ गांव लेवे व २५ घोडे अलग नौ कर कारले और खान साहब से भी राजी पाकरा देंगे
 परं १ सौ रुपये राज से कम मंजूर न करके दो महीने ही न रहे वीकानेर हो कर पीछे गये ॥ सं० १४ में
 डा: अमर सिंह जी जागीरदार महाजन इ० वीकानेर कुंवरां का विवाह डा: मान जी जगमाले
 तकी वेदीयां से करने को गांमडांगरी आवेथे सो यहां आकर दो नो वेदीयां बडी तो श्री हजूर से खोटी
 श्री वैरी साल जी से सादी करने की अर्ज करार सो मंजूर हुई उनकी वार्दियों के नानेरे गाम कोठा इ०
 हाजा मे फागन वद ७ को विवाह होना ठहरा जब शावा नजदीक आया सब तरह से तयारी हो
 गई तो जोधपुर महाराज श्री तरवत सिंह जी साहवां डाक वैठा कर लिखा कि अबल जोधपुर प-
 धार वार्द के सरकुं० से सादी करावे नवाब लिखा कि अबल तो चही होगी क्यो कि तेल चढा
 या फेर वहां आने मे ढील नहीं होगी परं मंजूर नहीं हुई इसी अरसे मे वीकानेर महाराज श्री
 सरदार सिंह जी कावकील जैतुंग भाटी रवी व करन आया कि म्हारे अधराजीय की वेदी डोले मत-
 पाने वीकानेर के गढूमे विवाह करेंगे डा: अमर सिंह जी की अरजी आई कि महाराज के फरे बसे
 धोखे न रहे शादी कर ही ले जब वकील से कहा कि डोला नहीं है नानां गाा दादां गाा में फरक
 क्या और इतने अरसे मे वीकानेर पहुंची जे भी नहीं फेर आवूजी से जरने ललान स साहब वहादुर
 कारवरीला आया कि वीकानेर महाराज लिखते है कि जबरन डोले पर नीजते है सो ठीक नहीं सा-
 दी मुल्तवी रहे जवाब मे लिखा कि डोला कथों कर लिखते है नानां गाा दादां गाा इकसां है और ज-
 वरन के जवाब मे डा: मौसूफ की अरजी बजिन्स ही भेज के शादी करली फेर करने लखडन साहब
 वहादुर जीने मिसल दरफतर दारिवल काराकर वीकानेर वकील को हुकम दीया कि आयं दे से सी धो-
 खे कील हरि र नहीं कीया करे वाद सं० १५ के आश्वन में डा: अमर सिंह जी वीकानेर से भाग कर
 वहां आर फेर कुवर व कबीला भी बुला लीया जब गांम लांगो लारहने को दीया और श्री दुकान
 पर रवर्च की सर हुवाती दी कि चाहै जितना उठावे सं० १७ में पीछे गये और जैतुंग रवी व करन

भीमहाराजके निकालने से चहा आया जब गाम चनु धिरवादिवाया ॥ सं० १७ का जैष्ये
 राज का काम व्यास धनुजी को सौंपकर थोडा साहब अपने डेरे तलोदी पधारे आपादवदको
 काम म्हेतानथमलजी को सौंपा व आवागामुदे ७ दीवानी कासरो पाव दिर्या दूसरे दिन नथ-
 मलजीके घरे पधारे रुप्याकी चौकीव जेवर पारचेकी किस्ती नजर हुई बाद आरोगकार पीछे पधारे
 सं० १७ का फागुणामे घडाठा साहब तो देवे ही चारामगढ पधारे चहा नवा कोट बनानेकी नीव-
 दीवी पिन्नाडी श्रीजी साहवा ने खूडीकाठा साहब दानजी सोढाकी बेटी से साही मद्रो मे
 कराई ॥ सं० १८ भाद्रवाभुद ८ ठा. राजशेकेसरी सिंहजी सहा की वारे राज उदै कु० का वि-
 वाह जोधपुर महाराज श्री नखतसिंहजी साहवा से व श्री रुत्र सिंहजी सहा की वार् पूलकुं० का
 विवाह महाराजकुं वार श्री प्रतापसिंहजी सहा से हुया ॥

पडोसी रिचास्तो से सरहदात निकाली तफसील जैव

सं० १९०६ मे कपतान वीचर साहब बहादुर आकार सांवदेख गये सं० ७ मे चौहूदे बधी चारजी
 मैजे महाजलार से ७ कोस नैजुत से सरकारके सिधदू रवैरपुर व २० सरकार दीलत मदार-
 वई ७ वहावलपुर से तिहूदे राजबोकानेर जी वरसलपुर से ८ कोस है गडके तक ल वीकोस
 निकाली साहब मौसूफ मुनसिफ थे किसी तरह किसी से त्वारार नहुया ॥

सं० १९०८ कपतान शिवाल साहब ने पडो कारा रूमारवाड से सीव निकाली सी सरासर जुल्म किया
 कि गाम औटानीया वासरल्लु वाका वचनडाका जूनाखेडा मरसीव व श्रीर ही बहुत सी जमीन-
 कर्त गाम की गमाई निसपर पुरोहित सरदार मल नी कामरना हुआ और बरड रागेके भाटी सग-
 तसिंहो तोको भाटीकी बही से नाम निक लाय ज्ञात मेरवार्न किया ॥ सं० १८ या १९ मे हिम-
 लयीन साहब ने राजबोकानेर से सरहद विहूदे बांड के से तिहूदे कद टक सीव कोस निकाली
 बरमलपुर काराव जो हमेशा से साम धर्मी रहे हे विराव मानसिंहजी पोत हुए जव साहब दान न-
 उकाथा साहब दानजीकी माजी चहा प्राकार बरवौफ वीकानेर के श्री दरबार मे र्न काराई जव
 वास्ते हिपा जतके म्हेला सामसिंहको चहां भेनाया था और उसवक्त रावरा नीत सिंहजी-

सही महेता नथमलजी ॥
सही महेता अजीतसिंह ॥

सन दके ऊपर श्रीजी साहवांकी सही घा म्होरया दोनों और गोशे पर ३ का आंक जो इसराज-
की निशानी होती है ॥ तथा जेवर शस्त्रवगैरेका भंडार खुलै जब श्रीजी साहब तो पधारेंया
नहीं परन्तु महेता वसहा वथईयात वहजूरी जो दोगा हो यह चार ही होते हैं सो चीज निकाली
चारवी वही में जमा खर्च करके बाहर निकले जब झाडा लिया जाता है भंडार में वधावके लिये
म्होरयांन नज़र हुण सो वसहर सायर एक सालसे कद्रुप्ये समूर्ते के लेते थे सं० २७से कोरांसे
भी समूर्ता लिया गया फेर सं० ४१ से मात्र आमदनी में फीस ही रु: ३) लेगा किया परं० मन्शा
थी कि कोई १ आमदनी जो ५ हज़ारसे ऊपर हो इराताल्के की जावेगी जैसे कि श्रीजी साहबा-
का हाथ खर्च ताल्के नज़रके रुप्ये व कोरा नोचनेकी आमदनी वगैरे है ॥ वडी ही दूर अदेशी है-
कि दीवानजी ने नीचे सही और भंडार में दरखल नही रखा ॥ तथा जमा खर्च का दफ़तर भी सहा-
महेता पास है लखा में लाग वंधी जो पुस्तो से है मगर अब यह भी चलनेकी सूत नहीं ॥

१४८ महाराजाधिराज महारावलजी श्रीवैरीशाखजी साहिवांकी उम्मर दराजर हो सं० ११२० जेद सुद

१	वीकीजी	इरादकुं:	डा:अमरसिंहजी	महाजन					
२	सोढीजी	तरवतकुं:	डा:विसनसिंहजी	रांसागदेर					
३	सीसोदगी जी	मरागारकुं:	रावलजी उदैसिंहजी	मुगरपुर					

ब वसीयत श्री बडा हज़ूर वमनजूरी श्रीवीकीजी साहिवा वसलाह सलाहकारान राज बिराजे ॥
सं० २१ चैतमें श्रीदा: साहब शांखके आरामहीनेसे पांव प्यादे रामदेहरे आस जब श्रीजी साहबही
पधारेंये ॥ राजका काम वमन्शा डा: राजश्रीके सरीसिंहजी साहबके डा: राजश्री छत्रसिंह
जी वहेता अजीतसिंहनी करनेलगे और महेता नथमलको बडे साहब बहादुरजी पास भेजा श्रीला
ए साहबकी मंजूरी का खरीता भी आगया पर श्रीजी साहब राजसे इनकार कर किलेसे डेरे पधारें-
तो जोधपुरसे सजन्त करनेल निकल साहब बहादुरजी सं० २१ मिघर में आकर बहुतसा कहा-

पर नही माना नलकि सकचिद्वी हाफजजी को दीयो किपेशाकरदे मगर साहिव मौसूफु तोउदेपुर
 यर और इन्मीसाहब बहादुर यहा आर उन्ही ने नहीली फेर जनाच कलासाहब कारनेल इन्दनसा-
 हब बहादुरजी सं० २१ काली बद् आदुजीसे तशरीफ लाम कोट फते गढ में टा साहबसे मुला
 कात हुइ फेर यहा आतेह ॥ श्री साहिव को तरवत नशीन किये सरकार दौलतमेंदार की जानव
 से रिवलअत दक्कीसकिशती जेवर पारचे वरक जजीर फील व रौय रास घोडे सोन्ही सांष त वरक
 किच देकर इसपीच सुनाया तथा श्री बडा दाकरो साहब को वदस्तूर मदार उलमुहामकर के
 याददास्त लिखरी और म्हेतानथमलजी को कामन्यावतका सौपरो वगैरे सिफारशीरवरीता वरव-
 तजिसमें सनदखुशनूदी साहब ममदूह व रैरर द्वाहीराजकी व द्यानतदारी वगैरे हाल लिखरीया
 और वकालत के काम पर म्हेता जजीतसिहजी को ले गये ॥ श्रीजी साहिवो के इकवाल कीखूवी
 व श्रीठा साहिवो के बड आईकी तारीफ कहांतक लिखी जावे विमुफसदो याने वरवेडे वरनेवालो
 की हुर्र भी पेश नचली पर सबको वदस्तूर बना रवा कितीका कितीतरहसे हतक व हरज नही कि
 या सं० २२ में सायपुरे राजाजी गजसिहजी की वार्द लखमनसिहजीकी वहीन के सगार्थको
 गलवरसे कामदार वपुरीहित वगैरे सोगातले आर पर मंजूर नही हुआ तथा सं० २३ में नरसिहगढ
 से पशावार वटुमलजीरीका पेश कीया और सगपराकी वातचीत करीसो भी नवनी तथा रतनी
 रियास्तोसे दीका आया जैपुर उदेपुर जोधपुर कोटा बीकानेर कछुभुज परीयाला
 कपूरथला न्हावलपुर रैरपुर नरसिहगढ (और नमालूम करीलीसे क्यो बरहै) सं० २३
 बेशाष मुद् १३ राज्याभिषेक हुआ जोगीका भेष वगैरे मामूली रस्मोके वादराजगिर में आम दर
 बार कराय तरवत बिराजे जव भेर घाव व तोपोका फैर होने पीछे नजर नोछावर हुई श्रीठाकर साह
 वो घोडा नजर किया ॥ बाकी उमरावो सरदारो से घोडा व भोमीयो से घोडे की कीमत कारुप्या
 वगैरे रिवलनका मुफासिसन हाल अलग लिखीहै ॥ सं० २५ में बहुत भारी कहत पडा मारवाड
 वगैरे कीरियाया मुल्क सिंध व गुजरात व मालवे गई श्रीलक्ष्मी वरकी क्रपासे यहा तलाव घडसी
 सर भर गया और रईयत भी वनीरही श्रीठाकर साहवो ने महुवाडो के सिंधपहुचने व कतारो की-

आमदर कु के लिये रस्तों पर जा बजा थारो व नधे कुवे वकोटां में सदावर्तवगैरे कराये और खास
 शहरमें १४ सदावर्तवगरीबों के लिये पीचडे के कंडावे चढते थे तथा विधी पूर्वक दान पुन्य हय
 से परे कराया तुनाचे हजारों सांमीव कई साधु मन पिछत पागण और लग्गां की जमात के ह्यै स-
 देव भारयी को जो रिधी वाला था कई बर्ष रहकर तलाव गज्जरूप सागर पर ही मरा स्या इस साल-
 रस्ता गुसाई बेमानाथ को घडसी सर पर ररव कर हजार हा रुप्ये उगाये ॥ सरकार दौलत मसर
 की तरफ से रसालदार अब्बास अली कतारां की निगरानी को आया था सब हाल देखा सो लिरवा
 जिस पर साहिब कलां व साहिब रजी डन्ड बहादुर ने सदरमें तो रिपोर्ट करी और नेकनामी के ख-
 रीते यहां भेजे तथा हासिल बाबत जनाब कलां साहिब ने मोतमदों की कमेटी से मात्र रियासतों
 में थहूठ हराया कि इस साल व आयं दे ही १० से निरर्व होने पर विलकुल स्वाफ और हमेशा फीमन
 टाई आने लेवे और जैमल मेर से अब भी लेवे और आयं दे भी निरर्व ७ सेर से कम हो तो रूर करे-
 तथा हमेशे भी फीमन सादे चार आने लेवे तदपि वनजर रईयत परवरी व गुरवानवाजी बहुतों-
 को तो रूर और वाकी से भी आधा लिया ॥ सं० २६ पोष बद्द ही ठाकर साहब मौसूफ स्वर्ग

पधारे तो शिवा रवाने की सवारी के मन्त्र कार्य बडे हजर श्री गज सिंह जी साहिबां मूजब बलकि -
 ज्यादे कराया इस साल तपकी बीमारी से शहरमें हजारों आदमी मरे ॥ सं० २७ में श्री

६४ मुल्क का दौरा कराया सो कोट समूह गढ घोडडू खारा रवुईयाला तगोट किस
 गढ बूयली नान्दगाा मुंहन गढ देवा देखाके म्हा मुद्द शहर हारिबल हुस इसी साल चैत्र सुद
 १२ म्हेतानथमल जी की तरफ से न्यातमें थाली मिश्री की लां वराा कराई और ज्येष्ठ बद्द नथमल
 घरेपधारे भाद्र सुद नथमल जी कामका इस्तेफा दिया काती बद्द जो घपुर से जनाब -
 इनपी साहब बहादुर यहां तशरीफ लाए ॥

मूंगरपुर विवाह का हाल सं० २० में ठाकर गोपाल जी सगार्थ का पैगाम लाया फेर गांधी
 शिबलाल जी आके सेठ हिमतराम जी की मारफत रस्तारवर्च वगैरे की पढी कर गया सं० २० म्हा-
 में म्हेता पुनमचंद्र प्रो - टीकालाया चैत्र बद्द नालेर झोलीया सं० २९ भाद्र व में पंडित भगवती प्रशाद

* यहां लोचं ह पुस्तक रूपने पाई थी कि श्री महाराज वलवैरी शाल जी साहब के परलोक वाम होने के समाचार -
 मिले १९ मार्च को १०३ बजे दिन के स्वर्ग लोक पधारे - शोक ! महाशोक ! - म० मुगदर जली होशि

आया स० ३० पोपवद् १ जान चढो ४ दिन में आबूजी पहुँचे पोप सुद १ गाम वेही बाहे ५ कोस
 रावलजी उदैसिहजी सामे आये दूजे दिन शाही हुई थाद १ लारव रूप्ये त्याग के जितमे ८० हजार
 तो वहा को वामदार नेहाल चन्ट जाँको मौपे और २० हजार मुतफकी वहा वरास्ते मे नकद वपारचे
 वगैरे दिये दोहा चवदे हार्गा चारगा नूगरपुर दीघा । परनीजे जेमान पतिविवि प्रभरी की-
 धा ॥ ११ ॥ १० मुकाम रहे वाद सीरवजीवी बेकी वहे लकारवलजीमा पहुँचा गये ॥ गाम वेडेली
 में इंडर महाराज के सीसिहजी आये कुरसियो की मुलाकात हुई और अपनी वहिन की शाही-
 करनी चाही थी पर० महाराज के मार्दजीजी भुज महाराजो जी श्री देसलजी के वार्दराज है उनके
 मनाकरने से मजूर नहुई फेर आबूजी पधारे सिकतर वेली साहब बहादुर से मुलाकात हुई और
 वंगला १ आलीशान मग बाग वकुवा खरीद कराया तथा बम्बई देरवने की मन्शाथी परं सकु-
 ना रास्ता नहीं दीया ॥ श्रीरांगीजी साहिब अपने नानेरे सीरोही रावजी उमेदसिहजी से मिल-
 आए ॥ महासुद १२ बाग मूलराज सागर दारिबल हुरा फेर अमर सागर ७ महीने बिराजे रसीसा-
 ल खान साहब कैलात से खरीता वसौगान आने जाने कारवता हुआ ॥ ठा राज श्री कुत्रसिहजी
 म्हाकी सलाह वन्हेता अनीतसिहजी की कोशिश से तनाव घडसी सरके आडकी पाखीर मे बहुत
 से बैरे बरुपर मकानाव व बागात होने से जेवायश के सिवा आराम हुआ कि पानी की तकलीफ न-
 रदी और चालाबपर चागीची बस्ती होने व कुत्ते वगैरे रहने से पानी खराव होता है ॥ स० ३१ मे
 जो थपुर महाराज श्री नरवतसिहजी साहिबके भवा श्री जोरावर सिहजी के कु० श्री फतेसिहजी
 यहा आकर ५ महीने बाग यमरागागर रहे अलाये दूसरे खर्चके रु० १ हजार हर महीने नकद खर्च
 को दिये गये और वैशाख सुद १२ ठा राज श्री कुत्रसिहजी सहा की वार्दराज श्री राय कुं० शेशाही
 फारी टीका रायजा वगैरे दस्तूर मूजवदीया जैवद ८ म्हेता नथमलजीके घरे पावगा वीया फेरान-
 गोत मानजीवी सला से सीरवले नोधसुर पधारे ॥ स० ३२ मे श्रीजी साहिब की तवीयत खली ज
 हुई जव जनारजी उन्ट चालदर साहिब बहादुर मग डावदर साहिब तरांफ नारा ॥ स० ३३ मे
 माघ दस १८ ०० ई० ना १ जनवरी की मलकाम गोजमा कुचई निवटोरि गेके सरहिन्द

का खिताब लेने को दरबार दिल्ली में मात्र रईस इकठे हुए श्रीजी साहिब नहीं पधारें तो स्त्रीडेन्ट साहब
 की एकज फौज का अफसर कान्हे साहिब और नपुर से यहां आके आम दरबार कराय सरकार सौल-
 त महार की जानिब से इस्पीच में इमखान्दान की बडाई बबहादुरी की तारीफ करी जवाब में सर-
 कार की म्हेरबानियों का शुक्र अदा करके काम पडे हाज़री करने का कहा तथा आ तशवाज़ी रोशनी
 वगैरे खुशी के सिवा यादगारके लिये कै साहिब का मेला हर साल तलाब गंगासागर पर होता है
 और प्राय साहिब बहादुर वरान साहिब बहादुर जो पैसायश के काम पर आस थे दरबार में ये इस्मी सा-
 ल भाद्राबद में नमक के काम वास्ते म्हेतानथ मलजी जोधपुर गये थे कै साहिब की म्हेरबानी व-
 यादगार में वावरा याने निशान जनाब स्त्रीडेन्ट साहिब मौसूफ पास आया हुआ था इनायत फर-
 माया सोलाया जब बडी ताज़ीम से वधायके लिया ॥ सं० ३४ में भारी कृत पडा ॥ सं० ३५ के फा-
 गुलामें अजंट करने लवार साहिब बहादुर फलोधी से तशरीफ लास उस वक्त सरकार की चढाई का
 बुल पर थी बारबर हारी के लिये यहां ऊंडर वरीद किये इस्मी साल का तीबद कलां साहिब करने ल-
 ब्राड फोर्ड साहिब बहादुर जी तशरीफ लास सो श्रीजी साहिब से बहुत ही खुश वरज़ामंद रहे ॥
 श्रीवीकानेर महाराज श्री रतन सिंह जी सहाने बडा हज़ूर श्री रराजीत सिंह जी साहबारी के कीरमें
 बंदकारी थी सो श्रीसरदार सिंह जी सहा सिदकदिल से ज़ारी करनी चाहिये चुनाने सो ग़ात वरीता
 के चाहे सं० २० में टीका आया गचा वकील पीछे भी नहीं पहुंचे थे कि महाराज श्री मूंगर सिंह जी सहा
 राजबिराजे जब यहां से फेरटी का भेज के सौग ही भंगाया पर बडा महाराज के दिल में प्रीती थी सो न
 रही ॥ सं० ४३ के भाद्राबद ३० को स्वर्ग पधारें जब छोरा भाई गंगा सहाजी राजबिराजे ॥
 सं० ३९ के जेष्ठ सुद १३ इतने ठिकानों की प्रतिष्ठा हुई बडेबाग में मंडप श्री बडा हज़ूर साहि-
 वां वटाः राजश्री केशरी सिंह जी सहा हो ज़नाना वराजश्री छत्र सिंह जी व दोठ करणियों व बाई चांद
 कु० - और तलाव गजरूपसागर तथा कोट देवा नाचगा लाठी हरजगह ब्राह्मण भोजन
 मस हस्सागी आदमी १ रुपया व पाट प्रोहितों को पहेरा व रियायों और कामदार गजधरों दोगों -
 नहैनतियों वगैरे को सरोपाव दीस ॥ सं० ४० के पोहो में रोहोडी का पीर हिजबुला सहा जो सं० ३५ में

भी आये थे। पापेई साल मे श्रीजी साहब डेरे पधारे हृदसे परे का दरव रूजत बहाई १२ मुकाम कि
 ये हजारी सुरीदो के लिये खाना शामिल होता था और सुरीदों की तरफ से दावत की नागा होती
 जब श्री दरबार से खाना दिया जाता था जब से पीरसाई सिद्धादि लसे हुआ गो है ॥ स० ४० मे-
 सुकाम साकडे स्नीडट वरनेल पावलट साहिव बहादुर से श्रीजी साहिवा मुबाकात करी रफजन्दी
 का मीर मुन्शी महानरान जी ग्यार महसूल सायर वदीवानी फौजदारी वगैरे काम कायेदे से करने
 की सरदारी मोमीयो व सब रईयत के मुर्वीयो वगैरे से मजूरी कराई और जेठ सुद १२ म्हे तानथमल
 जीको दीवानी का सरोपाव हुआ जब साहब ममदूह की तरफ से मुन्शी जी ने खासव ग्याम लोगो वो
 इस्पीच सुनाया फेर मुन्शी जी व नथमल जी साहब मौसूफ पास गर काम की वावत सलाह करके
 पीछे आते मौजेम हाजन २० वीकानेर काटा रामसिह जीको रूबरगी और नपुर सरकारी कैद मे थे
 बडा साहब को श्री दरबार साहिवा की तरफ से नामनी देकर साथ लाये और मौजेग देली डा मेघसि
 ह जीको भी साथ जाने की साहब ममदूह से अर्ज करी तो फरमाया कि महारावल साहब के लिखने
 से सर मे रिपोर्ट वारी थी मो मजूरी भी आगई है लेकिन जैसलमेर जाने से इनकारी है फेर बहादुर
 सिह जी तो अजमेर व मेघसिह जी इ० जैपुर और रामसिह जी जैसलमेर मे रहे खर्च के लिये रु० १५५
 माहवारी मा० स्नीडन्दी दिवाने से मिलता था पर ० कुल खर्च ५॥ वर्ष मे राजकोसगे वाद
 मी आद के बीकानेर गर ॥

श्रीजी साहिवा की चम्बर दरान हो दातारी मे हृदसे परे नामवगे हासिल की वी है कि भाई रगैरे दो
 फारव पसाव वगैरे जो हर पीछी मे देने का दस्तू के सिवा ह नारहा ऊट व सैकडो घोडे व बर्द दान्या और
 गाम नमीन व नकद रुप्ये व जेवर पारचे वगैरे ० वैशुमार चारतां भावे व मूमी वगैरे वो दीये चिसकी
 साखामे बहुत से गीत कवित दीहा वगैर रूदकाहं सौरदा कीतनता काम चारा गोघकत्
 ती आवता । तेसांची तुडतारा सुदव ग्राडी देवरमत ॥ १॥ रननु शिवनीदान नीयो क
 विरान का खिताब वतार्नाम और गाम भू दुसारवीचा रहवे ती गर मे म्हेता प्रतापजी वानो
 तथा चारव पसाव परे मे सोना लवामान जेवर खास पोशाकी व हाथी घोडा ऊट वत नगरदरार

बंदूक वगैरे अना फ़रमाय सरदारों मूजब तनखाह करादी अलाहाजुलकयास एसेही सर
 दारान पर नवाज़िश फ़रमाई चुनाचेठा राजश्री तेज सिंह जी स्हाको पैंगाली सवे वर्ष वीकाने
 से बुलाय गाम मयावसी वरवडीन लांगीला परे दिय तथा वरसिंह खेतसिंह जी शिवजी सिंहीत
 जो तीन पुस्तसे नाउमेद २० वीकानेरमेंथा सं० २५ में तुलाके कोट बिकमपुर मया आठ गाम थल
 कोरके वखिलअत पैमे सीना वघोडा वनकारा वरुडी वगैरे तथा दोबडी ताज़ी मदे के रावकीया
 और लिखत कालिया कि कोट वगामोंकी मौकूफी बहाली अवते चारश्री दरबारके है १० दोसो
 डूकमठ हरसालेरव का भरदे वदीवानी फौजदारी श्री दरबारकी रवके कोट से हाकमको उठा
 य मौजे नोखमें कचेडी रवाई और बरसलपुर रव का ठिकाना चरावपिराा हीरहना दुशवार
 था सो कसूर माफ़ कराय सरोपावपैरमें सीना वरुडी वगैरे इनाथत किया बाद उन्हीने श्रीली
 तरफ़ ज़मीनमें कई गाम बसाए हैं तथा दूसरे सरदारों वगैरे को गाम व ज़मीन बरवशा सो गामों
 के नकशेमें लिखा है सिवा इसके बहुतसे मुलाज़मान् राजकी शादी वगामी पर हदसे परे बरव
 शिशे फ़रमाई बहाथी पालकी वगैरे कुर्ब रिया तथा रिआयाके भी अच्छे रकिरियावर होने पर
 खुश नूदी वसे हरबानियां ज़ाहर फ़रमाते है जिससे हर को मर्जे लायक शरवस है सियतसे बरके
 नांमूजके शुभकाम चुनाचे ब्राह्मणों पुष्करनों व ओसवालो व महेसरियों में पंचपरबीछों परथो
 डा वमंदर वमंडप वबेरा बगेचा तालाब वसेजा मिश्रीकी लांवरगां वगैरे २ कर रहे है एसेही फ़ली
 वालां में उजागा वसिलावयो में राजधर मूलावसरूपके सधूत होनेसे स्हां मदी खारा ७। २
 हुआ और मौसरो में खांडगलनी तो चमारों तकहोगई मुफ़ासलहालकहांतक लिखा जावे खाना
 पहिन्ना वशादी वगैरे में र्वर्चबढनेसे अन्दे शारईयतके टूटनेकाथा परंतु श्रीजी साहिबांकी नेका
 नीयती की बरकवसे लोग बहुत आसूदा होगए और होतेजाते है कि ज़माने साबिक याने -
 सं० १९०२से पहिले लोगों पास जितनी बकरींतथीं अबसरकार दौलतमदार अंगरेज़ीके तुफ़ैल
 के बादस अमत् होनेसे उतनी सांदां वगाथां भैंसां है सं० २५ व ३४ में भारी कदत पडा था इसदेस
 में मवेशी ज्यादा बढी थी सं० ४४ में बेशुमार मवेशी मर गई तो भी ज़माने साबिकसे कई दरजे

बढ़ती है तथा खेती पर भी पूरी रतवज्र है जिससे सैकड़ों बंधे व कुवे हए व होते जाते हैं ॥ कि
के लक्षण बाटों में जहां घास भी नही होती थोड़े हू होता है और ८० पुये कुवा खोदने से राख निकली
थी वहा ५० पुसे मौजेरा गौरी व गैर में भी दापान्ती की हजारी बरीयो होगई है अलाहा जुलकय
संदेश में कई जगह बरीयो का पार व कुवा गांव बना हुआ व गामो में गू होने लगा सो गामो के
नेकशे में मालूम हो सकेगा ॥

श्रीजी साहबां की उमर दराज हो - दीवाली, सालग्रह, वसन्त, अखातीज, दसहरा व गैर को
शाम दरवार का वात आनंद और दीवाली होली के बाद कई दिन शिकार को पधारने व शुदी ५
हर महीने बडे वागव कई मेला में सवारी मये लवा ज्मे होने व गो ठां खेल होला चौथ व गैर को
शहर व जग मे खुशी का समाज होता था सोर - ३० के बाद तवी अत नासाजर होने से बरापनाम
कर रहे हैं तथा देखी सुनी बातों की याद हृदान हव है कि तवारीखी हालात भाटो जान व देश में मा
व कोम के समपणं सुधां तो ठीक परं रज्य पूताना के रईस व धांपां के ठाकरों के नाम गाम भर-
त्वा व गैर की वाकाफियत अज हू है और खाश व आम लोगों परने क नजर से हर एक की क
दर व इज्जत कालिहाज हद से परे रखे है - अलाहा जुलक्या सहर तरह डूर अदेशी व होशिया
री व गैर की सिफतें क हां तक लिखी जावें मगर शरीर की लाचारी से राज का सुख न होने के
अलावा दिल में नाउम्मेदी ने तरक की सुधारे को ताक में रखकर या व कार खाने अब तर कर दिये
हैं - हा दई व प्रधान थाने इकवाल की खबी से चल रहे है ॥.:

+ जमीमात वारीख हाजानम्बर (१)

चूकि महतान थमलजी साहब दीवान राज मोसूफ की ल्याकत व सामथर्मे व दूअन्देसी
व वाकाफियत व गैर ह व गैर ह दानाई से कार वार्ड्याने नेक नीयती के बरताव का हाल जो
सुफसल लिखा जावें तो शजिन्द मे भी पूरान हो सके वास्ते मुस्त न मूना जो इसमें लिखा गया
है उसकी तशदीक के लिये बड़न सी दलीलो व सन्दों में से दो सन्द का खुलासा लिखना वा
जब हशा सोय ह है कि महताजी मोसूफ को सब तरह से लायक समरु कर ४० वर्ष तक बडे -

हनुमत् श्री राजीतसिंह जी साहब व ठा. राज श्री ब्रह्मसिंह जी साहब और खास कर महा
 रावल जी श्री बैरीसाल जी साहबों ने कदर अफजाई से जो जो महर्वाणियों व निवाजसों
 फरमाईं सो तो मशहूर आम हैंई. फेर बसियत नामा में भी राजकाज चलाने का पूरा
 भरोसा इन पर हीज करके अपने श्री हस्त की सही से लिखा दीया. अलावा इसके हुक्म
 काम बक्त भी खुसब महर्वाण रहे चुनाचै. जनाव कर्नेल ईडन साहब बहादुर जी ने
 सन्वत् १९२९ के मुताबिक सन् १८६५ ईसवी में खरीता व खत लिखा दीया उसकी
 इस पर महा रावल जी साहब ममदूह ने अपनी खामन्दी की सनद लिखवा कर
 खरीता व खत महता जी साहब के हवाले किया जिसकी नकल लिखता हूं॥

खरीते में मामूली अलकाब आदाब के बाद लिखा है कि महता नथमल जी
 वकील आपका जबसे मैं अजन्दी राजपूताना में आया मेरे पास हाज़र रहा और उसकी
 खैर खाही जो वास्ते काम अपने राजके अमल में लाया मैं खुस हुआ अब जो मैं जैसे
 लमेरे में आया और बहुत शिकायत अजीतसिंह की सुनी सुना सब मालूम हुआ कि
 महता नथमल जी वजाय महता अजीतसिंह कामदार ठाकुर केशरीसिंह जी का
 रहे और अजीतसिंह हमारे साथ कार वकालत पर हाज़र होवै और जब यह शिका
 यतों की गरमी उठी हो जावै तो जैसा सुनासिब हो कीया जावै इस वास्ते महता
 नथमल जी को खिदमत में आपके रुखसद दी और यह खरीता बतोर सनद खामन्दी
 अपनी के हवाले उनके कीया कि आपकी खिदमत में पेश करे और उम्मेद है कि
 आपसी उनको नेक चलनी से खुस और खामन्द रहेंगे और उन पर महर्वाणी रखें
 गे फक्त ज्यादा मसरत बाद अलमरकम २२ अक्टूबर सन् १८६५ ईसवी व मुकाम
 लाठी दसखत अंग्रेजी में॥

इसकी पुस्त पर बमूजब हुकम श्री मुख

जो किये सनद वास्ते सनद हमारी खामन्दी के कि इस मूजब बन्दगी बजावे याने

हमारी मस्जी मूजब हीज बरताव रखने से महर्वान होकर नथमलजी को रोबरू
इनायत कराय है और आयन्दा को ही पूरा भरोसा कीया गया सम्बत् १८४४ का
मृगसिरवदी ३ गुरु

द० मु० इन्द्रराज

खत

- स्वस्ति श्री सर्वोपमा ठाकुरों राज श्री केशरीसिंहजी जोग्य कर्नेल वलियम् फरोडर
रुईडन साहब बहादुर अजन्दगवर्नरजनरल राजपूताना लिखावत मलामवांच
जोशता का समाचार भला छै राजका सदा भला चाहिजे अपरच महता नथमलजी
जबसे मैं अजन्दी राजपूताना मे आया वकालत परजानिवराजजैसलमेरसे मेरे पास
हाजर रहा और अपना काम मेरे रोबरू राज की खैरखाही के साथ अच्चा अंजाम दीया
कि मैं उनसे खुस रहा और उनकी बजाय और तोर से मालूम होता है कि उसकी चालच
लन अच्छी और व सबब सुनने शिकायतों के कि जो निसवत महता अजीतसिंह काम
दारके बहुत कसरत से थी ऐसा मालूम हुआ कि महता नथमलजी उसकी जगह
कामदारी पर मुकरर हो और महता अजीतसिंह को बजाय महता मोसूफ के वकाल
त पर मोइयन कीया जावै और उम्मेद है कि महता मस्तू अच्चा काम देयानत से अं
जाम देगा और आपको खुस रखेगा अब जो हमने महता नथमलजी को रुखसद
कीया है खतवतोर रजामन्दी अपनी के उसकी चालचलन से आपको लिखा गया
और उम्मेद है कि राजभी उसके हाल पर महर्वानी रखेगे तारीख २२ अक्टूबर सन् १८५५
इसवी ॥ दसखत अङ्गरेजी

पुस्तपरबमूजिवहुक्मश्रीमुख

यह खतवखरीता वास्ते: सनद रजामन्दी के नथमलजी को सोपा गया सम्बत् १८५४
का मृगसिरवदी ३ गुरु ॥ द० मु० इन्द्रराज

इसके सिवाय दीवान नय नलजी की ल्याकन इसी बात से जाहिर है कि उन्होंने अपने अहद
दीवानों में रईस और रैयत दोनों को खुस रखवा और इस थोड़ी सी आमदनी पर (के उसमें भी ५
साल बराबर अकाल पड़ने से कभी आगड़े) राज के सारे कारबार को चलाया और दूसरी रियासतों
के इस राजाल को भी जिनसे इस राज्य का संबन्ध अथवा रिश्तेदारियां हैं ने भाया महनत और
जफा कशी जाहिर ही है कि पूरे डेढ़ वर्ष तक आखों की शाह दीमारी पर भी राज्य का काम बराबर
चलाते रहे कभी हर्ज नही होने दिया इन्हीं के अहद दीवानी में जैसे सलमेर में सर्कारी डाकखा-
ना कायम हुआ और दीवान साहब भोसूफ एक बड़ा स्कूल भी सर्कारी तौर पर जैसे सलमेर में काय-
म करना चाहते थे परन्तु शाह की आंखों की बीमारी ने इनको राज्य के काम छोड़ने पर मजबूर
कर दिया तो भी यह एक जिन्दा दिल और तजरबेकार कीमती अफसर राज्य जैसे सलमेर के हैं इन
की सलाह और ससर्वे ही से राज्य और रैयत का बहुत फायदा हो सकता है सबसे बड़ा सद्म
महता साहब भोसूफ के दिल पर श्रीद्वार महारावल श्री बैरीशालजी साहब के स्वर्ग
वास होने से बहुत चाजि सने सच पूछो तो इनकी कमर तोड़ डाली (हम उक्त द्वार के वैकुण्ठ वास
होने और सर्कारी बन्दोवस्त का हाल इसी ग्रन्थ के अन्त में एक खास जगह में के अन्दर लिखे
गये) महताजी साहब ने श्रीद्वार स्वर्गवासी के रोब रूब हस्त से नये कायदे भी बनाकर पेश
कीये थे वह चल पड़ते तो राज्य और रैयत दोनों को लाभ होता परन्तु बराबर अकाल पड़ने
और परजा के बेदिल होने से वह नियम प्रचलित न हो सके जो कि आज दिन राज्य का इन्त-
जाम हमारी सरकार के हाथ में है और श्रीमान कर्नेल पोडवली पोपोलट साहब बहादुर
दिल व जान से इस रियासत की भलाई चाहते हैं इसलिये हमको आशा है कि सब कुछ अच्छा
ही होगा उक्त साहब की दानाई और महवानी इस रियासत के लिये अच्छा फल लायेगी
हमको महताजी श्री नथमलजी की जात बाबरकात और अकाल मंरी से भी उम्मेद है
कि वह भी ऐसे समय में अपने प्राचीन मामलिक की भलाई के लिये राज्य और सरकार की
नक सलाह देने में कोई दकी कावाकी न रखेंगे परमेश्वर ऐसा ही करें ॥

रैसबाहजै सलमेर मुहम्मदपुरादशली

इफे ४

मारवाड में भाटी सरदार

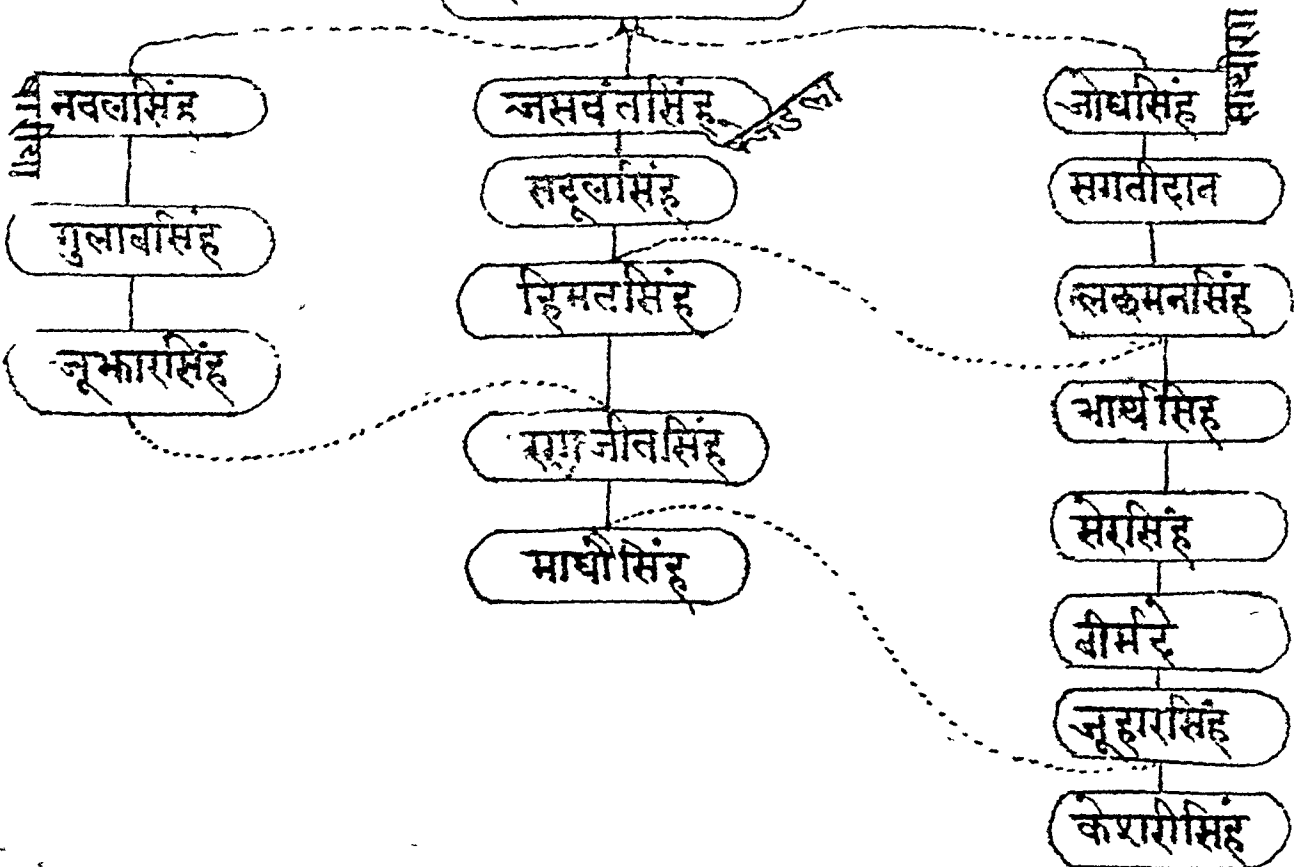
महारावलश्रीमूलएजजी जैतासिहोतकेकु० देवरत्नकारवापहमीरोतऊर्जनेत और
महारावलकेहरकेकु० कजवारराकेबेरेजैसेकाखापजैसावमहारावलअमरसिहजीके-
हीरेकंचराकाखापएवलोत और दूसरेबहुतसेभाटीइलाकेराजमारवाडमे रहतेहै चुनाचे-
स० १२९६ में जोधपुर महाराजश्रीमानसिंहजीसाहबकेकुलसरदारो सेजनाचरजीडेन्ट-
करनेखसदरलैनसाहबबहादुरनेसफाईकारवाईनवभाटीसरदारोकेगामरेखके१२४॥
वधारेके३५॥ जुम्मे१६०॥ जिसकीपैदाशु० १९२९०० रेखव० २०५००० वधारेजुम्मे ५५
२०३३००० कीलिरवीहै औरवहुतसेगामविलारेखकेजुदेहै औरकईठाकुरजीइज्जत-
मवलनम्बरकेउमरावहै अगरमुफसिलहालातजोभाटीओकादिस्त्रीवगैरेसेमारवाड-
मेआनाऔररियासतहाप्रवन्नाबांधनावगठकीनीवेदेनाचौथेहिस्सेकेहकदारहोनाऔरगठ
मुल्ककाबन्दोबस्तखवनावाइशाहोकोजवाबदेनावलडाइयोमेमरनामारनाचुनाचे-
रुघनाचसिंहदिस्त्रीमेजसवन्तसिंहजीकीलानीकोवचानेमेवाइशाहूकेकईअमीरोको-
मारकारमरावगैरेवगैरेलिरवाजावेतोसेसीही१कितावमेपूरानहोसकेबडेहीनामीगिरामी
दातारवसूरवीरवसरनायासाधारहुरा गामवानरवैठाकराकासोरठा पर्देडागडेपया
लजसरथकोइजुवोनही॥जगसहजीवरायाजजाइमडावेजैतसी॥१॥ दिसहेकारा-
हरदास दिसदूजीसारीदुनो। तोइजतोलोतासक्युहिकभारीकानउत॥२॥ तथागामप-
लीकोठाकरभैरुजीका दोहा कलजुगवहेकहर समनदीजलसोरखियो। पयरत्नागपूर
गरजेभाटीजानउत॥१॥ औरखेन्डलेठाकराजोधसिंहजीतोमहाराजश्रीमानसिंह
जीकोजालोरभेजकरगापश्रीभीमसिंहजीकीफौजसेलडमेरेफेरसगतीदानजीपांची-
विहारिदासकोपनाहूदीजवबहादुरीवदूजेकईवामोमेखैररसाहीवअकालमदीवगैरे
कीखुबियोकोमहाराजश्रीमानसिंहजीसाहिवानेआंमुखसेजसवमरसियेगुहफारमाये

सो दोहा रजपूतीकरवसतहुईपड.मार्गप्रतिकूल । पाछे आंणी ग्रहपलो सगतै नै
सादूल ॥१॥ अलाहाजुलक्यास -

तथा रावलोत सरदारोने राजमेवाड जैपुर भालावाड नरसिंह गढ़ वगैरे में पटापायाई
समहारावलजी श्रीमूलरजजी जैतसिंहोत्के २ देवरज ३ हमीरु लूगाकर्न ५ कुत्रसाल
६ उर्जन ७ सांवतसी ८ सीहा ९ रावपाल १० आसकर्न ११ गोपालदात १२ कुः दयाल
दासदिल्लीसेमारवाडमें आए १३ केसरीसिंह १४ सूरसिंह १५ हदीसिंह १६ किस्तीसग

१७

देवी दानजी -



राजमारवाडसेसीवनिकलीवबाकीरही की बिगत

संवत १९४१ में तिरवूरे पहीकारा से खेलांगोतक सीवकोस जनावकरनेल पावलत
साहिबबहादुर नेनिकलाई फेरराजगढ़की तलाई परतकरारकरनेसे अटकी बादबहुत झ
मेलगहा जोधपुरकी फौज आकर राजगढ़ का भाटी बिडन्दसिंहको जिन्दा मारा फेर सं०४४

६६. ६ भाटीव सोदा सरदारों के नाम वगाम वताजी म वंठिका ने की-
पैदा नरव मोन न जोर जोड न साहब को सं० १५४२ में लिख दी है सो तथा
सहर में रहे जब त नखाह श्री दरबार से मिलने वगैरे का हाल ॥

१. १ महारावलजी श्रीकेहरजी २ केहराजी ३ चाचा ४ वरसल ५ सेरवा ई हरी ७ वर-
सिंग सेरवांप वरसिंग हुई ८ दुर्जनशाल ९ रुंगसिंह १० उदैसिंह ११ मूरसिंह १२ वेहा-
रीदास १३ जैतसिंह १४ सुंदरदास १५ अचलदास १६ वाकीदास १७ गुमानसिंग १८ न-
हारसिंग १९ जुझारसिंह २० शिवजीसिंह २१ खेतसिंह २२ कुं:अमरसिंह विकाम
पुराव रोवडी तान्जीम नगरी छुडी डावी मिसल अबलनम्बर सनखाह रु० १५० पैदारु०

२. ५ ४ वरसल ५ सेरवा दस्वीमाल सेरवांप रवीयाहुई ७ जैतसिंह ८ मालदेव ९ मंडलीक -
१० नेतसी ११ प्रथीराज १२ दयालदास १३ कर्नसिंह १४ भानीदास १५ केशरीसिंह
१६ लखधीर १७ अमरसिंह १८ मानसिंह १९ साहबदान २० रराज्जीतसिंह २१ धन
राज २२ कुं:भोनीसिंह वरसल पुरावजी वगी मिसल वाकी विकाम पुर मुनव पैदारु: ५००

३. ७ वरसिंग ८ जैसिंह ९ कान १० आसकर्म ११ जगदेव १२ सुदशान १३ गुरोसदास १४
विजैसिंह १५ दलकर्म १६ अमरसिंह १७ रामसिंह १८ कर्नसिंह १९ रुधनाथसिंह
पुगल राव कुर्व वरसल पुर मुजव

४. १४ सुंदरदास १५ लाडखान १६ सरूपसिंह १७ सेरसिंह १८ रतनसिंह १९ माहेबदान
२० वूलीदान ठा० विकासर पैदारु० १५०

५. १५ अचलदार १६ किरतसिंह १७ दानसिंह १८ भोमसिंह १९ जोरावरसिंह २० जेदमल
२१ अमरसिंह ठा० गिरराजसर तान्जीमवडी तवखाह रु० ३० धरवैठा पैदारु० ७००

६. १६ वाकीदास १७ मूलसिंह १८ मदनसिंह १९ जैसिंह २० वीझराज २१ हठेसिंह ठा० वांग
ड सर पैदारु० १५०

७. १८ दुर्जनशाल १९ भानीदास २० मानसिंह २१ भगवानदास २२ राजसिंह २३ अजवसिंह

१४ पेमजी १५ अनोपसिंह १६ लखधीर १७ सूर्जमल १८ जालमसिंह १९ हीरजी
 २० मूलजी २१ कुंजानजी ठा सिर्डी वा बडी वनखाहरू २५ पैदाह ३००
 तथा १५ अनोपसिंहके १६ नथराज १७ भोमजी १८ रावतसिंह १९ भोजराज २० कुं
 कल्याण ठा नथराजकीसिर्डी

८१८ दुर्जनशाल ९ भानीदास १० गोपालदास ११ सावलदास १२ जैसिंह १३ जोगीदास १४
 सिवदानसिंह १५ सगरामसिंह १६ चैनसिंह १७ दुर्जनसिंह १८ उमेदसिंह १९ प्रताप-
 सिंह २० नवलसिंह २१ कुंज अमरसिंह ठा जोगीदासकोसिर्डी वा वनखाहरू ३०
 पैदाह १५०

९१११ मूरसिंह १२ प्रागदास १३ चीरभान १४ जभौराम १५ सुखजी १६ सरदारसिंह १७ इन्द्र
 सिंह १८ रुघजी १९ हीरजी ठा ग्रांधी

१०१११ मूरसिंह १२ मूरसिंह १३ जैसिंह १४ रामसिंह १५ अनोपसिंह १६ सरदारसिंह १७ बाप
 सिंह १८ जमजी १९ गोयददास २० उदैसिंह ठा भोजांकी वाप

१११११ ११ सू १२ दलपत १३ साहिबखा १४ विजैसिंह १५ नरसिंह १६ पेमजी १७ सालमसिंह
 १८ इन्द्रसिंह १९ ठा वावडी

१२११० उदैसिंह ११ ईसरदास १२ हाथीसिंह १३ जुगतसिंह १४ नथराज १५ सरूपसिंह १६ समे
 लसिंह १७ वनजी १८ मधजी १९ कान्जी ठा बडीसिर्डी

महारावलजी श्रीमालदेजी सेमालदेयोतवकुं: २ खेतसिंहजी सेषेतसिंहोत
 इनके ३ पन्चानको पन्चानोत धरामसिंहको रामसिंहोत ५ उदैसिंहको उदैसिंहोत सेसेहीखेतसिं
 होतो सेजो जोखापाहुंरुं सो खिली गई

१।५ उदैसिंह ईकल्याणदास ७ मूलचन्द्र ८ अनोपसिंह ९ जोरावसिंह १० जालमसिंह ११ जो
 गराज १२ शिवजीसिंह १३ बूली दान १४ कुंजपदमसिंह ठा चंजनमाली वान्जीमबडी
 तनखाहरू ३० हमार गाम वूडा वनीवली पैदाह ३५०

२। २ अनोपसिंह ९ खेतसिंह १० वाघजी ११ भोजराज १२ विजैसिंह १३ कुं अचलसिंह १४ भं
गलसिंह ऊपरमुजव ठा० गामगेहूं पैदा रु० ३५०

३। २ अनोपसिंह ९ सरूपसिंह १० जोधसिंह ११ प्रथीसिंह १२ तेजमाल १३ कुं प्रतापसिंह -
ठा० गाम सीहडगर तनखाह रु० २० पैदा रु०

ई कल्याणदासजी ७ अर्जनसिंह ८ मानसिंह ९ अमेदसिंह १० धनजी ११ जसवंतसिंह १२
लक्ष्मी १३ चमनजी १४ भ० किस्तासिंह ठा० माडलीताजीमदेकेवडी तनखाह रु० ५५ पैदा रु० ३५०

४। ३ कल्याणदासजी ७ भीमसिंह ८ सरदारसिंह ९ न्हेराज १० भगजी ११ संभूदान १२ वृत्तीदान १३
कुं समर्थसिंह ठा० देवडा ता० तनखाह रु० ३० पैदा रु० ३५०

ऊपरलिखेपांचो ठिकानेउदै सिंहेतहे

१। २ खेतसिंह ३ पचांगा धरामसिंह ४ तेजमाल का तेजमालोत ई सुलतानसिंह ७ दौलतसिंह -
८ सवाईसिंह ९ सरूपसिंह १० जानसिंह ११ प्रचीरज १२ इबतावरसिंह १३ कुं सुसालसिं
ह १४ भ० नगजी ठा० राराधाताजीमवडी तनखाह रु० ५५ पैदा रु० १७५

२। ७ दौलतसिंह ८ मानसिंह ९ सूर्जमल १० संभूदान ११ न्हास्जी १२ राजाजीतसिंह १३ कुं
ठा० मोढा तनखाह रु० ३० पैदा रु० २५०

३। ६ सुलतानसिंह ७ पदमसिंह ८ जीरावरसिंह ९ रामसिंह १० गुजरज ११ कुं वृत्तीदान
ठा० तेजमालोत तनखाह रु०

१। २ खेतसिंह ३ ईसरदास ४ हारकादास का हारकादासोत ५ भागचंद ई लाडखाने ७ अशै-
सिंह ८ लेखजी ९ सालमसिंह १० भोजराज ११ जेठमल १२ न्होबतसिंह १३ पनजी ठा० गाम
बारू ताजीमवडी तनखाह रु० ३० पैदा रु० ३५०

२। ५ भागचंद ६ चंद्रसेन ७ राजसिं ८ हलपत ९ सुजानसिंह १० रतनसिंह ११ भगवानसिंह
१२ हीरजी १३ कुं वरवतावरसिंह १४ भं बारू ता० वडी तनखाह रु० ३० पैदा रु० २५०

३। ५ भागचंद ६ मूलचंद ७ लालचंद ८ फतैसिंह ९ बांकीदास १० खेतसिंह ११ चमजी १२ काडव

- सिंह १३ कुं० अखसीदाने गामटेकरा
- १ २ खेतसिंह ३ सगतसिंह का सगतसिंहोत ४ हरीसिंह ५ फतैसिंह ६ किसोरसिंह ७ जो
गवरसिंह ८ बाकोदास ९ प्रथीराज १० भगवानसिंह ११ भोजराज १२ फतैसिंह -
डा० सतेआयो ताजीमयडी तनखाह रु ४७ पैदा रु १०५
- २ ४ हरीसिंह ५ न्हासिंह ६ कल्याणसिंह ७ म्हेवामसिंह ८ धीरतसिंह ९ जोगराज १० अम
जी ११ वीरदान गाम घटियाली
- ३ ३ सगतसिंह ४ केशरीसिंह ५ रतनसिंह ६ जुगतसिंह ७ लखधीर ८ सगराम ९ जालमसि
ह १० राजसी ११ हीरुजी १२ कु० पखतावसिंह डा० अनासरतनखाह रु १५ पैदा रु १००
- ४ ५ रतनसिंह ६ रायसिंह ७ अनोपसिंह ८ हिन्दुसिंह ९ नथुसिंह १० कर्नसिंह ११ न्हा
जी १२ अजीतसिंह १३ कु० बैरीसाल गा० बालारणो पैदा रु १००
- ५ ७ अनेपसिंह ८ सगरामसिंह ९ जेडमल १० न्हासिंह ११ म्हेराज १२ बलवंतसिंह
डा० प्पासकने तनखाह रु ३० पैदा रु २००
- १ ३ पचांगाजी ४ प्रथीराज का प्रथीरजोत ५ भोजराज ६ केसवदास ७ रतनसिंह ८ खीम
जी ९ भावसिंह १० सवाईसिंह ११ नूलीदान १२ प्रतापसिंह १३ कु० म्हेवतसिंह -
डा० नवैतले ताजीमहे तनखाह रु २५ पैदा रु ३५०
- २ ४ प्रथीराज ५ जोगीदास ६ लालचद ७ पदमसिंह ८ बाघजी ९ सेरीसिंह १० बाकी -
दास - डा० गाम जोगीदासरो -
- १ २ खेतसिंह ३ बाघजी ४ गोर्धनजी ५ गिरघरदास का गिरघरदासोत ६ हरनाथ ७ रूपसि
ह ८ मूलसिंह ९ सवाईसिंह १० वभूतसिंह ११ साहिबदान १२ भोजराज डा० गाम कोड
- १ २ खेतसिंह ३ दपालदास ४ बेहारीदास का बेहारीदासोत ५ जसवारन ६ जैतमाल ७ मूलचंद
८ अनोपसिंह ९ जानसिंह १० रुघजी ११ नूलीदान १२ कु० भार्यसिंह
गाम चडेगाम तनखाह रु ३० पैदा रु १५०

- २ ४ वेहारीदास ५ कुसुमसिंह ६ हीराम ७ रामचंद्र = परमसिंह ८ जूझारसिंह ९ साहिब
दान ११ सतीदान गां० डांगरी ता० है तनखाहरु २० पैदाह ३५०
- ३ ६ हीराम ७ सहस्रमल = हंदूसिंह ८ भावांसिंह ९ समेलसिंह ११ पीरदान १२ हेमजी
१३ लखमनसिंह गां० डांगरी ता० है तनखाहरु ३०
- ४ ५ कुसुमसिंह ६ शिवदास ७ बिनैसिंह = जोगीदास ८ राजसी ९ खेतसिंह ११ जोध-
सिंह १२ हीरजी १३ कुं० गां० राजगढ़ तनखाहरु ३० पैदाह १००
- ५ ४ वेहारीदासजी ५ जसकरन ६ जैतमाल ७ मूलचंद्र = अनूपसिंह ८ सुरतानसिंह ९
लखजी ११ मोडजी १२ कुं० खलवंतसिंह गां० लषासर तनखाहरु १५

- १ ३ पचाराजजी ४ रामसिंह ५ दुर्जनमाल का लुजावत ६ गजसिंह ७ अजबसिंह = उदैमां
रा ८ सुवाई सिंह गामवसायो ९ बभूतीसिंह के खोले परमसिंह कोबेयो ११ प्रथीराज १२ हेम
राज गामचेलक ता० है प्रधानगी तनखाहरु १५
- १ ४ रामसिंहजी ५ अरवैराजजी का अरवैराजोत ६ भावसिंह महाराजजीजी अरवैसिंह
जी गामटावरकी दीयो विरवैकी चाकरीमें ७ जोरावरसिंह = धानसिंह ८ आसकरा
९ हड-इंकीसिंह ११ मोड- गाम टावरकी
- २ ५ दुर्जनमाल ६ गजसिंह गामवसाया ७ दलकरन = रवीवजी ८ सोभजी ९ जान
सिंह ११ बूलीहांक गां० राजसिंह का

पुवारंरफे मोटा अमरकोट का खांप सुरतान तो पारवी है और नारलोतथाने नारांन का वेटा-
वैरसी गंग दास राम हमेसांसे तावेदारीमें रहे श्रीमूलराजजी साहबोंने गंग दास-
दौलतसिंह गामदोल बलेकी जागीर गामरूहडो सं० १ = ४२ में दीया और राम मदनसिंहोतों
सुलतानाउ वालीकी गाम बूगास रहवास दो सं० १६ में और वसी सं० २७ में लिखदिथा ॥

आकारडे कृपलाजोड सूजे वगैरे में सोदारहते हैं परतु वसीगामनही तनखाह रु २५ है अथ ६०
 नोकरीयाहै ॥ १ गग दास २ हीगलीदास ३ भैरदास ४ नोतो ५ दोलवासिह ई हाथी
 सिह ७ साहबदान ८ राजीतसिह ९ कुं० रायसिह १० मं० पना गामखूहडो वाजीम-
 वडी तनखाह रु ५० पैदारु ५००)

१ गग दास २ हीगलीदास ३ जेदा ४ भीम ५ राजसी ई गजसिह ७ विशनासिह ८ राजी-
 नसिह ९ कुं० धनजी महाजलारकी सीवमेजमीन वरवप्रार् परकुवमहोनेसेगामनुहया
 नाजीम तनखाह रु ५०)

१ राम २ उदैकरन ३ अमरसिह ४ सुदरदास ५ सुरवानसिह ई जोपसिह ७ भोजराज ८
 मदनसिह ९ मोडसिह १० म्हेराज ११ कुं० वाजीम तनखाह रु ५०)

जागीरदारो व भोमीयो के गामो की पैदा वाचतरेख वा तियाला वगैरे कोई लागाराजकीनही
 है बजकि हमेशाकी नोकरी भी नही बीजाती जोकोई सरदारया भोमीया रवास शहरवहकूम
 तो मे नोकरी करतेहै सोतनखाह पावेहै सबबयहथा किगामो मे पैदाहीनही थी क्यो किगेहूं
 पैदाकरने व किरसावसाने की तो मनार्ज थी औरनवाकुवा भीराजकी दुवातीसे बनाया तोभीला
 सीलाछा वपाया गवा और सवासाल भाडलीठा० धनजो गेहूं काया सो जचतहु शाजव ठाक्यो
 सूफने घोड़ी १ नजरकारके माफी कपट्टे लेकिन आयदे गेहूंनही करने वा लिरवत कारदिया-
 तबासारव सोचासू भी बर्षाकी कामी ववन्नक धाडा वगैरे वरवो फते रेती कामही करते थेजिस
 मे भी रजपूतो सिपाइयो वगैरे से हासल मुकाला नहीलेते थे हांयहलोग सरदारकी शरीमेनो
 ता और मोसारेखाड वारस वञ्ची दरवारमे घोडानजरकारे जिसकी वीमतके रुप्ये हैसियत-
 मुजबदेतेथे और कामपडे फरू बहोतो सुधां नोकरी करतेहै औरसाहूकारवगैरे रईयतसे झूंपी
 साडी हासल वगैरेकी पैदा भी सवरी शिवारवापवामोंगे के सबभई बाटा कलेतेहै पहरम अ
 यरा बंद करनेकेलिये श्री दरवारस्थाने यहातक धरणीयापफरमार्द कि कर्द गाम नयेसर पाटवी

भोगवरो की सरत पर इनायत कराये बांदा करे तो गामरवाल से कीया जावे परन्तु बिल फेल तो बांदा
 कर लीया है पाटवी पिराण सिर्फ राज से तनरवाह वताजी ममिलने का है मुदा कि न तो गाम में पैदा
 थी और न हमेशे की जाग मुकरर की गई जो सरदार फोत होते है तो भी सुंवर से कमर बंधाई की जा
 गन ही ले कर सोपाव दीया जाता है जिसकी मोताज एक ऊंठ व पांच रुप्ये धरियात व जामडे को
 देते है फार मात्मी को पधारे जवराव जी तो एक घोडा एक ऊंठ व मोहरथान एक नजर व रुप्ये पांच
 नोकावर करे और दूजा सरदार नजर नोकावर थान व रुप्ये ही जकारते है तथा उस जमाने में रवेड
 मुहीम वगैरे की नो करी बहुत ली जाती थी चाने हर एक गाम के कई आदमी मस अस्त्र व पुर्न हाजर
 रहते थे उनको दरजे मुजब वल पे टिया व अमल राज से दीया जाना था सो सरकार दौलत मदार की तर
 फ से राज पूताने में अजंटियों होने बाद से सी नो करी का काम ही न ही रहा मगर वख पैरी यों के रक्च से
 विकास तो वगैरे कार्क्च राज को तो ज्यादा ही लगता है इन्हों से तो सिर्फ घोडा या कीमत का रुप्या
 नीचे खिरे मौकों पर लेने का रिवाज बन रहा है ॥

एक श्री दरबार साहबी के राज्याभिषेक हो जबरी लाडे का बूजे श्री दरबार साहब या महाराज कु
 मार का विवाह हो जब त्याग का तीजे श्री चार्ड राज की सारी हो जब दफने का चौथे श्री दरबार साहब
 गामे पधारे जब नजराने का ॥

ऊपर खिरी लाग भोमीयों से तो रुप्ये वतूल हो गम और सरदारों से सं १९१५ पीछे घोडे रास ९ चाहि
 ये जिसमें किसी ने एक दो किसी ने तीन चार नजर किये बाकी बाकी है तथा सं १९०२ से पीछे कई
 गाम जागीर वरकडी न पटे बरवशे जिसका भी घोडा किसी ने नजर नही कीया सिवाय इसके चोरी
 धाडे के मुकदमात का हजार हा रुप्या अजंटी जो धपुर मे राज से दीये गम सो सूद से लखुं होते है तथा
 पडोसी रिआस्तों से सरहदात निकली जिसके सरफे के रुप्ये जो उन्हों के गामों पर वाजिब है लेने बाकी
 है बाजे गाम भोमीयों पर घोडे के ठांसा का फी गाम साठे पांच रुप्ये सासियाना वसूल होते है ॥

श्री जी साहिवा की उम्मर दरान हो मात्र सरदारों व भोमीयों व सांसन् वालों को आचारी आमदनी में
 तरकी करने की साफ २ हुवाती देकर ताकी दफरमाई जब से बहुत से गाम नया कूबा व बंधातार हुआ

और किनेही गाम गोरू व तिलक पास होनेलगाहै तथारवापवरसीगोके गामो मे जाद विसनोई वी
रे बहुतसेकिसे आवाद्हुस जहापैदा भीबहुतवढुगई औरवढतीजातीहै मगर आरि वेदे केगामहै
जहातरकीनही होसती इस लीये दूरअ देश सरदार भीअवदिलसेचाहतेहै औरहकीकलमेवहु
तहीमुनासब ववाजिवहै किगाम कासकसरदार पादवीमालका वजिमेवारहै जैसेकि और रिया
स्तो मेहै ताकि आवादी आमदनी मेरवातरबाह तरकीवचोरी धाडे काबन्दोवस्त वगैरे हरसक-
काम आसानी से ही सके लेकिनचहुतजबीज श्रीदरवारसाहिव वजनावस्तीडन्ट साहबवहादुर
सलाहकरके करै गेजवहोगी वगैरेदोनो साहिवो की सलाहके कोईतजवीजपेश नहीचढनेकी
क्यों कि स०४१ मे न्हेसूलमे सरदारो का हक इसमनप्रा सेरकवाथा किदाराचोरी भीनहोगी और
पादवीको हिसाब श्री दरवारसे मिलैगा तो सबतरह सेउनका फायदा होगा लेकिन सलावा-
वरसगा के दूसरे सरदार इसबातको कुछ भीनसमझे जिससेराजका दारा भी माराजाताहै
औरराकुरको भीसिवाय पशेमानी के हासिल नही होताहै ॥

अथ इतिहास

दफे ७ रावरांगादे वकुंवरसादे वकेलराजीकाइतिहास

पूगलशव रागागदे के कु० सादे का छोडा सूर केशिकार मेमारावनीनेकहा पायाबाटीयाहै
जिसपर कुवरसादे ने जैतुगसिद्धै दादलोत राकसीये सोमलूगावत् जझवीके व पाहू
सबमसी देदावत साथ ३५० मनुष्योसे आखेवलेके गगडनिर्वाणकी १४० छोडीलीवीगाड
वहार चडासो = कोससेपीछागया सादोगामके तलावपर आया मोहलरज्जा मारगक राव-
की पुत्री कोड मदे बहुतसेहलीसाथ तीजरमराको आई जबसादेने छोडेको रानो मेउठाय हा
थो सेचडकी साखपकड होडालीया कोडमदे मोहितहुई पीछाजाकर माकी जवानसे वाप-
कोकहा कि इसको हीजपरनावो हाचंदसमझाईकिरठोड अर्धकमलचूडावतसे सगाईकी

हुई है दोनों घर बिगड़ेंगे परनहीं मानी लाचार कुं० सादे को नारे ल दे कर कहा कि विवाह कर लो -
सादा बोला जानकर आंकांग चोरी नहीं परनों फेर पूगल जाकर रावजी से कही सो नही तुली मुदत -
तक मोहलो के कागज छिपाये आरवर को कोड मदे का पैगाम सक ब्राह्मन ने सादे को दिया जब हठ क -
के च्याहं जो धार नाम ऊपर लिखा है जिनकी रवुरा क भी असम भव थी साथ लिया और चार सो लोग से
चढे शकुन अतिव विप्रीत भस पर कुछ खयाल नहीं किया बडे ही उतसाह और दुतरफा मोद से विवाह
करके छेद मही नावहां रहे रूपीया सकल खत्याग दिया और रुप्या चालीस हजार का दायज लिका
पीछे आते जान का डेरा कुवेति दुगा देस पर हुवां की खबर बसेडे कारामर जासूसों से सुनते ही -
भूंड भूडेल से अर्द्ध कमल ४ हजार फौज मगरवेतसी आदि पांच भाई वम हस्त सांखला व भोजराज
भगवती दास चौहान व जेठी मुंगोत व गैरे जो धारां के चढ आये ४ को स छेडे दिन उगां श्रेष्ठो को सूता
देख मारना चाहा पर महाराज के कहने से दोख वास भेज दी जाडी दे जगाया भेटे ने कहा मेरा खडी या
रस्ते भेगार गया है किसी के हाथ आया होगा लाहो दूसरा अमल नहीं लूंगा अर्द्ध कमल ने तलाश कर
खडी या भेजा जब अमल ले कर बेध डवा पीछा सो रहा पीछे उठ कर घोडे का तरंग से साखें चा कि चारुं
पांच जमीन से जंचे हुये फौज वालों को हैरत हुई फेर मोर पर सवार हो बोला कि आगे चलूं या पीछे -
अर्द्ध कमल के कहने से महाराज बोला कि घोडे का पग तो दिरवावो जब घोडा उड गया सो भोजराज भग
वती दास को मग ५० आदमी के चढ मपुर भेज कर कुंवर सादे पास गया कि फौज आगई है कुंवर बोला
कि राव जी ने कचन जियेथे सो आप तो पूगल जावो मोर घोडा मुझे दे दो सो दो जी तो अलग जावै -
वा और फौज आप हुंची अबल जुद्ध सोमने किया ३०७ मनषों को स्वर्ग भेज कर मूछे ताव दे रहा
है बीका बोला मोर घोडा व उमाही के सवार को जोखा नही जब उतर कर घोडी के चारुं पैर सकल
वार से उडाय पैदल लडने लगा और घायल हुआ ॥ कुंवर सादा कोडी के अंदर वहेली में कोड मदे से
स्वर्ग यासतीपुरे में सुख करने की वाने कर रहा है जेठी मुंगोत आया कोठी गडे को चोर कर पीछा -
लौरा सादा बोला जीतान जावै बीके कही उमाही नहीं रही जब सादा मोर पर चढ कर जेठी को मार
आया और खरव मसी से कही एक वार लो मैं आपके देखते जुद्ध का रू खरव मसी कही जै से मार जी -

चुनाने १५० भडक सुरलोक भेज पीकावहलीमेअवेठा औरवीकेने अड्डलजुडु किचा
 ५१३ अदमीयोकोमारकर आपभो अपरुहासाथ स्वर्गपहुचा फेरखरवमसी सैन्यपतिहोर
 वनडा ४५६गठोड कईभाटीकामप्याये अर्डकमलकेदो भाईवगैरे घायलहुसे लखमसीमा
 गया जारहुवासादेने कोडमदेसेसीखले मोरपरसवारहो अर्डकमलकेभाई खेतसीवगैरे -
 ५०० कोवफातदी महाराज वगैरे घायलहुए जवएकमगतजो आगेपूगलगयाथा मोरकी
 चालनानताथा अर्डकमलको वाहवारसक ढोलीसे मरकीका ढोल बजवाया तो मोरनाचनेसप
 सान्चारसादेने घोडेको पूरावारके पैदललडनेको रकडाहुआ तब अर्डकमलभी पैदलमुकाब
 लेको आया दोनोके पहले हथवाकी मनवारो हुई आखर अर्डकमलने तलवार मारी शिर
 अलगपडा वादसादेकी हथवासे अर्डकमल घायलहुआ औरदोनों तरफके लोग बहुतसे आ
 पसमें लड मरे व घायलहुये लडारखतहुई राठोड २२०० मरे जिसकी दाहकिया औरघा
 यलोकी डोलीयेंघात राठोडपीछेगये वादसेदेने भी ३०७ भाटीयोको दागहीया औरसादेकी
 जासव घायलो को उठाय छेरेजाया जबकोडमदेने सकहाथकी चूड मगतजनोके वास्ते और
 सकहाथकार कर मुसरेवसासूके पावलागनेको लिये सेदे को देकर कहा त्यारीकरो देरीपडती
 है मुझे कि चिनामेवैडकार सादेका सिरगोदमेले सतीहुई सेदेने पूगल जाकर सबहान एकजी
 से कहा हाहावारमन्चगया फेरखरजीने एकचूड तोजेसलमेरमगतोको भेजी औरसक-
 चूड व बहुतसे रुपयेजगावारको डमदेसरतालाव जो वीवानेरसे कोस पश्चिम है बनाया ॥
 तथाकासीया सामके आरामहुआ सोही अर्डकमल पासजा रहा ॥ वहा सारवनामहराज तो
 वचा और अर्डकमलफोतहुआ उभके तैयोके दिन सादेकी ह मासीथी ॥ तथाफिरखारका
 वसुनाहै कि रादरागादेने कु सादेवैपैये राठीदो जा मुल्का खरकर बहुतसा वित्तगीयानो
 बाजजगह लडा भी जीतकर सिरडा की नजार्द पर भावे करल तो बिरबर गया थोडे चारमीयो
 से एकजीवैये पांसे गठोड चांडाजी फौजले आवा लडारने सदहा गदना हुतरपा और
 एकजीमारेगये परन्तु यह बात करीनकपास नहीं ख्यो कि सादेका बैररहा ही नहीं था एकोढो ने

अपनी मांग के दावे में सादा वगैरे को मारे तो भी सासनने स्वतसी वगैरे बहुत से राठोड़ों को मारा और अर्द्धकमल भी जीतान रहा ॥

दूसरे वीर मांरा में लिखा है कि राठोड़ वीरम के बैर में कुंवर गोगादे ने दलाखा वगैरे जोरियों को मार कर तलाई पर आउतरे और घोड़े ढील दिये थे पीछे से दलाखा के बेटे ने आकर अबल्ल तो घोड़े लीये जबसे कहावत है कि ढलीया हाथन आवसी गोगादे घोड़ा) बाद लडाई में गोगादे जीको पूरे घास किया २ उ सवक्त रागागदे जी भी शिकार खेलते उस तलाई पर आये थे गोगादे जी ने रलतलो तलवार जो दुर्घोधन के हाथ की गोरखनाथ जी ने दी थी रावजी को देने के बहाने नज़दीक बुलाकर मार डाला और हंसकर कहा साठु जीता डीरो अब दो नों बहनां लांवीयां पढ़ने रहें गी- रावजी का बैर लेने को कुंवर तराऊ व प्रधान महेरो हमीरोत सुलतान के नवाब पास गया कि फौजला कार राठोड़ों को मरा देंगे इसी अरसे में बिकमपुरसे केलराजी ने महेरे का सुख पूछने आदमी भे जा उसने लिखा मैं तिरारु साथ जाता हूं आप चौहान बिकुपाल को अपनाय पूगल ले ली जो जब ओठी पांच से रावजी की मौकांरा को गया बिकुपाल को मिलाया हीथा रावजी की सोटी को घर में रखने का घोर वादे कर गढ़ में मालिक हुआ पीछे से कुंवर राग मलतीन सोमनुष्यों से आया जब गढ़ में रखकर आप बिकुपाल को साथ ले कोट मरोट का कब्जे किया फिर बिकुपाल की सलाह से पाहुओं को बुलाया कि रावजी का बैर लेवेंगे पाहुओं ने बखुशी मालिक माना सुहा कि खारबारा मरा हापां सर मोटा सर वगैरे १४० गांवों के भी ताबै हुसयहूर वचै तिरारु को लगीं जब महेरे कही रावजी का बैर लेवेंगे आपको १ कोट में दिला दूंगा अदेशा मत करो फेर के सराजी ने कुंवर चाचे को लिखा कि इ तलाई अरुजी जैसलमेर भेजो और जमीयत ले आवी चुनाचे एक हजार लोगसे चाचो मरोट आया बाद चूड़े जी को डोला देने के बहाने जाकर गाम में डेरा किया चूंडो जी बींद बनकर आया सो दगा दे ख पीछा भागा केलराजी घोड़ा पीठ लगाय चूड़े जी के बगल बीच में बरकी निकाल कर कहा कि पीठ से भी निकल सकती है मगर सामना करो तो धर्म रहे पर चूंडो जी तो भागा ही गया आरवर चंगोर के दरवाजे जातं केलराजी घोड़े की वाग रवैची सो जपर आया जब बरकी मारी चूड़े जी की गर्दन

से मारा वदन व घाड़े को बंधकर मीन मे गडी चूड़े जी ने गिर लटकाया केलराजी सामने आवा
 कहा सगाजी लटका चुहुार उस वक्त सक जाट अवरगी वीजा कि गांड मे लकाड । ररवोगे पररहो
 गेतो सलामी सों रोसे ही है याने राव पूगल महाराज वीकानेर के तावै है दुतरफा बहुत प्रादमी -
 काम आये केलराजी वैर लेकर फतह मद् हो नागोर लूट पीछु आते थे कि मुलतान से पोज आई
 जब केलराजी ने राठोडो के कहने से मुल्ह करके पौज शाही को शिकस्त दी और रक्जाना नूटा - व
 तो पाव घोडाले कर फेर तिरान व महरै को भी साथले पूगल आये यह दोनो मुजतान मे नवाब के क
 हने से मुस्लमान हुसे थे यहा नही रह सके भरतेर जाकर अमोरीया भाटीया सामिल हुस तिरान के
 बरे सुमरा के मुमारागी व महरै के हमीरोत कहीजे केलराजी के इक वाच की खूबी से देरावर मे मा
 लक दर्िया अजा व प्रधान पाहु भादा के दरमियान ना रूत पाकी हुई और दर्िया विकामपुर का
 बित्तले गया केलराजी ने आदमी भेजा तो दर्िया बोला कि दूसरा धार जो अब भादाने मौका पाकर
 केलराजी को लिखा कि महा सुद १५ दर्िया तो हेडाउ की जान जावैगे आप आवै तो मे गढे देगा
 चुनाचे पाचसो ओठीओ से जाकर गढे मे दारिख हुस दर्िया आया कि गढे से निकल जावो ॥
 जवाब दिया कि आप ही दूसरा धार जो फेर कुवर रा मल को गढे सोप कर आप मरोर आप पीछे मात्र
 पडोसी भोमीये ताबे दार हुस और गढे नान राग व विझा रोट मे भी अमल दखल किया फेर केलरा
 जी शिकार के बहाने सिंध मे उरवार नदी के पार जारहे वहा खुवाब मे एक देव के कहने से दोनो नदी
 के बीच गढे विरोहर जो मुलतान से ३२ कोस पर कडे के हरका बनाया हुआ मिसमार था स० १५५ १५
 बनाना शुरू किया पडोस मे सकतरफ कौमसमा का राज था कोट वरने से मना करने जगा जब
 केलराजी जरीदा जाम दस मायल रवा पास गय उन की बेटी से आपकी सगाई करी टीका घोड़ले
 कार पीछे आप सब दूसरे पडोसी लागगां ने मना किया तो रवचाल ही नही किया लागगा ने मुलतान
 के शाह फतह अली शाह का आदमी भेजाया कि गढे मत वरो केलराजी जवाब दीया किय झारू
 गा तो व दर्गा वारूगा यह जमीन भोमीयो ने मुजको दी है चुनाचे गढे नाचेला व सुमरा बाहरा भी
 अपने कब्जे मे लेकर नदी विहाय सीव वायम करी याने दूसरी नदी का पैला पार दूसरो कारखवार

मुल्क आवाज कीया ॥ बाद पडोसी कौमजद्रा खरवोर खर वलांगाह कौरै शंका मानने रहे फेर इसमा-
 थलखांकी वेरी परन्या आपसमें वडा हेत बांधा इसी अरसेमें कुराई अमीर खान वलोचने नजदीक
 में गढ बनाना चाहा के लराजीने हरचंद मनाकीया परंतु कुराईयोने गाल मारा कि जमीन तलवारो
 मांहे है जब के लराजी समासे मदर लेकर पांच हजार फौजसे चढ गस कुराई भीती न हजार फौज
 जे दुखावले को आस बहुत भारी जुद्ध हुआ २३५ वलायें साथ अमीर खांको बहिश्त भेजा १०० आ-
 लीव समाकाम आवे परवाडो जीत बहुतसा दित लीया और गढ मिसमार कर कुराईयोको तावै-
 किया फतह मंद् हो पीछे किरोहर आवे ॥ जाम इसमार्द लखां फोत हुआ होनों बंदे राजकी
 तकरारसे लड मरे के लराजी मात्सीको गस सासूके कहनेसे मुल्कके बंदो वस्तयो सक हजार फौ-
 जरख कारपोता मुजाहद खां जो १० बरस का था साथलास सोवडा हु आजवरान्न सौंपा परंतु बंदो
 बस्त अपना बना रखा फेर यह भी मर गया तो समाकाराज भीचाने देरे इसमाथलखां सस मुल्क कद
 जे में रहा सुलतानके शाहसे दोस्ती रही और मुल्क सिंधमें अच्छी हकूमत जमाई फेर गढ भदनेर
 लेकर किसी कदर परगने हंशारमें भीड़का बजाया और हरादा आगे को थाले किन महारावथके हर
 जीके वैकुंठवास होने और छोटा भाई लखनगर राज बैठनेकी खबर लगतां ही जैसलमेर खास
 लखमराके मोतीयोका तिलक करके कदम बोसी हा मिलकरी और जो जो गढ व मुल्क फतह कि-
 याथा नजर किया लखमराजीने मेहरबानी व कदर रानीसे मुनासिब जान कर सक गढेरावर
 लोखालमेर रवाचकी सब वस्त्र शहीचा और गव वारिवताब वनगारा कूडी वगैरे लवाजमा अता
 फरमाया कई महीना चहां रहे फेर पीछा जाकर आपतो गढ मुमरा बाहरा में रहे और कुंवर थिरै-व
 रवुमांरा जो पहानीसे पैदा हुए थे गढ भदनेर दीया सोभाथी मुसलमान हैं कई पुस्तों तक तो ताबेरा-
 रोमें रहे फेर ही अरजी नजराना भेजताथा बाद वीकानेर का दरवल होगया ॥
 तथा कुंवर रामल को मरोटमें गादी वैठाकर सब मुल्क सौंपा चान्चावगैरेको दूसरे कोरां में रवे
 के लराजीने फेर ही थोडासा मुल्क दवाया और ६२ बरसकी उम्र पाकर स्वर्ग धाम पधारे थोडे
 ही अरसेमें रामल को बीमारी सीतांग की हुई सो विक्रमपुर आकर फोत हुआ जब सबने सलाह-

करके चान्चे को गरी का मालि क किचा इत प्रसे म वाट शाह महम्मद शाह कावजीर का नू-
 मुलतान वा वाट शाह हुना जब लागा हा न नर्जी करी कि भादी मोने चहुन सा मुत्का हमार व तर
 कारी द राली या हे सुने ही हुकम दीया कितुम चढ जावो और मुत्का र्खन लो चुना च लागार
 अमीर खां चट ग्याया सो चान्चे नी से हार कर पोछा गया जब सुदुर्क नीर कालु मर जागा ह नमीर
 खान २९ ह नार पौन मुगल पठारा बगाल व गैरे लंकर ग्याये चाचा जी न भी गो र्वा पाहु ने तुग
 व गैरे २० ह नार पौन से दुनां पापुर मे मुकादला कीया अद्दुत सुद्ध मे ह नारा ग्याद मो हुतरफा-
 व नमीर खा का म ग्याये और कालु भाग गया चान्चे नी परवा डो जांत दुनी चापुर मे कुवर दास न
 कां बैठा च ग्या पीछा ग्याकर इ त लार्ई अर्खी जै सल मेर भेजी जब महारा व न नारव नगां न घोडा न
 तजवार कदार न जेवर पारने शिरो पाव भेजा ॥ फेर रूना सुमारखा की देने सोन ल परन्वा
 तथ्य कुवर ७ १ शुभा दी हेता जो हरोयो का ॥ २ चरसप ॥ ३ महैरावरा ॥ ४ भीमदे ।
 नवासै । सोटा के ॥ ५ रता ॥ ६ रता धीर । भारोज चौहानो के ॥ ७ राजसिंह सिंदनी सं
 हुना ॥ केलागजी के राठोडो से । सुलह हुर्द जिससे पके जो नथुने मारा दोहा
 के ल चवडा मारीया सो झादु ग्याखासा । नखु पकामारीया सो सिवाव गारा ॥ १॥
 अच अफे का वैर को रू से नही सका क्या कि सुलह मे भव र्गान ल र खे गये थे ॥
 केलागजी के कुंवर रू पे का घोडा चराई पर जोइ सा पातथा सो मोने कवले के भईया संक दुर्द
 धिरपान भैहा नोन च्यार पटवो को मार कर लेग च्या चव चान्चे नीने धिरपाल का दोह म न पट
 चा चहुत विसले का मानो को दे दीया ॥ फेर नागार के वीहा देने मे शाह बग पाह अलफ
 ह नार पान पाकर दुनी या पू का पित्त लांया चान्चे नांको पहिसे डी रावर नगीर की सं चर गर चार
 को स पर जग नी मुहुर्द नुतरफा ग्याद मो चहुन कोट ग्यावर ब्राह्म वग की चान्चे नीने न ग र नं फा
 खपना दि त द्धु हा न और हुगमना शा घोडा अस्त्र ने का मार्चा नां का गरगा प्र राटा नी पोछा
 पपोरे । वाट चान्चे नी से गोमारा वाट मान हुर्द नद दुवो व प्रपानो वां गाच । गगी हत शाहे
 नुद्ध मे मरने गेनां पत से मूनतान से ता नुको मर भी जनु ग का जतां टा मुदा उपे वी गया २००

रजपूतदेहीकासंकल्पकरकेसाथथेदुनीयापुरसेहीकोसपरचुद्धमेंस्वर्गबासीहुए॥ ४ गद्य
मेंथेला मुमराबाहण किराहर भदनेर कुरा ॥

श्री गणेशाय नमः

दोहा अथ कीर्तलिख्मीरो सम्बाद लिख्यते

दोहा श्रीलंबोदर हुय सुप्रसन्न दीनेजक्तदयाल । कीर्तलिख्मीरोकहां वरशासंवाद वि-
हाला ॥ १ ॥ सकदिवस हुयसकठी कीर्तलिख्मीरोकुर । अंगवहार आपरी आपोआपउचार ॥ २ ॥

॥ कीर्तना लिख्मीकह्यो जवरबचनकस्जोर । मुझसरीखीजगतमेंआकीवसननऔर ॥ ३ ॥

उचरीकीरतलछसां वधताबोलसबोल । बड-पड-महरोबेखता ताहरो कामों तोल ॥ ४ ॥

लख्मीकह्योइयालोकमें हुंईज बडी हमार । बडीनकीरतहुचडीआदिअनादिउचार ॥ ५ ॥

लख्मीकह्योकीरतमलड जोतुंत्यावमगाजाव । आकाजहारा अंगसुंसपरादिसे सोच ॥ ६ ॥

महारां अंगां सुमुदै सोभरह्यो संसार । जिकेगीराणउं जुजुवा सुंराकीरतसुविचारा ॥ ७ ॥

रूपः सपतघातसोवर्न आदइयालोकअपंपर । चुनीकरागीचुंरागी हीरमांशावजवह
लालरत्नलसरीया महामुगता हलमाला । पीरोजापरचंडपना पुषराजप्रवाला ॥ मर

कतफटकवेहुयमिरा सीमंतककोसभह्व । महारां अंगमायाकह्ये जिकहुंतसोभैजगत ॥

८ ॥ दोहा उजलमहलभडहस्तअस दलदलअंमलदिशंत । जलहल नृपसोभै जिका
वयमोसकलवसंत ॥ ९ ॥ तैकहीलीघाता हर अंगलिख्मीइतराघ । महारां अंगां बिरामुदे
थिरसोभान्हाच ॥ १० ॥ ज्यांसुंसोभजगतीजुगजुगनामनजाव । वैमहारां अंग आपने

अरारकहुंसमझाय ॥ ११ ॥ रूपः अनवाउक्तअनूप जुगतकवितारसजारंगा अंमल

ग्रंथउजलां पिंगलकुंदां प्रमांशा काचबगीतकबितदूहा गाहानीसांशी कहेवातां

केरक कडा कविमुषां बरांशी लोकीकवाह भसब्दलख कहै समकीरतकंवर माहारां

अंगमृतलोकमें अमनवां राखेअम्मर ॥ १२ ॥ वोकिराविधहैअम्मर- कराराकासज स्मरण

किम मायाहीरामनष सकजजीवतामृत्कस्म वसतैनगरविसेख ग्रहसुनागरात्या
 न्वावैकारकार आस ज्ञायनिरासजिकारा स्तनहीगिरोज्यानेस्तन दुरजगानी
 मानेदस्त ससारमांह जिगासुसदा मायाहीजमोदीबस्त ॥३॥ मोटासंतमृत मोदी
 न्याकरागी कथावान हजकेईक केइक पिडत व्याकरागी जंत्री मंत्री जती कविगाय
 ची केईका रूकवधस्नपूत औरहुनरी अनेकां होलतवंतरेद्वार गुमरजिनरपैगौला ईत
 रारी आवजडै पांविदिनउगा प्लैला रावपठरंक भेलीकराया पलकरात दीहापसत सस
 रमायजिगासुंसदा मायाहीजमोदीबस्त ॥१४॥ दोहा मायातू मोवाहरी निपटबुरी
 नवनिध कीरत कहै सुराकानदै बरामजेरीविध १५ छप कीरतहीरागकने जि
 काभायाचुंजारी साकादूधसवाद स्वानडीकरीसमारौ उन्नलतरआचार उन्नचडा
 नीकूरवमे स्वांतबूदअतिसरस पडीचिरवधरामुपमे अनसदा भलोप्रापरवजमे
 न्वावै किराकारजपने जाराजैराममायाजिका कीरतहीरापुरवाकने ॥१६॥
 मोरोहीज ईकमनषधराचुगली व्रतधारी आरुकेकुलअस्तरि विश्वक्युही कविभचारी ॥
 गगा नलरो कलसमायमदरागोरबको मुख फूटरामजार सककुष्ठरो रुवको चवाक
 असुधभोजनीभलै दुचितहुवैमन देवने अगलोभगिल लिहमी इसी कीरतहीरा
 पुरवाकने ॥१७॥ मोदिरावोसुमिता नेहपपैकेईकनर तोय कीरतनगा कही
 नैमोराकजर न्हलैन्यारोनाम प्रातदरसगान्हेपै सोकदेहसहरवा लोकराकसस्
 लियै जीवताकहै द्राद्रगजगत सुवामिलैपदवीमड कालंद्रसर्पहुइनरकेईक वागलहु
 वल्लके बडा ॥१८॥ दोहा लिहमी बडा कुलाभरीय तोसुहेतहुवाहाअपजसभेला
 नीवता भेलैनरकमुवाह ॥१९॥ कीरतरासुरागीयाकदरा धीठवचनमद्दधेय । मायातीप्रा
 गुमरमे बोलीबोलविसेष ॥२०॥ मायाहीरागाना नवी देसीकासुंदतानागोचोयतिचो
 वसी कासुं कहै कीरत ॥२१॥ मायासुचायामिलै आदरआधअपार । मायाहीरागोम
 नयने करे नही करतार ॥२२॥ ऊचाकुलरोपुरष अरुअलगपडीयो होय । वप वूटै

मायाविना कुसलनपुच्छेकोयं ॥२३॥ तुलुकुलमायावन्तरे कांदोत्तुभसीकोय । नरसारा
 मिलनगरा सुखपुच्छसीरुहकोय ॥२४॥ विधविधहुंमोदीबले मोटाआदरमंन मोटाका
 रराकाधरा पषमोयपरचंड ॥२५॥ परवांवडार्डपांमजे पषां बधैं छैपत मायाकहै
 पषमाह्य कांनं सुराकीरत ॥२६॥ **कूप्यः** पीहरषरसमंद जिकोसारोजगजांरौ ।
 जलत्रलोकजीवन पितामोसकलपिछारौ अमलकांतजजलो भारानचंद जिसडाभा
 ई द्रगाप्रथवीऊपरा अवेइमृतसदाई सुखसात देगाहु आपसुज सरवविधसारांसिरे
 मुभासुराममायाकहै कीरततुंस्मवडकरै ॥२७॥ **दोहा** कीरतकहेकहरोकिसुं पष
 मोटासांप्रत । लिखमीतेलीधीभली परवांतगीपरकत ॥२८॥ जलरीवेरीजिकरासुं
 अंगधारैंगत रह ऊंचमनानरछोडअरु नीचमनासुंतेह ॥२९॥ वंधवतोवहुरूपियो-
 रूपनियेकरहाय तुपरातुगरीवहनतम जगकीधधरु वधजाय ॥३०॥ उजलगुराज्यारां-
 अंतत परगटकहेपुरांग मायासांभलेमाह्य परवांगरमेरप्रमांसा ॥३१॥ **कूप्यः** ताने
 मोरोनात मातसुजातकमाई कीरतराजकुंवार जिकांहुतहुंजाई साचसीलतपसतभ्रात
 मोपांचमोरांनभरा दयावहनदूसरी सर्वपुन्यरीसिरोमरा सुराभेटपषमाह्यांसदां वेदव
 डार्डविसतरें तुलकजिकुंरासोक्रतसुं किसीरेतस्मवडकरै ॥३२॥ **दोहा** माहरांभायां
 सुंकीयो जादाहेतजगांह बैजगमेरहीयाअमर सुरालिखसीअतरांह ॥३३॥ **कूप्यः**
 साचहुतयुधिष्टर नामनवरकंडरहायो गेहरसीलगंगीव कथनधनरकहायो भागीर-
 थतपकरे ईलामंझगंगाआरागी राषेसुवहरचंद धरासुंकीरजधारागी बलत्रिलोकदीया
 दान हरीविरातलहचमंडे दीयोनुपतमीरछज खागआधोलबंडे पचासक्रोड-जो
 जनप्रथी धरैऊदकफारसीधरा अमांमदान दीयकराअति कृतअसरनांमाकरा ॥
 ३४॥ **दोहा** कीरतलोदीनांकरै देकीमोविशादान विशालछमीकीरतबधे चारोस
 बालजहान ॥३५॥ दयावहनदुनीयांनभे रवोचिरंजीरांम मनेबंधावैवासुदे का
 सुराआरोकांस ॥३६॥ जिकरादयारो-जोयतुं अवेकेहुंइतहास । सोपालीराजासबर

जगवधीचोत्सवास ॥ ३७ ॥ रत्नशीषासचव्यागकर रत्नडिगम्बरीत तपकुञ्जव
 नवेठोहुतो सररोनृपसवरे उडेतनकपतशायो उगोसुरेवसु ज्वापीयो म्हांजोबनमे
 मती अप्रसूत असती वारछाडीविलपती निरदीषनुशाकंजनीकल्यो उराकीरूपरउव
 पली रापीयामनेरहसीअमर रत्नाषन्नवरगवलो ॥ ३९ ॥ जदृत्परो भवजांरा क
 ह्योसीचांराजोडकर त्रीयामुद्धप्रसवती धामसूतीद्वैडुधार त्रयदिनहुवावितीत
 भषलाघोन्हभामथा उरारापयवास्ते ज्वाजमोन्वडीचोहथा पलचार अमहा पीघा
 प्रभु मुषभषअबरनिममडहा स्वकीवशापउवार हो तच्चारजीवतनकडहा ॥ ४० ॥
दोहा सररागागतीसुअचारथी उभैदया ऊरआरा निजतनकारे सबरूप सतीषे-
 सोचार ॥ ४१ ॥ कीधीविशकपोतना जीवदानदेजास द्वाविधकीरतऊजली-
 प्रथमीकीरप्रकास ॥ ४२ ॥ सवरतरो उरादिनश्रीया सीकीडी नूसग कररागी
 सोकीरतकरे ऊराहीत्तरे अभग ॥ ४३ ॥ कीरतपुरागाकथकही श्रीयानही विस-
 वास पडणापूछरानाविहु ह्योतीब्रह्मापास ॥ ४४ ॥ कीरतरछ दोनोकह्यो अजजग
 कारताशाप म्हांमेघटवधजुरामुदै निश्चैकरोतिमाप ॥ ४५ ॥ वातसुरो ब्रह्मा कह्यो
 झगडाहुभाजाझाह न्यावकरानरलोकमध रचेथामेंराजाह ॥ ४६ ॥ इद्रपुरीसु
 अतिअधिक तिगाजैसागतखत राजावारोरूपहै मूलराजमूपत ॥ ४७ ॥ माया-
 कीरतमो हुकम जैसारोसतजोष न्यावकरैसीनरिदरै रहजोरजी होय ॥ ४८ ॥ की
 रतहरोसाथकर मायाजैसलमेर ब्रह्मजीरेवचनसु हितकरआर्देहेर ॥ ४९ ॥ कीरत
 लछ दोनुकहो रावराजादमराव सगलोजगरीफैद्रसो नरइदकीचैन्याव ५० अहपव
 कहेथोजरी श्रीयाकीरतसदार्द बेहुवेजगतवराव विहुवावडीबडार्द विहुवे भारीवस्त
 अष्टसारीसिधसोहै नागअसुरसुरनरा सागवेहुवेमनमीहै कीरतहुनीभगतनवधाकही
 व्यासादिकसतावचन संप्रदाउचाये चारसतकीरतप्यारी श्रीकृष्ण ५१ कह्योनृपत-
 लकृष्णीत प्रगटमतावेदपुराणा वल्लभरिनेवस्त जिकोसगलासिरजारा भगत

रघुनभगवत सतभाषतसदाई भाखैचा भगतिमें नामलक्ष्मीरोताई कीर्त दुतीभ-
 कानवधाकही वासीजगसंतांवनन संप्रदान्यांरऊचारी सुसत कीरतप्यारी श्रीकृष्णप-
 मोसुप्यारी महिपती कीरतकही किरासाख कीरतपतनि कही किसन लिछ्मीपत कहे
 लारव ॥५३॥ साखां श्रीमद भागवत श्रीहरिवचनसुजांरा ऊरासगलाजगऊपरा-
 वेदव्यासरीवारा ॥५४॥ किसनपोदीयाथांकनें ग्राहग्रहोगजराज लिछ्मीसुतीमे
 लग्या कीरतहंदेकाज ॥५५॥ राजहुवायेरुषमशी मोक्योवीसरीयाह कीरतै कहिये
 किसन बालांहुचवरीयाह ॥५६॥ इगावीरतसेआपसिर श्रीमोयोआमांरा वारोवीनती
 प्रीतसुं मनमतधरो गुमान् ॥ ५७॥ श्रीवाभागवतसारवसुंरा मनरीछाड मिजाज-
 कीर्तरे पगलराकही तोमोसुंसिरताज ॥५८॥ कीरतहुताहेतकर ऊधरीयाइरा-
 पार सेहलोकापरलोकवां सूधरीयासंसार ॥५९॥ दोनुंलोककुबोचरे लिछ्मीहेत
 हुवांह अपजसभेलेजीवतां मेलेनरकसुवाह ॥ ६०॥ ब्रह्मकही श्रीहरिवचन वेदपुरा
 नविचार सात्वासांनवसोकरै कीरतरो द्यकार ॥ ६१॥ वेकूडान्यारेहीये लिछ्मीं
 सकलरवाय त्तकानिसौभातिकारारी मनषनमनरवांमाय ॥ ६२॥ तीनलोकगनाथेरें
 वलभघशीविसेस सोकीानसागसिरें सदाकहतसुरसेस ॥ ६३॥ रीझावशाछपती
 यां तरकसास्त्रविधतांम कीरतलछ्मसंबादकह सादुकाविसगरांम ॥ ६४॥ कीरतनेसा
 चीकरी सोराजीसुं बिसेष राजीहुई लिछ्मीरही सांचोन्यावसंपेख ॥ ६५॥ रावल
 राजामूलरज जादवगठजैसांरा श्रीवारांउपदेससुं मैगुराकीयो प्रमांरा ॥ ६६॥
 इति श्रीलिछ्मीकीरतरो संवाद संपूर्ण



तत्तम्मानम्बर १ (रावलोत सरदार)

गजराज सवजोइसतवारीखमे रूपा है । उसमे महारावल असवतसिंह जीतक के खान का जिक्र है मगर राजरा मजकूरके रूप जानेके पीछे सुसन्निफ कितारने सकदूसरा राजरा हमारे पास भेजा है जिससे महारावल सबलसिंह जी याने असवतसिंह जीसे दो सुवत ऊपर तक का सिलसिलेखान्दानी खलखरवसस रावलोत सरदारान पाटवी-काविज देहात का हालमाखूम होसक्ता है । हम वरवीफ तवालय तमाम शखरे को दुबारा नहीं छापसके लेकिन महारावल सबलसिंह जो वग्मरसिंह जी वजसवतसिंह जी वग्मरसिंह जी की खीलादमे देहात इलाके जैसतामेर पर नो पाटवी सरदार रावलोत काविज है उनको नाममस तफसील देहात जागीर सिलसिले वार जौल मे खिरवते है । नाजरीन तवारीखरसस सिलसिले को भी राजरा नसब के साथ मिलाकर पढै ॥

१ महारावल श्री सबलसिंह जी २ बाकीदास ३ चंद्रसेन ४ कलानमल ५ कीर्त सिंह ई खेतासिंह ७ जीवराज ८ कुं० मीतीसिंह गाम पिथल

१ श्रीसवतसिंह जी २ रतनसिंह ३ किस्तसिंह ४ प्रतापसिंह ५ रामसिंह ६ गजसिंह ७ सरूपसिंह ८ कभूतसिंह ९ म्हेरान के गोद जीवराज का कुं० माथीसिंह खासी-फोन हु ग्राजब १० जालसिंह है गाम कानोध -

१ श्रीगमरसिंह जी साहबके २ हीपजी ३ पद्मसिंह ४ प्रथीराज ५ सवाईसिंह ई चहादुप सिंह ७ चैनसिंह ८ सामसिंह ९ वरवतावरसिंह १० मोडीसिंह गाम चवाय
स्था श्रीजाके दूजेकु० का भी इसी गावमे है

१ श्रीगमरसिंह जी के २ जैसिंह ३ सगरामसिंह ४ सावतसिंह ५ जालसिंह ई विसन-सिंह ७ सबलसिंह ८ धोकलसिंह गाम ग्योला

जुगराफिया मुल्क माड

(रियासत जैसलमेर)

इफै ६

शास्त्र पुराणादिके प्रथी ५० कोर वोजन लिखी है सो या तो १४ हा भवन जो ब्रह्मड सर्व सूर्य के नीचेको होगी और जो मृत्यु लोकमे ७ द्वीप ७ ही समुद्र के देरे मे २५ बलोका रोक पयत ५० होगा तो कसी कल्प मे थी सो श्री मद् बल्लभाचार्य जी के भी आज्ञा करी है खुही अनुमान होता है कि अब ५ यमो मे ग्प्रीका जो नवी दुनिया थी डे ही बपो से जा हर हुवा है तो दूसरे भी दोयखड चाने द्वीप हो गे ॥ तथा हर खट मे जमीन काम दीखै है सो जमीन का सुकडना व जल मग्न होना भी सम्भव है कि जो मुल्क व गाम जमीन के दूरचे जितने अब न हो और बहुत जगह शहर व गैरे जमीन पर जल फिर गया रोसी बई - दखैलै है ॥ खैर खो ही हो चहा तो पांच खडो मे जमीन व राजधानी व धर्म व ग्पादमी जोसन १-७७ ईस्वी मे मौजूद थे सो लिखे गये ॥

नंबर	नाम खड	मील सुरबा व धर्म				नाम रज्जधानी व तारादमील सुरबा जमीन
		ईसाई	जपन	बोध	रूस	
१	चारुपमे १६ राज	३१००००	१२०००	x	२०००००	१ दुगलस्तान् २ फ्रांस ३ रूस ४ हालैंड ५ बिलज्म ६ नर्मि ७ पाश्चरीया ८ ईटैली ९ मोर्सलेनड १० इसपीन ११ पोरतुगल १२ डैनमार्क १३ सु रूडन १४ लोरमी १५ पूतान = १६ तुरकी रूस मुल्क जमीन पारुज्जमीन दो लारव मध्ये ३ सूखारत्न ७७ रूस मे मिलने से १० हजार कम हुई गाकी सवई साई
२	उरुषायामे	७३५०००	२२२०००	७३५०००	१००५०००	(बोध) १ हिन्दोस्तान १६ लारवमे २ गंगोत्तर्ना ६ दुजेर रूम १ स्वाधीन राजा - २ चीन ५५ लारव ३ आपान दो लारव ७ हुंग ४ दूसरे राज क चारद तथा नास हजार मेनका प्रसा दो चीन मचास

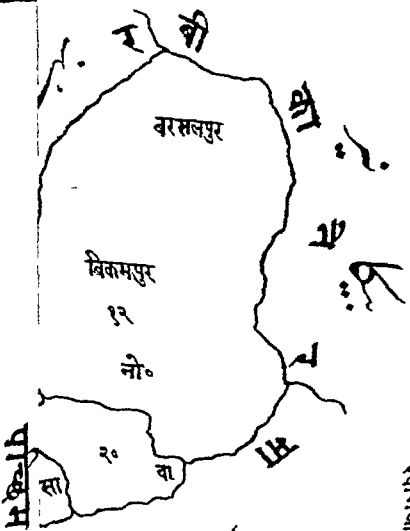
				तातार वगैरह (यवन) १ तुर्कीरूम - २ ईरान - ३ चलोचस्तान - ४ अफगानस्तान १४५००००० ५००००० १५०००० २००००० - ५ पेवाकोकन तुरवारा आनवगैर - ५००००० (ईसाई) १ रूम ५६ लाख - २ ईसाई राष्ट्र - लागव ५० हजार	
३	अफ्रीका	१००००००	११००००००	५२००००००	१ अवासीनीवार गैली - २ सीनर्गीसीया - ३ कैप र्कालुनी ई नहाल - अलगेरीया ईसाई वाकी सब यवन -
८	सीसीया	१२०००००	१२०००००	१००००००	
८	अफ्रीका	१५००००००	x	x	
				१५००००००	
कुल जोड:		ईसाई	यवन	वैधि	कुल
		२२२००००००	१५०००००००	२३००००००	५२४००००००

तथा कुल मनुष्य ० सन ७७ मे १ अडब ३२ कोट जो ७ वर्ष मे ११ कोट बढने से ये फेर बधे है सो
५। ई वर्ष पहिले १ अडद ६२ कोट अरबबारो मे लिखेये अब मर्दुम शुमारी होने से स्त्री
मालूम होगी ॥

और इस जन्मु द्वीप भर्त खंड के पश्चिम मुल्क माड रियासत जैशाल मे स्त्री चहुवर्षी राजपूत की म-
भादी का राज है जिसका हाल जुग्राफिया मे खुलासा लिखा जाता है ॥

पूरव

भुतशस्त्रिंशत्सफा १३७ नकशा हलाके जातरिया मतसैसलमेर याने २२ ही परगानो का -
 अदमनतदनाथाया है - तथा नाम परगाने का १ सैसलमेर से २२ तावी तक -
 नम्बर ११ हकी के अदर से रक्खा है वयो कि ज्यादे हरफ लिखवनेकी गुज्जा देया -
 नही ज्यैर पदोसी हलाको के नाम नकोशे के बाहर जहा जहा जो है लि -
 रवागथा





दफ़े १० देवाचा याने सम्भोता

इस वक्त यह मुल्का कुल २२ परगनी मे बटी हु आ है तफसील नकशे मे ग्वाल नाम पर गनेका जो जैसलमेर शहर से दूरकोस वदिस फेर गामका नखर जो उस परगनेमे वस्ती है सीगे की ग्वालमत अदानी की ० बिही सले गामकी X चौकडी जो गामनही हो सका था होकर वीरान हो गया की हे फेर गामका नाम तथा खालसे था जागीर या भोसीया था पटे या सासरा ठासरा है तथा सबत लिखा सो नवासवत १९०२ से पिछला है और नही सो जूना फेर गाम को दूरी वदिस परगने याने कोट से और दानीकी दूरी वदिस उस गाम से कि जिसकी तीवमे दानी है फेर फसल १ या दो जिसमे भी नवी हुई सो जा क नीचे लिखे है ॥ फेर तादाद नीवारण कूचा पका कचा चबेरीयो पकी कच्ची वनलाया पकी जिसमे पानी छ महीने से ऊपर रहे और कच्चीमे कम और नचे कूतो का ग्याक भी नीचे लिखा है फेर मर्दु मशुमारी ऊपर घरो की तादाद नीचे मनुथोकीस १९३७ सुजव है सो गामो वालीने कमती लिखाया पीछे ग्याये सो ज्यादे है ॥ सिवाय इसके कैफियतमे हाल थोडा सा लिखा गया है तथा गामो मे मद्र विष्णु व शिव व जैन देवी का है खाने मे तादाद लिखी है ॥ और जब से वा हड मेर टटा और कटक धाडा नरहने व शमन होने से हकूमती मे जर्मायत बहुत ही काम है ज्यादे काम के लिये यहां से सवार बकि सी बक्त गामो के रतेडु भी बुलाये जाते है ॥ तथा रास शहर के मद्र व बाहर बडे मद्रि विष्णु शिव जैन देवीमत के जो है देखने लायक मकानातमे लिखे है और छोटे २ है सो कहा सका लिखे जावे कियो कि गठ व शहर के मोहल्ला व गली मे १ से १० तक मद्र व थान है और मसे ही शहर से बाहर चोतफ भैरव जोगनी पिनर प्रेत पीरवगैरे के बहुत है ॥

दफ़े ११ गठ व शहर में प्रका कुंवा जोगीहरा फूट दो टाई सी है

पानी पाराथा सं० १९१९ से कई मीठा हुआ वत फसील जैल
 गठ में १ जेतलु सीदा २ रागीसर ३ हरजाडु निकम्मा है धतुचा पानी मीठा पर भारी है

गाड़ विले में १ रामदेसर २ लखमणासर उर्फ खुशीवाला
 शहर में १ वावडी तीन चारथी अबदी है पानी मीठा माराव, चौक में २ रामसर चौतीरा
 मंदी में ३ खुवानसर पु० २५ मीठा सीपाचां में दोतीरा ४ चैनपुर में डा. रत्न श्रीका
 सरी सिंह जीने सं १९ २५ में वरागाचा दोलावा

शहर से बाहर १ महाजनसर चौलावा पच्छिम दरवाजे पास २ मनीकंदेसर चौ लावा दर
 वाजे से उपरा निकम्मा ३ स्वार्दीरीवेरी इंसान प्रोलसे पां १०० १४ सुजानपुरीकावेरा
 पु १० मीठा पर पानी कम यहां वेरीचांची सो सुकगई

इतना कुवा अब नही रहा गढ में १ गुसार्दसर २ कोरडो वाला गाड़ विले में -
 १ बारीचा जहां जेलखाना सं० ४३ में हुआ १ कारबाने में १ गुलासतला म्हेते नीवुराया
 १ बंधारीचां में म्हेते जीकी पगवान हीं रुई ॥

इफ्त १३ नकशा हवाल शहर जैसलमेर व कुल परगनात व देहात व
 बीरान मरूपको हां निर्यां जो बौरही पुनम बसै है वगैरे हालात का-

पुस्तक नाम व प्रकाशक	नाम गाम व वाल	शहर से की दूरी	प्रकार व फायदा	तादा र नीवानप की			तादा र म	तादा र मं	कैफियत
				कुवां	वेरा वावडी	तवादी			
	सेथाजामोरवाभो मीवा परे यासां-सन टांसन तथा संवत नवेका						दुमशुमा री सं १९२७ मुजब १ चर १ मनुष्य	रविशुभ्या शिब्या जैत बरिबी चाते जिसमतका है	
	१ खाल शहर जैसलमेर			२२३/२१	२०	१५२	३६०४ १२०९५		
	२ अमर सागर खालसे	३	लागा पहिः						गांवसे पुस्कनी ज्ञा व कला व मावी रहते है केइक बेल कासां हुं वगसाउके

३	बाडी उवास्त से	२	से					बास जोना चीका बहुरोन पर्मा वक्षा सादा महा मातु नुदवारोमपर मेप्यारहे ये ज्हारालीपाडोहे फोर कोवावमा लीया कोय हावसायेवहरिनको शहरमेंग कर रातकोयहारहुने ॥
४	किसनघार से	१	२					माली बाडीराव पोकनीचारहेहै-
५	कल्याणघार स १९००	५	१	१	२१	१९		फूटकर लोगवस्तेहै
६	मिडीया परै	३	१	०	०	१९		सिपाई रवधारी
७	दरवारीरागाम से	३	१			१९		हजुरीगोलिरहतेहै
८	जोगा से ३६ स	६	२			२१		राणीजी श्रीसीसीदराणीजीसहारे- तालकेछे
९	रामसर स-३३ से	३	२०	१		११		हजुरी गुरोसदां रामजी दासाणीनु सीव मूडडीकीमैबेल दीना
१०	धडवा स	३	१			११	११९	श्रीबुधसिहजीरिवाभईउफेधडवा- रामचदबसाया
११	जीग्गई से	०	१	११	०	२६		हजुरी नैरासोभारानु श्रीपयैसिहजी रवसहिवा
१२	मूलराजसामर रवा०	२	बाग					गावमे प्रो०जगाराणी वमालीरहतेहै कु इकजमीनजगाराणी यानुवगसाउ
१३	रामकुकाकाविकाना	६	२	कुडववाहला				महतावसाधुरहैहै परावावबूरायोडो है

(क) परगने जैसलमेर

यह परगना सं० १९४९ विगलरबदी १ सेनयालिया अभीकोई जगह कचहरी की नहीं है जैसलमेर से रोहाकम मुं विशालहि व भडड रसाकोड दास मान गावों में दौरा करके कारि वार्द करते हैं ॥ सरकारी घोड़े व फुरकर सवार हैं सो भी इनके तअल्लुक रहे तो बहुत से काम आसानी से होंगे ॥

१	रूपसी भोमीचा	५ वाप	२	०	३	३	१५ ३५९	१ वि १ हे	भोमीचा रूपसी है आड़े की जमीन में - बहुगासवस अरदरवे की जमीन बालसे पलीवाला को दी ॥
२	तेजू से	० से	२	०	७	१	११ ३०	०	भो० तेजू ॥
३	भादासर रवा	० वा	१	०	१०	३	४५ १५९	०	जमीदार सूधार घरटीयो बडे है भा दासर तलाव है ॥
४	मोकल भो०	१ से	१	०	०	४	५० २४५	०	भोमीचां टावरी की जमीन में मोकल वसे कोर देवडे की जमीन श्री अरवे सिंह जी दी वात ७ मघे इ है १९४४ में कुंवा कीया जब सालू से सीवानकली
५	लारोला लीन वास रवा	७ से	२	०	५	५	५० २१०	१ वि १ म	ज० पली बालकीला पीया कुंभा तथा - वोर्मने तला ई व बीर मारी गाम जुदाकीया - लारोला पहीन रा श्री तेज सिखजी को सं २४ से पदे है
६	सेलत भो०	१० वा-२	१	०	५	३	२३ १००	०	भो० पुंवार उर्फ सेलत
७	वामसर से	४ उव	३	०	१४	३	०० २१९	१ जो १ हे	भो० सीहड
८	दईया पहीड रवा	६ से	२			१	४१ १४०	०	पानी के दूहसे दईया वर ज पूत पहीड जिसमें दईया पहीड सं १२२६ गाम बालसे विधाकि यहां है सो वर सात दू पी अरे ॥
९	देवदार से						५० २६३	०	खाना व दोश है तालाब ये तामर पास है नी करे है

०	ठरु स	१ ३	१						भो० टट्ट जमीनकाराहुसगुपुहुईट्टपहीडे वा रहाभागहोराकीमुदतसेवाकीहेभादसहीका पादा लावरीकी नौकरीकोहीहै ॥
०	जुगाारी स	७ उ०ई	१						मेघवालजुगाव नात सोजुगाारी गामही मे घवाल गाम पहीडे जारहा
९	हवा खा०	७ ७	२	१	१	३	१४	७०	ज० पलीवाल म्हे ता गुरोशराम उदै पूरवा नोकीकुहे रायापीकेरवालसेहुपास० १८०४
१०	घडीवा से०	७ से०	२		०		१२	६०	से० स० १९०४
०	राराग से०	७ ५					११		० पलीवाल यास० ४२ मेवानथोवा भदोकोरता हेसो जमीचा से प्रावाद लिखी जसी ॥
०	देईया छफी जोसी परे	६ ५							० रवडीन देईया परजोसी साचोरथासी स० १८१६ मे जुद्रकेजारहा
११	कारगोध जागीर	१० उ०ई	२	०	१२	१	४०	१५६	भो० देवडा थारजग्रातनासिहजीकोरुनेसे वसीयानेवागीरहुगाना कवाग सरावासी है
१२	कारगोध वीरमाणी स० ११३ भो०	११ स	२	०	३	१	३२	१४६	० देवडा तु० रजश्रीदेरी साजनीकी पधवाध न्यारी वास किया
१३	जेसू सराा होया खा०	५ ई	१	२	०	६	२७	३११	जमी० पलीवाल था कुवा १२ मधे ५५ पीचोडे है सामे नवेनलेकाको के परे था पलीवाल जसुवागो ने वसाया ॥
१	भोजासर स भो०	३ अ	१				३		० जेसूगारीके फनेवालो अउलाववयोडी सीव राड घरा चैन० गरावस सीव कुवा चान गकोबरदसा -
१४	चाहडू से०	७ उ०ई	२	१	०	१	५५	१०	० से० हुमोर

२५	हमीर बख्तवाली र	६ ३	१	१	२१	२	११६ ४०२	३ वि. ३ म.	बख्तवाली पार है श्रीभीया हमीर
१	गजीया से	७ ३	१	०	२		हमीर	०	भारी गजी या करने से वीरान बख्त से थारा ड घ साथान जी को दीया दानी सं ३२ में हुई है ॥
२६	रिहु प	६ ३	१	१	०	१	१५ ४१	०	पलीवाला का गाम था सेठ सवाही राम जी को प दे संवत में हुआ मुसलमान रहे है ॥
२७	थईयात से	५ ५	१	१		२	२० -६	०	यों हान है थईयाने तीसरा वाने की नोकरी से थहीयात कहा ॥
२८	मोकलात सांसन	५ ३	२		०	१	११ ३६	०	ब्राह्मन पुस्तकरी आचारजी को श्रीसबल सिंह जी दीया ॥
२९	वासरापी लोहरी की प	६ ३	२	५	७	२	२७ ११६		ही नों गाम पलीवालों का लाली ठा: राजश्री ईसर सिंह जी को पेटे ॥
३०	फरसे की से		२	१	१	१	१		से
१	भैसडेच खा	६ ३	१	०	१	११	०	०	भो भैसडेच सं २० से करने से रवाल से हुआ सं ४१ से पलीवाला रहे है ॥
२१	भागूरी गाम भो	७ ५	१	०	५	१	२७ ११३	०	चांधन के जमीनों की जमीन में मुसलमान नाथको की वस्ती ॥
२२	भोजक सांसन	१० ३	१	१	०	३	४० १४२	१ दे:	से ठान की सक्ज का सीरी का रुधु वती लाग पुन्य सांसन ती श्री दरबार से उदगरीया जहां तलब नही होवे और आसामी जबरन नहीं पका डी जा वे और ठांसन गाम जो जागीरदार का दिया या रो लपोल चारा बस्ती है वहां तलब का जाना व आसामी को साना हो सकता है ॥

२३	जावध प०	१० अ	१			१८ ७८	१-वि १-दे	पत्रीवालोकागान भट्टीयेके रावलोतो कोपटे -
२४	जावध	सं					०	भो साहुकागमदेशी सहरमे त्रारहानलो दुनीरो सीरमे
२५	बडोगाम लेप जा०	८ पू	१	२	५	३१६ ५५५	१-दे	सेपीया भाटीया फेर वेहारी दासोतलो वरवरा -
२६	आसायच मे०	७ से	१	१	०	२१२ १०२	०	आसायच सीसोदिना महारावल श्रीभीम फीधोयतलो धायसरवचानूजीको ध्यान्वनाया
२६	जैरात मे०	५ से	१	०	०	११२ १११	३१	भाटी जेतसिहीव
२७	डामलो मे०	६ पू	१	२	६	३१२ ३८५	१-वि	भाटीवानर तथा झालाठफि रवीट
२८	आवाल मे०	६ से	१	०	०	२१३ १६३	०	चौटीवान
२९	जोधा मे०	६ से	१	१	०	१११ १२५	१ म	मे०
३०	सागोरा खा०	८ पू	१	१	०	११	०	भो अडगावटा आकलमे वस्था सं मेखालसेहुजा फेरसेतचान काहे
३०	धनवी मे०	५ अ	२	२	५	६११ १२६	३-वि १ म	पलीवाल पागे रा० भगवानसिहीतो केपटेया
३१	कीता खा०	७ से	१	१	३६	११३ १०१	३७	भो कीतोसेकरूपलटाहुया ए० भावान सिहीत रागावत गैनजी ११ स० मेछेरे ऊमनीकोस० ५१ मेखालसेहुया -

३३	मेखा सं.	से. ५	२	३३	३१	३५	१ वि. ११५	०	कीतीका भारू दू. मारवाड-थलमेंजारहे- गामपलीवालोंका सं. ३३ में भाटी वैरी साल तपुवालीको बरवसाया छोड गया सो कवि राजनीको हिया सं. ४४ में आगेवाहू ठाका रो के पड़ेया -
३३	पीयोडाई खा.	ई से.	१	१	१३	२१	१ वि. ११७	०	पलीवाल
३४	जगव भो.	८ सं.	१	१	१	१	४२ १७२	१ म.	गोगली
०	से. से.	से.	१	१	१	०	०	०	मुदतसे वीरान वपीलमें गोगलीयो के कड़े है नौमीया नडगया सुधार सीरवी -
३५	सोभ से.	१२ से.	१	४	०	२	२० १३२	०	गोगली
३६	आसलोई से.	१० से.	१		१३	१३	२१ ८२	०	से.
३७	टंमाउफेकोहवा भो.	११ से.	१	०	५७	१	१० ४३	०	से. कोरुवावेरीयोका पार है सं. ४४ में दूजा पारहुआ पु. १२ यानी सीठाव वहुत भीपैरी नमी खाल है ॥
३८	जानरे सां.	१२ सं.	१	०	१५	२	२७ १८८	१ मा लगा	मालराका भोपा तुवर उफ जागा मौस्ममें मित्रीचे भावे को ररववाली करे ॥
३९	सोडो भो.	९ सं.	१	०	५	१२	२७ १०८	०	गोगली
४०	कीरडी से.	८ सं.	२	२		१२	५५ ३६६	१ वि. १ म.	सांवनसी

	मरा से०	१	०	०	१३	०	०	गोगलीकोचडीमे रहे है
४१	पिथल जा०	१	१	०	१११	२६	०	रावलीत सबलसिहोन
४२	सेराग मो०	१	०	१	२	२७	०	मूलपसा १०८
४३	सतानाथरा से०	१	०	१	१११	११	०	सताना० ई मे सेरहिम्मवणमजोगिरवीरखा थास० १७ मे कुडाया-
४४	गोरगे रवा०	१	०	१	२६	२०	५	पतीवालनहीरहा १ मे रजत वगीरे वस्ते ७२
०	पीपरला से०	१	१	०	१	०	०	पलावालथाम० ३३ मे सुखे सदारामकोर वास लिरवा दिया थापर छोड गया-
४५	भोपा सा०	१	१	०	१	३९	६	१०९ श्रीतेमड रायका भोपा गोगली खाम
०	नेहेडिया सा० १५१५	१	१	०	२१	०	०	वि पनीवालथा वई घर पीयाडार मे जा- रहा-
०	लाड मो०	-	-	-	११			० गोगली भोपामे रहे है
	वाधरा से०				११			० सेजन
४६	भीया से०	१	-	-	१२			० भी

४७	डोहरी प्रोल्जोरी सं० १९ जहाग	से	०	०	०	०	०	०	व्यासपीलजीको डोहरी पुन्या र्थ दीवी पा- वुरा यान ॥	
४८	जांयरा से	से	१	०	१	१	१	१	व्यासों को सांसरा सिपाई रहे है	
४९	हांसु से	से	१	०	१०	१	१	१	भो० हांसुवूय सं० १६ में व्यासधनुजी- को सांसरा देवा	
०	कारीयाप भो	से	०	०	११	१	१	१	भो: साइलराठीड: था सो करथा	
०	बाले हार	से	०	०	११	१	१	१	भो: बालेहार हांसुवेरहे है	
५१	कुलधर खा०	से	१	२	३	३१	३७	१	वि: पलीवाल कुधरा वसाया वतलाव कुधरा सर खुसाया पहिले दूमरी जगा गामथा सो वीरान हुआ	
०	महाजल भारेरा सं० १९२६ भो	से	१	०	०	१	०	०	भो० महाजल कट्या महाजलार टीलाडा भर दिया ठारा बाकी है सुथार सीरवी भूतके डर से गांव कुलधरा में आरहे है सो पीछे जावतेंगे	
०	मुसापिया खा०	प:	४	२	०	०	१	०	पलीवाल था	
५२	काहला सां०	प: ने	५	१	०	१४	२	४३	०	सुवार वारे में गुर आचार लीको दिया था उन्हीं ने गजे की संकल्प दिया ॥
०	ठावरी	से	१	०	०	१	१	१	०	ठावरी गाम क हाले वगैरे में जा रहा
०	खडे-र भो०	से	१	०	०	१	१	१	०	खडे-र गांम सलखा वगैरे में है टीलाडा- वगैरे भरे हैं ॥
५३	इत्रेल खा०	प	७	१	०	३	१३	१२	०	भो० राडोड-सूना हुआ अटेवाल रहे है मुमल की भेड़ी का निशान है जहां अमरकोट से म्हु हरा नित्य आता था ॥

१४	चुड़वा प०	५ से०	२				७७	१ जैन २२५ देवी	भारोजैतसिहोतेकी जमीनपुरोहितबुधलालनीली वसुदिकसीवजोसी साचोगेकहे बकी सेरगुमानवर केपरे है ॥
०	वालै गवा०	६ से०	२	०	०	१	०	०	वालेकरगया
०	विस्नोईखरी गेरा से०	७ वा प	१	०	०	१	०	०	विस्नोई गामकानासर जाम्हे स० १२६३मे
×	सेरको गाम	७ उ					०	०	पचोलीको सेरकायहोटा था सन्दी तिरवावर वर सेरके पाडेके चोरकाहेनेवगैरकई नौकरी थकीसोकरगया

(रव) परगने देवी कोट

१	कोरदेवीकोट	१२ पू म	१	५१ ४०/६०	५१०	१२२	२ कि १ जैन १ दे० १ मदी	४८३	ज० पलीवाल। गावसे पश्चिम आधकोस मूगा रीपर आसरागीयाने आसापुरादेवी कामररहे ज
<p>हा आसरागीकोरथा योके गावके बीच गडीवनाई सोही निशानरहा है फेर गावसे उत्तर कुचापर तोर ४ वूर्जव १ दरबाजा वसालापन्थरकाव सफीला मिट्टी कीवनाया स० १५३४मे कई ठिकाना पत्थरोकेहुए तलाव फूलीसरपर १ साल १ मदी व पूरव पच्छिम घाटव चौतरानथाउत्तर कीतर्फ पहापत्थरो का घाटव चौकीऊपरबगला हीवान साजमचन्द्र जीका स० २२मे नथमलजीनेवनाया ॥ गांवसे पश्चिम बेरीयाका पारहै मालीयो सेनाडीया काराई थी ॥ हाकम प्रो० उदैभारा प्र० से थाने वसायरकी चौकीया कभी कठ २ रहै है ॥</p>									
१	भारीजैतसि होनरी सं० २३	११ द० नै	१						हेमराज हडेसेहोत विसुपुरमेकाम आथा था जिससे कई खेत भोम स० १६१३मे रीया

२	पुनासरा प०	३	११	१२	११	१९	२८	०	भो. जसोडोंते चासाको उन्नपुरोहितो कोरिया इत हे. वे सं. २२ में मील सिया
३	लक्ष्मणा जा०	१	०	०	११	२१	८६	०	भो. जसोड-चूरा ने राजा जी अनाड-सिंह जी सहाकी जागीर सं. में दीया
४	ढोडीया भो	५	१	१	०	१३	३०	०	भो. जसोड सं. १९३९ में तीजी पांती म्हेरा को दी ॥
५	काराडा स	५	१	१	०	११	२४	०	भो. जसोड वास ३ करमा बांजा वीका
६	बाला से०	१	१	१	०	२१	२३	०	से. हांगा टीलाडो काराडे-समूल है
७	जोस्त सं. से०	३	१	१	०	११	२२	०	जसोड-थलसे आयरा सलो अचलो की बसे-
८	डांगरी जा०	२	१	१	०	१३	२२	१	भागांकी वस्ती ८ घांमर वसे पीके बडे गामसे भारी वेहारी रासी सहरीर मती म्हेरा जाकर मेरे वेरा नहारणां रुस मल यहां रहे घोडा नहारकर वसी लिखाया मास्वाड लूरने से जोधपुर की पौज आर्द्र पैत्र लाषने घर से पर्वदेकर गढी वगां.
९	महेरी स्वा०	१०	१	१२	०	११	१४३	१	वि चारा म्हेरी तुलादे पै: गां० भो. पीधा जसोड- करने से रवाल्स है जमीनकी पैदापोल्ले में भैसडे. कराया सो होने वाइस्क
१०	ओली जा०	१२	१	३१	०	१२	५२०	१	रावलोत अमरसिंहोत क कई है तथा हो सके है पुसि ७० बसुत। जराअतमा लीकी है पर किरसा हो तो हजारो की पैदा होय-

११	वाराण्डो भो.	१५ से.	१	१	०	२१५	८१	०	भो. जसोड षगला गाम सूनाहुआ नक्वसा - वला हू वृष्टीचोडास्क जगामोपु १२ मीठा विसा जणयवकी गुनासुहे स ५५ मे १ कुवामालीया नेकीया ॥
१२	रजगढ जा.	१३ पू.	१	१	०	१८	६५	०	भो. जसोड कव्या जमीन भाडी वेहारी दासोत रा- जसिह को व इरोर गाम वसा पानीपारा - सावू रूपा व हू सूर रानीये रहतेहे ॥
१३	भैसडो भो.	१० से	१	२	०	३८	१४४	१ म	बीसलपुरसे जसोड पाके घापे भो. भैसडेची कोमा रवार का विज्ञा हू घनकेला पुचत ग करनेसे मटीके स्वामी मरते आपसे गेहू गुलवाड नहो करवेही सुकगस
१४	चैतीरगो स. १०५ से.	१३ से.	१	१	०	११२	२६	०	जसोड काजेंके है समै जैसा सीरवीहो गानवसा- वो कुवावेतीरागापुर्स १६ पानीमीठा ॥
	आवा		१					०	जसोड षावो भैसडे मे रहेहे ॥
	जोगायत भो.		१					०	जसोड जोगायत भैसडे मे रहेहे जमीनसे भाटीसा। एमसिहोती को सीस्वी कीया स ५० मे परर कमभरी नहो
१५	नवासरवफीमी डनीरोतलो स. ३१ जा.	६ से.	१	१				०	रामलाकी जमीन वेहारी दासोत लस्वीके वेरे मोडमी न सि श्रीदरवारसे वसी सिखावतचा नयारका गाम वसाया-
१६	मदासर भो.	२ से.	१	१	०	११२	५३	१ म	कभारो वर गामथा पो करगाके हु रवसे जसोडको मर के लिये लेगाये सो क निये मे मरा जसोडोका गाम दुआ ॥
१७	नेडान से.	१० से.	१	२	०	४१३	४७	१ म	भो. जसोड
१८	हुवाडो से.	८ से.	१	१	०	११२	४३	१ म	से. जसोड. उचा
१९	मूलांरगो से.	५ से.	१	२	०	११२	६२	०	से.

२०	रासल से०	४ पू०	१	३	०	११	५० २५१	०	से० तला १२ म गोहा बरीहा गाम के चे प्रिस में ४ जारी है रास्ता भोपा सांवता सुखाने का
२१	अचल से०	५ पू०	१	१	०	१३	११ ५५	०	से०
२२	भोपा सां०	३ से०	१				१० ६०	०	जसोड सेनेने भारी ज पडेहार हजि को जमीन दे कर गाम बसाया सांवत समूल - ॥
२३	सांवत भो०	६०	१	१	०	११	६१ १३१	०	भो० जसोड
X	मांडगा से०	४ पू०	१	०	०	१		०	मांडगाों सं० १६०० में न्यारा गाम मा भ्रया था फेर सांवता मेजा रहे तली वूरी चोडो है ॥
२४	डाडो खा०	४ पू०	१	१		१	६२ १६१	०	वि० जं पलीवाल रुकतरफ सीव भाटी जेत सि होवे की है ॥
२५	जिसू पू०	३॥ दः	१	१	०	२३		०	पलांवालो को गाम तेज मालो तो के पटेया वीरान नुआ था सं २० में सेठ प्रतप न्यं हजि हिस्म तरा मजी को पटे रिया जब वस्था ॥
२६	वाखरणी सां०	५ रु०	१	१	१२	११	५५ २४२	१ वि० १ करला	सिरवै की भायप
२७	सोमलआई से०	७ से०	१				७२ ३१६	१ वि० १ म०	से०
२८	काठोडो खा०	से०	१	१	१५	११	३१ १६५	१ वि० १ म०	भो० गाम गोयला की जमीन में पलीवाल वसाया श्री र गोयल वीरान हुआ ॥
२९	सीनेडगई से०	७ नै०	२	२	१	३३	३१ १३६	० वि०	जं० पलीवाल श्री रांगावत जी साहिवा के पटेया -

1	जाटाकी तीन टानी ३ स० ३१ से०	ने	१					०	सीतोड़ाई की सीवमेरानियो हुई
३०	सिरवो सा०	३॥ से०	१	१	२०	१	३२	०	साहरा है ईसमे सात गाम न्यारा बस्या रतनु पाद वारद
०	चीचा से	से						०	सिरवै की भायप
०	देसरलाई से	से						०	से०
३१	रावता मोटा स० १५१३ खा०	ने	१	१	०	३	३१	०	वि० ज० पलीवालया और पटे भारी जैन सिद्धो तो के था वीरान हीने सेरवाल से राईका को दसाया ॥
०	बोला से	फ	१	१	०	१२	०	०	पलीवालाका गाव जैन सिद्धो तो के पटे था वीरान हीने से रवाल से हुआ ॥
३२	छोड जा०	से	१	१	१०	३१०	६६	१ म०	भो० देवचाथा भारी गिर घर दा सो तो को वही हुआ ॥

(ग) परगनाकोट फतहगढ़

गाव बीझोराई मे कोट वनना सिरायाके कटक से फतह पाने से फतहगढ़ कहा ४ बुर्ज वसफी-ले कच्ची ईयाका बदरवाजा ऊपर महल है कोटके अस्स कुवा १ पठ साल पलीवालाका है ॥

हा० कोठारी झुझारमल प्र मे थारौ वसायर की चौकी मौजे ज्योना मडाई कोटा चेलदा मे है ॥

1	बीझोराइ खा०	१५	१	७	५५	५५	१५६	२ वि	कीमर्क दरुफी बीझाणा सो तो कुवा बुरकर मारवाट में जारहे स० १५२ से अस्स रागी को ना० देसराम सी मोरभा पलाको सीरवी कर रहवासरी था जबसे ज० पलीवाल के भारी देहरा राहातो के से था स० १५२ मे रवालरो कोया ॥
---	-------------	----	---	---	----	----	-----	------	---

२	कोडीयासर से	१॥ पू	१ १	२ २	२१९४	५८ २२१	१ वि. १ मं.	भाटीनारानदासोतीकेपटेयावागामरातलवडा- लोडे.ग्रामसं० १३१३में जं० पत्नीवालहै पहिले कुंभारथे कोडीयाखाफरीयानामीचोरकेतलाव परगावकोडीयासरऔरसांचकेमगरेमेंकोडीये कागुफावरवाफरासरतलावहै ॥
३	सादा सा.	२॥ से	१ १	२ ३	३२	४८ २११	१ वि.	जं पत्नीवाल चारल कासीदासकोसं० में श्रीमूलराजजीदीया ॥
४	साधु सां०	१॥ अ	१ १	१ २	११४	४४ २००	१ वि.	से० वीभीराईसेन्यारागावसं० सं० १६४८में- सांधमगरेपासबा० सांधुवसाया ॥
५	भीयासर से०	२ ह	१ १	०	११८	५१ २३१	१ वि. १ मं.	से० जमीदार पत्नीवाल
६	रीवडी से०	३ ने	१ १	० १	११४	४२५ ३६५	१ वि. १ मं.	से० कांशीधरावजीतोकेपटेयासं० १३मेंसाजरीहु- आपत्नीवालगामभूहकाभोकाजदेदावीदहायापीके वासगापोकाछिरकसीरवीहुआ ॥
७	गंडाई से.	५ ह	१ १	२ ४	२४१	१३६ ५४	२ वि. २ मं.	से० भारीपंचोतीताकेपटेयासं० १५९मेंखालसेकिया- साजीतेरीजमीनमंजालपरमामाजाटयासं० ३३२गा० कां गेडाकेचगायेकोसाजीतेसादूलवसासजवसेपत्नीवालहै ॥
८	रावडी से०	६॥ से०	१ १	२ २	११३	०	० वि.	से० चेलकटाकरोकेपटेया तलोरांबडोतलाई रावडीपरगामहै ॥
९	वीप्रेआई सां०	५ से०	१ १	५	११४	५२ ३६२	०	चारगा मीसगा
१०	नीवा भो०	७ हने	१ ०	७	१५	३६ १५३	०	भो० जसोड-उफसाजीता-साजीतावेरीयोकेपार रहनेसेकहीनेऔरसातोंगावोकेनामवसानेवालोकेनामसेहै
११	हरना से०	५॥ ने	१ १	७	१११	३६ १४७	०	से०

तोगा से	१	१	०	११२	२६	०	से०
नादा से	११	१	०	१२	३	०	से०
कोठानोपट खा. से	९	१	२२	०	१४	३७	० वि १५०
कोठागोधद से							ज० पलीवालया ॥
कोठानवा से							से०
बोलेरो गाम से							से०
ज्यावा से							भो० साजीला कर गया कर् खेतपोसमे हर भाद वाया बाकीबो ठा समूल है ॥
मातरामड से							भो० सुवार थका जब खालसेहुआ पणमनपो लमे देवडो देवार् है ॥
१५ पाचा भो०	५	१	०	३	१२	३	०
१६ कपूरीया से	६	१	१	२०	२३	१५	२ मद्य ३०६
							भो० साजीला यो कोवसी दियाथाव नही रहा फेर साजीलो के सीर वीहीगो उजेकर माली कोस० १५३५ मे विपा

१७	चेलका जा०	१५ प०ने	१	१	१६	१७	१५५ ३७६	१ म०	भासी दुजावत
१८	नगराज से:	११ से:	१	१	१४	१३	३६१ १४७	०	भो० भराकमलकट्या सं० ७४ में खीसी वोर हवास और सं० २५ में जं साहेब खान मिहखां को जागीर दीवा
१९	जोध भो०	१२ प	१	१२	१३	१८	१९९ ८४		भो० भराकमल
२०	साला तथा भादा से०	१२ से०	१	१०			६८ २०५	०	से० साला का भराकमल दहीके भैसे पर लेकर ताहै जिससिंगरादी लाडन माफ और भादा का ठारादी लाडन दूजा गांवां मुजब भरते हैं ॥
२१	अपला से:	११ प	१	१२	१३	१७	२८ १३९	०	से०
२२	बासंडी सां०	१२ प०ने	१	१	०	०	४	०	भो० भराकमलकट्या सूना गाम खी गज सिंह जी साहिवा वारद जी गराज को दीया ॥
२३	वंधारा भो०	१४	१	१२	०	०	५२ ६०२	०	भराकमल १२ ही गाम का तलाहै वस्ती मुसलमान म- होर साहा वगैरे है तथा भराकमल के गामों का नाम वसा ने वाले के नाम से है कुवा १२ न्वे कर जारी है पु० ४० मी०
२४	सूलीया सां०	१५ प	१	११	१२	११	३६ १४७	०	भो० भराकमलकट्या श्री बूलेराज जी साहिवा ने देधे कर माराद को सं० भैंतव्या पार फली रुडे में देरीया- १२ ही गावाकी हैं ॥
२५	गोराज भो०	से०	१	१	१२	१३	३३ १२६	०	भो० भराकमल ॥
२६	हापरा से०	से०	१	१	१३	१७	१३ ६७	०	से० खेत चिडी अत में कुवा पुर्स १८ मी० सं० ४४ में कुवा
२७	झाडवाव से०	१२ से०	१	१२	१३	११	३८ १७६	०	से०

०	चौथ से							०	से०
०	जेसीग रवा०							०	०
०	बाहु से०							०	०
०	माडा ओ							०	०
०	गंगोयासतो से०							०	०
२८	आसा से०							४ २०	०
२९	पापा से०							७ ३६	०
३०	वीडोतोपार से	१५ ५०३	१	०	०			६२ २६६	०
३१	मेघा से	१२ १०५	१	१	१२	११३		४३ १७१	०
३२	रामा सा से	११	१	१	७	१३		५२ ६०१	१५०
०	सीहा ओ० से०	१०	१	११	७	१५			०
१	रव्यालो से०					१			०
३३	कोडा सा	४॥	१	१	१४	२		४८ २०५	०

भो पाहु. स. २८ से रवेता को मुफागा लडि के
व्याजमेलेगा किचावढाराका ३०। भरताई है ॥

भो. पाहु है पर टीलाउ न्हेती बारां चौरे केरुये
पहुतवाकी है सो कपर नूजवतुसी

भो. भराकमल

भो भराकमथा सीनरहाजवसीहडो जमीनली

ऊपरके ४ ही गामो बाले रहै है ॥

भो पाहु वेरीयोकापार स० ४४ में नया रुपया पाहुवे
के गामो कानामवसाने वल्लेके नाम से है ॥

वारट सिरवेकी भायप

भो सीहा गाम रामा मे रहै है

से वस्ती मुसलमान रावलीगानिजैर लौरे

वारट सिरवेकी भायप

५६	सांगरु- से०	२	१	१	३	२१४	१११	१ वि: १ कारवा	चारगावीतु
३५	भेसारी भो०	२	१	१२	०	११९	४८	०	भोजसोड-गाम छोडीयो से न्यारा वास किया कु वारामसर जुर्म ८० पानी मीठा

(घ) परगनेलखा

१	कीरलखा खा०	२२	१	१२	०	१	१४	१ वि: १ दे: १ म:	जमींदार कोम खोखर राठोड है धाने के रहने को सं- १२३ १ दे: १८५६ मे कोखनाया था सो गिरा हु आ है अंदर देवी खरवां । म: कीराय कामे दर है सदर मुकाम हाक मोहत मो नीलाल ॥
०	गोलीया से०	२	१	०	०	०	०	०	जं खोखर खरवां मे रहे है ॥
२	भाडली जा०	३	१	२२	०	२१५	२७६	१ वि: १ म:	भो खोखर पड़ोसियो के दुख से डा० अर्जन सिंह को जमीन देकर गाम में न्यारी वस्तिकरी लन्होने द्विभारी चार पार भाटी कानरो को भाई व प्रधान जान सं २१ में व साया सो फरंट हु आ है ॥
१	द्विभारीघार जा०	११	१	११	१	१	०	०	
१	अर्जरीवाली आ	३	१					०	डा० अर्जन सिंह जी की खुदाई तलाई कानाम अर्ज न अली ऊपर दानी भाडली के प्रधानो की है ॥
५	तलोपोसमो ह.	४	१	११				०	पहिले वस्ती थी

३	भाडलीखोपर हेमा खा	३	१						ऊपरभाडलीखोपर जमीदारखोपर
०	कोरपाल खे		१						ज खोपरभाडलीखे रहे है
४	कूडो जा.	३	१	११	०	११	४८	०	सहरोनेगामभो.पोषा। सेरवापसेहुसवारस.११२५ व२७से गामजोगरजखी वापउरैसिहोतको वसा दी बाकिपारवीभोगवसीतथापरे कागाम खोपारखा- पसेकरवाकीयाथा ॥
५	नीवली खे	४	१	११	०	११	३७	०	
६	जझनगपली जा.	७	१	११	०	३१	१३५	१ म १ कि १उपसा	जझोकोतलार्.जझनगपलीपरग.कन्यारादासजो कासाउसे श्यावसीमाडी
७	गुरुडा डासण	८	१	११		११	१५६	०	जझनगपलीडा.नेवारपा गुरुडोकोवसाथा
८	गेहू जा.	१०	१	२१		पासे ४००			गेहू पैदाहोनेसे कुवगोहूपगावहुआ पच्छिमपौन कोसपर सोमलासेवेरीया है ॥
९	डाचरी खे	१०	१	०	११	से	११		भो.पाहुथाकोडोकीखवजडा.वाफरीरो.वेसाईव स१६मे तजार्.डाचरी परवस्तीमाडी ॥
१०	सोदात स०११ खा.	८	१	०	१	११	२९		तलार्.सोदात परपागलीया कुरडोकोदेवडोसे न्यार- करकेभेतासालमचर.जीनेवसाथा
११	जोगीदासचोग जा.	६	१	११	०	१११	३८	०	खापप्रथी राजोतभाटो.जोगीदासने गमवसाथा
१२	गजसिंहगाम खे	७	१	११		पा. सुखी	११	४७ २८	भारीडुजावत गजसिंह वसायो

१३	तेजमालोत से०	६ वा	१	११	२१३	१३६	०	मं०	गांमकांयंगासे भाटी पचारीत तलैकांसाऊपर धारहेथे फेरउदे सिंदीत जंझनआली औरतेजमालोत यहां वंसे-
१४	दीरमांसी से०	५ क० वा	१	१		३३	०		तेजमालो तोका प्रधानराहड-वभगाकमलरहते है
१५	मोटा से०	से०	१	२१	३१२	१५७	१	वि०	जं पलीवालथे फेरवांपते जमालोतरा० देवतसिंह जीकोवसी श्रीमूलराजजी साहवारीया॥ मारवाडमें लटकरने सेचोडावत बहादुरसिंहखोडा फीजलाया गाडीदिसे
१६	रगाघा से०	३ उ	१	२१	३१५	१३४	१	वि०	मो० घोषर रागचोकट्यो वारसं० १८६१में तेजमानो-
१७	कोहरी खा०	२ ५	१	२१	०	३३	०		जं खोरवर तलावूरी योडा दूजाभी है
१८	देवडा जा०	८ क० वा	१	२१	११३	२२३	१	वि०	मो० देवडाको गामयो डा० कल्याणार मजजीको वसी दिवो फेरभीमजी रहा परजमीन तीनोंहंसे जेची

(५) परगने महाजलार

१	महाजलार खा०	३० ह० नै	१	१	११८	११३	१३२	१	म	जमीदार महाजल भाटी है सं० १८६२में ही गलाल गट्ट गडीब नाथ कोर रवाभेके मात देन थानारखाया सं० १९१९में हाक मरहते है ॥ आवादी वदाने वकाई कुवे औरही गांव वसीवमें कराने वस्तु जनाथ कामठ उमदा क्ताने वगैरेकी हिदायत व तजवोज कोगई है ॥
X	तलो पीथान सं० १६									सं० १८८६में मोटा सुजानसिंह सेरसिंहोत कूवो वार वस्तीकी दूवातीलीची पानहुई तलो हीदयो
	मानैरीतनाई सं० ३६	४ अ	१	०						महाजल वबाव्या डै मुंगरैकी टानी है ॥

1	गडेली नवादे	४	१	०				महाजल देसलरो की दानी जूनी है ॥
	र							
2	कौला नला	६	१					नहोडी महासिद्ध समेज वसाय सोटो की मारफत हु
	स १७	से		२				वाती लिकुवा व वस्ती करी फेर स २५ मसमे जे अमर भी द
								जा नुवा दुवाती से किय ॥
1	अपनी सरो को	७	१	०		11		गाली सर नशार कवीर न गैरे वस्ती करा
	वस्ती	ने						
	स १६							
1	हरी सो चार	४	१	०	गार है	12		महाजल व भीस गूगलीये चाडे पर है है
		से						
2	कूपला जोड	८	१	०				ज चौहान है स २० मे सोटा सादूल व सडू कारग
	रवा ०	प						गा दास कुवो वस्ती कि गथा सो न हो दुआ
3	पेछी नो	७	१	०	५५७	२५	१७	ज चौहान की जमीन मे सोटे रवे नसी कुवो गाम किया
	स २५	से			कवी		७५	फेर सोटे जै सिर स ०५२ मे दुवाती से दू जो कुवो कियो
		पवा						
4	करडी	८	१	११	०	12	२५	जसता वस्ती सोटो की सज नूजीरो जो घर खेना की
	से	वा					१२५	हासल माफ ॥
5	दहो	७	१	११	०	13	४७	भो राष घर है और चौहान गधीया कर गया जूना
	भो	वा					२१८	हुवा मधे स १६ मे गजू वसमा श्री दरबार की पाघ बरहा
								ववाघ १ कुवो व वसती की या स ०४० मे दारी ती के रा ० जसा व
								रक कुवा कियो ॥
7	हटार	१०	१	११	०	१११	२७	भो हटा स ०५१ मे सक कुवा व मरार मुगारियो
	से	से					११६	सक कियो ॥
6	कुलीयो	५	१	११	१५	१६	२४	भोमीया सावत सी कोरडी वात्ता स ०५२ मे दू जो कु
	से	उर्दे					११४	कियो ॥
8	नेजर रो	४	१	११	३	२२	७०	भो नेजर
	से	पादे					२५३	

1	सूतगरी से:								
१६	आंटी चो से:	१०	१	१	०		२३		से: नेजरारै समूल है
1	तलाइलीदरी		१						० गंजू कालेरै बस्ती है ॥
1	विकांसी		१						० मंगलीया वचांती पार है है
१०	सीहड़ार सं३० जा०	१०	१	१	११	१११	३६ १७०	०	सो० सीहड़-कर गचा सूनागाभ भाटी प्रथी राजसक पसिंहोत को वसी दीया जब बसा
११	सतोय से:	३	१	१२	११२	६१११	१२० २४४	१ वि. १ म.	भो० सत्ताथा राज श्री किरुसिंह जी जोरावर सिंहोत को जागीर दिया = ॥ जोधपुर जैसलमेर की सरहद पाव लट साहब साहब वहादुर ने सं० ६६ में भोजे श्रीला कांगरी धारवी के तिहड़े से बधीवा वली चो हटैत क निकलाई- जरां अलावा जमीन वरुत सीहर गांव को जाने के इतर ह बानियां मारवाड नीचे रहीं १ वकांसी २ भोपीरो पा ३ गदागदरो ४ आसलीया वय ५ दाघरो रो भो- इसतरह महाजलार की बहुत सी वतों गई कैरला कुवा में भी मारवाड की सीररखी और गाव भाडली की सीव व- कुवाटांनीयां मारवाड की रवनी चाही सो मंजूर न रखने से लैत लाल में है ॥ कूवा नो होडी अलावत जायां पार वगेरे बहुत सी जमीन इस वर्षों में मारवाड वा जोह बाकी की
1	किसनसिंहरो तलो	५							०
x	भोपीरो पार								० सभा अली सर जुगो जा वगेरे सोदा बंध डै-कार है है

(च) परगनेखाभा

पूवारवारैसे जमींदार पल है जो मालसर पर रहते थे यह जमीन गोयलकी थी उसकी बिटी ब्रा नहड-
परगीजकर जमीन लेली खाभा नाम खडगे नसे गांव हुआ नेहड की औलादके हरजाल पत्नीवाल है -
महारवलकरण ने पत्नीको मारकर मालसर नामही मिटा दिया जब जमीन में पैदा नहीं होने लगी जब
पत्नीके दो लडकों को जो नां नारो अमरकोरसे लाकर वसाये गांव बहुत आवार होने से भागनगर
क हाथा

१	खाभो खा०	१० प०	२	१	१२	१५१९	३६	०	वि: १२० म:	डुंगरी पर सं० १०६२ में कोर बनाया था अवनिशान है हाकिमके रहने का सदर मुकाम था सं० ४२ से सम के समूलकिया यहाँ मोंहर रहती है महेता चैन सुख
०	निभीवा से०	१ अ	०	३	३		०	०	जं पत्नीवाल था मूंगरी निभके निभीया कहा	
२	सलखा भो०	४ वा	१	१	५	२११	५२	०	भो० जंझ सलखा हिन्दु है भारासीके बेटे सलखे वसाया	
३	रुजासर से०	४ उ	१	०	१	११	११	०	भो० भराकमल	
४	दामोदर ख०	३ उ	२	१	७	१०७	३८	१	वि: १३५ जं पत्नीवाल दामोदरने पुलीये से जमीन लेकर गाम वसा यफेरखा भेवालो वेरी परनाप वेरीयोका पारदाच जेरीया =	
५	देढा से०	२ पू०	२	१	०	२१३	२४	१	वि: ७९ से: तनाई जसीयेकी कडीग नामी है नीभीये के भाई देरे गाम वसाया ॥	
०	जाजीया से:	३ से:	०	०	११	१११	०	०	से: है सालाक था कि पत्नीवाल सानी नही था कबीनेस कहा सोचिसरहु आकि (बुजकोठेके ड- जो योनसभैजा- जीयो) चुनिये परदेस भेही घर गया जाजीयाखाड़ा लसे आकर वसाया	
६	पुलीया से:	२१ ह	२	३	०	२११	२८	०	वि: २८ जं पत्नीवाल पुष्येके पोता वसाया सिपुलसे जमी नलीवी	

७	सुहार सापली से	२॥ २५	२	३	०	२११	२०	०	ज सिपुल वरित्त मालियो की वाडी मे प्यजवगै को हासल राज मे पुरसजमीन समचोसकारु		
८	जाडे ती पव	२ १	१	०	१०	११२	३१	०	ज जोइयाउफु जामहा ओडी पिरो की नां रुगी याहुरोगे को फी मनुष्य हर साल ५११ दे		
९	कुभार कीठा खा	४ २	२	०	४१४	११५	४०	०	ज सिपुल बस्ती कुभारो की		
१०	सिपुल से	५ ५	२	०	४११	४७	४७	०	ज तुवरउफु सिपुल सिवकानाम सापली		
११	धोवा जा	८ १	१	४	१०	६११	१२२	१ वि	भो मूलपसा खापधावा-		
१२	खूहडी जीदा से	१ १	३	३	१०	३१३	१५०	१ वि	खूह सिधी मे वैरे को कहै सो पार मे वैरी या फरावपू हडी मूलपसा जी दे का जीदा धोवे का धोवा है ॥ भो मूलपसा जीदा गाम छेलके सट्टे होरत सिह स्वाप गगहासकोस १२४० मे वसी दीया पर धो बारवा से सु घास ११३० भेरा जीत सिह को जमीन खिरवादा सो ५५ कोस की गिर्दे मे क व जे है		
१	खारीया स० ३२			१					०	बहा सोटा मोड जीवा रहै है	
५	मोरीये रापा र									०	बहा सोटा भारमबथा सो जेठवी अरहे
१	जेठावी स० ३२									०	आलीसर मगली यावगै रहे पहिले यह पारसना थाउकर कोस १ कुवामाला सरतुं पोडा हे पवने पार करै है
०	कावरा खा									०	ज पनीवाल कावरे बसायाथा

१०	धारारागा खा०	१२	१	१	०	०	९१	जं० मैरात बुवा १२ बूरोडों मध्ये ४ फकीरो किये १मीरागा सं० १२५४ में २हस्तन सं० १९१७ में ३माह सं० १९ में ४ झंगीं रियायो सं० १९२३ में वस्ती यों पापसा रवरी
११	सईयदरो तलो सं० १७ रो:	१५	१	०	०	०	५	रो: सईयद महम्मद झली नोपाट कुवो वगाम कि या -
१२	सुहार मेरात की से:	१५	१	०	०	०	४२	रो: मांगली चामरषीया नोपाट कुवो वगाम कियो फेर १९४
१३	भूहांगो से:	१२	१	०	०	०	१०३	रो: कुवा १२ बूरोडो मध्ये कुवा त्यारकर वस्ती करी १वंभरान सीर सं० में २वंभरामीस्ता सं० में फकीरो खा ३२०
१४	मालीगडो सं० १७ खा०	१२	१	०	०	१२	४१	ज होदाराहड्या सोवीषर गवा फकीरके आपसे कुवो १२२
१५	खास्डिंग्या से:	४	१	०	१५४	५१७	१०२	ज मेरात खारडी योका पार है वस्ती फकीर चंगारी ४९३
१६	तलार्डगजे री से	६	१	०	०	११३	४३	ज भरैया वस्ती मांगलीया मरखी या बारखीं १७७
१७	धामीया से	२	१	३	१	२१४	४२	ज से० कुवा हो जूनाव कुवा ३ नवा पानी पुर्य २४ २२०
१८	किनेई मो.	३	१	०	१७	११५	९३	ज से० कुवा हो जूनाव कुवा ३ नवा पानी पुर्य २४ ४२५

(ज) परगनेवलदेवगढ उर्फ स्थागढ

१	कोटवलदेवगढ उर्फ स्थागढ	४	०	०	७३	१	नमानेसाविकमेजमीदारोमगतोयोकीसिधतका थी गामराजडालकराजटवेटाज्वराकागौम समाको न साहडनेवेरीपरनाय३कोटमएजी
	रवा०				३४२		

नहिये ॥ दोहा साडोबाडोबीह ट्रोऊनाहे नाजमे ॥ सोतासाहड चीह सुकसंजीविचमे
॥१॥ जबसेराजड जमीदार - हजारहाघरइलाके हाजावसिधमेहै ॥ फेरसिंधकेमीचेकलोडेके
कामदार स्थावारने स्थागढ नामीगढ वनायकस्वाश्रावदकीया पीछे टालपुराकेमीररुस्तमनेत
रकीरी - स० १८९० मेजेसलोमेर काकबजाहुआ जबवलदेवगढनाम वहाकिमरहनेकासरमुकाम
कीपाइसपरगनेमे रेतकेरीवेवहुतभारीहै - एकजगहसेकडकरदूतरोजगहहोजानेहै - कोदरेतमेद
नेसे पूयोमेहाविभरहताहै - खेतीनहीथी स० २७सेनिस्फहासिलवानरु १॥ एकहलकासेनाकर
खेतीकरइहै ॥ कोटसेरुक्का सफेदरेतीकथलोकीप्राहकहनेहै - जिसपर ५ फीटसे १२ तकखोदने
सेपानीमोटा औरनीचेपाधरीजमीनमे रवारानिकलताहै - ऐसी२ अजायबकाईवातेहै ॥ १ रिषी
नेदेवचमेम्बरमहादेवकामादेरजोपबइलाकेसिधमे इसकाकड से १२कोसहै स्थापकरइतकीमा
गयाजिसकीकथास्किदपुरागामेहै

हाकिम प्रोहित हीरालाल -

२	मुगलीचारात ला	३	१		३०	१	धुवर			
३	माहो	४	१		४२	६	चानराड			१०
४	घडमीयोरोट वाला	५	१		१०	१	महामदवाली			१५
५	फरमीयोलाग वाला	६	१		१५	७	मिठडाल		१	२५
६	रुकाडो	३॥			३॥	१	से		१	
७	झडो	३			३	२	खीराच			४२
		३			३					१७३

1	रतडाउ	सं: १०				२०	कारटी	सं: १०				
२	वडीयाडोड.	सं: १०	१			२१	लुहार	१०				३७ १६५
1	रतवी	सं: १०					अ सुडो	सं: १०				
१०	बीलोई	सं: १०					२२ खासो चानरो	सं: १५				६६ १७६
११	धोरुच	सं: १०					1 विपंती बुई	सं: १०				
1	गरागाढो	सं: १०					1 खालकनेरी बुई	सं: १०				
1	रवारीयो	सं: १०				२३	वडीयो	सं: १०				
१२	रडीगाउ	सं: १०					1 से:	सं: १०				
1	सेस्वार	सं: १०					२४ वागरागाउ	सं: १०	१			
१३	समडाउ	सं: १०					२५ भीडो नवी	सं: १०	१			६२ २००
१४	जनीयो	सं: १०					1 से: जूनो	सं: १०				
1	खलावपसरीषु	सं: १०					1 वांडडी	सं: १०				
१५	जसीयो	सं: १०					२६ मेहरांगो	सं: १०	१			
१६	चाकराउ	सं: १०	१				1 परेवाली	सं: १०				
1	वीरमो	सं: १०	१				1 खरवूही	सं: १०				
1	संगेड:	सं: १०	१				1 नेआउ	सं: १०				१६
1	डडो	सं: १०	१				1 कुंताडो	सं: १०				
1	सुराडवालो	सं: १०					1 असुडो	१३				६६ १२५
१७	बधवी	सं: १०	१				1 महाडो	सं: १०				७३ १७६
१८	मेहरांगो	सं: १०	१				1 बावूई	सं: १०				२५ ३५
१९	धरोराई	सं: १०	१				1 से:	सं: १०				1
1	मगनजी बुई	सं: १०					२७ विरोई	सं: १०				६६ १७६

1	रविवाली	२०			२२	साठवार	२०	१		
1	कंगूर	२०			२५	हरडो	२०	१		१६२
२६	माधखे	२०			1	गजाव	२०			
1	चनो	२०			1	पातनवासी	२०			
२७	वसरुओ	२०	१		४०	हरनाउ	२०	१		
1	माधलवासी	२०			1	- होषीयो	२०			
1	बाडडी	२०			४१	भीलोई	२०	१		
1	गगनोई	२०			1	कवरवालो				
1	मवोलो	२०			1	वचार	२०			
1	दलाउ	२०			४२	झालरीयो	२०			१६०
३०	भण्ड कियो	२०	१		४३	रागाडो	२०			१६६
३१	साहडो	२०	१		1	जीआउ	२०			
३२	कुलो	२०	१		४५	चनार	२०			
३३	बासुवाली	२०	१		1	खवडेरो	२०			
३४	दासुवाली	२०	१		११	वीचापी	२०			
1	कलाव	२०			1	बाकडवाली	२०			१६२
1	सुमणउ	२०			1	सुवनवासी	२०			
1	कुडनवासीकोक	२०	१		४४	खेरो	२०			४०
३५	धिरांजो	२०	१		४३		२०			१६१
३६	नवोतलो	२०	१		४४					
1	मेसाउ	२०	१							
३७	गवलाउ	२०	१		४२					

कपर लिखे गाव वटानियो मे जो कुत्रा पक्का हे -

गाव पक्का बाकीतो नामके हे वयो कि १ जगह से पाडे
 गरसे मे दूसरी जगह घुईयो देकर रहते हे गौर बाजे

के तो चुपै भी नहीं ॥ किसी रूप के नीचे रली हकीं मेल कर गोठ सराते हैं ॥

(क) परगने देवगढ़ उर्फ घोटडु

१	कोट देवगढ़ उर्फ घोटडु स्वा०	४०	१	५	०	१६	१०	६	जमीन महोरावटी में घोटडु नामी कुवे पररुकारा गाी मोरगारा वदित्तवकरनांगी वगैरे रहते हैं महोर सलेम बद्दुवाने खैरपुर के टालपुरा मीर-
२	तलोसी झली सं० ४३	८	१	०	०	११	०	०	रुस्तम से किला घोटडु पक्की ईंटों का बुर्ज १६ व हरवाजे होय व तजरा वगैरे बहुत मजबूत बगवाय

और मनशा थी कि वक्त मुस्लिम के यहां आरहेंगे - परन्तु सं० १८९९ में फेरजे सलमेर का कबजा हुआ -
जबसे देवगढ़ नामरक्खा कारदारयाने हाकम रहता है तथा कुवा कीट में व ३ सफी लां फास उडापुर
५० पानी व नुतवमीठा मवे प्री ज्यादे के बाय सरवेती नहीं थी अब कुरु २ है ॥ परगना बसाने के
होजरा से पश्चिम ८ कोस पर कुवा बनाया पू० ३० मीठा पानी होने से बसाने की पक्की उमेर हुई जब लि
खा लिया किरि आया ई० गैर की आवे घोटडु वीरान नहो ॥ हांरा का जमीदार मुषीया

हाकिम विशाजेठ मल -

(ख) परगने खारा

०	कोट खारा स्वा	४०	१	३	०	१२२			कुवी का पानी खारा से खारा कहा कोट बुर्ज व हरवाजा तजरा मिट्टी का था सो गेर गया सिपाई
---	------------------	----	---	---	---	-----	--	--	--

ही गोलों के तले जारहे हाकिम या मेहरर तले को लूपर रहते है - जमीदार को महोर सीव महोरावटी में
दूसरी कोम को रहने नहीं दे और मौसम गरम में लोग सिंध जाते थे, अब कुवा ज्यादे होने से नही जाते है -
काटके पास झलो पार का मुकाम है - और कुवा का पानी भी अब तो पेछु हुआ है परन्तु महोरा का माल
पीवेतो विराईजे जिसे से वहां वस्ती नही हो सकती ॥ कई वरसों से यह प्र० कोट खुयाले के समू
लकिया गया दोनो कोटों में एक हाकिम है

१	लागावालोप मिठडाव स०४३	३ उ	१ १	० १				पाडे लागवालोपे कूवाकिया मोठेपानीसे मिठडाव कहा ॥
२	सादावालो स०४२	६ उवा	१ १	० १				कूवापाडे सादा नुंजा किया ॥
३	कालीभर स०३२	४ ३	१ १	० १			४२ १५२	पाडे मूगरारिग वगुमनाने कूवावगामाकिया
४	हीगोलावाला स०२३	१ पू	१ १	० १			४६ २२०	पाडे हीगोला कूवाववस्ती किया
५	हसवालो स०३३	४ से	१ १	० १			३३ १७	जूनाकूवातयारकर मुवासादुलराव पाडे साहवराहे हे ॥
६	हकडो स०३३	५ से	१ १	० १			४२ २०५	पाडा कुरा साउरावलागरावस्ती हे ॥
७	कोळू स०३३	८ सुई	१ १	१ १	११ १३४		२५ ३७६	भारपांनरावसादुलराव मरारागेर हे हे त लार सतारी ॥
८	भाटीया स०३३	११ श	१ १	० १				वाधेपरवस्ती लिस्वीजी पाडोचूहडावनीरा सोडा राणी जूनातलातयारकरवस्ती करी ॥
९	सकमरोपार स०३३	१६ पू	१ १	० १	११ १२		६० २२३	मुवा मराराणी
१०	झरना स०३५	१७ श	१ १	० १	१२ १२		१५ ६१	से पार नवाहुन्पा वस्ती कुरा मधुवाराणी
११	वाधा स०३५	७ प.म	१ १	० १	१२ १२		७० २२६	जागीराकुटाजीराचूहडावगोरेरुवे वाधापारहे रकीनवाधारीस०१५०५मेंपधायाथासोदरास ३३में वेरीबांनिस्वी पेहुयानेवहुतहे ॥

१२	नूकीयां	१६	१	०	५१४५	३११०	२५	३५०	नूकी खुदाई तलाशां में झरना है ॥
१३	मीरवाल सं० १६	१८	१	०			२७	१३२	रुकड़गरी पडे बरीयां मर रहे है मीरने कूव कराया
१४	असू	१२	१	११			९४	४०९	जागीरां वनायां गीया कूवा १ वेतीरा सं० १९०० कीया फेर कुवा सं० में हुआ
X	मंडे कडेवाला	८		०					श्री दरवासे कूवा सं० १९१९ में पका कराया परमहो वदमासी से वस्ती न करी हजार रुपये नाहक राये ॥

इतहास कौम म्होर - वाहशाह सुलैमान के तुष् भडीयारी के पेट से ई० सिंध में ही लड
हुए सो जनकी औलाद का ही जते है १ तो म्होर २ मालूम नहीं - कौम म्होर तीनों इलाकों सिंध-व
जैसलमेर-वीकानेर-मारवाड-मलानी वगैरे में लषकवाडी मशहूर है और पुरातों वाद सांयरा
रामाती हुआ चुनाचे पाबुजी ने बेटी को १०० सांटां देने के लिये सांयरा का वर्ग ले आया पीछे से सांय
पहुंचा जब लडगई में ठोब से तरवार चली देखकर पावूने सुलह करी याने सीटां का रुकन म्हा गुन्चा
को दीया जो साउके गांवे में है और म्होरों को मांगते है - म्होरों का पादवी सरदार स्त्रीजा हाजीर खं मौजेर
नगढ़ इलाके सिंध में है और वीभा नाम म्होर इलाके हाजा में आरहा उसकी औलाद के कर पडे-याने
जाओं घर है अब वमो भीरखानरा में मुगरखां व चूहडामे इलाही बरखा और मुरवारनां में स्मर्थ-
जंगारां में रेस्म जासोत है ॥

(२) परगने खुइयाला

१	कोट खुइया लो खा०	२०	२			४१११	१३०	६१३	कोट रीडग पथरी का बुर्ज व दरवाजा व तजरां ऊपर में यां है जमीदार कोहरी मुसलमान हैं ॥ सिधी लोग पैदल ने में कमाल करते है चुनाचे गोहराम कोहरी अधमन वीम लेकर ३ पदूर में ४५ कोस तो सहज सुभाव चलाया - ओतरी सफोल पास का जला पीरां का मुकाम जाजली का वया कोट के पास साकू का इका घर या सा अब ह पसा दूग पर हुआ - हाक मन्नेता चिन मुरव हास है ॥
---	------------------------	----	---	--	--	------	-----	-----	---

1	राजा	१ अ							यह पांच पाडा कोहरी जो जमीदार है ॥ जामोत हिन्दु कोहरी था सो कर गया अब पाडे राजा मे लाबू नाम है ॥
1	रामल	से०							
1	दावद	१॥ र							
1	हेमा	१। क		पार	१६				
1	सूर	३ पू							
२	सीचम्बर खा०	६ रुस	१	०	पार	१३	६३	२११	सीहा बदन नाव पदीवाला का कोहरी की जमीन है रस्ती भगलीया गागन ॥ स० १३ मे कुवा करने की दुवाती ली थी स० १४ मे काम शुरू किया पर तयार न हुआ । पडीन प धरीया वधापगे हुं करने का लिरवत स० १२ मे कर गया पर जमाने सच्चे होने से होगा ॥
1	खनुवारीवस्ती से	से	१	०	पार	०	1		
३	कुडकी से	६ र	१	०	२७	२३१	६०	२७५	ज जझ मुसलमान पाडा ३ तोगा पनराज पोपट - ॥ थान अलोजू झारका है ॥ ताडे मे क
									वा वहुत पुरुष १२ पानी मीठा पर थोडा है
६	हाबूर मे०	६ र	१	०	७	६१५	११५	६७५	भो० रनड खडीन हाबूर से गामकानाम हुआ सो खडीन खाल से है ॥

(२) परगने रामगढ़

१	कोटरामगढ़ खा० प० व	२०	२			१५१ ०५५	ज० खालत है - कोर बिखरा हुआ है सिर्फ दरवा जा वउर्तकी सफील व मंदिर रहा है ॥ इस परमे
मेंडमालु साध के बहुत रवडी न है - बडी वसरन व गैरे का वंधा अद वंध गचा है उभेद कटी है कि कोशिश बनी- रही का जमाना अच्छा आने पर पीव से वढकर आमदनी होगी ॥ - हाकिम म्हेतार राहोड सिंह है							
२	खेरड. चाने भोजराज	४ वा	१ १			४६ २११	
१	तलीरसाड सं० २५	१२ वा					तराोट वीच में २० को सउजाड आसो ४ को सखेरड में व स्ती अगाडी ३ को सकु चार गाउ यहां से ५ को सकु वंटी- याल होने भेन रहा पर कुवा दो नो भर ममत तल व है ॥
३	राघव राघवोरोक्ली						खालतराघवो की वस्ती है ॥
		उ० डी					
४	सेऊ	४ डू	१			३६ १६५	खा० सेऊ रहते है ॥
५	सायत	३ डू	१			३८ १०१	सायत है -
१	सायतारीत ली	११ उ० डी	१				
१	चभूतरो तली	से:					
६	हेमा	४ डू	१ १	०	१५	३ ४८ १५०	तलाब व परासर पर खा० हेमा वनेत सी वसे है

७	नेतसी	३	१	०	६०	३१४	३७	१६३	से
		६	१						
८	जोगा	६	१	०	१५२	३१२	६७	१८७	खा० जोगारहतेहै
		५	१						
९	डाडो	६	२		११		६०	१२९	तलावयानेरवडीनका नाम हाडाहै औरमुसल-
	खा०	६							मीनमकाखालतरहतेहै जमीनमें तोमच्छावदृष्ट
१०	मेराह	७	१			१	२१	७६	खालतसामिलहै मालकावरणडपुहा
	से	५	१						ज मेराहभलीहैवाचालीयेउधानकीनोकरीस०
११	काकाव	७	१	०	१११				२५सेमाफकरीवरसातफोगुवाडीरुमुवध्या
	स०५६ से	६	५	१					जहुलचकीमचावडापारनकुरनेसेभाद्राजरासे
									हैफेरथीचाचगदेजीकामायाहोलायहाअवा-
१२	सांनु	६	१	०		५	७४		जवगा०पाकबदियाथाफेरथीगढसीजीनैरस
	भो०	५					३०३		जगोवसाथालेयासेहोसचहह
१३	तलो भोचरो				११				भो० भराकमलहै परीचालकीजमीनमेंगांम-
	खा०								मुजासरसेचावसे-
									खा० भोजरा कुवा ५ बूरोडामध्येस०३४मेराम
									हैवजीकेपेडैरु५नाथवजारोसेकुवात्याचरा-
									याथाकिगामवमदिरमेलाहोगापर म्होरिंपपा-
									लनाकीनाराजीहोपीकागया कुवावरवपडहै ॥

(ड) परगनेतराोट

१	कोटरगोट	४०	१	१	०	११६	३००		स०९ = मेमारीरावतरांजीकासाकाहु पावाह
	खा	वा०५					१२२१		सहरवगढवीरानहोकरलोड्रापुवारोनेसोलकी
१	कूवेगामरत								जागीरदारकीचाफेरभाटीथोंकादृषलहुआतोभी
	नरो								जमीदारवोहीरहा चाद कर्ईपालटाहुपा
२	धरीचाल								

सोबंकी मौजे रामगढ़में आवसे० यहां ऊनडोंको बसाय कस्बा आवाद किया हाकिमके रहने
का सदर मुकाम है कोर बनायाया सो गिर गया सिफे इस्वाजाव १ महल ईयेका है ॥

कुवा चोलावा पु० २१ पानी बहुत चपारा है कुवा पर खान पडने से मू० रो पुर्स कंची जैरा जत है

॥ सीवमे गाँव- बसानेको कद्र जग हुकुवाकरवाया पर पारा पारा के वायस उपाय पसी गया

॥ हाकिम है तागोर धन दास या अवगधान चंद्र है ॥

(ह) परगने किसनगढ़

१	कोर किसनगढ़	१	३	०	२१२२१११	१ कि. १॥ दावहपोते दूरे वाद खाने पकी ईयेका २४
	खा	पा० उ			२०५	१ हे. कुर्ज ३ इस्वाजावरंग महल वत जरां वगैरे ग

इ० इस्वाजावमें खासके लिये बनवाय कस्बा आवाद कियाया फेर जैसनमेरका काझा हु आजसे
किसनगढ़ नाम रखा हाकिम रहता है ॥

२ ॥ जमीदार कोई नहीं कोमकोर चाल अवलमें आवसे ॥ ३ कुवा कावलसर चोलावा -

अजहद है पु० २१ पानी बहुत वमीठा १ दूसरा भी जारी है ॥ सं० ३४ में १ जाटां से तयारक

रावा पर सीवमे ज्यादा खेती व कुवा वगा० नहीं सके रेत के टवे बहुत हैं ॥ इहीना कोर में बिकाधवे

को पु० ७ खोदनेसे हाड निकला जव पीछा पुरा मगरनी चेवेसक है :

कामदार म्हीवर्त मंह ब्रकिलेदार हः हरपाल है ॥

(गा) परगने बाराहा

१	बाराहा	२२	१	०		१ भो० रहाड है० जूना कुवा वराहा व गोधरा ला तयारक
	खान		२			३० खस्ती करी सं० २७ में २ हाकिम्याम जोमी दास है नवा

परगना किया - आरगावूला सानिहतया सं० ४१ से जुदा कीया ॥ कामदार प्रोहित बुधलाल -

॥ जमीन राहड़ की भेती का हासिल चंगैरा नाग नहीं लेते है सो लेकर स्थाजोगमे रहे और तत्त
 वपनरासर परसरवतरे का ठाठ वदूसराकुवा भी चरावे चंगैरे ॥ सबकारूपक आरामवलाय
 कोपना हीवेज्यु तनराहाह करेनेकी दिहायत करी है ॥

२	साधमा				१५		
	से०				७६		
३	रायमल				३५		
	से				११३		
४	नगा				३६	से० पाचमाम धुज्य देनासे है	
	से०				१५३		
५	तेकपात्र				४३		
	से०				१५५		
६	बडा				३३		
	से०				११६		
७	भीयावासरह				३३	कुमरोकीवस्ती गामयोयाके दूजेद्रासरहाडाकी-	
	डासे				५६	जमीनमे है ॥	
४	तनोगोधराले	१				तलेऊपर सीयाले तनानेऊपर खिरवासे हिजसोकर है	
	संग १०००	३				है ॥	
५	भुरा					भो राहड़ भुरा मुसलमान है आठवे हिस्सेके ६३०७	
	सा					टी लाडेके उहरकर वहा चसाये ग	
	से०						
९	लोखीगोउरी	५	१	०	०	०	देवतकी जमी जो हडी वूपलीमेठा राजभीके सरीपिं
	वूपजी	५	३			३६५	इजीकुवा लैसजमेरके पत्थी का पक्का वगामऊराय
	र २६ ग्या						फेरदूसराकू म्भोरा चूड़ डायनूजा किय्या

X	डोहीरीहालीरी						मंगलीचाककडदे गामवेसालेसेआकरकुवाकीयाअ- वगामहोगापस्वानामुन्शीअमीछ्दीन्केनामकालिरवाया
	सं० ६५		१				

(त) परगनेदेवा

१	कोट देवो	१०	२	११०	१११	६७	देवारवडीनकानामहै जमीदारकोईनहींबडेरबा रवा० उत्तर २२२ रदासरहतेहै बडीनमेंपकेकुवे पाडालीपलीवालीं
---	----------	----	---	-----	-----	----	---

केब्योतमेंकईजारीहैं पु० १० पानीबहुनयाकम पराामीठाहै बाडीकेमाली प्याजवगैरेरसाल
करतेहैसं० ६३में५ कुवेऔरहीतचारकीये ॥

गुसाईरामगिरजीनेमडीऔरमीअथैसिंहजीनेगढीबनायथानारकरवा ॥ सं० २२मेंरामगिर
जीकेपोतेगुलावगिरजीनेपक्कामठबनाया कू०श्रीरावसिंहजीकीछुतरी हरमहीनेवदी
चौखकोपुजाहोवैहै ॥ आनवीरामोहरदासकीहाक्तीमेंनवाकोटसं० १९१५ पहेप
त्यरीकांधबुर्जबरवाजावचौवरफहरसालांऊपरम्हेजाततयारहुआ सं० ४२मेंआनवी
लालचंदबडीनमुदेलेकाबधाबंधवाया ॥

२	धामर	१	१	०	३४	०	विजं- पनीवालधामरधा तिरगौर केदीनो- जामोकेपरेहै ॥
	५०	५					
३	बोझ	३	१	१५	०	११	६३
	भो०	७					२७२
४	सांवी	५	१	०	गाहो	१९	२३
	हो०	७०	इ		सा		१११
५	सिधराव	७	१	३१	०	२	१४
	रवा०	हो०					६३
							कुवासिधरावपलीवालजमीयेकापुस०स्वारा दीकुवावृषीषोडाहैवस्तीपहीडोमुसल्मानोकीहै ॥

६	नेहडार्द से०	७ ३०वा	२	२	१०	१३	१	वि	जमीदार पत्नी बाल जातीय नूड मादबसापाय
७	मधा से०	६ वा०५	२	१	०	२५	६	१	म अब पत्नी बालनहीरहा पत्नी बाल मधा
८	अर्जन से०	८ से०	१	०	पार	११	१७	०	ज० तुवर सफी देवत
९	सुरतान से०	१० वा	१	०	हाव रपा	११	४०	०	से० पडनिन जूजल वनला पांचा गावो कशी मे हे गाहे २ गेहे होता हे ॥
१०	धनु से०	०	०	०	०	०	०	०	देवत - पाडोचनुं गामची से रहता हे ॥
१०	डिधा से०	८ ३०वा	१	०	पार	११	२१	०	ज० देवत
११	स्वीचलतर से०	५ पवा	२	२	०	२५	३६	१	वि ल० पत्नी बाल
१२	परिवरजील भो	९ ५०	१	१	०	११	१०	०	भी० जेचंद्र
१३	से० फनु से०	९ ५०	१	१	०	११	०४	०	से०
१४	खोया प०	८ ३०वा	२	१	०	१३	२०	०	वि ज पत्नी बाल-परेठा० जोगरजजी पापउहे सिघोलके हे ॥
१५	काडोडी वास लोप-रुसर बरागीची सा०	५ ने	२	१	०	२५	३०	१	वि ज पत्नी बाल चौगरीपेडोमेअवलये ॥

०	आसरे	२	२	०	०	१२	०	०	०	ज: पत्नीवाल
०	मूलदे	४	२	१	०	१२	०	०	०	स:
०	वीसल	४	२	०	०	१३	०	०	०	स:
०	जाबरा	१	२	१	०	२२	०	०	०	स:
०	रसा	५	२	१	०	२२	०	०	०	ज: पत्नीवाल: षडिन इगोर स्यावी ठाकरीके परे है ॥
०	स्वा०	वा								
०	जमीया	५	२	०	०	१९	०	०	०	ज: पत्नीवाल: परे बाहुरा पनजी के है ॥
०	प०	प०वा								
०	माधव	१	२	१	०	२१	०	०	०	ज: पत्नीवाल
०	स्वा०	स्वा								
०	जिसू	४	२	०	०	१	०	०	०	स:
०	से०	प०वा								
१६	गोगादे	२१	१	०	०	१	३०	०	०	मो० गोगादे वथा किनासीरवी है ॥
०	मो०	प०वा					१७४			
१७	कांडीभ्राले	३	१	१	०	१	७	०	०	वि० पुरीहितीं को सांसन
०	सां	५	१				२६			
१८	कुशरउफेकां	१	१	१	०	१	२७	०	०	चांवड सुयारांकी जात है
०	स्वा०	५०					१२४			

१९	जोधरी	३	२	०	२३	१३	०	ज पलीवालये अब कर करसोगरहतेहै
	से०	६०				६०		
२०	लाखाखडे	१	१	०	१९	३१	०	खानाबदोशये अब नले देवीसरपासरहतेहै
	से०	४०				१३०		
२१	मडाउ	४	१	२	०	२५	०	कुवाहोचपलीवालुपोवसकजागोयेकावनायापुस ३२ पानीपाहैमवेशीपीवैहोतसेन्होरगुमा कीवस्तीहुई ॥
	से०	५०				२५३		
X	सफीयतरो	१४	०	०				नाथागीम्होरमीरूकीगौरतसफीयतधरमाउरू
	तलो	४			१९			वानावाया परपानीखाराकेवावसवस्तीनुहुई-
०	नग							ज पलीवाल
X	सेडकी							ज सेड-गाममधे भेरहताहै
X	पनोधा	१४	१	१				पलीवालापनुधकावूवापनोधासेसीवपनोधोपत
	से०	५०						मीरापरहैकम-जोगरीथोकथानकजाकोठाहै
X	हलधोर दीया तिलोर खा०							से तीनोगामोकीजमीनवरेतरा ठा० मौजूदहै ज पलीवाल

(घ) परगनेमोहनगढ

१	कोरमुहनाह	१०	१	१२	०	२	३०४	१ वि०	स० १९५० मे नही आनेबाह कत्वाअबाहकीया
	खा०	७	१	१०			१३२०	१ म०	कच्चीरियोवमिदृकाधकुजवहरवानावसाजां

वनायाथासीवोरवराहुगाहै - सदरमुकामहाकिमम्हेना हसरज - वोटसेउत्तरपालीयानेकर
कोसोकाउजाउ थासोबाहलानुपलीवगैरे कुवावगाम होनेसेभिर हाफेरस०४४केकहत्मेपली
मेकीन १२०कच्चा कुवावनानेसेमुल्वाकीमवेशी वचाई गवउमेरपक्की होगई कि पार्सीमे वहुन्दे

गांव बसै मे सायरका हिसाब आः मोवन राय पासार करवा वर चोकी गांव ब्हाला मे र पाई यरो आ
 रो दूसरे गावे फिरते है तथा उनालु साष पैदा होने की वडी गुंजाइश है सो हो ही गी

X	तलागोडूरा	८	१	११	०	०	०	०	वसालू च्यांवरा लाडो वगेरे का है वूवा पुर्स १६ तकमीठा पानी कस से वस्ती न हो सकी	
		७								
1	मंगलपारातख	१४	१	-			०	०	पानी खारा है	
	सं० ४४	७		११						
X	जामडां रातख	७	१	-					कूवा अधूरा है तयार हुस वस्ती होगी	
		७		११						
1	हमीर रोमे	२	१	०	०	१	०	०	पहोडो की वस्ती है	
२	खारडीया	३	१	०	१२	५	१५	०	मंगलीया सांवरा जोलाठी ठा० का बलाक खार है रहते हैं ॥	
	खा०	०	१				६३			
३	आंवता होष	५	१	११	१२		७४	१	४	भो जैचंद- दूसरे वास को देवग कहेते है
	वास भो	२५					२५५			
४	वालारा	५	१	३	०	४	११६			भो राहुडिया जब पतराज को खाल नलने नमी नदी वी पहगा मखान से की दासी भारी सगत सिंह खेत सिहो तको वसी हुश ॥
	जा०	५					४४५			
५	कौर	०	१	१	०	१३	४७			भो चौहानराजसी गाम वसायो
	भो						१७२			
६	ताडांरा		१	११	१	३	२५			भो० केजरा
							२६७			
७	वहाला	१६	१	०	०	०	३७	०		मंगलीया ककर- देसिंध से आरहे कूवा पका सरकारी दया सो गं० ४४ में हुजा करा था वती न
	सं० १० ख	४०		११			१४२			

कूवे कहे मंगलीयां की ये पानी खारा परमवसी की अच्छा है उत्तर १॥ को सन्ही रची गांरो सुंपरी ह
 कूवा सं० ४४ में कीया पुर्स २४ मोठा पानी रेख में आया है ॥

५	अजासर स० १६०८ रे०	११	१	०	०	१२	६६	०	गामरोटेकीभायपभो भगाकमलकटऐसेसूत
६	दोरा रे०	११	१	१	०	१	५६	०	गामभटीराजसीजालमसिहोतकोवसादियाजव सा भो भगाकमलहै ग। श्रीवरुनसिंह पदमसिहो तकोवसाहडा ॥
७	शासकनी रे०	५	१	१	०	११	६६	०	केलगाजीकेइकमसेपाइभासकरनने वसाथायाजे धपुरकीफेजरही जववांगानथा फेरगाइसेफेरला लसेफेरपाइसे फेरस० २७भेभाटीनहारजीनेठभलांग कावसादिया
८	मडडीया रे०	२	१	१	०	१३	४०	०	सूनागामभाटाकोदीयाथाउहेनेकीमतलकर छोडोफेरसूनागामरा० सूतासिहोतकोवसादिया
९	उवाय रे०	३	१	२	०	१३	६६	०	रा० अमरसिहोतकोवसाह ॥
१०	खारीयो रे०	८	१	१	०	११	१२	०	खारेपानीसेखारीया रा० भगवानसिहोतकेयाभो छेडाथामेडसिहअजोतसिहोतकोस० ४३भेसीव कादिया

(घ) परगने नौख

१	नौख रता०				पार	१७	२२१	१८	कदीमभो भगाकमलथा जतोड डेलेकेबडे वैटेवापरीघटीभेपानीपीनेकीसोगनकरडेला
---	-------------	--	--	--	-----	----	-----	----	--

सरसेआयआधीयहडाकोटविकमपुरखालसेकिया औरभोमियोहलेगात्तीयाजवसेखात् सेहै
ताडेभेकुवे ८४मध्येकईजारीहैपानीनजदीक ववईतऔरमीठाहैभालीवाडियोमेतमाकूप्याजभिरवाव
गैरेकतेहै १कूवावथोडीसीजमीनराषसीयेरीवारटभेचजोनुदीयोडीहै ॥ तथादेव जूनजीजोजेगो
राजथामडीनामीहै स० २५सेहाकमकेरहनेकासदरमुकामकीयाअवमुनासवहैनिहाकिगाम
वजूऔरयहांमोहरररहैहाकममुदलपतसिंहपूनमचदऔरमातहतथागा वसापरकीचौ
कीयागामविकमपुर वजूनोषडाहै ॥ रूगाजीतपुर

1	ढालेरी सं० १९०६	२	१	०	११	०	०	११	०	०	३०	०	जैतुंगरावजीकेहालेतथासोदालाकाहासं०१९०६ मिंदालोकीवस्तीदुईसं०७७मेंसूनाहुआमावसाया-
X	चारंगीढांगी सं० ३८	३	१	०	०	१२	०	१२	०	०	०	०	इन्वीकानेरेसे४८-आवसे ४ कहतपडनेसे पीछेगये जमानेआयां आसी
२	वीठेरागाम सां०	२	१	०	०	२१३	०	२१३	०	०	२११	०	ज भगाकमल वीठेवसायाथा मोकाता भरे है
३	मांडली सं० १४	३	१	०	०	३३	०	३३	०	०	३५	०	मांडली तजाई कलरांकी परविसनोई बसे
४	मदासर सं० ३३	७	१	०	०	२	०	२	०	०	१४	०	केचराजीकेहुका मसेपाहु मदेवसायाथासोसूनाथ सोविसनोई लक्ष्मणकूवावरावचीया ॥
५	वनु से	१	१	०	०	१४	०	१४	०	०	५०	०	अेगामजैतुंगोकासूनाथाकरपलराहुआवसीवसे मभी जिरावदियाप्रापरखालसेहीरहा फकीरवारे सिपाहू रहे है ॥
६	लिकरां सं० १६	९	१	१	०	१५	०	१५	०	०	२८	०	पडेन्हारांकीजमी नमे लिकरां लिकरां अडन्यो डनीकूवायालिकरां परकलरदेतकोरप अड-लेपर हाथी रांसेलमेवमा वरनाइलाकेगीरकाजाट विस नोई वस्ते यहतो नूरेकीबुजमेवलेही है ॥
७	मडलो सं० १८	१	१	०	०	१४	०	१४	०	०	११७	०	
८	नूरावुर्ज से	७	१	०	०	२१२	०	२१२	०	०	१२९	०	पडे-हारकीजमीनखालसेमेंकलरनूरे सं० १८६४ मेगामवसाया ॥
९	वधाउडन सां०	९	१	०	०	२११	०	२११	०	०	५३	१	ज पलीवालं मझारावल नीमवीकानेए नेजवचोररा कोवघाईमेदिया सोवधाउडन
१०	गाडरा से	६	१	०	०	५८	०	५८	०	०	१३५	१	नामईसेखीयोशा विकमपुरराव भूंगरसिंहने गाडराचारगका दिया जव गाडरा कहा-॥

११	वेल्लेरोगाम सं०३६ ऐ०	५	१	०	०	१	०	रावउदैसिहनेचारणवेल्लेकोजमीनदीउस निगांमवसायकेवडीसिर्देरहेथाहमारपीछावसा
१२	मनचीतीया सं०३५ स्वा०	४	१	०	०	४१४	२७	जैतुगमनचीतीयेकावसायागामसत्ताइआ यासोवसाया
१३	लूभाणोउर्फ लुंभेरोगाम सा०	४	१	०	०	१	२१	रावभूगरसिहजीनेलूभेचारणकोजमीन दी उसनेगामवसाया
१४	सांजरोगाम ऐ०	१	१	०	१८	१११	१३१	रावसुदरदासजीमहागु चारणासाऊकोसूनेगाम कातलीयादीयासोवसाया०करनीजीकाथानकी
१५	चावडीदलपत से जा०	६	१	०	२३३	२७	५८	पलीवालोकोगाम१पगवावडीसेचावडीहीराव सरसिहजीकाकु०दलपतरहा जवसेदलपत कीचावडी
१६	सेवडा स्वा०	२	१	१०	०	३७	१७५	ऐगानपलीवालसेवेनेवसायासोवीगानइभा वा इजाटवसफेरजपूतफिरजैतुगसीरवीनेतावतइए
१७	दादूरगाम सं०३३ ऐ०	१	१	०	०	११	२५	गैलोनदाडुवसायाथास०१६००मेसूनाइपासो वसाया
१८	वडीसिर्दे जा०	६	१	७	५	१०१	१७६	भीलसेडेके०वेदोकापुणसातोहीसिर्देकीहीजोरे गामजसोड भादेलियथाफेररावभूगरसिहकेक इसरदासलियांनवसेवरसिहहे॥
१९	नवागाम सा०	६	१	०	०	१	६५	जसोड भादेचारण सावडै कोखेतदियाउननवा गामथ्रीमूलरजजीकेइकमसेवसायाफेरथ्रीग जसिहजीसीवसोफेरेमेजमीनवरवशाई॥
२०	नवैरोगाम ऐ०	७	१	०	०	१२	०	वडीसिर्देकेठा०इसरदासमिकसगमरेको जमीन दीसोखेतीकेलालचवडीसिर्देमेरदताहे॥

२०	गुडो जा०	८ ऐ०	१ ०	० ०	११ १७	० ७२	०	भीलोंसेमूलवांलीयाथा फेररावदुरजनमालर्जीके कु० मानीदासलियासो वरसंगनवलसिंहपताप सिंहोतकेतावेहै॥
२१	जोगीदासरीसि ऐ०	८॥ ऐ०	१ २	१ ०	० १२	१२५ ४७१	१म	भीलोंकीसिडेसूनीथीसं०१८३०मेंवरसंगजोगी दासजैसिंहोतवसाई॥
२२	नधराजरीसिडे ऐ०	ऐ०	१	०	०	७० २७७	१म	सिडेजालमसिंहकीसीवमेंनथराजवस्तीकरीपर हुनेजगामउनकेसमूलहीहैराजसेपरवानानहीं॥
२३	जालमसिंहरी सिडे ऐ०	८ पू०	१	०	०	१०१५ १४५	१म	
२४	मोडियो ऐ०	१३ पू०	१	०	७	११२ १७०	१म	
२५	नोखडोदोवास भो०	१२॥ अ०पू०	१	१	३०	५१११ ५२५	१वि	मो०केलगाहचारणोंनेवैरमेंजमीनदीनोंखकेता लावपरकेलगाकेपोतेनेगा०कियाचारणकलेजारहे
२६	गिरराजसर जा०	१२ ई०पू०	१	२	१२	३१९८ १८२५	१वि १म	तरकरावकेकु०जैतुंगकेवेटेगिरराजवसायाफेररा वसुंदरदासकाकु०अचलदासजीआरहेजवसेदा०

इनदरखोंमेंसीवमेंवहतहानियांहुईऔरसाहकारघरई०गडीयाजारहेजिस्सेकस्वेकीरौनककमहोगई

।	राघोदेरे ऐ०	४ द०ने	१	०	०	११	०	०	गाःजेठमलजीकाचाकरचैनरात० १११ रहा॥
।	सगतसिंहगरी सं०५ ऐ०	२॥ अ०	१	०	३		०	०	सं०४५मेंमीठेपानीकाकूवाहआहैउमेदहैकि गामपकाहोजावेगा॥
।	देवडगरी ऐ०	३ वाउ	१	०			०	०	गावपकाहोजावेगा॥ रजपूतदेवडांकादोयादानीहैं॥

1	सोलकी पारी	४	१	०	०	०	०	०	रजपूतसोलका-
	रे०	५०							
1	ढाला	३॥	१						जैतुगहै
	रे०	१							
1	विसनोयांरी	२	१						ई० मा बाड के विसनोर्ड भावसे
	स० २३ रे०	१०							
1	ईंदारी	३	१	०	०	०	०	०	ईंदारजपूत
1	सैभूरोवुर्जे	४	१	०	०	१२	०	०	जैतुगसे भूने बुर्जे वनाय वस्ती करे ॥
		४०२							
२७	ग्राधी	१३	१	११	०	३१५	१२२	१२	सोमके गुरुम ग्राधकावसायाके लए जीनेसे
	जा	ई०		२१				५००	मको दिया प्रा ज्वरहोनेसे सोमके वशमेन

हवा रवसरसिंहके कु० प्राग दासलीयाजवसे वरसगहै ॥

1	कुशालसिहरी	३	१	०	०	१	०	०	जोगायतके नाडे परवस्ती करी सोगामजो
	स० ३६ रे०	३		११					गायतरो कहै है ॥
२८	मीठडीयो	८	१				२७		समेजा सुसलमान रहे थे मीठे पानीसे मिस्टी
	सि ३२ रवा	३५		१३			१३२		या सोनाथा विसनोया वजुवालो कूवा वगाम
									किया
२९	नगराजसर	५					२६	०	जैतुगनगराजवसायथा वेटी ललीके पती
	सं० ३४ रे०	क ३					११४		को पीवरो पीवालली सती इई थानमौजूदहै

पूजा करे जिसको पीवणानही मारसके गाम सलाइयाथालो विसनोई शिवजी वसाया कूवाउ
४० पानी रवाणिकल्पने से नही हुआ

३०	कजु सं०२१ ऐ०					४७ २१५	१म	पाहुबांगड-सांगड-कीबैनब्रजु चौहांन को परनाययहांगंमब्रजुवबेटेकूपेकूपासरवर
<p>तैस्तासरवसाया या सोसूनाह्वा सं० १८६७ में राव शिवजी सिंह को दीया जब गडी बनाई थी सो सं० ४ में पाड के गाम खाल से कीया सं० १५ में आधो गंम ठा० जेठ मल्लजी को दियो फेरदो गाम विस नोयां जाटां वसाया है</p>								
३१	कजुदूजी सं० २१ जा० सं० १५							
३२	बांगड-सर ऐ०					६३ ४४३		पाहुसांगड-बांगड-वसाया या सोसूनाह्वा बर सं० १८६७ में राव नारसिंह के भाई मूलसिंह व साया सोसूनाथा फेरवसासी व वहत सी खाल से की है मांणाकासर की सीव में ई० वीकानेर के पुंवार कां नैम्होवतै तलो व गंम कीया मोकातो भरे हैं ॥ मांणाकासर की सीव में विसनोई प्रणाहुहु मान दृष्टांत से कूवा व वस्ती कीया सोहहु मान गढभी कहे हैं ॥
३३	पुवारं बालो सं० ३४ खा०					४३ १७६		
३४	पूस्नवालो सं० ३३ ऐ०					८ ४०		
३५	मांणाकासर सं० २१ ऐ०					३० १५२		केलणजी के अहद में मांणाक पली बाल वसाया सोसूनाथा श्रीदाबर से कूवा कराया जब विस नोई वगैरः आवसा ॥
३६	मोढायत सं० ३० ऐ०					१६ ८७		नोडे मोढायत में विसनोई नीबेवरियों पर वस्ती करी सं० ४ में पक्का कूवा किया ॥
३७	हेदेरोतलो सं० ३५ ऐ०							गंम वजू मिठडीये की सीव में जार दे दे वैरा सर नाम कूवा व गंम किया ॥

३८	फूलासरा स०२७ ऐ०				१०	५२	तांडैफूलासरेमे विसनोई गृलेखीचड राकचा कूवा व तलाईवस्तीकियास०४४मेदे कूवा पक्का होनेसे पक्कागामहआ॥	
३९	गोडु स०२२ ऐ०				१०५	५०९	रावहरनाथनेसोलखीयानेमकोलगोडुसेव सायाथासोसनाश्रीदरवारसेकूवाकरायविस नोईशाबसा॥	
४०	गैनेरोतला स०३२ ऐ०						गोडु केजाटगैनेस०२७मेकूवा ववस्तीकरी	
४१	राजोतपुरा स०१९०६ ऐ०	१८	१	०	०	१६	१५६ ७१७	जमानेसावकमेनागडाकूवोपक्कास्वाथाफकीर केआपसेवीरानहआफकीरनेकहाथा(नाग

डावलकडी (डी दो पागडो) इसबोलपरथी ग०साहिबानेश्रीराजोतसिंहजीमादेवाकेनागसे
स०१९०६मेकूवावनायगामवसायाफेरदूजाकूवावढानियोइइसे०४१मे

४२	नायाबला स०३९ ऐ०	२५	१	०	०	१२		विसनोईगजैरामसरकूवाकरायवस्तीकरीत थाविसनोईलखमनवाघाणीकूवाकियाहै कूवारैणुस००८मेमरोटीयाकोवसादियापा नीखारेकेसबबवस्तीनहुईखेतबोवेहैं इलाकैबीकानेरकेनाईयाकूवावगामकीया फेरझोरहीलोकभावसा॥
४३	साबु स०११ ऐ०	२७	१	०	०	१७	२५	तांडैसाबुमेभीमुसल्मानोगामवसायो मंगलीयेमेघेवगीर रहवासकीयो॥
४४	फतुवालो स०२१ ऐ०	२२	१	०	०	१९	१८	लागावफतुकाजुनागामसनाथासोकलारी मगनवसाया॥

४५	धेवेनाला	ऐः	२	०				मंगलायें मंगेसाचुवाले दूवा कीयापानी मारा
	सं०३३	ऐ०		१२				
४६	हेलैवाला	२५	१	०	१०	८		रितके थलकानामडोलाडै लाड-मामद
	सं०१८	ऐ०	वा	१२		३४		कूवाव गामकीया॥
४७	खागाणु	२२	१	०	१२	१५		खारीपानीसे नाम हजाकोटवान् मीरन कुवा
	सं०३३	गे०	पना	१२		५४		कीयोपेर विसनोयां दूवाकीया॥
४८	भादासरजर्फ	२०	१					कालरचंटेसरकूवाव वग्नाकीया॥
	चंदसरवाला							
	सं०२०	ऐ०	वा					
४९	नोरंगवाला	१८	१	०	१२	१५		कोटवालानोरंगदूवाव गामकीया॥
	सं०३५	ऐ०	वाउ	१३		५४		
१	पुरोहितवाला	१९	१	११	१	विकम	०	रावदुर्जनशालजी पुरोहितोंको जमीनद्रीउन्ही
	सं०२८	ठा०	उ			पुरमें		कूवाव गामकीया परसनाथाकडे घरचाकरोका
								जारहासेवतपुरोहितोंका॥
५०	विकासर	१२	१	११		नोपमे	०	गामसूनासोलकीविके काकूवाव थोडीसीव
	सं०३०	जा०	उ					रावसाइवदीनकीदीसोगामकहा॥
५१	कोटविकम					२६१		सुनाहैकिराजाविक्रमाजीतने १ दालदकापूत
	पुर	जी०				८६३		लाखरीदासोईहै विकमपुरनामीकोटसे ०२मेंव

नापरखासोमोजूदहैऔरकहतेहैकि पुतलासिरहलविजदहीकोटयालट० चुननैअवलपुवारथे पीछेऊमरसुंमराफेरहानीदोरवादसूनारहा तोतरणु रावकेकु० जेतुंगनेलोया फेरसोमभाटीसे केलराजी लीयाथा पाछेगोप्याकेलगरहा सं० १५१८में पूगलने रावदुर्जनशालजीअपेजव सेवरसंगहै परपालटाणहवाही १ दुर्जनशाल २ कुंगरसी ३ उदैसिंह ४ सूखसंग ५ दिवरीदास ६ जैतसी ७ सुंदरदास ८ लाडखं ९ हरनाथसिंहजी श्री दरवारकारखैरखाह सं० १८०४में

फोटहुवाजबसुदरदासकाछोटाबेटाअचलदासकाबेटाकुभारावहुआसं०१८०६मेंश्रीअखैसिह
 जीसाहवावफातदेकोटखालसेकीयासं १८१६मेंसरूपसिहलाडखानोतुकोवीयाथाइसको
 उतारकरकुभाकाभाईबांकीदासबेटासोफोटहुवाजवपोतायानेगुमानसिहकाबेटानाहर
 सिंहगादी बेटा छमहीनेबादइनकीमारकरसेरसिंहसरूपसिंहोतरवहुवासं०१८३५
 मेंश्रीमूलराजजीसाहवाइणनेस्वर्गभेजनाहरसिंहकेबेटेजूगारसिंहकोरावकीयासो
 सं०७७मेंमराजबकुअनाडसिंहरावहोताहीइहमअदूलीपेशानेसेकोटखालसेइ
 आअनाडसिंहतोगडियालेमेमर्जेचेचकसेफोटहुएछोटाभाईशिवजीसिहसं०८८में
 कोटपरधावाडालापरकुछनहुआश्रीदरबारनेवडापणोसेसं०८७मेंगा०वजूरहवास
 १८००कीसालकोटमेंआवसेजेसलमेरसेफौजगईकोटकायमकरइनको
 १८४०मेंवजूसेनिकालेसोइ०
 १८५०मेंवजूसेनिकालेसोइ०
 १८६०मेंवजूसेनिकालेसोइ०
 सं०२५मेंशिवजीसिहकेबेटेखेतसिहकोकोटमरातोफवसंथासामानझौ
 ८गामथलकोरकेदेकररावकीयाबाकीपरगनाखालसेरखकरमौजैनोखमेकचहरी

जुगराफिया मुल्क माडमें कोट विक्रमपुर का हाल

सुनाहैकिराजावीरविक्रमाजीतनेएकपूतलादालट्कारखरीदासोयहावीरानजगलमे
 २मेंविक्रमपुरनामीकोटबनाकरदरवाजेकेआगेरक्तासोहनोजमौजूदहै=

कथेपीबेऊमराफेरहड़ीठोरकेबादसूनारहाजबभादीतणुरावकेपुत्रजैतुगनेकच
 ममालीसने पीबे = सं० १५१८

जो श्री दरवारके बड़े खैरखाहये सं० १८०४में फोतहञ्जाजब सुन्दरदास जीके छोटे बेटे अचलदास का बेटा कुंभा गाम गिरराज सरसे आकर राव हुवा उसको सं० १८०६में श्री अखैसिंहजी साहवां ने स्वर्ग भेज कर कोट खालसे किया था सो सं० १८१८में लाडखानके बेटे सरूपसिंह को दिया इसको मार कर कुंभा का भाई वांकीदास राव हुआ इसके मरने बाद इसका बेटा गुमान सिंह का बेटा नाहरसिंह गादी बेटा धर्महीने बाद इसको मार कर सरूपसिंह का बेटा शेरसिंह राव हुआ फेर सं० १८३८में श्री मूलराजजी साहवां इसको वफात देकर नाहरसिंहके बेटे जुमारसिंहको राव किया सं० १८७७में फोतहञ्जाजब बडा बेटा अनाडसिंह राव होता ही वैअदवी पैशा आया जब इनको निकाल कर कोट खालसे किया और हाकम रहने लगा अनाड सिंह तो गाम गडियाले मे मर्जे चक्क से फोत हो गया और छोटे भाई शिवजी सिंह ने सं० १८८८में कोट पर धावा डाला मगर कुछ न हुआ फेर सं० ९७में शिवजी सिंहको गाम वजु में बैठाया बाद सं १८००में धावा मार कर कोटमें काबज हुआ था जेसलमेर से फौज जा कर इनको निकाला और फेर ही इनकी वदनीयती का गुमां न हुआ जब सं० १८०४में वजु से भी निकाल दिया सो इलाके वीकानेर में जार हा था गाम चारूके ठा० जेठमलजी ने इनको मार कर पिता भोजराजजी को वैर लिया इनके बेटे खेतसिंहको सं० १८२५में बुला कर कोट मरा ८ गाम थलकोरके देकर राव किया सो अब है और हाकिमको बहाने से उठा कर कोट नोरवमें कचहरी रखाई और खेतसिंह से लिखत करवा लिया है कि कोट वगामों की भेड़ फौज वहाली और पट्टेके गामोंमें दीवानी फौजदारी का अखतियार श्री दरवार का रहे गा और रु० २६११ हरसाल रेखका भर दे ॥

५२	कोलासर	८	१	२१	०	१६	१२	०	राव नगुजीके कु० जैतुंगके बेटे कोलेह वसाया ॥
	जा०	६०		११			६०		
५३	पाबूसर	६	१	२१	०	५	१६	०	रठोडां पाबूजीके नामसे कूवा वगांव किया था सो
	सं० ७	३					७२		सना हुआ राव संदरदास तीन सासन दीया जब

ए गाम भाटां को दिया फेर रु० देकै पीछा लिया पर सूना था सो रठोड जी वहा बसाया ॥

५४	दावरीआलम ऐ०	१९	१	११२	०	८	२०	१८	३४८	१८	दावरी जात है चेलने वनु सती के वरदान से कृवा चेला सरवनाया राव हरनाथ की धारमे
----	----------------	----	---	-----	---	---	----	----	-----	----	--

फेर रूपे कृपा सरवनाया गैलातो कृवा किया सो पानी खारे से वस्ती न हुई ॥

X	खारा स० ४०										मूना सनाया त्पार कीया
५५	गोगलीआलम जा	७	१	११	०	१०	६६	१८	३६३	१८	गोगलियो वसाया था गोपा के लण कोट से निकल पडो ए डलाके नाम दडुउग्रस

गए जव गोगली गाम वीठणोक जारहा और यहा सींग राव की वस्ती हुई सो हे ॥

५६	चारणावाला ऐ०	१२	१	११	०	१६	११६	१८	११६	१८	गोपा के लण चारणा को दीया था सो गलग ना व राव दुर्जन शाल ने भए कमला व सोलखी यो को वसाया सो है दोनो ही कृवा करया सोलखी विके को गोगलियो माखो विके के वे टे लडै व पने पूगल से दुर्जन शाल को लाकर के
५७	पना ऐ०	६	१	११	०	११४	१५८	०	२२२	०	

लणा गोपा व गोगलीया को टे श से निकला थ पने के नाम से गाम वसाया

५८	भारमलनर ऐ०	१	१	१	०	१८	४८	०	१८	०	भए कमल भारमल कृवा व गाम करके सींग रावो को आधा दिया दोनो ही है ॥
५९	वोडारणो ऐ०	४११	१	१	०	२१४	७८	१८	३४३	१८	शक्ति देवलके आप से वोडारणा गाम माड बाछो उयहा शायरावजी का प्रधान हो गाम वसाया
६०	खैरवाला स ४९ ए	१८	१	०	०						श्री जी साहिवा से दौरै मे शोख खैरुर्जन करा य रावजी के तालु कै मे कृवा किया पुसे १० मीठ पानी होने से गाम वसा ॥

1	भैसोटुक	५	१	०	०	१९	०	नायवाकच्चाकूवाववस्तीकिया ॥
	सं० २२	वा०				१४		
५	ढेढणीवाला							ढेढणीकेडोहरमेंपडेहारेकूवाकियोपानी खारेसेवस्तीनहई ॥
	सं० ३८							
1	साहवों	७	२	६	०	०	०	भीयाकच्चाकूवाववस्तीकिया ॥
	सं० २०	उ				१४		
1	सुरीदसर	१३	१	०	०	०	०	कोहरियोंसं० २०मेंकूवाकरनेचाह्याथापरत हआफेरविसनोईआवसा ॥
	सं० ३८	ई०पू				१९		
1	जैनेशालीक	३	१	०	०			विसनोईआयवसेकूवेकापानीखाराहै ज्यादःवस्तीकीउम्मेदनहो ॥
	व्यसं० ३६	पू				१९		
१	कोटवाषखा	४७	२	०			३६४	२वि भो०खडे२ याश्रीकेलणाजीसाथपल्ली
	लसे	३					१५४७	१शि वाल आवसेसोहैसं० १८०७मेंदिकमपुरपुर
								१म खालसेहवाजबसेइहोजुदाहाकमरहतेहै

पुरानीगडीगांवमेंहै अबतालाबमेंघडासरपरकोटबनेगा भैरोजीकाथानकदीमीहै
सोमीदलुनाथजीकामठसं० १६३०मेंउमदाबनाऔरकसवाभीतरकीपरहै किअब
नवीगुवाडियोकारहनेवजोलेकैलीयेजमीनवसुसकलमिलतीहै हाकममौकाती
सालमचन्द्रराखेचाहमीरमलबनायवमैतासामसिंहपरोहिततोत्तारामऔरमातहत
थाएवसाथरकीचोकीगांवसीहडावस्तीरवेमेंहै अनोखववापकीतहसीलकामभीउन्हो
केदखलुकहै सं० ४९सेगावोंमेंहवालदारकवागयाकिखेतीमेंतरकीवरखवालकेसि
बायमहसूनवगैरकीभीनिगरानीरखें ॥

1	गोमटीयाम	१॥					०	गोमटीयेन्हारेरहतेहै ॥
	होगारोस	८						

२	खालतारी	३							
		५							
२	भोजारीवाप	॥	२		३३	१६	१५		केलणजासाथपल्लोवालभोजनेछाटेभाईकी
	भो०	२				६४			बहूकेतानपरपहागानवसाया
३	खीरवा	४	१	१	१४२	४१४	२६	०	भो केलण
	हे०	२	१			१०६			
४	सेखासर	५	१	०	१३०	७१०	२१७	१६	हे०
	हे०	५	१			८८८			
५	जैमल	६	१	१	०	१०८	४६	०	हे०
	हे०	३	१			२२७			
६	अरवाधना	६	१		१२	४४	२३	०	भो केलण
		५	१			३४८			
७	जगमालरी		१			१		०	पडेहारकीजमीनमेविसनोया
	खा०		१						गामवसाय,जगमालकीतलाईपर
८	मोडकीया	११	१		११	११		०	हे०
	हे०	५	१			६४			
९	राणौरी	८	१		१२	४२	१०६	०	कानासरकेविसनोयाएरौकीतलाईपरगाम
	हे०	५	१			१४२			वसाया
१०	खाधुरी		१		१२	२२		०	पडेहारखाधुरीकीतलाईपरसत्तीपडेहारकी
	हे०		१			१०७			है॥
११	चारू	१६	१	६	१२५	२१५	२८६	०	१२कूवावाकेकारणचारूकहाअसलवासदेबुध
		१	१			१३४७			भाटीयाफेरपडेहारआरहेवादेकरेसेभाटी-

भागचन्द्रवारकादासोतशकरकबजाकीयाजवसेकईदफावीरानभीहईमगरफेरहीभाटी रहेऔरअबसीवमेंतलायापरढांनीयाजोनीचेलिखीहैहई॥

1	खेतुसर से०	३ ईपू	१		११९	०	भाटीहीरजी
1	धोली सं० से०	३ पूअ	१		१	०	गामजेठमलजी
1	इरजनरी सं०	३ पू	१		११९	०	
1	देदासरी सं०	३ पूई	१		११९	०	
1	अनजीरी से०	आ वेर	१		१	०	भाटीअनजी
१२	कानासर खा०	८ पवा	१	१	१५० ३ई २५२	०	सं० १८८३ मेंखरीगेकेविसनोयानेअबलपह गामकालासरतलावपरवसायाश्रीरंगणावत

जीसाकेपढेथावइतसेघरमारवाडसेआये॥

1-	भवा सं० से०		१	०	१५	०	वहतसेगामपल्लीवालोज्योंवसायेपरन्तु जमीदारनहींक्योंकिहनोजकिसीनेजमीन मांगलीकन्हीलिखाईहै
१३	शवरो भो०	६ पवा	१		११४ ४३	०	भोकेलरा
१४	हरभा से०	३ से	१		२२ १७	०	से०

1	दुरगाणी ऐ०	११	१			1२		०	ऐ०
1	जोधणी ऐ०	ऐ	१			१४		०	ऐ०
1	खालडा ऐ०	१२	१			१३		०	ऐ०
1	भाथडा ऐ०	१२	१					०	ऐ०
x	विरोलाई भो०		१	०	०	०	०	०	भो पाइसेखासरमेहै ठाणआधाभरहै
x	अवलमाली ऐ०		१	०	०	०	०	०	भो कोटडीयासेखासरमेहै
१	सीहड भो०	३५	१	१	१००	१४	६६		रावजीकेघोडेकाआंतराकढानिससेअन्तर कढासोअन्तरगढवभो०सीहडसेसीहड

सं०७७सेहकुमतवापका दोसिपाईथानिरहनेसं०२७मेजुदा परगनाकीयाथाफेरसं०३२से
वापकेमातहत सुहररव्यासअभयकणावकईसवारहै ॥

1	पंडितारीडा शियादोयहै								कुवारेखोदनेदेवीकीमूर्तिनिकलीजवथ्यानया पकरनामदेवीसरदीयाकिसीसेप्याउवेचतो पानीमेंकीडेपडै ॥
२	टेकरो जा०	३	१	११२	३०६	१११	११७		भाटीद्वारकादासोन ५३४

३	छायण ऐ०	५	१	२	०	२४	१५२	६३४	पडेहारकी जमीनमें दूसरा गांव वसाय श्रीखेतसी जाके बैठे सवरहे थे सो दूसरे गांव में जा रहे द्वारकादासोतयहं है ॥
१	लाठी जा०	१८	१	७	०	१५	१६७	७०९	भो० जसोड लोहटासे ठा० राजश्री ईसरी सिंहजी गांव खरीदा फेर श्री दरवार में हाथी

मजरकर वसी लिखाय कसवा आबाद कीया व कोट वनाया था पर पल्ली बाल साहकार वगैरः वहत से लोग व कोट विखर गया सं० १८२३ में ठा० राजश्री चंद्र सिंहजी ने कचे पत्थरान का कोट बुर्ज ७ व दरवाजा व मकानात् महलात वनाया हुकूमत के काम पर श्री दरवार का हाकिम रहता था सं० १८०३ से यह काम भी ठा० मोसूफ के ताल्लुके हुआ था सं० ३८ से परगना तो अलग कीया बोली वारे ही लेते फी मनुष्य ॥ नदी में कूवा पु० २६ पानी वहत व मीठा है गांव से पश्चिम डेड कोस पर छत्ता सर प्रधान हमीर राजसी ने सं० ४१ में वनाया ॥

१	लोहट	२	१	०	०	१९	९७	५६	जसोड लोहट रहै है
१	धोलीयो सं० २७	१	१	०	०	१५	५१	२४२	विसनोया एक कूवा सं० २७ में दूसरा सं० ४२ में किया गाम वसा पानी वहत मीठा पुर्से ॥
२	रतनरीवसी भो०	२१	१	१	०	११	१५	४७	भाटी माल दे होत है सं० ७८ में नदी आई जब १ गुसाई कूवा बनाओ सो गुसाई सर है कई वर्ष उदै सिंहोत सरूप सिंह का ही रह्या था ॥
३	छत्तासर उर्फ करालीयो सं० २७ ऐ०	४	१	०	०	२४	४	१५०	हमारी राजसी ने गांगडेला सर व भैरवो से जमीन लेकर वसी लिखाया कूवा ताला व कोट डी पक्का वनाय गाम किया

४	धायसर रे०	७	१	२	०	१५	४६		भोजसोड महारावलभूमकीधायकूवाकरा भोजसोड खेतसीगामवसायाकूवाकापानी
---	--------------	---	---	---	---	----	----	--	---

साराहवापीछे फतेपुरियाजो सं० ८ न दूजासीठा कूवाकराया आईजी का थान वकूवापरको-
ठापक्काहै ॥

५	भैरवा रे०	८	१			१७	३८	३०	भोजसोड आईजी का थान फकीर उवाये का कोठापक्का नदीमेंवेरीयो पानीसीठा
६	सागर रे०	८	१			१४	१	४९	भोरठोड सागरगामचाधनकीजमीनमेवसा यास०३९मेंआईजी का थान पक्काकराया
७	चाधन रे०	७	१	१		४	१२	४७	भोजसोड चाधननामवावडीकूवाकावरोंया सथोडेलेजीकेवेटेजगेगामवसायागावसेउ-

त्तर १ कोस १ कूवा नोल् बूरियोडा है नथानदीमेवेरीयागाम पास कूवा थान पक्का है ॥

८	जेठा रे०	८	१	०		१४	१२	१४	स्यावा जुदावास है
९	सावल रे०	१०	१	०		२५	२२	३०	भोजसोड सावलगाममालीगडेसेआकर धनकीजमीनमेवसाआईजी का थान वस० १०मेकूवापक्काकिया ॥
१०	मल्लीगडा रे०	७	१	३	०	११		२३	भोजसोड गजैगामडेलासरसेआकरचाधन सीजमीनमेगामवसायो ॥
११	सूजीयो नाय	४	१	१		१३	२५	४८	भोरपधरोकोदेगबरसेबुलाप गामवसाया पहलेपहजमीनगगागुरेकेथो ॥
१२	टावरकी जा०	४	१	१		१३		१४	टावरियाकासुनागामतःटावरकीपरवालेपु वायेसो प्रवैरजोताकोदीयाथासोवोरुगये

कई वर्ष बाद सं० ८५ में आसकन को वसा दीया कृवाखार बभाई जी का धान का कड पर है ॥

१३	खेता	७	१	३।	१५।१४	८९	२८२	१० कृयेरेटा गाम भुतने सना का या था सो
	जा०	३						भो० रातोडरि अडामे बसाया कर खाल से हो

कर सं० १२ में राज श्री तेज सिंह को जा गिर डूवा १ कृवर गोयला कालु नारसी ठा० अतार्या सिंह

को दीयो डाडे १ पगवा बवरोडी

१४	चांदसर	६	१	३।	१२।४३	१६२	काम टोटा की जर्मान डूदी हें राका आ पाकुरा	
	जा	३-३					वसीव ठा० चांदर सिंह जी को दीया जब सं०	
							१८ ८८ में जगदल ॥	
१५	लुहारखी	६	१	३।	१३०।१३	४८	२१२	भो० भणक मल का गाम लुहररीत पर है भा
	जा०	३-५						टी सगत सिंहो तरहे ये सो गाम बडा रोड़े ऐ
								गावराव प्रताप सिंह जी को वसी दीया
१६	नवातला	४	१	३।	१६।१४३	४५५	१६५	१ वि० १ म० पल्ली वाल मघा कृवा कर के गाम
	जा०	३-ई	३।					उया सजारही ठा० केशवदास जी को वसा दी

आज बकस बावसाया सं० २६ में आई जी का धान व सं० ४३ में दो कृ० नवा हवा ॥

१७	भाईया	२	१	३।	३।५	१४३	४८१	ज सोड मल के भाइयो ने लोहंट व भाई वसा
	सां०	३						या भाई देह कानी में कु० वताने से रकबा सं

३० में श्री स्वांगी या जी का धान बनाय सांसन सीव सुंधा किया फेर सं० ८८ वा १८०५ में दो था

न कृवा बनाया

१८	अर्जनयार	३	१	३।	१।२	१५	५६	भाई की में कलरो को वसाया लाग माफ सफ
	प०	वा						र की सवारी में ११ कंडे निष्क किरये हाजर
								रहे १ कृवा केशव दास ने बनाया सो खारा है

१६	मोडाकोर	३	१	१	१२	२४	२७	६६	भोजसोड डेलेके वेदे सखराने वसुधया चोतु
	भो०	पा							खीगर्डी पकीमे झाईजीकी हवन खापीया
२०	डैलासर	४	१	१	३७	४४	१४६		१ मडीमानपुरीजीकी भोजसोड डेलेजीका
	भो०	ने							बरोसे आकर कूवा वगाम कीया फेर झाईजी
									काथान, व'
०	मयाकोहर	३॥							रावभवानीसिहोतांको दिया था सो नरह
१	महेरानकोहर	३							जमीनपोलमें पडोसीया दबी॥

नकशाकलपरगनातके गाम हानी आवाद् वीरान जोजुना यानवावगामोंमें नवाकूवापक्काकच्चाफसलहुईसो तथबख शिसकियेसो

क्र.सं.	नामपरगना	तादाद कुल गाम						नवाहवासो		पडोसइलाकापरगना				गामयासीवुरेलेपर डीनजोजागीरभेम पदेसासनजिस्कोस १६२सेवकसेपेहा लपतोवालवनाजो जरूरनहीनयाकागवा कीकोफियतमेहैहै
		आवादी		हानी		वीरान		कूवा	फसल	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	
		अ	ब	क	न	ज	न							
१	खामशहर	१२	६	३			७	३	१	जिसल मेर	जे	जे	जे	वार्डेजोगरपजगामस खेवालेकोया वडात स ७
१	जिसलमेर	७६	५२	२	१	२	१७	५	४	जाली देवी कोर	फनेमद	रामाभो लुयाक रामगद	देवा मुन गद	राधाआधानीरुको गानगजीपाभो कुवा स ३२
२	देवीकोर	३६	२७	५		२	५	५	४	मार बाड	फवेग द	जिसल मेर	दक्षि	भारीपजसीगाववा लानेवालेकोगाम

३	फतैगढ़	४७	३४	१	१	२	२	२	२	२०	मारवा	मारवा	महाजलार	देवीको	राजश्री उमर सिंह जी को
											उ	उलमर	जसल	मेर	गाम दुधू जा
४	लारवा	२२	१६	२	२	२	२	२	२	३	रे-मल	जोध	महाज	फतै	सोढाऊमजी गाम भुकावा
	प०										नी	पुर	लार	गढ़	लेको गाम कीता दिया था सो है
५	महाजलार	२४	६	२	६	४	२	२	२	२	लारवा	रे-	अग्नेजी	सम	मगयेसं-४१ खाल सिंह झाह
	प०										फतैगढ़	खैरपुर	खाभा	जूरोगरोगादासजीको	
६	खाभा	२४	१६	२	६	२	२	२	२	७	जसल	महाज	सम	अग्नेजी	मुंदडी काजमीनमें सोवदी
	प०										मेर	लार			सुपाना तलाईवस्ती से-१३में कीया
७	सम	२२	१३	५	५	२	२	२	२	३	खाभाम	रे-	सहा	खुया	राजश्री छत्र सिंह जी यहांके
	प०										हाजलार	सिधु	गढ़	ला	गाम मेणगी सोवजासं-१५
८	सहागढ़	६०	४५	२	४	२	२	२	२	३	सम	सिधु	सिधु	देवगढ़	वरी सिंह जेठ मलजीको गाम
	प०													खारा	वजुआधी जा सं-१५
९	देवगढ़	१	१	२	२	२	२	२	२	२	खारा	सहाग	रे-	खारा	खीयाभादी खीवर्कनको गाम
	प०														चैनु दीया था सो छोड गया
															सो रावलो लमाननीको दीया
१०	खारा	१५	५	६	२	२	२	२	२	२	सुयाल	देवगढ़	रे-	रामग	भाटी चैरी शाल गाम तापुवा
	प०										राम	सहाग		ह	लेको गाम भु-जा-
११	सुइयाला	१०	४	६	२	२	२	२	२	२	जसल	सम	खारा	रे-	मेदीया था सो नही रहे जवक
	प०										मेर				विराजजीको सं-४३ में दी-
१२	रामगढ़	१६	१०	२	४	२	२	२	२	६	रे-	सुयाल	तनोद	किसन	कनेतिकर्न सिंह गाम चांदस
	प०										देवा			गढ़	मेंवालेको गाम कोराजा
															वाराह मेदीया था सो नही रहे॥

क्र.	वillage	प.	३	१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	
१३	टणोट	प.	३	१	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
१४	किशनगढ	प.	१	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
१५	बराहो	प०	६	६	३	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
१६	देवा	प०	३१	२०	२	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
१७	मुन्नगढ	प०	११	६	२	१	१	०	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
१८	नाचना	प०	१६	६	१	०	६	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
१९	नोख	प	६	३०	३१	४	२६	१	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
२०	नाय	प०	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-

गाम
 दात्त मलोडके भायो वारा
 नदा सोत भोजीको गाम
 पा चाजा दीपाछिन रहे
 व्यासधनुजीको गाम हीसु
 सरसुं मेदीया फडोसी गाम
 शिवलिरवाड सोगारखापत्र
 पीडालिका हस्तुमेवखसे
 बराहा गाम राजश्रीनेजसिहसहा
 सुनगको गाम एटाजा सं० २३खा
 लसेलापोला पसं
 नाच बरासेहखेतसिहजीकोस
 २५वेकमपुरकोट मयेपगा
 मकेदेकरावकिया
 राजश्रीअनारसिहजीको
 गामलखामजा सर्गमजो
 गरजजीउदेसिहोतगामकु
 डाजा स गामे नीवली ऐ सं
 सोहामदनसिह राखाप
 रामगाम लुगासजा स २६
 भादीपथीएजजोधासिहत
 गामसीहडासजा सं ३०
 भादीनहारजीजेठमनोत
 को गामसिधु प

देशमें

रहने के अलावा खास शहर व पल्लीवालों व राजजागीरदारानभोभीयां के गाम में तो पत्थर के और उत्तर की तरफ वरसलपुर वगैरः में साहूकारों वगैरः के इटा व चुने संघों के भी है बाकी सिंधी सिपाहीयां वगैरः गुरबा लोग व रंजायल कोम के रूपे होय खुसपोस व छप्पर वंधा घास का है सो सं० ४१ से हिदायत की गई है कि लखन लीये वरसपरेल का बनाया जावे स्थान इसमें कूवों की गहराई फुट ८० से ऊपर ५०० तक की हैं और ८० से कम को वेरे कहते हैं पानी मीठा फीका खारा याने सब तरों का है व गाम वालों ना में सड़ा टेकरा गिरज घर व कमपुर वगैरः कूवों का पानी विरावा जो प्यासे के वासो जहर है तथा परगनः नोख नाचना मुहनगढ़ में जहां २ पानी खारा या विरावा है या कूवान ही है मीठा पानी की कुमायांवां का वारस के पानी से भररखते है अब दूसरे परगनों में भी कुंडा बनाने की ताकीद व नसीहत की गई है तथा जमीन इस देश की रेतली पत्थरीली व खडौंनो की चिकनी है और जो जिन्स भैदा होती है वजहत ही उमदा -

तथा न मालूम कौन आपे से पल्लीवालों के गाम विलकुल घटगये व घटते जाते है ज्यों ही खास शहर के लोग भी निकलते जाते है बाकी सब मुल्क में आवादी बधी व वधती जाती है चुनावे परगनः वायव नोखे तो खांतरखाः आवादी हुई व होवे ही है अथवा गाम वसने को गामों की सीवा निकलने वाद जगह मिलेगी और परगनः नाचना व मुहनगढ़ वाराह सम महाजलार में कूवा गाम हो सकेगे और सहागढ़ घोटड खारा रामगढ़ खुड्याला लाठी लखामें जो लोग रहते हैं उन्ही के भाई गिनायत के सिवाय दूसरे लोग नहीं रहने पाते और खाभा देवा फतै गढ़ जेसलमेर के परगनों में तो विलफैल वधने की सूरत नहीं दीरखती है श्री वडेगा साहब ने फरमाया था कि जब जमना अच्छा जावे मुल्क वसने का उपाय करना मगर सं० ४१ से बहुत से उपाय करके चुप होना पड़ा ज्यों ही व्यापार की तक्की मौजै वाय वरसलपुर मारुली में तो ठीक हो गई नोख नाचना मुहनगढ़ रामगढ़ सम महाजलार सहागढ़ गामों में भी होने की गुजायस जानकर हरचन्द तदबीरे की गई पर कहत सा लीयाने कामयाबी नहीं होने दी सो जमाना अच्छा आने पर ऊपर लिखे मुजुवीये गामों में तरकी होने

को कोशिश करनी होगी तथा गैहू पैदा होने की मात्र जगह का नक़शा करके सब तरफ से रायल्लिखी बालिका उपाय भी कीये पर जमाना अच्छा व करसे लोग होने से काम आवी है ये अर्थात् बिलफैल तो अच्छे होने की उम्मेद व सूरत कोई नहीं वधी॥

शहवाल खाणा

दफ़ै १३ अकसर पत्थर की खानें बहुत है वह पत्थर ये काम नकाशी की निहाय नउ मदा व पायदार होता है कि हिन्दुस्तान भर में कम होगा जालीरुरेखे वगैर का तारीफ़ का हातक लिखी जावे देखने से ही मालूम हो खान फरीद राव अकला कंठड़ी काभला रूपा सरवगैर को पाटुपान कहत है - रंग जर्द और घडने में नर्म मगर मजबूत बहुत इमारतो के काम में आता है इन वरषों में पत्थर का काम वधही गया है सिवाय कि बाडों के दीवार व छत भी पत्थर के पटी व डुकडों का होता है - यह तरकीब सं० ३० से निकाली ६० वर्ष पहिले सुरंग का हनर नही था जब वडा पत्थर निकालने में खर्च ज्यादह लगने से ठहरा दी थी कि पत्थर का छनय हस्ती के घर में अशुभ है - सो अब कम लगने वह काम उमदा व मजबूत तुर्त व नने से लकड़े का अशुभ रहा ये संग शहमदा बाद व सिंध वगैर - मुल्को में जाता है महारानी श्री सजन सिंह वाली उदयपुर ने सजन गढ़ में कमरा बनाने को व जोधपुर व नीवाडा में जैन के मंदिर में लगाने को मगाया - अब उम्मेद है कि दूसरे मुल्को में भी ज्यादह जावे गग ब्योकिरेल नजीक आगई है और महसूल भी सिर्फ ३० रु० गाडे ये ४०॥ ५० मन् देजी डीबैलो से ले जाते है लगता है खान कुडकडा के संग का खरल प्याले गलाश स्कावी फूल दोन आबखोरे वगैर - वर्तन काच व चीनी से जिलोदार हेते है और यह खूबी बढ़कर है कि थोडा सा बोम डालने पर भी पानी में तिरता है पर संग कडों के वाइसन नकाशी काम नही हो सक्ता तथा चोकी कुरसी देवली व फर्स निहायत खूब सूरत होने से दिशा व रो में ही जाता है खान विच्छूपान जो विढीया रग स्याह व पीला अबरदार इसका भी संग कडा वह वर्तन कुडकुडे जैसे होते है मगर लंबा चौडा १ फर से ज्यादह यह रग इसका नही होता

खान हावूर शहर से यह १६ कोस गाम हावूर के पास है . पत्थर लाल माइल वसा . अवर पील फारसी हफो की सिकल है इसका भी वर्तन व चौकी व कवर के तावीज बनते है संग नर्म के कारण जिला कम जाना है परन्तु फर्स खुसनुमा दीखता है . यहां की सौगात भी साहब लो गों वगैरः को इस पत्थरों की चीजें भेजी जाती है वल्कि निहायत पसन्द होने से फैमाय सभी इसी की जाती है . मगर बनाने वाला कारीगर एक ही है . मौजै भादासर से पत्थर की चन्टी सिंध को जाती है महसूल फी चक्की एक जाना है . तथा गाम सोमले आई व नीवा में स्याह पत्थर की घंटों पडोसी गामों विकती है . सिवाय इसके शहर व पल्ली वालों के गामों व आई ता तेजरा लाठी वाय वर्मसर वगैरः में खाने हैं मगर अलावा गाम मुनपि या व जाजिया के मात्र जगह के पत्थर काला या रोडां या कर्ची दीवार के काम में आते हैं . तथा परगनः कोटखारा पार एकल पास खान मसीत की वह परगनः खुड्याला में वह खरी का पत्थर क्वा बांधने व दीवार के काम में ठीक है . तथा मौजै जायन के पत्थर की चक्की उभदा बनसकैगी -

खानमेर - यानी मुलतानी . परगनः देवा मौजै मंधा व नहडाई में निकलती है . लवा नां वगैरः मुल्क सिंधु व पंजाव को ले जाते है . महसूल रहादारी फी गोन एक जाना है स्याः परगनः खास में वह परगनः फतैगढ़ गाम मंरुई में वह सं० ४१ से परगनः जेसल मेर गाम भोज के वह परगना खाभा गाम खुडडी में भी निकले है . बाल धोने व ऊंठ घो डिके चंदा पर लगाने में आवी है

खानमिट्टी - सुफेद जो सेडी . परगनः जेसल मेर गाम माभला व परगनः दे- वी कोट खास में निकलती है . मकानों की आरास में काम आती है . इसके इतर से सिलकी गर्मी कम होती है . व जरगिर सुडी बनाते है . सिवाय इसके दूसरी मिट्टी ३।४ रंग की खास शहर व कई गामों में निकलती है सो छोटे पत्थर की जोडाई में वजाय चूना के काम आती है व कुम्हार वर्तन बनाते है . खसूसन मौजै मंरुई की पीली मिट्टी

उमदा मकानकी झगनाई लीपते है- वह इसको जलाने से सुरब पानी होकर मकान झागा की दीवार गते है तथा गाहे रसिध है दराबाद भी जाती है और लालरेती जो मुके चिकनी को गोबर में मिलाकर मकान लीपते है- इसी रेतीके कंकर सुखडीया जो चूत्त पर ८।१० ई च खूब जमाने से पानी नहीं रुकता तथा मरडीया व कतल जलाने से पिलासतर जो खारा चूना बनता है- गुपूगूल सणी मिलाकर रेकी झगनाया वरीया करते है वह मीठा चूना निकलाने से पहिले पत्थरो की जुडाई भी इसमे करते थे

खान गेरू

परगन-देवीकोट खास वह गाम सीतोडाई पास भगी नडा में भी थोडा सा होता है अतीत लोग भगवा कपडा रगते है सो रंग नहीं मिटने से दूर २ सुत्को मे लेजाते है व इस से जेवर तिलाई को ओपनी देते है तथा पानी मे घोल कर वाग के दररवतो व मकानो की दीवारो पर डालने से दीमक नहीं होती ॥

खान मीठा चूना को ददडा व खगर व खडी भी कहते है शहर से उत्तर १० कोस मौजे देवा वह झगाडी मुहनगढ नाचना विकमपुर वरसलपुर तक बहुत जगह निकलता है सो जलाकर पीसते है सो इमारतो के काम में तो ऐसा है कि कैसा ही भारी पत्थर हो थोडे ही चूना से मजबूत होजाता है दीवार गिरती को लगाने थभै ही घी अव फर्स भी बनते है पहले गुमान था कि पानी से कच्चा पड़ेगा परन्तु ख्याल किया कि टाका व कुंडा में राख पोत कर चूने कालेया देने से ४०।५० वर्ष तक पानी साफ भरा रहता है तो फर्स ही क्यों विगडेगा ये चूना गाम देवा मे अश्वल मट मे लगा था फेर शहर मे शुरू हुवा महसूल फी गुन १ अना खान पर लेते है और शहर मे निरब ७ रुपये का ८ अठ मन अतीन से रहता है- स्या खघर कूचा बाधने व देहात मे दीवा रचाने को वजाय पत्थर व डंटा के लगाते है कि कोट विकमपुर नाचना व कई गामों में बुर्जवगौर मौजूद है ॥

खानमुतफारिक

शहरसे उत्तर द्वादस मोजे हमीराके कू. में कोयले निकलते हैं गन्द्रिफ जैसी बुहवौ
 रः से अबासमरामगर साहवान ने पसन्द नहीं फरमाया कि पत्थरके नहीं लकड़
 के हैं और दक्षिण को ७ कोस डुगेर चियाके डुगर वह पश्चिम को ७ कोस नेजुवों के डुग
 रमें लोहावतावां है श्री ठाकुर साहब ने न्यारीया से निकलार्ड भी थी परन्तु नाइ
 ल्मीसे नफा का ऐवज टोटा रहा और गाम परेवर सं० ४२।४३ में झीलडाम साहब
 कईदिन रह कर पत्थर ले गये कि अच्छा मिला मालूम नहीं अच्छापन क्या था तथा
 देवत सुरताना वह गाम सांवल्ला का कू. में भी धातु है कहा गुमान कवी है परन्तु
 वगैर इल्मके मालूम नहीं हो सक्ता गाम जायनके कूवा वगामसताके डुगर में
 थोड़ासा कोयला वगाम लुहारखीके कू. में महमार्ड निकला था और कोट सहा
 गढ़ के परली तर्फ थलीयां में पानी जमने से सं० ३२ में खारा की पुडपुडी ऊई थी
 जिससे अनुमान होता है कि मुदित तक पानी भर रहे तो अजब नहीं कि खारा भी हो
 जावे क्योंकि खारा की तिथां जोई खैरपुर में है वहां से नजीक ही हैं तथा मोजे
 ताय में आगे साजी पैदा होती थी वह गाम दामोदरके ष. कजा सोनरामें खार होता
 है सं० १३ में साजी बनवाई भी थी सो हासल कम हुवा वह कानोधवगैरः के रन
 में भी खारवहत होता है परन्तु बनाने वाला नहीं॥

और खानसे पत्थरवगैरःके निकालने पर हकूक राज का इस मनसा से माफ
 है कि शहर इलाके में जो कोई मकान बढिकाना बनाते है तो उसके रहने की पायदा
 रिका पायदा समझा और जोई गैर को ले जाते हैं उनसे भी खान का हकूक नहीं
 लीया कि किसी सूरत से ज्यादा ले जावे बिलफैल महसूल रहा दारि लेते है सो ऊ
 पर लिखा उतनाही महन्ताना कालगता है और जबकि यह काम खातरखाः चले
 गा खाना का हकूक देका सावियाना या माल निकालनेके अन्दाज पर मुनासब वक्त -

तज बीजू की जावैगी जब पत्थर खगैर निकलने की तादाद व आमदनी मालूम हो सकेगी,

नदी व वहाला

दफै १४ भूगोल हस्तामलक में शास्त्रानुसार लिखे हैं कि इस इलाके में नदी नाला का स्म खाने को भी नहीं है सो बहुत लनवी या १२ मास चलती तो काँई ^{नदी} मगर छोटी २ नदी नय व वहाले ज्यद् वारस होने से जहा तक चलती है जिसमें काकनयव लाठी की नदी तो नामी व गोगडी सूकड़ी रीक २ वाकी वाकी या वगैर वहाले है

काकनय गाम भोपा से सोडा कोठडी गोरारा सतापास वहती हुई १४ कोस गाम कुल धरा से दो सारख हो कर एक तो पश्चिम को ढाई से ५ तक खाभा बुजमे खतम होती है जहां जरात ३ सारख हो सक्ती है मगर बडी कबाह्त है कि कम वारस से तो खाभा भरतानही और ज्यादा से ज्यादा भरे है उस साल जरात हो सके नहीं क्योंकि पानी निकले का कोई रस तानही ६ कोस के घेरे में दीरया व सा दीरवता है और खाभा सुहार भी भरजाता है तो बीच में कुगरी निभ जो बेट सी शोभाती है फेर पानी सूकने से जरात करते हैं आगे पल्ली बाल वसते थे जब बुजमे १५ व मुहारमे ६ हजार मन बीज वहता था दूसरी सारख गाम कुल धरा से गाम कहाले लुइवा हो कर रन में गिरती है वहा पानी खारा हो कर जरात तो क्या घास भी नहीं होता यह सारख बध करने को बधा वंधाते थे सो टूटना था अब नदी का पत्थर काटना शुरू किया है सो पूरा कटने बाद पानी निकम्मा नहीं जावैगा सम्बत १३ में श्री राकरा साहब ने शहर से दक्षिण ३ कोस पर भारी बध बधवा कर तीसरी सारख इस मनुसा से निकलाई थी कि घर सी सर गुलाब सागर किशन घाट रामघाट कराह कल्या न घाट भरकर कानोध के रन में होता हुआ मुहनराह पानी पड़वैगा तो २० कोस में नदी के दो नोत फेरे निकलने से जरात हो हीगी और बुजमे भी ज्यादा पानी न भरने से हर साल पैदावार होंगी क्योंकि रन में जो सारख जाती है बंध होजावैगी ऐसे कई फायदे जानकर ६० या ६५ हजार रु० लगाये थे वह धर सी सर व हुतर खुदाया गुलाब सागर नया बनाया किशन

घाटका बंधाया व रामघाट कल्याणघाट को हजारों रूपये लगाये थे सो सम्वत १९ में ज्यादा बारससे काकनय आदि सब बंधे टूट गये अब कोई साहब यूरूपियन इंजिनियर देखकर वाजबजाने तो रूपये लगाये जावै - प्राय साहबोंने तो काकनय देखकर कहा था कि होसकैगा - स्यारनका पानी सुहनगढ़जानेकेलिये सम्वत ३५ में पैमायसवाले टारन साहबने मैकादेखकर कहा था कि होसकैगा मगर रूपये ज्यादाहवताये थे ब्रह्माके पुत्र काक ऋषियहां तपस्या करे थी जिसमे काकनय बहरेसेही चांवड ऋषिकेरहनेसे चुंधी कहीजी जहां पानीके कईकुंड वहसजीवनवहाला है - सो मूलराज सागरके मगरे से ३कोस चलकर मौजै लुडवाके पास काकनयमें मिलता है ॥

२ लाठीकी नदी - गामवेगटी वह माडवाई - मारवाड से शुरू होकर लाठीके पास १ सारव होती है सो गाम सजयासे दक्षिणव आईतासे उत्तरवहती हुई ३४ कोस पर गाम सुहनगढ़के पूर्व रनमें पानी दूर २ फैलनेसे जरात होसकती है लेकिन यह नदी अब्वल सम्वत् १८४८ फेर ५२ में आई थी जबजाटवगैरः लोगभी आनेसे कसबा सुहनगढ़वसा बाद सम्वत् ८२ में आई थी वहसं ०९३५ में भी जीभी आई थी नदीनही आनेका सबब यह है कि इ-पौकरनमें कई बंधे व रेतके टीबे हो गये हैं ॥

३ गोगडी - परगनः देवीकोट गाम छोडियां से शुरू होकर गाम सांवत मूलाना वडे गामकी सीम में होकर गाम सगरासे अगाडी चांधनके खडीन रद्यायमें जहां अबगै हूं होते है भरके गाम मालीगड़ासे उत्तर लाठीकी नदीमें २० कोस पर मिलती है

४ सूकडी - गाम खूहडेके मगरे का पानी परगनः देवीकोटके गाम महासरनेडा चडवाडा धायसर जाबंधके पास होकर भैरवांसे अगाडी १ कोस पर गोगडीमें मिले है और पिछाडीके गामोंमें १४ कोस तक कुबनहीं होता है व उम्मेदभी नहीं क्योंकि सारव निकालने बांधबधाने वगैरः गामोंके भोमियांसे तो बने नहीं और राज जबरन करते नहीं ॥

५ बाकिया - बहाला परगनः जेसलमेर गाम आकलसे पूर्व ३कोस मगरेका पानी

गाम जे रात व दोनों वासुनपीके बीच जहां अब वधे बधने से गेहूँ होते है भस्के गाम रिदु जे सु राना आइता तक १५ कोस पर गढी की नदी मे गिरता है ॥

६ मुत फरक - वहाला एतो मैजै मलार डे मारवाड से पानी गाम खीरवा बायवाम नचीलिया मे जो धारे अब वंधी है भरकर गाम से वडा नोख से अगाडी गाम (वडाना की थली यां मे १५ कोस पर खिर जाता है २ दीपु से आकली तक गाम सादा से बारू की थलीया मे पानी फैलता है नाम जिस २ गाम के पास व है है उसकी नय ३ प्र लखागा रथनके डूंगरे से मेढा का साउ सोढात होकर गैहूँ ककू तक पानी वीहरा में भर रहता है ४ प्र एमगढ गाम जो गाम खडीन सरन का खडीन बिजडासर भरने बाद खेरड से १० कोस पर लाहास ल जाता था सो सरन का बधा अब व थाया सो यकीन है कि सरन वेपरासर बिजडासर खेरड में गेहूँ होने वगैरः निकलने से बडेही फायदे होंगे ॥

७ नदी - गाम महोरी से चारू होकर गाम थोला पास व हती हुई डे मारवाड मे मैजै काश्मीर तक पानी जाता है ॥

देखने लायक मकान जो गढ व शहर व डला के जात में है
१५ टफे - खास शहर व देहात पल्लीवालो मे घूतो पत्थर मजबूत व नकासीका काम बाएक वज दार मकान अच्छे ही है मगर किल्ला व एज भवन सभानवास वा मोतीम हल मे आरास निहायन उमदा व गजविलास सर्वोत्तम बिलास नीचे नया महल वगैर व कोठाक्षण पूर्णो व मन्दिर श्री लक्ष्मी नाथ जी टीकमजी रनछोड जी महोदेव जी सूर्य जीके अलाव जैनके ७ ही मन्दिर तो देखने से ही ताल्लुक रखते है तारीफ कहां तक लिखी जावे १६ जार खस व हर पत्थर में बडत ही बारीक काम चुनाचे जाव जितना मन्दिर तिल जितनी पुतली इसी मे है बनाने का हाल जुदा लिखा है -

जैनके मंदिरों का हाल

चुनावे: कैफियत यह है कि गढ़ जेसलमेर में ८ मंदिर बड़े ही नामी है जहां दीदः
आदमी देखकर कहते है कि इनके सानी कही नहीं देखे बहुत वारीक नकासी काम पत्थरों में
और बहुत ही उमदा खंभ जो करीब ५००० होंगे ज्युं ही पुराना शास्त्र भी बहुत जो तब
ही के जमाने में दूसरे सुलकों से आये हुये बड़े ही जतन से रखे हैं और तादाद नहीं लि
खी मगर लखों ही रुपये लगे हैं - नित्य पूजा व पुजारी भोजकों की तनखाह वगैरह
खर्च वास्ते: संग पर लामान है और निमन्तक मनोर्थ व यात्री वगैर: की भेट व केसर
आस्ती का घृत वगैरा का द्रव्य भंडार याने मजबूत तल भवरे में डालते हैं सो न मालूम
कितना होगा

नकशा

क्र. सं.	नाम मूल नायक मे तिमाका	संवत्	नाम वनाज चालिका	नाम श्री पूज्य या जिसने प्रतिष्ठा क रई	कैफियत
१	श्री पार्वना थजी	१३८८ १४५८	जे संग व बोले साहसेठीयान सिंह भोजे सा हर राजने	जन राज सरकी आ जामे संगार चन्द्र आचारीये	लुडवा से पुरानी मूर्ति जो १८ सौ वर्ष की है लाये गढ़ में साकाहवाज बजमीन में रखी थी फेर जीर नो धार में बड़ा मन्दिर बनाया पाट पर पधारई
२	श्री संभवना थजी	१४८७	कुंकड चो थडपो चिसहा	जन भद्र सर	
३	श्री सीतलना थजी	१५०८	डागा लुणसा मुणसा		
४	श्री चन्द्र प्रभु जी	१५१५	भन साली भाडे साह मह सदास	जन चन्द्र सर आचा र्ये	खुरसिवन ते द्रव्य हो चुका तो अहमदा बाद गधे त्रहरी पाली नहड फेर जंगल में

					दफ़ीना पाया जब संग में थाली मिथी देकर बाकी द्रव्य लाकर लगाया ॥
१	श्रीश्यामपदजी वसकुनाथजी	१५३६	पांचेसाहा		श्रीमन्दिरीसामल बनेरै
६	श्रीसंतनाथ जी	१६०	सगवीस्येतेवी देसाहसरखवाले चा	जनचन्द्रसूर	
७	श्रीरिखभदेव जी	१५३७	चौपडासचौधर वसंगवीगण धर		
८	श्रीमहावीर जी	१५८१	वरडीयासमरे साहाववेदामू लराज		

बोचकीगलीसम्बत् १५८१ में लुबार्डब्राह्मणोंकी इज्जतमिटानेको ऊपर श्रीलक्ष्मीनाथजीपधराये तथा सेठगुमानचन्दवालोंने मन्दिरके लीये जमीन व पत्थर तैयार करायो पर नही बन सका फेरशमरसागरमें दोयदागवदोयमन्दिररिखभदेवजीका सवाईरामजीने सं० १६०० में छोटाऔरहिम्मतरामनेवडासम्बत् १६३८ में बनाया श्रीपूजजनमुक्ति सूरने प्रतिष्ठाअनजन सलाका कसई यातलहटी याने प्राहरमें १ मन्दिरश्रीपार्श्वनाथजीका तपेगखवालोंने संवत् १८७५ में करायो और पंडित कूंगरसीजो नामी जती इसजमानेमें गुजरा है जोधपुरवर्मसरवगैर-बहुतजगहकुड पानीका वथानक उपास्यवगैर-डीकाना बनाया चुनाचै अमरसागरमें बगीचा व मन्दिररिखभदेवजीका संगको नर्कसेसम्बत् १९८५ में बनाया यह प्रतिमा कोटविक्रमपुरसे आई है जो १००० बर्यके पहिलेकी है-

गाम लुद्रवा में श्रीचिन्तामनजी का मन्दिर मनशाली थडुसहाने सम्बत् १६७६ में बनाया
 व गाम वर्मसर में बागचार लाओलादके द्रव्यसे १ मन्दिर सम्बत् १६४४ में हुआ और
 गाम देवीकोट में १ देरासर व गाम वरसलपुर में १ मन्दिर जैन का है ॥३॥

और अया ईशरलालजी की हवेली व चोवटा में प्रशाला व देवी घंटो झालका धान।
 तथा शहर में श्रीवल्लभकुल व श्रीसीतारामजी का मन्दिर व क्वारामसर मये कोठ
 बंगला व श्रीजी के सहन में बादलबिलास जो अब नई वजः का बनाया है व ठाकुर
 राजश्री केशरी सिंहजी का डेरा में छत्त बिलन्द पत्थरके लदावका और सेठ गुमानचंद
 के ध्वटे की हवेली व नोहरे ऐसे ही दोवान सालमसिंहजी व नथमलजी की हवेली
 भी बहुत उमदः है तथा जैन का मन्दिर उपासरा भी अच्छे हैं शहर से बाहिरत व ऊप
 र मन्दिर महल व गैरः मकानात व बगीचे बहुत हैं १ घरसीसर इसमें कालगसर
 मिलाने लम्बा चौड़ा बहुत हुआ २ गुलावसागर ३ महतासर ४ गजरूपसागर
 जिसकी नहर पहाड़के अंदर ही अंदर खोद लाये है ५ देदानसर जो सम्बत् २८ से दी
 नथमलजी निस्तवतरह अच्छा बनाया है ६ ईशरलाल का तालाव ७ गंगासागर ८
 जोसीका तथा पडुगरी पर ब्राह्मणोंके समसानकी छत्री भी दूरसे बहार दीखे है
 बाग १ अमरसागर तकके बंध व ऊपर महलात मन्दिर बंगले व सेठ सवाईरामजी
 हिमतरामजी वागा में जैनके मन्दिर व महलात निहायत खूब व पं० डुगरसी का म
 न्दिर बगीचा २ मूलराज राजसागर में महल बंगले व तमेकू कालरा ३ बडाबाग
 का बंधकी कौफियत तोलूणाकरनजीके हालमें लिखी और डुगरी पर समसानमें छ
 त्री बंगले अच्छे हैं गाम लुद्रवा में मंदिर श्रीचिन्तामनजी व देवी का और ब्रह्मकुण्ड राम
 कुंड चुंधी में ठिकाना व पानी का कुंड है परगनः खाभामें खडीन कुज मुहार व मुहारमें
 कुज महादेव व डुगरी पर देवी का मन्दिर परगनः रामगढ़ में तनरासर विजडासर
 देरासर व पेरासर व परगनः देवा में लधीसर परगनः देवीकोट में त विजडासर

॥ सेठ हिमतरामजी जैनका मंदिर जो नया अमरसिंहके पुत्रने बनाया है देखने लायक है मोलवी सुन्द
 अली

तथा कोट किशानगढ़ व कूवाबहावलसरव कोट घोटः डूव घंडसियाकी गढी जो खुर्ज
 २० फुट ऊंचा है . कोट देवाव नाचना ब कूवा चोतीणा व कोट विकमपुर में जीरखा
 व दरवाजा और कोट वरसलपुर व लारी के भी अच्छे हैं . गाम लाट्रीया में श्री स्वाधि
 यात्री का थान अलावा इसके पल्लीवालों के गामों में मकान मंदिर कूवा त . खा .
 वगैरह देखने से हैरत होती है कि क्योंकर छोड़ गये सो हाल अलग लिखा है . तथा
 काकनय चलती है जब गाम कुलधरा पास अच्छी कैफियत दीखती है .

बारस व खेती का हाल

दफे १६ वर्षा हुई मरीछा जमीन में तेह व नीवान में पानी आने की है सम्बत
 ३८ से शहर में जनावर जी डन्ट साहब बहादुर ने पैमाना रखाया . सो वारस होने वाद
 माप कर हर हफ्ते नकशार जी डंटी में भेजते हैं परन्तु पैमाना से थोड़ी ही दूर वर्षा कमी
 बेशका हाल मालूम नहीं होता इसलिये हुकूमत से रपोट आने का नमूना पूरक
 है नम्बरी नाम गाम मिती वर्सा जमीन में रैज व नीवीन में पानी कितना घास चरा
 केशा . हाल खेती . हाल तनदुरुस्ती वगैरह . गाम में मनुष्य जन में मरे या आये गये
 की तादाद मये सबब . तथा शहर में बारस हुई का ईंच व सेन्ट सम्बत ३९ जो सम्
 १८९३ में ६।९८ सम्बत ४० में ८।६५ सम्बत ४१ में ६।९९ सम्बत ४२ में ८।९९
 सम्बत ४३ में २।७० सम्बत ४४ में ४।४४ कुल छः वर्ष में ई . ३७ सन् १५ अोस्त फी
 साल ईंच ६ सेन्ट १९ हुई मगर इन वर्षों में कौह त हीरहा वरना अच्छा जमाना में
 में ईंच ९।१० बज्याद . १२।१५ तक भी होती है . सेम हीने वैशाख से पीछे जवही अच्छी
 बारस होती खेत बोया जाता है . फेर आन्वन तक ४।५ दफे वरसने से जमाना श्री कार और
 कम होता कम .

सारवसियालू बाजरी रूंग मोठ गुवाश्वागे से कई दजे ज्यादा होते है तो भी बाजरी
 मालानी व सिधसे और रूंग नाले वगैर से आंवे ही है त्याह जु वार व चावल कम होते हैं

ज्यों इसका खर्च भी कम होगा है . तथा काकडी मर्तोर कान्गी तीडसी वगैरह ज्यादा उमदा होते है . तिल सिर्फ ऊठों के चारे व देश में खर्च वास्ते वाजरी के साथ थोडा लवा बोटते थे सो सम्वत् ३८ में विलायत जाने लगा तो खेती भी बड़गई चुनाचै : सम्वत् ४१ में बहुत ही पैदा हुवा था सो ३ साल में ५ रूपये लख से ऊपर निकाला हुवा . परकहत सालीयां से नही हुवा . मगर जमाना अच्छा होने से इसकी तरकी खात रखाह होगी . ऐसे ही रुई की पैदा हो सकै हैं और हिदायत व कोशिश भी हद भर है . लेकिन दो कबाहते भारी है . १ तो यह है कि १ साल की बोई रुई तीसरी साल फलती है सो ४।५ साल तक रहे जितने वर्षा बराबर नही होती . दूसरे मवेशी के किगाइने से लोग बोनै में डरते है .

सारव ऊनहालू - जो महीने भादों व कुवार में ख. व बंधे भर जावे तो परगनः १३ याने जेसल मेर देवीकोट फतहगढ़ लखा खाभा महाजलार समखुरयालार मगढ़ देवा मुहनगढ़ वाय सीहड़ लाठी में होती है सो कनागतों से दीवाली तक चने कार्तिक शुदी १ से महावदी तक गेहूँ व वराय नाम सरसों धना वगैरह और बाज र खडौन में फागुण वदी १ से चैत्र वदी तक जुवार व मूंग भी बोया जाता है . गेहूँ चना की नये जो महा वट होतो १ मन का ५० या ६० चल्कि ८० मन तक होती है . मगर बारस की कमी से हर साल नही होता . सुल्क सिंध व पोकरन वालोत्रा वगैरह से आते है . व परगनह वाय से मारवाड़ व वीकानेर को जाता भी है इस काम में हद से कमाल कोशिश है ज्यों सलहर तरह की होती है . व उम्मेद कबि है कि अगर बारस खा तरखाह हर साल होती रहे तो ई. गेर से आना बंध होकर हजारहां मन जावेहीगा क्योंकि अब जागीर भोम सीरन में भी होते है . जुवार की नये वे सुमार होने के सिवाय बुज सीतयर द्रगोर वगैरह में ये खूबी बढ़कर है कि १ दफा बोवने से १ ही साल में ४ या ५ दफे फलती है वसंत कि बारस होती रहे . इसमें १ दफा का हक पूरा व दूसरी दफे को

दोही कहते हैं हासल कर्म तीसरे बोदरी का हासल माफ चौथे बुहीगायों को चरने है उत्तम को मकेहाली भी नहीं लेते पांचवे काल वीजुवार किसी काम का नहीं जमवर भी खावै तो मरजावै ॥

हकूकराज साख उनहाल का हिस्सा ५ या ६ निखचा व जहा हिस्सा ज्यादा है तो भी ऊपर की लगान से इतना ही रहता है और साख सीयाल में पल्लीवाल व जाट विस्रोया से लाटा का तो ऊपर लिखये से १ हिस्सा ज्यादा और जहां खारेया या चांचडीया का कुता होता है तो भी हिस्सा ऊपर बमूजब है और रज पूत या सिधियो से जहां हलोटा है फी हल ३ रुपये से ४० रु० तक नगद दे और पट्टे के गाम थे सो खाल से होकर जो बहाल है गामो के नकमे खे है और सम्बत ६ में गैहंवां का ४ हिस्सा होकर कणवार पल्ला व गैर लाग चूट डूई सिर्फ ७ कणवार बहाल है १ देवीकोट हजरी जेठामल्ले व गांव ऊंडा सिपाइ लशकर के मुंड कटाई में थी सो जोगे बीखे के है व गाम पीथोडाई चावक सवार जोरावरखा के भूमकी एकज में है व गाम मेधा व देवतकी की पाट गोवाल जीरा के व गाम नहडाई खधारी जमादार जादखा व तेजांनीया के व गाम खावलसर हजरी जीपनजी रामजीदासजी व सुजाणियां के व गाम रामगढ हजरी रधाकिशन के है और लाग पल्ला जो भोग मन १ पीले ५३ मे ५१ थी जीके गंगाजलीये का है सो अब भाव गांमों के भोग में सो कोठार से करा दिया है व ५॥ जिस हजरी की चिठी कर दे व ५। जामडे पल का था और ५१ गंगाजलीये बमूजब दीवान के सोई का है इस वरस के सिवाय दीवानी की लागे बहल जो फी मन कच्चा पर प्राध आना व हलोटा मे फी हल ४ आना व कूता के फी बनी ५१ एत का सम्बत ४१ से ५ आना ४ पाई नगदी कोया सो तथा विधा की नात्र लाग-

सायर के महसूल व नोकरों की तनखाह व जमीन के बिकाय व इजारा ठेका वगै
रः २ पर है सो श्री दरबार में जमा कराई किन गद्दी तनखाह की जावै . और भोग
का नाज श्री कोठार पहुंचावें जब नाम खिड़ाई का मन १०० का ७ रुपया है .
अलावा इसके . भीलां डुंमां वगैरह से खेती का हासल राज में अलीन है सो खेती
नहीं कर सकते भूखा मरते हैं और किसी ने किसी के सीर में खेती करी तो उस
सीर वी के नाम से हासल कोठार में आया तो भी ठीक नहुवा सो यूं चाहिये किये
लोग खेती कीया करे . जिसका हासल राज में लेना तो अलीन ही रहे परन्तु चौथ
ई कम हासल लेकर राज के भीलां डुंमां वगैरह में मज्जी हो जिसको दिलाया
जावै ताकि सबका भला हो ऐसे ही साध का हासल कोठार में लेना छोड़ कर
श्री राम कुण्डे दीया जावै और महन्त जी ठिकाने में मेले के दिन जो साध आया
है साधू मात्र को रसोई दीया करे वरमते साधू को चोमा से मेंठहरावै . तथा आय
सका मठ गुरु द्वारा का भी गुजरान वास्तः सुना सब तजवीज करनी जरूर है

हाल कहत सालीका

बूढ़े आदिमियों से अगले दुकालों की बातें सुनी थीं सो लिखने में तो क्या याद शाने
से ही कलेजा थरकाता है . जब यह तसल्ली दी जाती थी कि मूर्त है क्योंकि सम्ब
त् १८०२ के बाद सम्बत् १९। २५। ३४ वगैरह में जो भारी कहेत पड़ा था तो भी
वह दुख नहुवा जो सुना था बल्कि सम्बत् २५। ३४ में मारवाड़ बीकानेर की अि
याडुली थी परन्तु यहां तो अच्छे ही रहे . सम्बत् ४२। ४३। ४४ तक अकहेत बरबर
हये तो भी परवाह न करी सम्बत् ४४ के बैशाख से बृहत सी मवेशी मरने से बाजे पर
गनह का लोग दूरा भी ताहम दिल की हिम्मत नहीं दूटी थी . अब के बारस नहने
से तो कई बातें अगले दुकालों जैसी हो गई कि ३ साल में बाजे लोग तो ऐसे कर्ज में

द्वगये है कि अब तो शिर मुंडाने से ही नहीं मिले है और वृत्त भुस्त कलो सलुग
 सी वगैर हवा था सो कहत सली में गुंजार करते थे सोही नहीं हवा सादा सना
 वड़ी वगैर हवा स व केरे खेत डी के छोडे खाने नक नोवत पड़ची लाचार वहन
 से लोग सिध वगैर ह इलाक ह गैर में चले गये और मवेशी जो वची है सो ही
 वारस जल दी होने से रहेगी क्योंकि ऐसा घास पानी किसी परगने में नहीं है
 किस व देश का माल बचसकै वस खुदा ही हाफज है हा १ परगन ह नोरख में
 ४४ वर्ष से कहत नहीं हवा बलिक नाज वतिल व पसम महगा पिकने से लोग
 आस रहे होंगे और अब के भी वहां के बासन्दा को साल भर के खर्च लायक घास
 व नाज होगया है तथा परगन ह वाय व नाचना में भी कहत का सदमा कम ही
 हवा बाजे लोगो ने पाली में कच्चे कुवे बना कर माल बचाया और मौजे विकमपुर
 में कुवा का पानी खारा भी खिरावा था व नोरखडा में कुवे होने की उम्मेद ही नहीं
 थी इमसाल फजल इलाही से मोटा पानी विकमपुर में तो ३० फीट खोदने से
 ११ फीट व नोरखडे में ३० फीट में ५ फीट उखेड चढ़ी ऐसी ही गिराज सरवर सिंह
 संगत सिंह रा की दानी में कुवा हवा और गाम वजु वगैर ह में हो रहा है इति शुभ

दरवत व घास व चारा छोड

नाम अपार है परन्तु जो जो नाम असिद्ध व काम में आते है सो लिखा खेजडी
 पडुऊ गुणी लकड़ी किरसी जैसी पर मन करे जब सुलते से कदर कीमत नहीं पाई
 बैशाख में फल सो गरी कचीया सुका कर साग होवै ऊपर सूके सो खोखा करीर
 लकड़ी पायदार रक्त में काम आवै बैशाख में फूल तो सारा फल कच्चा सो कैर फका सो
 पाका चेर दो जात की १ कोकन जो कातिक में फले फेर काटे सो थान पाला ऊंठरु
 चारा दूसरी बडमहा फाल्गुण में फले कुभट के कुभटिया साग होवै वगुं -

अच्छा होवै बलकड़ी जलने में तेज पर सुले तुरत येईं डी बज २ गाम में है फल फूला
निकमालकड़ी बहुत उमदा आली नही कटे कांकोड़ा पान धाव पर मुफीद है लक
ड़ी घर में रहे तो कलह होवै बबूल बाज २ गाम में लकड़ी इमारत में छाल खाल रगने
में रांग सराव में काम आवै फल बाबलीया ऊंट का चारा व गूंद होवै है बाबली परगना
सम सहागढ़ में बहुत व परगनाह मुहनगढ़ बरावा तनोट किशनगढ़ रामगढ़ में
भी गूंद होवै है नीम पीपल बड़ सरस संदे सड़ा बाजे गाम में है गूंदी धजात दो
तो बागां में राय व बड़ २ सहरी १ वन गूंदी के लसोड़ा सो गाम ओला व गैरह में है
पीलवाण ३ जाल इफरात से है लकड़ी पायदार परन्तु है कम फल पीलू सूका को
कड़ मुफीद होवै है सिरगू गूंद होवे विलायती बबूल लकड़ी निकम्मी अरना
इकेरी नया होवै सोलवाण भागाणी फल गांगीया गूगलाण गूगल होवे दांत न बारी
हरता जीरणी फूलों में खुसबूह बीज तेजवान गाराठी मुराली दान पर डालने
से ओहरून होवे लांकस खीरखीप फोग लाणो लाणी शुक्ल व आक उपगारी
बहुत है ऊठ नही खावे द्याक उरोटा बंकी नही खावे खीप अकालो वण लवा
साकुड लगेर्ड लवी आकड़ी पनीर फोटा लगे शेवन बुरोड़ा सुरंभ अच्छी धामण
भुरट पीपां होवै फलीस हंड्या लंप कुरी लुगसीहे ग्रामणो गंदीया रोड
स खसज्यों टारा होवै व जड़ तेल में डालते है भुट हूं वर हूं कडे खिबाई हूं
द्राव मखणी भोडसी वोभरीया हूं डाभ थंडा में भरे कल कलमां होवै वाणो
मोथ जड़ में खुसबूह घीटी हूं रात डीया खड बूकन काय बद्रफ कुतियो रकड
पूडर पूंछीयो मोरीया मिल अच्छी वूह रोह वूह अच्छी पीने अफीम जहर उत्तरे
सोनेला सोनल घुडला कलांज दूधेली अम्ब जहर उत्तरे छपरी दो जात मधी
या नोली तिलकंट बीज काली जीरी कड़ लुथ लाठीया रांवस सपत चमकश

ऊं योने लडाई होय मोलवी मुराद पली

गायके पेट बुटने पर पाते है माशा उ-काली किल दातन अच्छा सलेरी चग ह्य
 र बांधी होवे बीसुनी- हाड का खेत उ कटारो बिडी रोखेत वगरीणाम भे वगरी जग
 ल मे होवे- चदेला बह गुणा रत्न जोत उ सनावडी राती धा जावे साठो- लोलरुह
 पचमिटे- हिलडा काटी भकडो धकडी ओइन देकर ह- भागरी बीज उटीग
 न दोधा खीर खें लगे हने वप जो छिडनी बुई स्याह व सपेद वादी पर बांधे फेल
 दोजात गेहडो ममामोली दोनो ककडो सरातर, लातर उचेली ईकड
 खसरा उजात धामासा खार द्रेवल- कोतक वलत- में होवे गायनु मुफीद
 भागीतधे । नाहसेतपउतरे क्वदत दातपकरहे आधीमाडा कपुतण जलभग
 रा कालाभगर कुटक- चलफूली आफू उतरे चुंखो वहे फोड जले पर लगावे
 खीरोलिया उ गदा गदीया कनाभुट- खुमी नागल्ल वनमेथी वनहुससी
 घोडाल जोसनाय कवाडीया गोरखमुन्डी पाडल- सुवा पीलवाण गोलियाडा
 फलगोलामीठी तूसरा जो इन्द्रायणके तुवाके बीज मीरा करके नाज मे मिलाय
 खाते है व घोडा भैस को देते है वहडिया निकाल कर पांय पै लगाते है गाडरीया
 आख फुटणो सो ओकरु- करेला रीगणी अमरबेल कटोल बिबुकी दवा गिलाय
 कोडीया फली लगे पीस गुला जलबेलडी घोडा खाते है और ऊदी कनी वगैरह
 बहत सीजडी है ॥

इलाके जात में बड़े दरखत वधाने वरखवाल के लिये सम्बत ३ से आज तक
 बहुत से डकन जारी हुये मगर बारस के कम होने व लोगो की बे वकूफी वद नियती
 ने लगने नही दिये गाम नाचना बलाखामे नही कदने से खेजडी वे सुमार हो गई बाकी
 शहर के चोगदे चोकोसी मे रखवाल से बहुत से पेड खेजडी व बूल वगैरह के लगे थे सो भी
 अब न रहे मो इस काम की जिमहवरी कारो जगार भी लोगो को कर देना कि हरा रुखन

कटे व सूकी लकड़ी काम राज में आवे और बलीता जैसी बोलें जिसके ठेका के रूप में
 सेजगार में कटे और बीयाली निगरानी करता रहे . तथा बाजे गाम में श्री श्वांगिया
 जी या किसी देवता का श्रायन है जहां बोरडी वगैरह के रुख बन रहे हैं क्योंकि लोगों
 को यकीन है कि श्रायन काटने से नुक़शान होगा सो ऐसे होता भी है . ये देश जोग
 नी पीठ कहीजे हैं चुनांचै: देवी व ६४ योगनी ५२ वीर व भोमिया जुमार व सिध
 सानियां की समाधें व दली फकीरों की कबरें व रामदे पाबू हरभा गोगा वगैरह २
 के थान हरगाम में ५ दस होवैहीगे . अलावा इसके सम्बत ४९ से देहाती लोगों
 को समझाया कि त. की पियार्ड हरसाल लेकर सहाजोग में रक्खो सो जबही कहत
 साली हो त. खुदावो तो नीदान बढे और गरीबों की गुजरान भी होवै . तथा घर मकान
 की छत नलीयां की व अच्छे जमाने में घासकी की दुजर बनवो . और खेत का धोरा
 बांधो ही व दरखत लगावो व गाम में घर बंधे ज्यों वरतन रक्खो . ऐसी कई बातें कही हैं
 व हाकिमों जिले को लिखी हैं मगर जमाना अच्छा आने पर हमेशा ह पूरी कोशिश
 रहने से तामील होगी ॥

**नक़शा बीडयाने जोडको बीह कहते है जो
 सरकारी रखवाल हो**

नंबर	नक़शा नहरसा	नाम गाम	शहर से कोसर हस्ता	नाम जोड	तारिह कोस	नाम घास	कैफ़ियत
१	जे.	जैसलमेर	१ से ५ उत्तर	करह	१२	सेवन	सम्बत ४९ से बाशत बेला खर्चे को ये जोडकी या सो बडे फायदे व आराम हूये . राजमें घास खरीदन होने से लोगों को आधे मोल

						मिले है खेजडी वौर रुख बधने से सब जी के सिने पऊठो फीलो के चाए का सुख हवा भव मन शा
२	रे	से	चोत फी	बीह	रे	है किराज मे घास कटे सो उठाने बाद हो लो से वर्षो होने तक शहर कामाल चरने को सावरु बमूजव लाग बीह काले कर जे ठवाई में पानी पीने काना लबता या जावे तो बड़तरह से सब का भला हो चोत फी से बास होने से शाम हीने बाद का तिक सु दी १५ तक और ते भरी पालावे फी भारी लाग १७ रूप या मे गज धर चौ धरो वगैर को छुट भी है व चोग का ७ रु ० बेल १ रु ॥ कुल १०७ रु है सो ऊपर लिखे बमूजि बहोने से प्रागो ज्यो १००७ रु से ऊपर होगा सो राज मे घास कटा कर हर साल का लार की दुबना या जावे जो कहन सालो मे काम धावे मूल एज सागर का चहा लो मे वागा के खर्व को घास कटने बाद लोगो को बिला लाग छुट्टी होती है
४	रे	बीषो डार्ड	१२ दिग्ग	बीरु	रिव बहि	
५	रे	सागांणा	पूर्व	सागांणा	४	सेवन घास कटे सो उठाने लोगो को छुट्टी बिला लाग होवे है ॥
६	स्वाभा	स्वाभा	१२ दिग्ग	कीन्नु	६	सेवन करा ह्ये नही हो तो यह से घास तवे ले प्राये फेर छुट्टी लाग नही ॥
७	सम	सम	१५ रे	त-सम	३॥	एव बह लुगसा कोट के खर्व कभी शतबेले खवाई जाने बाद बिल लाग छुट्टी

८	खुयाला	खुडयाला	२०पमिदम	त्यास्त्री	२	खिवाई	रे
९	देवा	देवा	६उत्तर	देवा	५	खिवाई	
१०	रे	पलुध ५गाय	७उत्तर	ऊपरला	४	गविया	येवीहिसिर्फघोडीयांकेचरनेकोहैजिससालघास
						संघना	यहांनहीहोतोदूसरेजगहजहांअच्छाघास
							होघोडियांभेजतेहैंतथाइसकेनजदीकेमेंघास
							कटाकरकालारभीवनाईजातीहै
११	बे		७५-वा	खरीमा	८	खिवाई	ये ८हीवीहकदीनीपकेहैंलोगोंकेमालक
							नेकीछुट्टीहो जब लाग जो दालकहतेहैं
१२	से		रे	वटीया	२		जिसकीसरहमुनासिववक्तयानेमेंसे १
							से ३ का १रूपयावगायवैल ७से ३०का ११६
१३	खभा		८५-ने	कुज	८		छांग १का १५ नगदव १दिनकेबिलोना
							काघृत १जोटीऊन १वेडीजटकीलेतेहैं
१४	रे	खभा	११रे	हरि	३		सो १० जनावरकीगायकेहिभावसेनकर
							हीलेनाचाहियेघृतऊनजटनहीलेना।
१५	रे	दामोदर	रे	सेन	१॥		आमदनीवटीयाकीतोठा नराजश्रीकेशरी
							सिंहजीकेनेरे बाकीखासतबेलेयाखजा
१६	रे	रे	१०रे	कुछरा	२		नेजमाहोतीहै रववालाउबीयालीअगो
							ठकेदारथेअबघोडासुधाकोतनरबाहमिल
१७	रे	सिपुल	८ने	मुहारे	२॥		तीहै। खिवाईकावाजिबहै कि इससेघोडा
							दीनावबछेरादूधबोडतेहैवरखाभीजोर
१८	रे	दवीकोट	१२पू	अंवी	५		वानवगाथेखरीरीव्यापेघृतज्यादहोताहै

१६	जे	बासनपी	६	पूर्व	सिचन	यहांतोलाठी ठाकुरसाहेब की घोड़ीवसे हीगामलाएलाभै एजश्रीमानसिहजीकी घोड़ीयाहतीहै +
----	----	--------	---	-------	------	--

जिकरचौपाया

दफे १७ अकसरलोगोंको गुजरान्भीमवेशीकी पैदापरहै औरइनबख्तमें वना
इसअमने रखतेभीबहुमहै परगनसहागढ़में महधिकमहो तथा ठाकुरराज
श्रीकेशरीसिहजीकी तबुज्जहदकीशिशसे मसलमीउमदहोगई जुवावे महिप
का मोल ३० रुपयेसे ३०० तकथा बहकोहावत योकिजीतावेनो यामरा अबदेलोज्यु
काममेंलेनेसेमोलयोगनाहोगया तथा बैलभी लदनेवहलगाडी लायकहोनेथे
सोअबसरकारी थाटावरीरहकरथा लायक होनेसेबाजेजोडी रुपया २ ढाईसौकी
होतीहै और गणभैरोंकी थाटांराजमेंदधनेसे चत बैल हजारोंरुपयेकेहोतेहैं
और ऊंटनिद्रायतउनदासहत्सनपरयनहसहागढ़ - घोरडू - सममें थलीयाजो
कहावरकमलेकिनतेजरोवबमूजिबवहुतहोतेहैं कीमत ६० रुपयेसे १५० रुपयेतक
वफिराहवा ४ या ५सौमेंबिकताहै सिंधकेअमीर दसग्यारहसौभीदेतेथे सिफत
चलनेकी श्री बड़े हजूरश्री गजसिहजीके वक्तमेंकोकवाचनामीऊंटजेसलमें
सेजोधपुर १४० मीलचारपहरमेंजाता उसपरबैठनेवालाभीएकहीसख्खाभित्री
नामजानद्वया - और मलीरीयानामी ऊंटपर मुहम्मद फेरलीया रल्ला की बालमें
बलोदादरीतकजो २२कोसहैजातावरोरीखाकर पांच छ. घंटेमेंपीछेजाताथा -
इसबालकेफिरेहवेऊंटकोअमीरवरईसभीपसन्दफरमातेहैं क्योंकिकितनीही
मज्जलहोचालनहीछोडता तथाअबभीपांच छ. घंटेमें ४४कोसजानेकीतारीफ
निसवतऊंटकीखानफैजुल्लाखाकीयाखाडरपोर्टमेंलिखीहैवऊंटभीइन्नाक हाजा

अकसरमलदारीअपेजीमरीकानेरकीफौजजिसेवहजसेसर्दारधीथेपोकरनयकरसाहेबकेबहकानेसेजेसनमेरको
लूटनेकेगईथीफरन्तुजेसलमेंकोफौजनेइसलारीगाममेंसाकरीकानेरकीफौजकोरोसीलतारखताईकिभागनेहीचनी

गाम राजगढ़ के ठाकुर अनूप सिंह के सीढ का था वसवाड़े ठाकुर मजकूर शर्त जीतकर सो जन से पीछा जोधपुर आया - जब वह ऊंट खान मौसफ ने बड़ी खुसी से खरीद लिया - अलावा इसके सरकारी व विसनोयां के सीढा का ऊंट कदाचर व खूब खरत बनेज होते हैं ॥

घोड़े - ख. देवा के खूब खरत व असालत में अजइद हैं व चलने में तेज व मजबूत बहुत होते हैं - चुनावै: श्री जी साहब सम्बत् ३० में डूंगरपुर परनीजन पधारे जब इन्ही घोड़े ऊंटों की सवारी चार दिन में अजूजी पहुँचे थे तथा खेत देवा की एक घोड़ी परोहित इन्दराज जी से जोधपुर में खीची व खता वर सिंह जी मांग कर महाराज सर श्री मताप सिंह जी साके घोड़ा साथ ४०० रुपये की सत्त कर दोड़ाई थोड़े घंटा में ४० मील पाली पहुंचने की तारीफ़ रपोर्ट जोधपुर व सफे १३ दर्जे हैं अलाहाजुलक्यास ख. खुईयाला हराज सर खरीगा उपरला वगैर भी घोड़ा का खेत बहुत ही अच्छा है ॥

बीड़ कराह को कवियों ने अबलही कजली बन कहा था सो सही हवा कि अब बत्ता पैदा होते हैं - चुनावै: एक हथनी के दो बच्चे उमर: तीन साल में पैदा जमे - जब दूसरी हथनी मंगवाकर इस बदन में छड़ाई जिसमें एक के तो बच्चा मादा पैदा हुवा - व दूसरी के भी होगा - श्री ईश्वर नाथ जी ले रक्खें ॥

चौपाये पर श्री ठाकुर साहबां की तो तबुजह थी ही - कि अच्छा चारा में माल को खाना व दत्त मसाला दिलाना व हर साल तीन चार दफा शिकार वगैरह के बहाने पधार कर नजर मुवारक से देखना वगैरह २ तदबीरं कराते थे कि राज में घोड़े ऊंट खरीदने बंध होकर फरोक हुवे - सो मात्र हिन्दुस्तान में जाने से मशहूर हो जावे सम्बत् १४ में चैत्र के मेल में भेजाये भी थे और अब भी श्री जी साहबां की उमर दाज हो खातर अछाह तकजू फरमाते हैं - मगर बेचना मना है - व खशिसा सो गात के दिये हुवे

दूसरे सुल्कों में जाने हैं म्या औरों लागों के ऊंट व बैल व घेरे बकरे ब्योपारी लोग खरीद करिके लेजाते हैं जिसका मुनाफा सागर के नकशामे है ॥

माल जो सालियानाकी लाग है व खडोटा

टफे: १८ जमींदार कोट खारा के महोर १५५) रुपया व रामगढ़ के खालत २१७) रुपया में २२७) रुपया व स्तारिया के छूट व खुडयाला के कोहरी ५२) रुपया व देवत की के देवत ३७) रुपया व कुब्डी के जंरु १७) रुपया व सम के भइये ५७) रुपया है सो छ साल के बाद जब ही अच्छा जमाना हो खाड वारस नुता विधा व गैरह रकमा मिलाकर रुके मयादी २५) ४ महीने के लिरवाते है फेर जा मोत लोग मात्र धरे की गाये बैल व १ सांड १ भैस की दो गाये व १० बकरी भेडी की १ गाय सुमार करके रुपया फाटते है ऊंट व घोडारु पर नही क्या कि खेड मुहीम में नोकरी दे है रुपये कच्चे ये दीये ६॥ के म्याद तक बाद पक्के ७॥ के जो चलन है लीये जाते है जागे साहूकार लोग रुके लेते थे सो कच्च पकाई व जीमण ३७) रुपया पीछे ७) रुपया व खर्ची सुद व गैरह मुनाफा वोहरवाते थे सम्बत १८०६ में राज श्री छत्र सिंह जी व महता साल मचन्द्र जी दीवान राज जो इससे वाकिफ थे रुकाले कर सब मुनाफा आय नही रक्खा राज मे जमा कराया जब से राज में जना होता है इन वर्षों मे नदेशी ज्यादा बधने से रुपये भी बधती होते है ताहम भी ७ सालने फी गाय श्राव ७) जाने से कम २ आध आना तक वराड पडता है और इलाक नहावलपुर में हर साल इससे ज्यादा तणी के लेते है लाग मुनाफा व गैरह कुल चीरे माल के सम्बत ६ में १५१७२) रुपया व सम्बत १३ में ८३३३) रुपये सम्बत १८ में २२६५२) रुपये वसे २६ में २८३५७) रुपये व सम्बत ३२ में २८५८५) रुपये व सम्बत ३८ में ४३५४४) रुपये के हये आय नदह ज्यादा हो हीगे

माल भर लोग इलाक गैर मे बैठे भी माल भर देते है सो कहत साली व गैरह मे वह माल ले आवे तो खडोटा नही लेकर मद्रद रातार रहती है मगर कई वरसों से वदनीयती

के बाइस रुपये कम भरने से बकाया ज्यादा होने सम्बन्ध के बाद ३८००० रुपये करीब तो राज के का १० या १२ हजार साहकारों के होंगे - तथा जमीदार जामोतों से चौहरों के आगे सर्त थी कि आसामी निकेड के रुपये जो हिसाब नहीं हुआ है तो नये माल में भर दे यही सम्बन्ध ३२ या ३८ में हुआ - और कोई सरदार बागी माल भरू का माल ले जावे तो फी गाय १५ रुपये व ऊंट साँढ एक के ४० रुपये माल में राज से वसूल दिये जावें - माल बाइ ने जमीदारों को बुलावे जब मोहरा के जामोत मूगरावा को अस्त ५१ पाघ १ थान १ भेजते हैं - व माल भरू लोग जब तक शहर में रहे बल अस्त सबको बसके लिखें जब श्रीजी साहिब के सलामे कसय जामोतों को शिरोफर्क कर कुल खर्च हर कोम के चौर में भर लेते हैं - कोम मगलीये जो जमीन राजड़ों को देने से जमीदार नहीं जिससे माल की एकज पटोल का जब ही आइ हो नजमने के १२ ऊंट की कीमत १२०० रुपये पक्के और दूजी लागे ऊपर बसुजिब है - तथा मुहार के तुवर उ सिपुल व हाडे के खालत मछे व मुंदडी के जावध भी माल भर है फन्तु सिपुल से तो सालियाने के ४४ रुपये व मछों से १५ या बीस साल में छोडे से रुपये का चौरा कराते हैं - और मुंदडी की जमीन थोड़ी सी व सम्बन्ध १४ में हजुरी गणो सदासजी को बखशी बदले में मेडी की जमीन दीवी तो भी माल का हिसाब बाकी ही है - यह रिबाज बंध कारके भूपो बरसात या तस्मै वगैरह जाहो मुनासिब हो तजबीज करनी वाजिब है - कि सब को आराम रहे व सफाई भी हर साल हो जावे - यह काम पुस्तों से नथमलजी पास है - तथा माल भरू व छोटे भूमियां से राज में हर साल की द्वांग दो जनावर लेते थे सो वाघालीये के तो नकदी रुपये बरसोत के समूल किया व चैवालीया जीवाल खासतबे खान्दलुके पडदार ले आते है - खडोटा जो खडचरा इलाकह गैर कोम वेसी परलग ता है कि इलाकह सिंध में चोमासे कौंडकी होने से सवेषी इलाकह हाजा में लाते हैं सो कातिक वदी तक रहे तो गाय ६ का ५ रुपये व झोली तक रहे तो आधा फेर ही लेते हैं -

* मनेदीवान श्रीभोथामलजी जिन्होंने बहुत बरसों तक पहिले आवकी चकालत की और फिर देशदीवान हुये पुस्तें न सेवजारत का सोदा इन्दी के सानदान में है और इस तवरिखके बनानेवाले येही महाशय है ॥ मोः सुरादखली

इसमें महोरारी मे मंगरखा गाय १०० व मुवाको ५० व खालतेरे मे मूला को ८० की ला
 ग बूट के सिवाय फी टोला ५ रुपया हक जमींदारी का में कुछ हक कामदार का भी है
 और कोट देवा वगैरह मे जमींदार को हक नहीं देकर कामदार ही लेते है व परगन
 तणोट के रोभा पर माल रहता है उसका खडोटी जाम ग्रामदरखा लेता है सो जाम
 से लिखालीषा है कि हिसाब में भर लीये जावेगे कुल पैदा ज्यादह ३००७ रुपये
 व कम ५०० रुपये कहत मे कुछ नही और सत फी साल १००७ रुपये होगा - इस काम
 पर विसा मंगन मल या कोई जावे सो ताल्लुके के कामदार साथ मालकी गिनती करके
 रुपये ले जाते हैं - किसी साल मालानी मारवाड वगैरह से भवेसी आवै है तो रजपूता
 की माफ जाट पल्लीवाल वगैरह लोगों से लाग वक्त मुनासब ली जाती है सम्बत् २५
 मे रजपूतां ने जाटां वगैरह का माल छिपाया जिससे सम्बत् ३४ में तलासी से माल
 जाटां वगैरह का सावत करके खडोय जिसपर वेई मानो ने बदनाम किया कि हम
 से खडनरालिया खैर सम्बत् ४१। ४४ में माल भरु लोग इलाकह मारवाड मला
 नी से जाटां वगैरह का माल बडतसा लाया व इकरार ही किया तो भी खडोटा नहीं
 लीया ॥ इति शुभम् ॥

दरियाव हकडा व श्रीतेमडारयजी

टिप्पणी: १८ किसी जमाना में हिमाला के पानी से दरियाव हकडा जेसलमेर से ज
 १८ कोस से गढ मरोट तक चौड़ा चलता था सो लेख तो नही मिला दन्त कथा है कि
 दरियाव के वाडस ईलाकह माड में जा कजा पानी की इफरात से गुलवाड होती थी
 कि निसानी बडत से गाम मे पत्थर की भारी पानीयां निकम्मी पडी है तथा दारे
 याव की जगह वीरान जगल उ पाली में वाज वाज जगह रेत उड जाने से सीपां सीगोटी
 या वगैरह मिलने से अनुमान दरियाव के चलने को होता है

लक्षा दरियाव के छखने का असल हाल तो ज्ञानीजाने मगर सुना है कि शायद ग्यारह
 बार इसी वर्ष होगा एक चारन मामडौया जमाना केत में दरियाव पार जहां अशुर रह
 ते ये जा रहा ७ बेटी आवड आदिजो सकती थीं उसरं की बदनीयत समरु चील हो
 कर बाप को साथ ले उडी सो दरियाव सोसन करके जेसलमेर से ७ कोस दक्षिण डूंगर
 पर आते ही बोरी बहन अगाडी हर्ड सो खोह में एक राकस को पकड़ कर फेंका सो
 नीचे गिरा जहां गोडा की घुरसे पत्थर पर मौजूद है : दूसरे वहिनो ने पूछा किते
 है पासब दिया कि मड़ा है . जिससे तेम डाराय व मुल्क माड से माड धनी ज्ञानी व डूंगर
 र परथान से डूंगरे चियां नाम कहीं जी सो नाग के ७ फन पर ७ कन्या रूप से दरशन
 देती थीं . फेर पुजारी गोगली भोवे हुवे सो डरने से च्छुद्री का दरशन होवे है . वीका
 नेर महाराज श्री राय सिंह जी यहां परनीजन पधारे जब दोनों राजे दरशन को गये
 महाराजाने च्छुद्री पर संका करी तब नाग के फन पर दरशन हुवा था . और कई
 बातें चमतकारी की बिरखात हैं जिसमें राजे २ मोका पर लिखी भी हैं .
 तथा यूं भी कहते हैं कि अडोड का बंधा बंधने से दरियाव इस तरफ चलना बंद
 हुवा . जब बड़त सी जमीन निकली सो सिंध में तो रे शाल वहे लोड वगैरह होने
 लगी इस देश में पानी से खडे थे जिससे खाडाल वही . इसकी एक सारवी है कि
 वल वहसी हकडो . तुरसी बंध अडोड सिंध में उसी सरखडी वहे मच्ची अर लोड ।
 १ ईश्वरजाने कब होगा . तथा सिंध की तवारीख में यूं भी लिखा है कि शूर
 याव मीठा महाराज शहर अलूर के किले के नीचे बहता था दलूराय के जुल्म से
 एक सौदागर की फारियाद पर खुदाने हदा दिया सो रोहडी भकदरके बीच में बहने
 लगा . इस बात को भी अरसा ऊपर लिखा व मूजिव हुवा है ॥

देश की पैदावार व दस्तकारी चीज

टिप्पणी: २० खाना व चौपाये व खेती व जंगल में गूगल गूद फलीस भुट वगैर का होल तो मौका मौका परलिरवा ही है तथा बागा में शंभ नारंगी अमरुद अनार सीताफल रायग खारका बेर नीवू जाबुन जभीरी करना दाख सहवत केला सूफ करोंदि गूलर सेजरा खाखरा महंदी रायडोडी बादाम वगैरह फूल बादव छोटी रशाल सेलडी सांठा सकरकन्द खरबूजे मकीया वगैरह वगैरह जो पानी की कमी से पेड व फल होते तो कम है मगर जो अल्लेग दिशावरो मे रह अये है सो कहते है कि यहाँ की चीजे बहुत ही उमदह है खास कर मिश्री शंभ जो एक फकीर वरक त बाले ने श्री अमर सिंह जी के वक्त मे लगाया था सो ऐसा तो कहीं नही है - तथा उसी फकीर ने एक पेड केतकी का लगया सो फूलता तो गाहे गाहे है परन्तु निहायत खुसबूहदार होने से किसी ठिकाने रईस या नबाब को सोगात भेजाते है - उसी फकीर ने जाने अमरबाव पर नारज होने से पानी कम कर दिया ॥

श्रीरमालीया के वाडीया में साग पात के सिवाय रारका व प्याज उमदह खास कर मौजे लुद्रवा के वारखत्रु का प्याज गुणकार भी होता है सो साहब लोगो व रईसों को भेजते है -

सम्बत १४४४ मे जनाव स्जीडंस पौलट साहब बहादुर व महाराजा श्री प्रताप सिंह जी साहब ने खनूर के सहस्र पेड लेजाकर व फेर ही मगवाकर इलाकह जोधपुर में कई जगह लगवाये है - मगर इसके फल तो नर मिलाने से अच्छे होंगे - तथा जानवरों के चमडे तो सिंध को जाते ही अश्व हड्डी भी जाने लगी - छत भी बहुत उमदा परगनह सम जैसा तो कहीं नही होता होगा ॥

दस्तकारी

सिलावटों की कारिगरी की सिफत तो पत्थर के काम में लिखी है वाकी हर एक करी गर अपना अपना काम करते है मगर तारीफ ज्यों नही हापस की कम्बल एक अर्ज की

जो हजारा गाम वरमसर में एक शरब बुनता था सोही मर गया - दूसरों को तसल्ली व लालच देकर समनाया परन्तु काम नहीं कर सका - धोती जोड़े व डपटी कम्बल वगैरह बुनते हैं सो दिशावरो में बहुत जाते हैं - लुहार चकमक का कड़ा व कली या ने मोचना अच्छा बनाते है - खची की रंगत झाल मजीठ की सिंध अमरकोट को जाती है - व गाम सागड में जाजम भी रंगते हैं - कोली मुसल्मीन व चमार देशी सूत के रंगे धोती जोड़े पाग बनाते हैं - ईलाकह प. में कमी लोग ऊंट बकरी की जंढ व भेड़ की ऊन से बोरी बोरे व सतरंजी खडीये बुनते हैं - व और लोग ऊंटकी सजाई तंग मोहरा मोहरी गौर वंध वगैरह उमदा तैयार करते हैं - व मौजे नोरु में एक जना सूत की दरी वगैरह भी बुनता है - गाम कनोई लुद्रवा मोहनगढ़ विकमपुर के सूया रऊंठो घोड़ों के पिलान अच्छे बनाते है सो सिंध वगैरह में जाते हैं - गाम शोखासर व खुहडी में कुम्हार मिट्टी के वर्तन पोकरन से भी पक्का बनाते हैं कि उसमें ताँवे पीतल के वर्तन जैसा घतरहता है - गाम भू. भोपा देवी कोट के भील मोसम सरमा में जमीन से शोरानिकाल कर इलकासा वारुद बनाते थे सो अब सिंध में गये हैं - गाम भेसड़ा में चमार मोची चमखड़े की कोथली जो थर्डे का काम देवे बनाता है व खास शहर में मोची व गाम मंडाई में मेघवाल - चमडे के हक्के व थही व घोड़े ऊंगों का सज पर कसीदा रेशमी व कलवचू वगैरह का अभी २ अच्छा बनाने लगे हैं - और कारीगर मंजूरा की तनखाह फजर सुधां देनगी ७ रुपया थी सम्बत से सिलावटे वगैरह किराची जा रहे देनगी फजर सुधां ॥३॥ आने ८ पाई मंजर की अर्यात् ॥४॥ आने शहर में और रज में निस्फ और दूर भेजना हो तो भत्ता मुनासब वक्त वधा देते हैं और इलाकह जात में सरह मुकरर नहीं - खारा चूना का काम आगे बहुत ही पक्का था कि वाजे अंगनाया वटीपां वगैरह जो पुस्तों का है नये से अच्छा है - ४० वर्ष से यह काम कच्चा होने लगा - इस वास्तः पिलासतर जो बिलायती चूना मंगा कर इन्हान

भी कर लिया अब अंगनीयां टाका वगैरह बनाये जावेगं लागत भी कम है क्योंकि
३ हिस्सा नदी का बालू मिनाकर गारा ज्यु काम में लेते है ॥

बोली इल्मइनर

दफे: २१ बोली-शहर में जानो जात में शब्द सिंधी पंजाबी थे क्योंकि वहां से
आये व दुकानें कमाई भी वहां ही की थी सम्वत् १८६० से पीछे लोग हर ४ तर्फ
मुल्को में जाने लगे तो बोली भी हर आदमी की जुदा जुदा याने जो जिस देश में रह
आया वहां के शब्द मिलने से मिश्रत हो गई है इलाकह जात में जो परगनह
जिससे पडोस है बोली भी उससे मिलती है चुनाचै: परगनह लखा व महाज
लार में भलानी घाट व माड के ३ ही शब्द मिले हुये है परगनह सम व सहागढ
घोटडू का सिंधी मीरपुर खैरपुर से व प्र० खारा व तनोट सिंधी महौर व डहर से परगन-
किशनगढ खूयली बहाला नाचना सिंधी बहावलपुर से गाम वरसलपुर निकमपुर
याने परगनह नोरव का सिंधी बहावलपुर व इलाकह वीकानेर से परगनह
चाय व सीहड इलाकह मारवाड से परगनह लाठी परगनह पौकरन से नजीक
है तो बोली भी उनसे मिलती है और परगनह जेसलमेर देवीकोट फतहगढ
खाभारामगढ बाराहा देवा मोहनगढ में देशी बोली जात जात की जुदी जुदी
है ॥

इल्म

विनकुल ही कम है हां खास शहर में कोम ब्राह्मण पुष्करन्य में कई व्यास संस्त
त व कोम महाजन व औरही ब्राह्मण वगैरह जो पेशा साहकारि करते है हिंसा व
किताब काम चलाउ पडे हुये हैं और देहाती साहकार अपने काम लायक लिख
पढ लेते हैं व कोम चालों व सेवकों में बजे वजे कविता डंगली दोहे गीत वगैर:
सीरवते बनाते हैं - तथा राजे दूसरे लोग भी कला बारह खडी पढ कर ऐसी ही

सो भीष्मली आलसी बटोर है ज्यू ही कपडा सीवने की कल मंगाई सोनिकम्पी पढी है जिससे दूसरे कले आटा व तिल व गैरह की मंगानी पिलफैल मुलत वी रकती पैमायस के काम के वास्तः एक सरखा को बुलाया कि गानो की हृदबंधी व देशका नकशा बनावै ताकि सरहदों का जो भारी खरेड़ा हर गाम का जरूरही मियाना है सो आसानी से फैसल होकर कई काम राज व लोगों के फायदाके अटक रहे है सो निमट जावै : व इस काममे कई लडके भी हुमियार होंगे मगर बिषयारी अम्ली था सो डेढ बरषे मे १००७ रुपये वे हक खागया ज्यू पंजावी लुहार भी खा जावेगा . इंशावर के कागज कमीदा साथ आते जाते थे सम्बत ३६ में जनाव रजीडन्द कर्नेल पोवलट साहब बहादुर की सलाह से परोहित गिरधारी लाल फलोदी वाला से डाक विगार्ड थी फेर सम्बत ४४ चैव वदी से सरकारी डाक जारी होने से काम ही बढ गया व लोगों को बडे ही आराम फायदे हये साहब मौसफ ने कहा कि डाक के साथ राज का सवार रखना होगा . जवा व दिया कि इस देशमे चोरी धाडे का नाम ही नही है और जो डाक में कुछ हो जावै तो हमारी जिम्मेवरी है . अलावा इसके कई बातें दूसरा मौका पर लिखी गई है . दुबारा जरूर नही ॥ *

शाहरखाश व देश में इज्जतदारों व बडी कोम का हाल

दफे: ३३ जोकि भायी १ मोढे तो उमराव व सरदार हैं ही . ज्यू ही वीरता व दोतारी मे नाम किये चुनाचै : जंरुन अली ठाकुरों का . सो . मुक्या भावोंत बालकिया वारोंतरे जाना जतन करे मोटाकी धा मूलचन्द ११। नरनाडीया नीरुन कनाने ओओ जंपरा मन्नामन महाराण कडरे विलियो कल्याणउत

* महानामन जामान राजनेडा के साथ मतारना नाम जूरिया जस्से एय एन, बडा सवे उराने के वरगपालन नुराफना नाम मे देवा कि . किला इनका जगन निपानान मे नाबो रूप के कामान निये हुये बना जाना के थी को इ प्रचता पबु मइता साहर के इन्तजाम की खुबी दे । मो मुगस्थाने

। २। तथा बरूठाकरों का दो सालु माल अलंगा सेती बरू धरणी बहोड़े वरते नहो
माशो इक मेवो शाहनशाह रसोड़े। १। सो. शमी नजर भर आरख महियत दाख
मेघसे. नाडी साकर नाख. सरवत की घो साल में। २। ज्यूही डांगरी. ठाकुरा
का. सो. भगुयार्स भेट कवि लोहा कंचन किया मसरा आरवर भेट की कुंरा भाटी
करें। १। अलाहाजुल क्यास सब के हैं ऐसे ही सोदा का. दो कीरत वीरियां काह
ला दत विरियां दोहा. परनी जे सारी पृथी गाई जो सोदा। १। याने व्याह में गावे
हीगे कि सोढे सारी खोन कोय. तनोट के ऊनडों का जाम व सिरायां का जमा
दार भी सरदारों बमूजब हैं व चारन रत्नु पाट वार्ट तो थे ही अव कविराज भी
हुये. अलावा इसके मुसल्मानों में ज्यादाह. आदमी तो म्होर व वहादुरी में
राजड़ शोर इतवार भरोसां में वंभरे व कंधारी सिपाही हैं. तथा मुसाहबों में
महेश्रीयां में टावरी मुंता जो १००० वर्ष से दीवान यही हैं. व ब्राह्मण पुष्करना
में. परोहित व्यास आचार्य थानवी. व ओसवालों में. भोजा मुंता व सिंहवी
रहा. मुहा कि कुर्ब कायदे व किरियावर आही ठान अजहद हैं. तथा रैयत
शहर में ब्राह्मण पुष्करना व ओसवाल महेश्री तो अब्बल है ही. मगर
व्योपार में भारिये भी रंग भर खेले हैं. ब्राह्मणों में परोहित व्यास आचार्य विसा
केवलीया. पणीयां थानवी बड़े नामी हुये व कीयावर तफसील जैल किये.
१ लख भोज १ व्यास लालू गाम लुद्रवा. व सहस भोज ८ में १ व्यास घेरू २ घड
सी ३ रनछोड ४ बलदेव सम्वत् १८२७ में ५ लाल सम्वत् १८४० में ६ जेठ
मल सम्वत् ० में ७ परोहितां सेवाराम सम्वत् १८५२ में ८ केवलीया मूल
चन्द मयाचन्द सम्वत् १८३६ में. व पंच परबीयां में १ व्यास बल्लभ दास २
उदैराम ३ किशानदास ४ केवलीया इगादराम ५ परोहितां बिहारी लाल सं
* में ६ नन्दराम. सम्वत् १८७२ में ७ गिरधारी लाल सम्वत् १८३२ में.

८ जोसी श्रीरामगामडाभलेसम्बत् * मं. ८ शोका हरवंश सम्बत् / गामकहाले
 १० भागचन्द ११ किराडू गंगाराम १२ पणीया खटूमल सम्बत् १८ २३ मे १३ विसा
 चन्द्रसेन सम्बत् १७८७ मे १४ मुनलाल सं. १८ ८ ८ मे १५ शान्वाजे नन्दलाल सं.
 १८ ५ ८ मे तथा जोसी साचोरं मे हेमराज जोराज व देश वोहराहुवा नरहरको
 सहसभोज व बहूत न्यात करके फी मनुष्य २७ रु० दक्षणादिय बाद ८ लारव रु.
 महतेजीखोसलिये अफसोस है कि तालाव के सिवाय पानी देवा भा नही रहा
पुष्करने घर १२०० मचे ७१० शहर व अमरसागर मूलराज सागर व गाम वहा
 लेडाभले नख ८४ मे २३ है. १ सुन्नन परोहित रड्यानी गजा २ टंकसालो उ व्यास
 ३ विसा ४ शान्वाजे ५ केवलिया ६ जोसी वदल ७ पणीया ८ हरसं ९ किराडू १०
 रामदे थानवी ११ बोडा १२ कला १३ लुगांनी गढडीया देरासरी १४ शोमा १५
 चूरा १६ बासु १७ वटु १८ व्यासडा १९ नेषा २० कपटा वोहरा २१ डनाधिया
 २२ तिवाडी २३ कीया अता इसमें परोहित लखुवीरो व व्यास तीथिमो बाकी
 सब लोहडी तथा चौधरी परोहित धुडे ५ केजने ५ व्यास १ अर्चन १ विसा १ केवली
 या २ है न्यातको सिंधीमें मस्तान कहै है न्यात समधी लिखत सब की सलाह से
 व्यासभोपत लिखे सो परोहित सिरयत पास रहे व राज में काम पडे तो साह ३ परोहि
 त व्यास व लोडी की शाट कर दे वरोठी शोसर वगैरः न्यात होय जब सागी दिन
 शहर में नहेतरो व ४ गाम में चिढी भेजे शौरलहोडी वाले १ दिन पहले थिरमेसे
 ७ जगह श्रागन्या लेवे परोहित में १ वरसा को साथले २ जेठमलजी की कोठडी
 ३ बलाणी के छोटे ४ जगाणी देवचन्द के ५ गोपा की बहाली ६ डाडानीया के कूह
 टे शौर ७ व्यासा की छपरी तथा गामो बाले श्रागन्या चिढी के सेवाय १ ऊटलावे
 सो परोहित सिरयत व व्यासभोपत चडजावे तथा दरवणी लफसी पर छरूडया १
 ७ शैया खांड के सीरे पर इं ११ बुदीजलेवी पर ७ अनेसे २ रुपये तक हो गई

दक्षिण निःसरावा देवे जिसके जाति भाई वंदेजगर गनायत व सजे हेतु नहीं लवेनी
संगपन किरोक नखांसे. मोद व खुसी से करते हैं अगर बड़ी ही कनायत व शर्म
की बात है कि सगाई करके मिलनी वरान भात दाली तदपि फेरे न पड़े जिनने
कोई फरीक सगाई करके या बोड दे. ऐसे ही वेदा गोद लै दे कि चाहे जद फेर
दे. यह बुरी रस्म बन्द करने को कई बार लिखत भी कीया परन्तु कुछ भी न हुवा
स्या कितेक नखांसे संगपन सदा से होता है. नखांके नाम नीचे सी घा मोद वा
लों की वचोकडी सटेका है॥ इतिश्रुमम्॥

श्री साहबालों

मैं साहबने की अकल पूरी थी ता मुफको काम बहुत किये जिनके मन्दिरों
की तारीफ देखने लायक मकानों में लिखी है. राजा साहा महेवे नगर से ताने
पर सम्बत् १४८४ से आया जिसके जंदांनी है. वीदेसाहा की चोथर्य दरवार में
बैठक साहा का लकव पाया और काबुवा धरमान सेडाई में नाम रक्वा कि मोद
बंध व शिर सुड़ाये का काम अटका नहीं रक्वा. व थिरूसाह ने लुद्रवा में मन्दिर
वीदेसाह गढ़ का पठा बंधाया एक सरखा पठा से कुजी धसता वहाँ सो सोना की
हई थी थिरूसाह जब अहमदाबाद में गुरांजी वखाण वाचते धर्म लाभ कहा
तो सावका पूछा किसको कहा गुरां बोले जेसलमेर का धर्मा सेठ विमान बैठे बंद
ना किया. तथा सेठ गुमान चन्द जी के पाँच बेटों ने राजपूताना में सानी नहीं
रक्वा चुनाचै: उदैपुर जेसलमेर कोटा इन्दौर मालावाड रतलाम अजमेर वगैर
में हूबेली मन्दिर बाग नोहरे वगैरह मकानात को ५० लाख रुपया व गाम मेण
मल का व्याह बीकानेर करने में ६ लाख रुपया व सिंह तीर्थ सेवजा में १३ लाख
रुपया लगे और सम्बत् १८८२ में पीछे आये जब श्री जी साहब सामा पधारने का
कुर्ब व सिंहवी सेठ का खिनाब दिया. व खुस हुवे कि ऐसी रैयत है दानमल को

को पैर मसोना वसवाई राम कोजी व मोती लाल को पगमे दोली सा व दगैरह
 निवाजस करी. और उदैपुर जेसलमेर कोटा दगैरह के राजा को जनाना मुधां
 कई बार हबेली पधगये व जैपुर जोधपुर महाराज से भी सेठ कालकव पाया-
 हरसाल ६ लाख रूपये का मामूली खर्च था फेर आपस की फूट से वह ठाठ नरह
 आपआप का धंधा करते हैं संवत् १८ २८ मे हिम्मत रामजी ने अमर सागर के
 मन्दिर व बाग की प्रतिष्ठा करी जब पैर में लंगर वैडी इनायत किगा तथा न्यान के
 घर आगे जिपाद हये अब ३०० सिंह मे २० नरवां की मोकला ४८ मे ४९ है पाडा दो
 य १ जेचला में शरब बाले चामे १ जेदाणी मयाचन्द साह २ थिरपाल साह ३ गो
 ठी हेमराजे शिवदान व वरदिया में ४ मोजा ५ तेजसी । माबक विजेचन्द ६ ताते
 उ सुखमल व कूकड चोपडामें. दासोत तो ७ नरपाल ८ रायपाल खताणी ९
 कपूरचन्द १० जालमचन्द ११ सुणीया व धेमान १२ लालाणी जी व राज चम्म
 जीवणादास फेरकु. सिंहवी १३ अचलदास । सरूपचन्द । सूरतराम १४ चोरडीया
 नो परज १५ परमेचान हवरिया जोगी दास व तिशाणी १६ हेमसी १७ साहबसिंह
 १८ श्री श्रीमान जसरूप मनीमनरूप १९ मालु धर्मसी फेर सम्वत् २० अमर सागरी
 या गुमानचन्द २१ वडेर लकव काजी देवचन्द २२ वेगड ब्राजेड अणादचन्द स्यापा
 डी नोचलामें २३ पारख व धेमान २४ बाफणा गुमानचन्द जी व भनसाली २५
 मूलचन्द २६ विजेचन्द २७ गुलेबा तिलोकचन्द २८ कस्तूरा भनसाली कस्तूर
 षद मं० थिरसाह २९ घाडी बाल नरसल पुरीया जोधराज ३० वोहरा खूबचन्द
 ३१ स० नवरीया भवानी दास व बागचार ३२ लाडरवान ३३ मनरूप ३४ वकीमा
 री शिरदारमल ३५ वोहरा फूल फगर वहादुरमल ३६ गोधी ३७ राखेचा पेमच
 न्द ३८ न्हाटा लुणीया मनरूप ३९ बुर्ड ४० सामसुरवा राजसी ४१ फोफलीया देव
 चन्द है इसमें मुखीये चौधरी नीति नं १। २३। २४ तथा नव कहीजे सो १२ है

नम्बर १। २३। २४। २। ४। ७। १३। १६। २१। २५। २७। २८ इसमें मुंनोमो ४। ५।
 १३। १४ बाकी सब साहनामे हैं. बेटी का विवाह दिशावर से ही आकर जेसलमे
 में ही जकरें. और बेटे का चाहे जहां करो। की शावर सादी में बेटे का बाप बगेरी
 फ १ सेरू ७ तक माढे के तर्फ में वहेचे और सामी वत्सल का जीमन करे सो
 सेवगा सुधाजीमावे व बर घोडा करे तो सामी बखल के दूजे दिन पारनेत में भी
 दोनों को जीमावे तथा गमी के कार्य में लावण खाड ५१ कचा ऊपर ७) आने गळ
 में ७) आने न्यात में और मिश्री व ७) रुपया करे तो शहर व बरमसर रूपसी देवी
 कोट डांगरी याने ५ गाम न्यात में देवे. व मर्द को ओसर करे तो सेवग भी जीमे है.
 तथा जीवरास खमावे सो खाड मिश्री को एवज नारेर बाकी रीत लावन ज्यू. तथा
 मोकल व दीप में नाम अबल जंदांगी का होवे है. न्यात समधी लिखत संग क
 हे ज्यू काजी लिखे जब जंदांगी नं० १ सही करके कागज ही रख लेवे. राज में
 ओसबालों से लिखावट करावे तो भी सही नम्बर १ वाला ही जे करे है. व राज
 के धुवे के ३२५ रुपये वर्ष एक का व दंड नूता नजराना वगैरह काम पडे जब होवे
 जरा सेठ गुमान चन्द पर ब्राड लिखे जगामे आध बुट - तथा राज के १०० रुपये में
 ब्राड महेसिरीयां पर ७५ रुपये इना पर २५ रुपया पडता है और सगार्ड खोल
 साह हवा बाद कोई फरीक बदले सो २७०० रुपये ओलज भरे॥

महेसरी

मो सानी व सब तरह लायक वल्कि क्रियावरो में जियादा है. मगर गुमान चन्द
 के बेटा जैसा नाम करने वाला नहीं हुवा. हा एक जबलपुर में शेवारा म खुसाल
 चन्द वाले द्रव्य पात्र तो है और वहां रुपये लगाये भी परन्तु यहां कुच न किया है
 न उम्मेद है क्योंकि यहां आने से ही नफरत रखता है. श्रीजी साहबा बडा पनेसे
 धणीयाप फरमाय यहां बेटे को सेठ का रिताब व हर तरह से तसल्ली कराई.

जब सम्बन्ध ३२ में नाम की दुकान करी खैर

न्यात के आगे घर २७०० ये बहन से दिशा वंशये वहां ७७०० हैं सो भी राज व
 न्यात की रोज बरकर मानते हैं और यहां कुल ७०० घर शहर व परगनात मे वडे
 लोडे दोनो धडा व २७॥ पाडा के हैं खापा ७० व भोकला ८२ थी अब ६६ है मुखी
 या सेठ १२ में ६ मडां नामे का १ पाटवी सरदासोत दोय गोय दानी थं हारू दास
 व असैराज के १ घुरका १ जीवराजोत ये ५ तो टावरी व धीरन है और ६ ही साह
 नामे के दो विशाती कानजी व मदसूदन के दो केल किशनदास व मेघराज के
 १ जेठा १ बीमाणी इसमें कानजी किशन दास मुख्य हैं लिखत महे जरवैरः
 मे १२ साह डूवे हैं - व दोय हीज हों तो १ मडा नामे की पाटवी व सहा नामे की वा
 साती मद्रसूदन का करे व कागज़ ही इसके पाम रहे हैं सो अब मुनासिब है कि
 महाजनाउ वहां श्री लखमी नाथ जी के भंडार में रहे तो सबको वाकफ़ी इनकी
 वक्त पर मिले - तथा मौकलां के नखां का नाम जो मौजूद हैं अगाडी अंक और
 जो नही है जिसके सीषा जगया है - व धडे की निष्पत्ती वडे की दो आने छोटे की
 १ आना रक्की है = १ भूतडा चाचा = २ भूतडा = ३ भठडवी कानेरिया = ४
 नावधर धीरन हीसांनी = ५ भूसूदा = ६ हांगरा = ७ वायती कपूरिया = ८ डागा
 नहार = ९ चांडक जसेरा = काबा हरडुवेगंज है = १० मुंघडा नागोरी = ११ ना
 गंलरा = १२ राठी कौठरी जीवेर = १३ मालपाणी चोला = १४ चोलीया मु
 काती = १५ डां - गोलकीया = १६ डां - पशारी = १७ क - नवीरा = १८ रा - गुंगावाल
 = १९ रांवापेच = २० रा - वगडा = २१ रा - दलाल = २२ रा - गेहरीया = २३ लधडजा
 वर्धिया हरदतस = २४ वा - मशानिया = २५ टावरी कुलधरिया = २६ ताप्रडिया कंधारी
 = २७ चां सावलजुवारी = २८ नधीरन = २९ सां - च्चती दासरां = ३० मल्ल = ३१ सां -
 लोहीरा = ३२ सां - म लरीरा = ३३ म घलांगी = ३४ मां देढीया = ३५ फोफलां पाजां व

धीया मंडलरा = सेठी मुंकार केले हेमराजरा = २८ करवा खोली = ३० सां० उजल
 = ३१ रा० सांगडीया = डां० नहवरीया = ३२ से० साढडा = ३३ धूतगंगूर = हरकंठ
 हडकुटीया = ह० आप = ३४ म० महेरा = ३५ म० मुहणा = ३६ मल्लकोठारी = ३७
 धलण देहीया = धूत = ३८ रा० काजलरा ईसराणी = लोड्या ढक = ३९ सांग
 भईया = ४० म० देहीया सांगडीया = ४१ आगघणा = ४२ म० जेठा नरसंगरा =
 ४३ रा० सतल = ४४ म० दुठी - खासट गोरोगीया - ४५ डां० कुलधरीया जो सहा
 गढीयाई = ४६ का देवानन्द = ४७ चा० वजाज चांदाणी = ४८ मंत्रो = ४९ सोनी
 लहबीया = ५० मा० लोलाणी = ५१ चां० जोगड़ - रा० लीलाणी = झांवर - भ० दि
 लवारी = ५२ रा० लाठीवाला = ५३ म० हाथीरा - ५४ खा० दुर्जन = मां० परवतरा

न्यात संधी कीया वरथा येजब तो सब नख वखाड गले व न्यात जीमे वलांव
 एनालेर वहे चेजब १२ सेठां को खुलावे है - और सूवसोज माणात नखताणी
 वगेरह में जीमे तो सब न्यात जीमें तो सब न्यात पण बुलावे भाई पडो सी गना
 यत् भायं में वहे चणा व बटा भी और से आधे है - तथा सगाई खोला बदले
 तो शीलज नरे - त्या - ब्रह्म भोज फलबंध वगेरह करे सो १२ सेठों से पूब कर
 या पुष्करनी के चौधरीयां से आगतिया लेवे - दक्षिणा महानामा में चांदी सं०
 २२ सेड्डे जब ब्राह्मण से लिखा था कि दिला दक्षिणा रोठा दाल जीमन में उजर
 नहीं करे - तथा कीया वरी पर ऊपर की लाग व वहे चना हद से परे हो गया है
 व और ही रोते जो जो वे जाई सुधार होना जरूर है - तथा पोकरन के महेसरी
 यां ने कडामनुष्यों की मूठी बात प्र गोसाईं वसे कहकर लिखत किया कि जेस
 लमेर हेंय नहीं देनी ज्यूही कलो नो दे भा - और सबाल महेसरी कहते हैं कि हम
 पोकरनिया के पीछे हैं और धारीयां ने सदा से संगपन करना किया इसमें तीन जग
 ह इजाजत दर बडे शरमन्दे हैं - यहां से सम्बत् १८०१ में कामदार व १२ ही सेठ -

श्री गणेशाय नमः श्री गणेशाय नमः श्री गणेशाय नमः श्री गणेशाय नमः श्री गणेशाय नमः

पोकान जाकर हरबन्द कहा कि पुत्रों का स्वादने मत लोडो परन्तु नही माना
 पोकानेया इलाकह हाजा में रहने वालों ने सम्पत्त १५ स लिखदीया था किलि
 खत पढा वगैरह था जेसलमेर में रहकार दुमारासे बचेगे - संगपन होना चाहिये
 सेठाने कहा ठीक है - पर यूही रहा - वहां के लायका शरक्स यदितोते हैं कि डोले
 ही बीकानेर जोधपुर लगये पिण ढाई सौ लडकी बंधती हैं कैसे निकलेगी किरा
 तरह लिखत फटे तो ठीक हो तथा यह वाले वाज कहुते हैं कि पोकानिया से छु
 ही डई तो जेसलमेरीया जो दिशावर से शिर्फ संगपन के लिये आते है सोही नहीं
 आवेगे देखिये सबक्या हो ॥

भाटीया

भाटी राव श्रीतणु जी के बडेकुवर जाम के वंश का महाजन आगे यहां २७००
 थे अब १२५ हैं मगर सिंध कच्छ तुम्बई में हजारों धर बडे हो द्रव्य पात्र वसाइकोर
 मे नामी ग्रामी हैं और शास्त्र बिलोकन करने से धर्म के पाबन्ध व सुधारने स्व
 प्रिये का अभिमान हद भर रखते है चुनाचै - उत्तम वरन हिन्दू व कोम भाटीया व
 जिस देश मे वंगाम का बासिन्दा है उनके भलाई व आराम फायदे के लिये वेशु
 ररुपये लगाकर इसकूलो तालाब कूवा मन्दिर वगैरह २कई पडबंध कीये व
 कर रहे हैं इनके हरतरह की खूबिया लायकपने की मुनने से इस बात की खुसी
 जियादे होतै है कि भाटी बशी ऐसे हैं तथा संसार उत्पन्न होने से आज पर्यन्त
 का हाल दूरीयाफत करने व अयनापने की निशवत ख्याल रखने में कमाल की
 या है परन्तु मध्य का याने वंश भाटी से यह कोम पैदा डई है असल वल में सुधा
 रे वनां मुज वगैरह का कुब भी ख्याल नकिया मालूम नहीं सबबक्या है हां गो-
 कलदास तेजपाल के धर्म फन मे से लखमौ दास खीमजी की सलाह से एक कूवा
 मै जै जायन मे बनाते हैं अब यकीन है कि जै से कच्छ वगैरह देश में वासन्दापने

का लिहाज से व तीर्थों पर जो जो काम किये हैं यहां भी करेंगी क्योकि हर साल वाजब व फर्ज है तथा मालूम होता है कि इनके भाट कई बरसां से नहीं हैं पारसाल जुनी पोथी लेकर दोजने असल वत्त समरु के यहां आये थे परन्तु यहां वालों ने कहा था कि बम्बई जाओ फेरन मालूम कहां गये ॥

परगनात में पल्लीवाल

जो गढ़ नासिणा में कोम ब्राह्मण ननवाने मसहर थे गढ़ चुरने से पाली इला कह मारवाड में जा रहे थे यहां ही महाघोर हुआ कि १ दिन में ८ मन जने उतरी जब विहर गये भारी ग्रोह गाम झोला में आकर पल्लीवाल कहलाये फेर इलाकह हाजा में हर ४ तर्फे वाने प्राहर से पूर्व ४० दक्षिण २५ पश्चिम २५ उत्तर ३० कोसके बीच में जमीन खरीदी व हजार हों रुपये राजमें देकर मंगलीक कराई व हासल ही देना करके ८४ गामों में २००००० घर सबजात के बसाये तथा धुंवा सरा आदि नहसी लगये यह खुदव गामों में रही थांके सिवाय मोदी वोहरे वगैरह जो इनसे रोजी कमाते सो इजारा भरते थे तथा मकानात उमदा बनाने के अलावा खड़ी न वज मुहार नावणी हरराजेंसर सो नरा कुक्का खरीगा बंदीया लांगेला काठोडी सीतसर लठीयर इसाल दगोरा देवा ऊपरला मुढेला सूजप टेड्या धनवा चोयीला खीसर बलासा साजीत मनचीतया वगैरह वगैरह नामी कील जो खंडी व उनाख शाख पैदा होने के सदहा कबजे किये और अम्ल रोटी वगैरह मनवार व ऊट छोड़े शरद वगैरह सरदारणी का ठाठ बदानारी वीरता भी बड़े जागीरदारों ज्यूरखते वंशादी गमी में वेसुमार रुपये लगाते थे जमीन का हासल व जिन्स का महसूल व लांगरक में के सिवाय रूंड नजराने सुकराने वगैरह हरतरह से जो गाम काठोडी में शमन्दिर बनाने पर वाहमी तकरार से ८४ हजार अलाहाजुलब्दास किरोडों रुपये सिर्फे जमीन ही की पैदावारी से राजमें दिये सोनाकी चिडीये कही जो ज्यूही सम्बत् १८६०

* परमेश्वर का खेला है कि आज दिन उन्ही पल्लीवाल धन्य वाने ब्राह्मणों के गाम सने फडे है और इनके मकानों पर उल्लू बोल रहे है कहा जाता है कि दीवाने सालिम सिंह जी ने उनको उजाडा ॥ ड० मो० सुपदाली

से १६०० तक उडकर दिशावरे गई कई गाम बीरान हो गये और बाज २ गाम मे रहे है सो एक गाम वाय मे तो सम्बत् १४ के बाद ६० अस्ती घर वचे बाकी तो मात्र गामों में इतने ही नहीं है वस इसके सिवाय क्या लिखा जावे कि इस देश से अन्न जल उठ गया फेर तो महारावलजी श्री रनजीतसिंहजी साहब राज ब्राजे थे जब से इन्हों के पीछे आने के बहुत ही उपाय किये सो अहले गये कि बाज २ गाम में कोई २ आया भी पर रह सका नही श्री वैरागाल जी साहब की उमर दरान हो सम्बत् ४० बाद भला आदमी ब्यास चतुर्भुजदास वगैरह को भेजाया और बहुत सी लागे माफ्र वंकर इज्जत बढाने वगैरह खातर लिखाई जबाब मे अरजी कागद भी आया कि जमाना अच्छा आने से हाजर होंगे मगर चार शाल से कहैत ही है सम्बत् ३ के बाद इन्हां के आने की उम्मेद पर जो २ लोग जाट बिसनोई सिधी वगैरह २ आये तो दूसरे गामों पुराने नया नया मे बसाये गये और इन्हां की इशितहार दिये कि अब भी नही आवेगे तो दूसरे लोग बसाये जावेगे न्योकि श्री जी हजर की मनसा मुल्क आवाद करने का है - जुनाचै - कई बार देरा करा के मात्र देश व गाम नजर सुवारक से देखे व हर एक को खत रखाइ तसल्ली श्री मुख से फरमाई यकीन है कि यह लोग भी आवेगे और जमाना अच्छा आने पर दूसरे तो आवे हीगे ॥

हजुरी

जो नैने मनवाश याने खाने जाद है श्री जी साहिबा की खाश खिदमतगारी के सिवाय मात्र कारखाने राज्य के शहर व परगनात में मुरत्तमारी दरोगाई किलेदारी व हवालदार खरीदार चपरासी कनवारिया बीअारी व सबार सिपाही खिदमतगार व घोरो का पडव वगैरह की नौकरी देते हैं २५० घर खरीदार गौड़ वगैरह कई जातके हैं महारावल साहिब के धमा व भाभा भी यही लोग हुये हैं - श्री अखैसिंह जी साहिब के पासवांन नैन शोभा कानेन शोभाए कई शोहदो पर थे अब भी अजीतमल तो शाखाना

व फील खान का दोगा है ऐसे ही श्री सुलराज जी साहब के पासवान खुसाली का
जीवन जी रामजी दास जी दाकरों कहलाये व ऐसे हयापात्र थे कि जहां स राजी राम
जी जहां राजी सुलराज इनका बेटा सेतसी तो कवर कही जाता और सतराम
जगमाल वगैरह कोटों में किलेदार थे वयौते अब भी हैं व गणेशदास कोठार तबे
ला का दोगा व कौशिल में भी सलाह कार था ज्यू ही अब पौता बलदेवदास सुतर
खाने व सांढां के वर्गों का दोगा है तथा मालजी तो नेक नीयत सन्तोशी याने येहू
गुराजी श्री जी साहिबों के पोशाक पधराने वगैरह खाश खिदमत बजाला कर
कैदारस का नकशा रजीडन्दी भेजने व मुसव्वर व फोटोग्राफ का काम करने व
व देशी डाकरी का काम पाटा बाधने में अदने बीमार को भी नित्य देखने व तोप
खाना सभालने व जूरुज का काम भी कोठार तबेला की दोगाई का देने वगैर
बहत से काम करने पर भी फुरसत में दीख रहा है तथा श्री गजसिंह जी साहिबों
ने जाई मालदान को हजुरी कीया सो रसोड़ा व शराबरखाना व घाटों का दोगा था
ज्यू ही अब पौता जेठमल है व बुरीदार रामसहा का बेटा गिरधारी तो श्रीसारी व
बागों का दोगा व पौता प्रभू दरवारी है तथा कौम मजदूर भी हमाल काहार फरस
बोबदार उस्ता चूनीगर भिप्रती गाडीवान व ताडफा कलावत इमों भाडों वगैरह का
दोगा व तबेला में कई काम चमारों की दोगाई वगैरह का देते हैं इनकी औरतें
भी राजमें कटयानी व शहर में दाई पने वगैरह की चाकरी देती हैं॥

कौम मुसल्मीन

परगनहनम्बर ७ सम में १७ नाचणा तक में जो लोग संधी कहाते हैं ३०। ४० वर्ष
सहिले ऐसी दर्दिशा थी बप्य - खीपोरा खोलरा ब्रोंन मुटों बार्डजै मुक्ता जुयादि -
मोहि खाण हूं बो खाईजै कूर्झा पुरसों ६० नीर बले जिणरी खाये हले ऊत हाकजै इध
पीजे अण्यारी जीवतामनुष्य भूतो जै सपशू पसमचा पंगरणा - तिणदेश जन्मतेजल

तवे रखे दो राधासण १ सो भूये तौ शवभो सुसयोसही है पगर हरतरह तमकाने खेतों
 लगाने वखातर परवारिष करने से आसदे हो कर कपडे शूत्र सजाई वगैरह अच्छे रखने
 के सिवाय शादी गमी मे हजारों रुपये लगाते हैं जूँही आदमी भी बहुत बध गये
 राजमें हजारों रुपये देन के अलावा खालसे की भारी फौजभी इस देशमें कामकेलिये
 येही लोग हैं तथा भारी कवाह त है कि मवेशी को अच्छे चारेमें रखनेवाले खाना बर्तों
 तौ थेही कभी न देने की नीयत वदसे इलाकह गैरमें जा रहेते हैं सम्वत ४९से टोक
 तद्वीर की गई है कि कइतौ पीछे आये व दूसरे भी जमाना आनेसे आवैहोंगे तथा
 इन लोगोंमें बडे आदमी का लिहाज व अहसान रखने की ऐसी मुर्वत थी कि खून
 तक कैसाही रुगडा हो भाई गनायत या भले मनुष्य मेड करिके मुदईसे माफ कराते
 थे और कोई सरखा मुफ्त उधार मांगने को गोरमें आया या किसी संधी पर आफत है
 तौ हर घरसे हैसियत मूँजव छाली बेल व ऊँठ तक देकर हाजतरफा कर देते थे सो
 भव कमीना बो कमीनाके वायस अब नहीं है यह हवा हो गई है वकौला सिंधी दो
 काचोकुंम कडाकियो सायर मरुगया तिरा तो बांहा पाहजी न कर सडबेया ९इलाक
 हाजा में यह लोग इतनी कौम है माहोर मंगलीया राजडरंद बलोच भईया वंभरा
 पठान लंघा जंरु कौहरी रहमा गजू कलर कटाऊनर खालत देवत कोटवाल चानीया
 जावध जोइया भुटा पडोड संमा संमेजा हीगोलजा फकीरजूंयोजा नौहडी मच्छा
 लाड धुकड सेख सय्यद टावरी सेरकजादा धुनिया तुवर भटी आलीसर पन्नू मैर
 सोरा सोरा धोबेचा खुई कमी दरस लखड सर नायक मकोल वगैरह वगैरह जो
 सिंधी कहते है ॥

अजायववाते प्रतक्षहै

बाजे साहां कावर्ग व चंगो बकरी भेड़ी को दिवाली से होली तक तस्याली करके
 साबे चार महीने जंगल ही में रहते हैं यानी नहीं पिलाने और पास नीला व तूस होतो

गोवा भी पानी नहीं पीती हैं सो तो खैर . परन्तु उनके चाल भी सिर्फ दूध व खट्टा ही
 पीते हैं धान पानी सुतलकनेस्त २ सायद प्रेत जून होगा . गैब या कंग का झालम
 कहते हैं सो परगनह सम महाजलार सहागढ़ थोट डू तो ईलाकह हाजा व परग
 नह जिवाई . खैरपुर व परगनह मिठडाउ इलाकह सर्कार झाली में हैं मनुष्यों से अट्ट
 वस्ती गौल व मवेशी व वहवार मनुष्य ज्यू है . बाजे बाजे मनुष्य जो इन्हों के गडा
 यत है सो इन्हों को देखे और दिखाय भी सकते हैं . तथा दुनियां में भली बुरी वर
 तने की कहे ज्यू होवै ही है . और दूसरे मनुष्य या मवेशी पर बाया या दाव हों वियो
 का लगे तो तुर्त या सुद्धत में बीमार होकर मर जावे सो उनसे मिलता है . परन्तु उनका
 गडा यत आकर फीणा नाखे उतारना कराके बचाय भी लेता है . कहते हैं कि इन
 के मालक परगनह सम गाम कनोई ख . मिठी अला में रहे है ३ गाम छोडियों की
 सीव में तो दिवाली के डीडे व अला में या बूजी के थान पर दीवे और गाम नेडान
 करालिया वसी में होली गोवाउ दिखलाई देवे है . सो कहते हैं कि मलीनाथ की
 होली जगती है . चुनाचै : ठरडा के पौकरने कायल हैं कि जिस साल होली ज्या
 दह होती है जमाना अञ्जा व गामों में व आराम रहेंगे . ४ फकीर सांघ पोतो की
 नवान से अवाज हुउ हुउ अहा हा सुनने से दिवाना कुत्ता व स्याल नहीं होवै व कंठे
 का असर न रहे . जिससे इनको १७ रुपया व पाग धान सीरना तो राज्य से व फी घर
 १ पैसा लोग देते हैं . ऐसे ही चेचक टांकने में विरडी फकीर इलाकह हाजा में हैं
 ५ देवतो के पस्वे व भूत भोमीये की वातें तो वे सुमार हैं . ज्यू ही जोगी राज सिंध व
 फकीर बर्कत वाले थे चुनाचै : फतहपुरी जी ने तो जैपुर के राजे को जी थाराम ने
 चूक किया उस वक्त अफसोस से कहा कि ऐसा इवा . व फकीर रक्षल ने कु . माली
 गडा . जो अगे किसी फकीर ने सुकाया था सम्बत १७ में मुकाम पर जाग के कु . मीठ
 करा दिया अला हा जुलक्यास हरयालपुरी लालपुरी खेंमानाथ महारलाल वीर

ये ऐसे अब नहीं है ६ चास मधीया से चमडे को रगे सो मधीया जिसका चडस व
गायके झाला चमडा की बरत सो गोहडी कु० मे डालने का मनाई परही २० प० के
गामो में है -परन्तु गाम जरुन झाली का कु० देवी के नाम से मालणसर पु० ६० मील
है उसमें ऐसी मध्माई हो तो पानी शूक कर कीडे सो गंगाजल डालकर तोबा करत
से अच्छे हो ७ सिधी लोग पैदल चलने में कमाल करते है साढा के पीछे न
मालूम दिन भरमें कितना पैडा करते है कोहरी गोह रामशाधमन बोरु लेकर
३ पहर में ४५ कोस सहज स्वभाव से चलता था ऐसे बहुत से है

कलमी फौज

दफे: २३ जो कि पलटनो में रिमाले याने कबायद फौज आगे कभी नहीं थी
भाटी सोदे वगैरह हिन्दू व मुसल्मीन देशी व काम पडे पडोसी इलाको के भी हाजर
होते थे - श्री लून करन जी कंधार से पठान लाये जब से श्री अरवैसिह जी के अहद
तक सवार व पैदल यही कंधारी बडे इतवारी रहे फेरखोसा जमादार साहब खों के
सदार भी रखे और श्री गर्जासिह जी साहब उदैपुर से पीछे पधारते गुसाई भैरूपुरी
का निशान याने पलटन साथ लाकर बेडा मुकरर किया॥

पलटन

याने पैदल का बेडा १ महन्त भैरूपुरी का बेडा जो गुरू महाराज का निशान सम्बत्
१८०० से है महन्त भैरूपुरी २ सावतपुरी ३ सतावपुरी जो कोट विक्रमपुर से सम्बत् १८००
में बरसंगा से खूब लडकर १५ मूर्ति के साथ कैलाश गये ३० मूर्ति घायल होने के बाद
निशान यहा आया ४ गंगापुरी ५ खुमानपुरी ६ धीरतपुरी अब है तथा गुसाई पदम
पुरी हिगलाज से आकर बिलग बेडा किया था सो चेला परवारी होने से न रहा
२ रंवार सडेखा पठान का बेडा किया था सो वेडदो पेश जाने से सम्बत् ८४ मे

पठान खलीखों जीवनखों को जो उदैपुरसे साथ आये थे सूपा गया - फेर सम्बत् ८६ में कंधारीखों कोटाबाला को सूपा - इसके मरे बाद सम्बत् ८८ में पठान मीरजीको सूबेदार किया था सोही सम्बत् २ में मराजबबेड़ा टूटा जवान वाघसिंह के वेडे में जरहे - ३ बेड़ा सूबेदार मोहकमसिंह अजबसिंहोत पुरबिया का सम्बत् ८९ चैत्र में हुवा - मोहकमसिंह सम्बत् ९६ में मराजबबेड़े भाई केशरीसिंह का बेटा बाघ सिंह सूबेदार हुवा सो सम्बत् ३६ में फोत हुवा जब से वेटा कन्ही सिंह सूबेदार हैं - ४ अरदली का बेड़ा सिपाई कंधारी जमादार केशरीसिंह पुरबिया व जसगिर युसाई सम्बत् ९६ में हुवा - केशरीसिंह सम्बत् २ व जसगिर सम्बत् २६ में मरे जब कंधारी जानेखों को जमादार किया सो सम्बत् ४० में मरा बाद - जं - बगुलाखों है - मौजे गोमट इलाकह पोकस्तन के गोमरीये महोर नाराज होकर सम्बत् १९ में आये जब ५० नामा शहर व हकूमतां में नोकर रखे - जं - कवारी व कादुरखों थे सो सम्बत् २३ तक रहे फेर मतेही पीछे गये - परगनह वायमें जो पहले से गाम व नोकरी में थे ज्यू ही हैं - कप्तान पूरनसिंह पुरबिया वहाबलपुर से सम्बत् १२ में आकर बेड़ा भरती किया सो सम्बत् १६ में चोरियों की तोहमत से टूटी - रसालदार सुलतान खों पठान सम्बत् २० में नोकर हुवा सम्बत् २२ में बेड़ा भरती किया सम्बत् ३२ में बेअदबी पेश आने से टूटा - दादू पंथी भंडारी भगवती दास का बेड़ा जोधपुर से आकर सम्बत् ३० में नोकर हुवा सो सम्बत् ३५ में पीछा गया - देशी रजपूत अरदली में व अहलकारों पास वगैरह नोकरी में हैं परन्तु एक जमादार नहीं के कारण बेड़ा कानाम चंही हैं - तोपखाने व जेलखाने पर पहले व शिकार कार में सर्वबलोच हैं इनके हवा लदार जुदे २ बेड़ों से विलग हैं ॥

रिसाला

सवार - १ सिपाही कंधारीयां पास तो छोड़े वारगीर थे सो सम्बत् ४९ से नहीं है पाइया

के पड़े बड़त काम देते हैं २ खोसा-जं साहबखा के घोड़े शहर खासमे व हकूमतोमे ये ज्यूंही है परन्तु कम हैं २ मिहूखा ३ पीरखां ४ साहबखा अब है • ३ जं फतह सिंह शिक्ख कारसाला सम्बत् ५ से है फतहसिंह के मरे बाद जं • बेटा विष्णुसिंह व भाई मशतारसिंह है दोनों के सवार अब हजरी सिपाही वगैरह यहां ही के रहते हैं • ४ जं मिश्रीखां दरियाखान का खोसा मौजे तरवतावाद इलाकह मलानी का रसाला सम्बत् १४ से सम्बत् १९ तक रहा • फुटकर सवार व पैदल देशी परदेशी शहर व हकूमतो वगैरह में कई रहते हैं परन्तु १ अफसर नही के बाइस बेडा का नाम नही है • शहर स्तनखाह पैदल सिपाही की चार या पांच रुपये व हवालदार के ५ रु से ७ रुपये व जमादार सवेदार के १७ रुपये से १८ रुपये व सवार के ७ रुपये से ८ रु १७ रुपये • व जमादार के १८ रुपये से ३७ रुपये तक महीने के हे और नोकरी कायदे से नही लीजातो सिर्फ श्रीजी की बड़ाई से परवरस है क्वही महतार लालजी ॥

अहवाल अशियाइनसा व शकून

दफे : २४ नसा अफीमतो बडी वडाई है लखों रुपये का कोठा व मालवा से जाता है खास शहर के ब्राह्मण महाजनों में बडे आदमी बाकी सिलावटो के सिवाय मात्र कोम व सर्दार आदि देहात के मात्र लोग खाशकर पल्लीवाल तो इष्ट के बराबर मानते है व कहते भी है वडो देवता के शरियो के वर है तथा १ दूसरा मिलै है तो बजाइ चाइपान के यही मनुहार है और बेटा पैदा होने व सगाई बिवाह व तिवहार मजलस यानी खुसी में तो गालवां व गमी उदासी में कोरे की मनुहार होती है व रंज आमना वल्कि बालबुर भी कटने मे अमल पाते हैं ३ किसी गाम जाकर मनवार करे तो गाम वाले सब तरह दिल के हजरी कोणा व वीमारों मे भी अव्वल दवा यह है कोई आदमी सुस्त

है या एक गधा या शकुन इलका हुआ या खींक उबारी खाई तो अफीम देवे होंगे व शादी
 कभी केवाट या सुसगर वगैरह कही जाकर आवे उससे अबल वही पूछेंगे अमल
 कितना लया वा बच्चे को भी ३४ साल तक देते हैं बल्कि बाजे बूटी का ही अफयूनी
 है अर्थात् हर काम में यही मुख्य है अगर सोचें तो इसके गुण से औगुन कई दर्जे
 बढ़ कर है कि अमली हमेशा दोनो वक्त बीमार व कम वेश देने लेने से कई तरह का
 दुख होता है शरीर में लवन खुराक व मगज हिम्मत घटे है वगैरह वगैरह कहां तक
 सिंगे जावे परन्तु इसके औगुण ही दिलों जान से यहां तक कगूल करते हैं कैरोजी
 कमाने वगैरह फरजी कामों से भी यह अबल है हां निकम्माई में मनुहार में दिल लगी
 व नौल चाल ठीक होवे है - तलाश करिके इस निर्धन देश में इतना खर्च लाहासल
 वह नै कबूला करने का बाइस क्या है तो वाहीयात फायदे बताये कि यह सती भदवक्त
 लड़ाई के मदद देता है वगैरह २ परन्तु मालूम होता है कि ला इल्म व निर उद्द
 आदमी थे और हैं जब कभी इल्म पढ़ कर नेक व बद् का तमीज़ करेंगे व उद्द में
 लगे जवारेवाज घटे हीगा जैसे मारवाड़ में घटा है - ऐसे ही तमाकू का बिसन
 सबके है कि खाना पीना खर्चना व मनुहार का रिवाज इद है फी घर व औसत धुरूपये
 का खर्च खान भर में होगा अलावा पैदा देश के करीब एक लाख रूपये की इलाकः खिंध
 व मारवाड़ व मालवा वगैरह से आती है तथा सराद का रिवाज कम है क्योंकि देहात
 में तों पीते नहीं अरु नहीं किसी गांम में बनाने वाला है अगर सरदारों के शादी में पीते
 हैं तो बीकानेर फलोधी पोकरन बारमेड से मंगाते हैं खास शहर में भी १ इतान कलासी है
 व पीने वाला भी सिर्फ सुनार पातरियां व कई सिलावटे मजूर हैं राज के मुलाजिमों में राज
 से मिलता है वह पीते हैं कलाल से ठेका नहीं है फी दुकान प्र गव प्रति दिन आधि
 यार व निवार को १ सीसा लेते हैं व राज में परी दे तो निस्क कीमत से तथा चर्श का तो
 नाम नहीं है भांग व गांजा लाडी देवानोख औला लिधवा में हे ता है पीने का रिवाज

भाग शहर में तौ व्यास भोजक बाजे श्रोसवार तौ हमेशा बाकी लोग मजलस मौका पर तथा गाजा अतीत लोग पोते है देहात मे मुतलक नेस्त ॥+

शकुनों कारिबाज अजहद है

जोतिष व मूर्त्त से बढ कर जानवरे का एतकाद है कि आषातीज को जगल में जाकर देखने से जमाने आदि साल भर में नेक व बढ का ख्याल कर लेते है और फेर किसी के कोई काम को मनशा हुई तौ दोतवार को शकुन देखेंगे जो दिल में ठाना वोही हुआ तौ काम सिद्ध अंगर सफर जाना है तौ वक्त रवानगी के दिन का तौ अब्बल बायें तीतर खरचील अरु दायें पालव हरण होने बाद दायें तीतर बायें पालव ऐसे ही मंजिल के अखीर में या दिन छिपते दायें तीतर बायें पालव हरण तथा बीच में दायें नाहर को उवेड़ा कहते है देखा तौ अतीव शुभ जैसे राज्य का बचन परन्तु इसको पूज करके कई पहर उहरना होगा और रात्री को बायें स्याल दायें कोचरी वहुत शुभ और बरखिलाफ रमानते है सो ठहर कर अच्चा सुगुन हुवा तो चलेगे तथा जखे या नाग या नीलिया देखा रात्र को नाहर या कोई बोला तौ नही ज चलेगे अतीव नेष्ट है हकीकत में शकुनों जैसा फल होवै हीगा तथा जानवरे के देखने व बोलने में वहुत ही बारीकियां भी निका लते है कि कोन सी दिशा में बोला वहां कोन बार है दरखत कैसे परथा वगैरह र मगर सही ऊपर लिखा सोही है सिवाइ इसके घर से निकलते ही शकुनो का ख्याल रखेगा कि कुत्ते ने कान हलाया या बिन्ली आडी फिरी या किसी ने खीकराई या आडी जवान किथ कारै दीया तौ ठहरे हीगा और गीतराग वगैरह शुभ आवाज याने तोष का चलना नक्कार व घडियाल बजना अच्चा आद मीसांमा आना वगैर को शुभ समरुते है तथा वसन्तराज की छायाके प्रवीन सागर मे शकुन भेदलिल है जिसका खुलासा है कि चक्रके घेरा टके ऊपरके घेरे मे पूर्व आदि दिशा व पतियों

के नाम और नीचलने ७ घेरों में पती अपने घर है या किसी के पाहुणा है सो अब्बल पूर्व दिशा का पति खेडु हीतवार दो ऐसे ही अनुक्रम वारसे अग्नि रजपूत दक्षिण राजा नैऋत वैश्व पश्चिम ब्राह्मण नायक वादशाह उत्तर भील अपने घर है अरु बाकी ६ दिन विलोम गती से अलावै इशान कौन के याने संस्वार को खेडु भील के घर उत्तर में पाहुणा इसी तरह सातों ही फिरते रहें और इशान कौन को धी सईस अचल है ॥

फलाफलम्

दिशांवा के पती की जाती स्वभाव से व पाहुणा जिसके घर है उससे व्यवहार बम् । जब समरुना अर्थात् राजा के घर वैश्व है तो रीत की बात है अरु ब्राह्मण के भील विरुद्ध है अलाहा जुल ब्यास तथा चक्र के घेरों में ओं क दिशांवाका १ पूर्व से ८ दिशा तक और बार १ दीत से ७ शनि व पर्ला १ खेडु से ८ इस तक जानना सिवाडु इसके ८ ही दिशा के बीच ८ विदिशाओं याने पूर्व अग्नि के बीच अग्नि और इशान पूर्व के बीच में लोह की नदी तक ८ ही नाम चक्र में मये शुभाशुभ हर एक खाने में लिखा है अगर ऐसी जरूरी है कि बुरे शकुन होने पर ही ठहर नही सक्ता तो पढ़ना चाहिये ॥

श्लोक

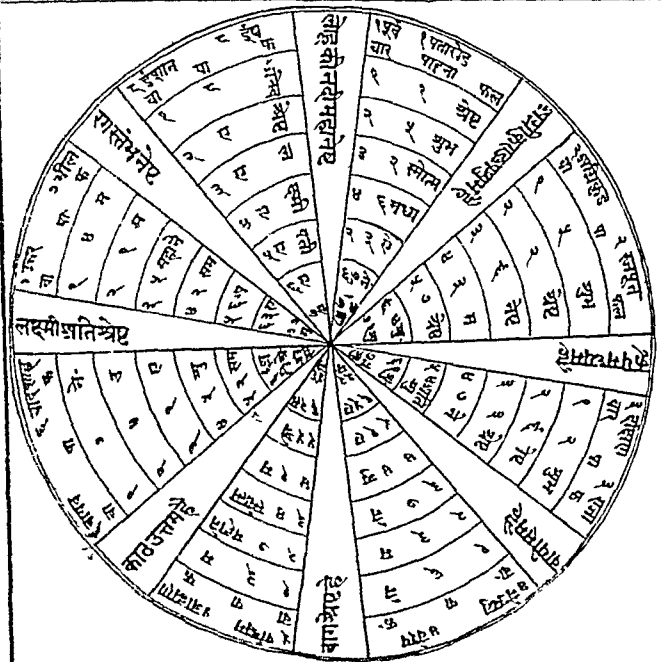
वारणस्या दक्षिणे कोणो । करकुटो नाम ब्राह्मणः

तस्य स्मरणा मात्रेणः अपशकुनो शकुनः भवेत् ॥१॥

श्री ॥ जो कि रभल शकुनावली अनेक है परन्तु वैष्णव के अन्याश्रय नाही होने को गौखा मीजी महाराज श्री गिरधरजी ने प्रक्षावली लिखी है कि सेठ पुरुषोत्तम दास के ८ प्रश्न का उत्तर श्री मद् आचार्य जी महाप्रभु जी ने दीये ज्युं ही फलाफल है सो अज्ञान मनुष्य से १५ तिथिन में ३ के नाम लिखाय संख्या में ८ का भाग ते बचेता अंक प्रमाण मन में चिन्तये कार्य की सिद्धी असिद्धी जानना

प्रश्न १ दंडवर्त कीनो उत्तर आशीर्वाद दीनो सो कार्य अतिवशुभ ॥

प्रश्न २ काशीयात्रा करेगे या नहीं **उत्तर** नहीं सो कार्ये सिद्ध नहीं ॥ **प्रश्न ३** वैष्णव काशीमें जावै सो कहा करे **उत्तर** तीर्थज्ञान विधि पूर्वक करे सो कार्ये अम साध्य जानो ॥ **प्रश्न ४** वैष्णव दुर्गा देवी के दर्शन करे कि नहीं ॥ **उत्तर** हसा अधिक है सो ना हो करे सो कार्ये न होवै ॥ **प्रश्न ५** विन्दमाधव के दर्शन करे कि नहीं ॥ **उत्तर** पचगंगा स्नान करिके करे सो विलम्ब सिद्धी है **प्रश्न ६** वैष्णव पचकोसी करे कि नहीं ॥ **उत्तर** इच्छा होय तो करे आग्रह नहीं सो कार्ये वनवा ॥ **प्रश्न ७** मेरे घर पधारिये वहां उतरिये ॥

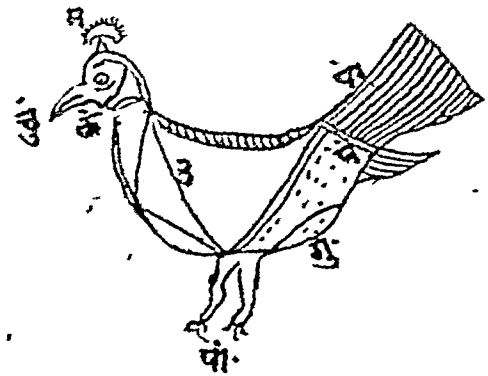


उत्तर शब्द सो कार्य तुरंत सिद्धी होय ॥ प्रश्न ८ वृजयात्रामें महादेव देवी आदि अनेक देवताओं के दर्शन करे कि नाही ॥ **उत्तर** वृज के सब देवता बैष्णव हैं सो जरूर करना ताते कार्य अथ विलम्बते होयगो ॥

तिथिन के नाम लेने से पहले पढ़ने का **श्लोक** त्रसुलोके सुयत् सत्यं यत् सत्यं वेदबादसु । पती व्रता सुयत् सत्यं तत् सत्यं मम दर्शनम् ॥ इति शुभम् ॥

चिडिया के किसी जगह अनजान आदमी अंगुली रखे जि
सके फलाफल का ॥ दोहा ॥ चिडिया

चंचल खं पंखे मरन करठे हो सिथ काज ॥
उदर भोजन गुरु धनं मस्तक पावै राज ॥
जो सुकलीणी पांय पड़े तो पक्षी आवै आज ॥



मेला

दृष्टे: २५ दिशावरी ब्यौपारी अने या कई दिन हज्जूम रहने का तो कोई नहीं नाम के मेले तपसील जैल है - कौम ओस वालों का सुबह से सांम तक बाग अमर सागर में - १ कार्तिक सुदी ३ । दूसरा चैत्र वदी २ । तीसरा भादों सुदी १० को इन्हों की अर्ज खातिर से श्रीजी साहब भी पधारेंथे । ब्राह्मण पुष्करना का बड़े बाग सब दिन वैशाख सुदी ७ व भादों वदी ७ व तलाव घरसी सर सांम का वैशाख सुदी ४ व आषाढ सुदी ४ व भाद्र वदी ४ व मन्दिरो में चैत्र सुदी ८ इ सोड़ा का । महेसरीयां का वैशाख सुदी ७ श्रीगंगा जी का जन्म बुधी के कुण्ड में न्हाय के अमर सागर आते है व भादों वदी ७ अमर सागर श्रीजी साहब भी अर्ज व खातिर से पधारेंथे - इसमें किसी को मनाई नहीं - ब्राह्मण व महेसरीयां का कार्तिक सुदी ८ अदला की पूजा मूलराज सागर का मेला था अब अमर सागर का है - व घरसी सर का फागुन वदी १४ शिवरात्री श्री महादेव जी के दर्शन को

श्रीजी साहबभी पधारते थे व वैशाख सुदी ३ नीलवास देरवनेजाते हैं - सरकारी मेले चैत सुदी ४ गनगौरकी सवारी मये लवाजमा घंढसी सर और तारा अस्त हो तो मन्दिर पधारे तथा दसहरा का आहन सुदी अष्टमी या नोमी को गढके चौवटा में शाम दर्वार डोकर हाथी घोडों की पूजा आरती के बाद चकरे पाडे वध होते हैं व सुदी १० परबाजा से बाहर चौगोनिया पाडानिकालने को खांडा की सवारी बडे ही ठाठ से होती है व श्रीजी साहब या बाल तलवार से पधारे हैं व नजीक परगनहके हाकिम भी मये जमीयत खेडू आते है - शाम मेले घरसी सर अक्ल सुदी ३ हरियाली व भाद्र वदी ३ कजली का सोम को तलाव भर हो तो गाढे २ श्रीजी साहब भी पधारते हैं - व भाद्र वदी ५ तलाव महता सर केशरीये कुंड का मेला महता अजीत सिंह जी तवाजः करते हैं - व भाद्र वदी ४ श्री गनेश जी का मेला तलाव गंगासागर का था - सो तलाव ईशरलालजी के होता है - व माही भाद्र शुदी ६ तलाव गजरूपसागर श्री स्वागियोंजी के दरशन व सुदी ११ रामदेवजी का मेला तलाव गुलाबसागर व शुदी १४ रावतसरीयां के थान - ये चहू मेले तीन जगह सम्बन् १३ से हये श्री बडे हजूर पधारते थे - व भादो शुदी ८ सरण का मेला शहर से उत्तर ४ की - जहां सिद्ध जोगी की गुफा है - चमार लोग सब रात शब्द बोलते हैं व चैत वदी ७ श्री सीतल देवी का तलाव देदान सर सम्बन् २८ से होता है - गबल तो रानीजी साहवा की तर्फ से पूजा को मये लबाजमा जाते हैं बाद कभी कभी श्रीजी साहब पधारते हैं और हर साल राजवी आदि सब सरदार मुसाहब पधारने से बड़ा हजूम रहता है महता नथमलजी की जानिब से तवाजा होती है - नगारखाना व तायफा वगैरह के इनाम मुकरर है - केशरहिन्द का मेला माघ वदी ४ या १ जनवरी को तलाव गंगासागर सम्बन् ३३ से होता है ॥

रवासकर दो मेले भारी है १ वैशाख का इसमे शतीत लोग शहर व नजीक

मंडलके बैशाख शुदी १२ को जावे सो भंडारा व रसोई न्यांत या किसी की होवै जि-
 तने दिन रहे शुदी १५ श्री द्वारसे व १ दिन फतेपुरी जीके ठिकाना की रसोई होवै
 हीहैं . व यात्री लोग शुदी १४ को शहर व देहात व मारवाड़ मलानी वगैरहके वहां
 जावे सो शुदी १५ सुबह को ब्रह्मकुण्डमें जहां अस्त भसमी डालने वाले से १० रुपया
 लेने व हर साल कुण्ड साफ़ कराने का वर्मसरके दाणी पर सम्बत ४३ से हुक्म है .
 न्हायकर बड़े बाग में आ रहें वहां बहुतसे लोग शहरसे जाते हैं दिन भर आनन्द व ठाठ
 रहता है . एक हाकिम मये जमीअत जावते को साथ रहता है . ऐसे ही भादो शुदी ८
 रामकुण्डको कई लोग जाते हैं सो शुदी को तलाब के लोरी पर शहरसे दूसरे लोग भी
 गोगाजीके थान पूजन करके बड़े बाग में आते हैं . इन दोनों मेलों का सामके वक्त तला-
 बदेदानसर पर बड़ा भारी हज्जूम होता है . यहां भी गोगा का थान है व लोगों को ऐत
 काद है कि गोगाचौहान की पूजा करे तो सर्प नहीं काटेगा . इसलिये हर गांव में गोगा
 का थान व खेजडी रूख होवै हीगा ॥

मुसल्मानोंका

भादों शुदी २ नोहये जोर्योंकी कबरें व सिलावटे मूला की तलाब पर व शुदी को
 सिपाही कंधारी वगैरह भागुरे गाम फकीर उवाया की जाल जिसके २॥ पत्ते खाने से
 दिवाना कुन्ता काटने का जहर न रहे जाते हैं ॥

मुतफारिक मेले

भादों वदी तलाब खेतासर पर महते सुदास वगैरह व सलीया की डूंगरी
 महते गौयदानी . व तलाब सुदासर सुदा विशानी . व श्रावण शुदी ५ तलाब सोनी
 सर सोनारे व तलाब दर्जी आई भादों वदी . दर्जी तथा जेठ व भादों शुदी १३ या
 १४ को मौजे लुइवा में याताजीके थानसीको देखने नहीं देते ॥

परगनातमें . माहीभादों शुदी ६ श्री स्वागियंजी १ गाम भाद्रीया में श्री भाद्रा

रायजी के थान जहां पोकरन फलों की वगैरह दूर दूर के यात्री भी आकर सई कड़ों चन्न सोने चांदी के चढ़ाते हैं - ज्यूंही मनोरथ होते हैं - दूजे श्री देगरायजी के थान जसोड कर्मले वगैरह नजीक गामों के लोग आते हैं व जसोडा टीमे मात्र गंमों में थान है जहां गम २ के लोग पूजते हैं ऐसे ही माहा भाद्र शुदी गंम वाय में श्री भैरू जी के भी दूर दूर से यात्री आते हैं मगर रात्रि को नहीं रह सके - तथा इन वर्षों में वभूता सिद्धने बड़ा भारी चिमतकार दिखाया है - कि नाम लेने से सर्प नहीं काटता व पहिले काटे के रखडी बंधने से अस्त्र नहीं रहता इसलिये गंम चारन आला में कालीयानाडे थान परमारवाड वीकानेर पोरवागरी सिंध वगैरह बहुत दूर दूर के लोग भाद्र शुदी ७ को यात्री आते हैं माह भाद्र शुदी ७ को श्री नेमडाय के थान नजीक गामों वाले आते हैं मौजे महाजलार से १॥ कोस तक ख्याले पर सहजनाथ की समाध फागुन वदी १४ को मेला में धाट वगैरह से बहुत लोग आकर चडावा करते हैं क्योंकि सोढे इनके कन्ठी बंध है ठिकाने की तर्फ से सीरा परसाट सबको जीमाते हैं गाम ह्वा चडीया पास काले डुंगरे नीयां गाम जानरा मे देवी मालण - वगैरह मात्र गंमों में कोई देवता या पीर वगैरह के थान पर परमाह भाद्र शुदी मे गांव वाले पूजते ही है - गांव खीया से १ कोस तक पनरासर हूगरी पर राहड पनराज जूरार के थान भाद्र शुदी १० खडाली पल्ली वाल वरहाड कुल वगैरह लोग आते हैं गांव रामगढ से दक्षिण ४ कोस तक जीअदेसर पर जोगनीयां के थान भद्र वदी १४ मालत मात्र व महोर व वाजे सिंध के लोग भी आते हैं ऐसे ही कोट खुयालामे जोगनीयां के थान कोहरे वगैरह पडोसी गांव वाले आते हैं ॥



जुहु अस्ता जुहार के थान तो कुब्डी वगैरह में भी हैं परन्तु मेला गंम कनोई माह भाद्र शुदी १ को होते है ।

श्रवमनसा है

कि मेले दोष को तरस्की दी जावे १ तो कुल देवी श्री भाद्रायारायजी के भाटी जात जाये पर नयेकी जात देवे व श्रीजी की तर्फ से पूजा करने को पन्डा जैसे को भेजे जावे व जादूते को

१ हाकिम मये जमीयत वहां रहें। बूजे वभूता सिंध के मेला में भी हाकिम का रहना होगा-दोनों जगह ठिकाना भारी बना कर सब तरह लवाजमा का ठाठ बांधने वगैरह की तजवीज हिसाब सुधान्त्यारी लिखी है। इन मेलों में दिशावरी ब्योपारी व और लोग खरीद फरोख्त वाले दूर दूर से आने को इश्रितहार मुल्कों में जनाव रजीइन्ट साहब बहादुर जी की माफत जारी करना होगा। व मिति भी शुदी १ सिंध के व शुदी ६ श्री स्वागियां जी के मेला की रहेंगे सो ब्योपारी दोनों मेला साज कर शुदी ११ रामदेह जहां हर साल आते हैं पहुंच सकेंगे। तथा सिद्ध के ठिकाने में पानी का कुएड या कुएडे का व कु-वगाने व पुजारी रहने वगैरह के लिये सम्बत् ४९ में नोरव के हाकिम को तजवीज लिखी भी थी परन्तु कहत सालियां से कुछ न हुवा। सो रईव की इच्छा होगी तो होगा। बिलफैल इच्छा मालूम नहीं होती॥

टकशाल

कदीम से १ ही जगह श्री जी के महलों नीचे छाप लगती है। शिक्का मुहम्मद शाही था सम्बत् १०१८ में श्री अखैसिह जी साहब जसोल से सोनी नाथा को कैद से छुडाय लाये उसने छाप तो वोही रक्वी नाम अखैसां ही कहा। जब से टकशाल नाथा नी ५ घरों पास है व छाप खोदते भी यही हैं। नमूना छाप १ तर्फ हिन्दी दूजे पास  फारसी हरुफ हैं सम्बत् का अंक हिन्दी व छाप आधी लगती है तो भी बदमास खोटे बनाते हैं पूरा छाप को टिकडी डबढी चाहिये। व तोल में ११ मासे का कलदार बराबर  में खार जियादे था ठाकुरां राज श्री केशरी सिंह जी ने खालिस चांदी का छपाय १७ आने में चलाया तो लोगों को तकलीफ रही जब एक माशा काम करके पूरे १० माशे का रक्खा तो भी ब्योपारियां ने माल नहीं मंगाया काम बन्द रहा। फेर फी रुपये १ रत्ती खार मिलाने की ठहरी व राज की छपाई भी फीसदी ३॥ रुपयां अलावः हक अहलकारों के ये सो छोड़ कर १॥ रुपया रक्खा था सो ही न रहकर ३॥ आने रहा था जिसमें ॥ आने-

सुनारों को टाको जाय घडने की महानत वनी बू कोयलों का देते हैं इसपर भी व्यापारिया लालच से खारबधवाया सो अत्र १॥ या १॥ रती होगा । साहूकार लोग मुमाई खानपुर वगैरह से नीणाई चादी की पाटे खुरीया रायलव शिक्के वार नग वगैरह मालमगाते है - वतुमार निकलाकर मुसाहिबो ने ह् जिन्स का निखे उहराया है फेर माल अच्चाया हलका या नवी जिन्स आवै तो सत्र के रोबरू तपास कराके निखे उहराते हैं जुने रुपये वजेवर कटकर नये रुपये व नये रुपये कटकर जेवर बनाते हैं । कलदार रुपये का निखे को झडाणा या बटा कहते है फीसदी ३ या ४ रुपया बधती रहता है कहैतसा ली में जियादह वकभी दोय से कम होता है तो साहूकार लोग ३७ रुपया लेकर अखै शाही छपाते है १ सुनार दरोगा जो तनरखाह राज से पाता है रुपये की टिकडी तैयार हो जब देखै कि खारबडोल पूरा है तो व्याप लगाने दे सम्बत मे सरकार दोलत मदार अगरेजी के हुक्म से रुपये मे नाम अगले बादशाह का निकाल कर महारानी जी कूहन विकोरिया कालिखारो नमूना साल नया होता था सो १७ ही का है

है । हिन्दी सम्बत हर अठनी चौअनी दोअनी भी छपै हैं । सोने की अण्ठी १० ॥ माशे की वअधेली पावली दोअनी की छपाई ७ ॥ आना है । सम्बत ४१ में इसको खूब सोचकर यह तजबीज करी कि रुपये डोल मे छोटे न करने वऔर ही वाजिव जानकार दो निशांनी १ तो मे पाडम्बर छत्र व कुल देनी की यादगार पोलब याने चिडीया का चिन्ह बधाया - जिससे रुपये फुटरे व अच्चे होने से दूर रहे ॥ आने व ७ रुपया बधती मिलता है व छपाई भी ७ आने बधाकर पूरा ७ रुपया कीया व जगा खर्च का कायदा भी बहुत अच्चा रखाया है कि नकशा तैयार होकर जिम्तरह जो चात समगनी हो मालूम हो सकै । तथा यह दस्तर है कि व्यापारी लोग कामदार की मारफत टकशाल मे माल तोल देवे तो रुपये दिन १५ व बकाया १ महीने में चुकता करा देने का फर्ज कामदार पर है ढील

हो तो सूद दिलाया जावे और वाला बाला माल सुनारों को देवे तो कामदार जिमें वार नहीं । तथा रुपया तोल में कम या खार जियादह हो तो सुनार को सजा कैद व जुर्माना कां होती है । व लिरवा लीया है कि खोरा रुपया च्यापै तो हाथ कटाया जावे । सुदा कि सब तरह से अच्छा बन्दो वस्त है तो भी निगरानी में जरा सी गलती हो तो चालाकी हो ही जानी है । तथा सम्बत् ८ से कामदार गोल किया सुखराम व बेदा वल्लरज है

ताँबेका

चलन पैसा अमरशाही था सो तो रोहड़ी सकवर में है । यहां भी मशाही जरब जोधपुर व किसी कदर काड शाही जैपुर का निखे आगे १४ टके का था सो बधते बधते अव २८ से ३२ टके का है । नया पैसा तोल में तो २० माशा ही है । ताँबा हलका है । तथा कलदार भी चलते हैं ॥

डोटियां

खास इसी शहर में ही है । अव्वल किसी जमाने में छपा था फेर श्री अमरसिंह जी ने छपाया सो तोल में भारी व निखे भी १६ वीसी था । सो कटकर व नया सम्बत् १८८३ में छपा सो तोल में कम है । ज्युं निखे भी ३० से ३६ वीसी तक रहता है । नबे फारसी हर्फ मालूम क्या है । यह चलन ढीगला नाम मेवाड़ में भी है । तथा कइ देश में त्रांवीयां ४८ दोकड़ा ३२ ढीगला १६ जो १ कोरी में चलता ही है । और १ रुपया में कोरी ३ फर्दीया ७ ॥ बूकड १५ खुरदा ३० दुर्गानियां ४० शाना का पेका ६४ दोकड़ा १०० जेथल १५० जेथलों का पेका ६०० ये नाम सिर्फ हिसाब के लिये हैं । जैसे गुजरात व गौरह में १ रुपया के दोकड़े १०० व १ दोकड़े में १०० फोकड़े हैं । चलन नहीं । सम्बत् ४१ के मृगसिर महीने से सायरात में तोल महाजनी व हिसाब में ऊपर लिखे नाम उठाकर कलदार पाई जो १ शाना में १२ पाई हैं चलन जारी कीया

और कईबार सलाह हुई परन्तु काम नही हुआ सो यह है कि एकशाल मे माल राज का छपै - ब्यौपारी के माल आवै तो उसी वक्त रुपये निखै से देकर माल राज ले इसमें दो कमाहते हैं सो तह होने बाद यह हो सकै - वचलन तो वा का आध या पाव आना का नाम पैसा या आधीया या बांबीयां या जो मुनासब हो रखकर छपा ना जरूर है कि भाव में कमी बेशी की तकलीफात न रहें व काम भी जारी रहकर नाम भी हो - ऐसे ही

तोल माप

इलाकह जात में १ कीया जावैगा चुनाचै: लोहे के वाट छपाये हैं विलपैल हर जगह मुरझलिफ हैं - याने तोल तो भीमशाही जैसे १३ से ४५ तक कई कि स्म का सेर है व/४० सेर का १५ मन और पायली ५४ व मांणी सेर ५ का सो भी अमरशाही तोल १ से ३ सेर तक और गोंम वारू में पायली सेर ५ का पोकरन मूजव व तनोट में टोपा सेर ८ का फलोधी मूजव है - तथा पायली १६ की १ से ई व १६ से ई की कलसी जो अमरशाही मन १२ की होगी बाहर गंमों में है - तथा कपडे नायने का हाथ शहर में १६ ईच व देहात में २४ ईच का है व ११ हाथ का १ गज सिरकी ८ हैं ३६ ईच का शाहजहांनी गज इससे सवाया समनो

सायरात

महसूल कारिबाज कोम कोम वस्ते रस्ते जिन्स २ का जुदा जुदा था कि अब्व ल कोट मे पीछे शहर या किसी गाम में माल आया जब हाणालिया बाद बहुत सी लागै बिधा बंधान कनोती वगैरह फेर फोर रत्त पर मापा उर्फ मुकाता वने सार पर भी लगता था सो सब बंध कोया सो मुफत्सल हाल लिखना अवजरूर न रहा १०। ११ जगह हिसाब करने व पणगी रुपये देने वगैरह तकलीफात ब्यौपारियों को थी सो न रही श्रीजीसाहिबों की उमरदराज हो व सलाह जनाव रजीडन्ट कर्नेल

परसी डबल्यू पौलन्ट साहब वहादर नई तजवीज सम्बन्ध ४१ का मुर्गासिरवदी १ से का
 ई मात्र सरदारों भूमियों से बंधों चोथरियों व्योपारियों वगैरह से सही कराड् जारी कि-
 या कि इलाकह भरमें एकजगह पूरा दांण लीया बाद दांण की खंचल न होवै मात्र
 कोमोंसे चाहें सो रस्ते गाल आवै जावै दांण का शिरस्ता एक रक्खा है कि खाश श्री
 दरवार के माल का भी दांण लागै हीगा विधा बंधान कनोंतियों वगैरह हुकदारों
 को हुक श्री दरवार से दीया जाता है व्योपारी से कम या बेश नही लीया जावै - माल
 आवै जावै सो अव्वल चौकी पर मंडी जै और गर्भ माल को तलासी होवै - तथा बीच
 की चौकी पर परताल की जावै लोप वहै सो कसूर वार वनिजर परवरिशा रिझाया
 जुवार बाजरी का पैसा विल्कुल माफ सिर्फ उश्ना फी ऊंट मद्रसे कालिया जाता
 है सो ही चारणों फकीरों डूमों खामियों से नही और व्योपार की तरकी वास्ते पेशार
 दांण पूरा लिया वादने सार छूट है और पेशारमें भी हाथी दांत अफ्रीम के सिवाय
 सब चीजोंमें कसी हर्ड सो नकशों के खाने औसत साबकमें लिखा है - जागीरदारों
 का हुक पट्टे बरसलपुर का तो रावजी दांण लें और देके का रूपया १००१५ वारों
 महीनों का रजमें दे और विकमपुर रावजी को दांणमें पांचवां हिस्सा श्री दरवार दे दिया
 जाता है और बाकी गांभों का माल परगना उतारने सारमें तौ पैसा रूपया सरदारों
 का रज से वसूल देना और पेशारमें उनका जी चाहें सो लें रज से मुद्दो नही और
 बहती दांतमें हुक है ही नही यह हुक सिर्फ पाटवी का रक्खा था पर दो समके नही जिस
 से सदाही रूपया पैदा हुआ सो रोलमें जिसके हाथ लगा उसने उड़ाया भूमियों
 का कुछ भी हुक नही था सो मुखिये को दांण की निगरानी को श्री दरवार से १५००
 पर ५ रूपया इस शर्त से करा दीया कि दांण चोरी न हो अगर कोई संख्या दांण चोरी
 करै तौ मुखिया उसको पकडावै जब उसका माल नीलाम या जुरमाना हो उसमें भी
 मुखियो का हुक हो चुका और जो मुखिये से बाला बाला खनर लगी तौ मुखियो को दांण

जितनी सजा दी जावे और मुखबर मुलाजिम एज है नौ चौथा हिस्सा और दूसरा खैसबाह
 है तो उसको आधा जुरमाने या नीलाम मे से मिलेगा तथा खानसे गांम के मुखिये को
 भोमिये से आधा हक निगरानी का उसी सर्तो से दिया जावे - व्योपारी माल लावेगा
 सो खरीद का बीजक या आढतिये की चिन्ही या बिलटी रेलवां नकल या दूसरोरिया
 सत के दांण चुके की असल चिन्ही बताओ माल तुलाकर चिन्ही होगे बहती वान
 दांण चुकायो से दिन ३१ मे माल इलाकह पार करेगा उपरान्त हासल ये पार का
 लगेगा - अगर किंसा सबब से माल इलाकह हाना में दूवाती से बेचेगा तो हासल
 पैसा में बहती वान वसूल होगे - और जो माल बेचके पीछे कहेगा वसूल नही मि
 लैगा और बाने बेचेगा तो सजा दाण चोरी की होगी - भार बर दारे व सवार का ऊठ
 गाडी व पहनने कपडे या कपडे के डकडे जिसको कीमत ३ रुपये को है या खाने
 की निन्स व रसाल का हासल नही देश को पैदावार बीज सिवाय घात शहर के
 देश मे हीज एक से दूसरे परगनह से ले जावे तो गैहूं घत तेल कपास इत धचो जो
 का पेसार मुजब दांण है बाकी माफ तथा देश का बासी देश मे हीज देश के बासी ले
 बलध भैसा रू जीवाल परकब लेवे देवे तो दाण छूट और रजप्रती सिंधी याने खेड मे
 आवे सो बचाराण डूम फकीर स्वामी आपस में ऊंट ले दे तो भी छूट है कोटो का का
 दार ताल्लुके मे वाजद जाणे जहां सायरकी चौकी रखे हिस्सा व हर अभावस्था मए
 फारम व कौशिल में भेजे अथवा रुपया हकनी चिन्ही से खर्चे दांण की चिन्ही व्याप लग
 वाने में करे ॥

दांण का खुलासा फारिस्त में है - और जो चीज लिखे से नवी आवे तो कीमत व
 जात दूसरी चीज से मिलाकर दांण लेनो तथा दाण मे कमी वेसी श्री दरबार साहिब
 जदकदे मुनासव ख्याल फरमावे तो होसकेगा एक जगह दांण लेने मे बहकदा
 रे को श्री दरबार से देने वगैरह २ तदवीर ऐसी हई कि राज व व्योपारियों से खसूसन

गुरवा लोगों को तो बड़ा ही आएम व फायदा हुआ ही सब पर इकसा होनेसे जिस लोगो को माफी थी सो न रही ॥

तथा हिसाब का कायदा भी निहायत ठीक है कि चाहो सो हाल बखूबी आसानी से मालूम हो सके. सायर में कदीमी तोल कच्च, जो मन २० याने अमरशाही मन ६ क्रा एक ऊंट था अब शाहजहांनी तोल है. बिधाबंधान कनोतियों का हक ऊंटों पर था सो आठ मन का १ ऊंट रक्खा है. और अमरशाही मन ६ का शाहजहांनी मन पांच का होता है ॥

खन्ना याने दाण की चिठी सायर

नंबर चिठी	बोपारी का नाम ज्ञात यथा	कहां से माल आया कहां जावे गा किस रास्ते	पैसा खाने सायर वा बहरी चान	तादाश्त आरदार	नाम जिनस	तादाश्त निम्न मन शाहजहांनी	सरह महसूल	रुपया महसूल का	दस खत यानी नि सानी सायरदारत बोपारी
-----------	-------------------------	---	----------------------------	---------------	----------	----------------------------	-----------	----------------	------------------------------------

नकाशा सरह महसूल व आमदनी सायरान्त

नंबर जिनस	नाम जिनस	मन नया कीमत	सरह महसूल			शोसत सावक	सं. ४० कार्तिक शुदी १ यथा सं. ४३ काती वदि				कुल पैदाब वर्ष ३ के दाण का रुपया	शोसत १ वर्ष का रुपया	नरेश शोसत बखार	
			बेपार	नेपार	बहरी चान		नेपार	बहरी चान	मन या नया	रुपये जमान				मन या नया का मत
१	श्रीफलम	१	७	७	७	११॥	५६॥	५६॥	७३॥	५६॥	५६॥	१०६॥७३		
	गिरीसो पर	१	१७	१७	१७	१७॥	१७॥	१७॥	२३॥	१७॥	१७॥	६११॥७४		

बेकचरी, बहेडे दोनो, बलबीज, रेवतचीनी, रतोजनी, चंडबबीला, भोडल, मूगफली, आरिठा ॥

७ ॥ नकाबिकनी, नोसादर, नीबू फूलगुलाब, ग्रमाला गिलोय, गौंवरू, गोखमं नडी, सिगोडे, साधार, काकडासीगी, सनावर, कन्धा, कटखजूर, किरमच, कुटक, आलू तुसारे, अडसा, इन्द्रजब, उन्नाच, ऐलीया, मैदालकडी, माल कांकणी, पतग, पित्तपापडा, हरडे, वायफुंछा, घोडाबन्ध, भांरंगी, नालमाखाना, राल धूप ॥

७ ॥ सावन, सहैत, चन्दनद्रोना, चित्रक, कालीजीरी, काचता, कन्जा, कसीस कबाबचीनी, जोहरडे, जमालगोटा, जरिस्क, सुलहटी, मोचरस, मुर्दासिंगो, चायबिडंग, विदारीकन्द, ब्रह्मी, रेवदार, दारुहरदी, रोगनी, गन्द्रफ, खस, खसखास, पचास, नमालपल ॥ नागकेशर ॥

७ ॥ लासबाटिया सोनागेरू, सुपारीहर्च, सकाकुल, सूतली, भोजपत्र, भोजमंद, विजयाखोर, बहमनसुखे, गजवां, वनप्या, हजरतबोर, हंसराज, माजूफल, जेरनालेरगिरी, अतीस, धावडेफूल, चिमीसर्व ॥

७ ॥ सिंदूर, स्याठ, कसबा, केशरपिबली गुलाल, मूसली दोनो, निशोद ॥

७ ॥ अगार, आवलासारगधक, अकनकेरा, इलायची, तगर मलागरी, मैण, सुमी रा, मोरघांप्या, हरनाल, हींगलुकीक, केशरकेफल, कपूर, कालीमिर्च, गुलाब जल, सुरतेल, शिलारस, सीगीमोहरा, शाखिया, सीतलामिर्च, सुर्मा, सोधगी, सपेदा, स्वाहजंरा, सुपारेदोखनी, चषडा, चन्द्रस, पीपरा, पीपरा मूल, पीप रदारज, पनडी पारं, वडेडोडे, कण, जाववी, जावफल, जेरकुदीने, जगल जबाखार, रसकपूर, रत्नजोत, रसोन, चीदाना, वंशलोचन, रौसहार, रसाक रिया, दाजवीनी, लाडला, लोग, भिलावा, वेरजो, चोपचीनी, सरम ॥

आमदनी नकशे के अलावा इलाकह बरसलपुर का एवजी से १००७ रुपये १२ महीने को ठेका है . बाकी लाठी तनोट दाखणी वसिया वगैरह गांमी का दान नहीं मंडा है व राजडां म्होरा लोगो दान चोरी करी सो अलग-अगर पूरा दाण मंडे तौ पैदा डवही है तथा परचुण दाण रूई की गठड़ी वा छालीं ऊंटा वगैरह के में चोरी व कभाअत हद से परे है सो जो जो चीज छोरी याने चोरी छिया सकै सो छूट करके गुंजायश की चीजों पर ऐसी तजवीज हो कि हर्ज हरकत न रहे ॥

सायरमापाउ.

तकड़ी मुकाता में सम्बत् ४१ से सिर्फ इतना रहा है . बाकी सब उठ गया- जेवर, वरतन फरोरह का २७ रुपया पै ७ रुपया वहिरएव तोले ३० पै ७ रुपया व चांदी रुपया १०० पै ७ चार आना लगता है सो बिके उसी दिन विगत से मंडवावै . सो चोरी वाडगड़े का माल नहीं बिक सकै . कंदोयां से खांड गालने पर वमिथ्री बनाने पर फी मन व दूसरे लोगो के खांड गालने की महनत में चार्म सो हर पल वाड़े मंडाय दे . दरवाजों की लाग चासचार पर फी ऊंट १ आना . इसमे हजूरी कंधारी वगैरह को छूट भी है . फाटका सोदापर लाग सम्बत् २० से लगी है सो सब हैं . १०० रुपया पर ॥ आठ आने दोनों फरीक से . व सब दा हो उसी दिन व्यौपारी या दलाली का मंडवादे . कि रुगडा न पड़ै व भाव करने वगैरह कायदा की कलमा सम्बत् ४१ सं लिखाई है . दलाली का ठेका या आध है पहले ॥ ७ आने राजके थे . न्यारीया का इजारा रु० उहरे सो . लखारंका इजारा दरकला के दरोगा की तनखा ह है . पटवाका काम करने वाले से हर महीना में ७ रुपया था सो कई साल से नहीं लीया गया- ऐसे ही पीजारे कसाई वगैरह से भी था सो नहीं है . ऊपर लिखी लागों में कम बेश करके पुखता बन्दोवस्त करना जरूर है कि दाण चोरी न रहे ॥

बरसोत

लाग रिझाया से धुवा सर भूपी ठाण भासोला डंड चेत्रालिया बाधालिया व इजारा
 वगैरह कई नाम तो मौका मौका पर लिखे गये व फुटकर नाम बहुत से है कि सालिया
 ना बावत रूपया १० हजार करीब होगी सो एक जगह जमा न होने से ठीक हिसाब भी
 मालूम नहीं होता है ऐसे ही तबेलाण लके मोचीया चमारी का इजारा वेगार वगैरह
 वाहका बहुत काम है और घास चार मूगधणा पानी वगैरह का खर्च भी यहा ही से होता है
 इस काम मे बन्दोवस्त लिखा तो है परन्तु कीया नहीं सो जरूर ही करना चाहिये - कामदार
 व्यास मुल्तान चन्द है इनके ताल्लुकः खीमा खाना व घोडों ऊंटों का संज बनाना सांभन
 व और ही मुतफरिफ कई काम है - तथा बांगा का काम याने बागा की पैदा व सीधा दण
 लाग न मालीयां से बरसोत वगैरह की पैदा वती नू बागो का खर्च अगरेचः राज का है
 मगर अलहदा रक्वा गया है - सो अब समूल समझा जावेगा - और बाग वावड़ी याने
 आबाद होकर हर तरह की रसाल व आम्रदनी होने की तदवीर सम्बत् ४९ में बहुत ही
 खूब की गई हैं क्योंकि रब्याल किया कि एक पेड आम वगैरह व एक कूवा व एक कर्श
 हो जहां बहुत पैदा होती है सो सदहां पेड व ऐसे ही कूवे कर्श होकर नुक शान क्यों
 रहता है - मालूम हुवा कि मालीयों ने पैदा करने की कसम वास्ते न देने राज वकर्ज
 के की है - इस वास्ते इन्हो से मुना सब कल्मालिखा लिया है परन्तु जमाना आने
 से वनेगी ॥

नमक

शहर से उत्तर १० कोस गाम कानो घ के ॥ कोरन मे बारस का पानी सूकने वाद देरो
 का पानी क्या रियों में - सीयाले के दिन २०। २५ मे ३। ४ दफा व ऊनाले के दिन १५। २०
 में ४। ५ दफा भरने से नमक जमता है - सिवाय पानी व जमीन की सौरीयत के कोई चीज

नहीं रंग सुपेट से भर से सोरीयत माइल है - नमक में जागीरदार वगैरह का हक नहीं
 आज ही मालक है - खारवालों को महलाने का हिस्सा तीसरा था सम्बत् ३३ से फी
 मन शाहजहान की का १ आना दीया जाता है नमक बनाने के औजार व बेरा क्यारीयां
 का खर्चा में खारवालों के हैं - तथा निर्वे अमरसाही तोलसे ७ रुपया आगर पै मन ५
 से १४ व शहर व परगनह में ११ मन था - सो अब शाहजहान की मन एक पै ७ आने
 की मन व ७ रुपया महसूल आगर पर रकबा और शहर व परगनह में किराया ५ मन
 पर एक कोस का ७ आना ज्यादाह सो सम्बत् ४४ के चैत्र में सब जगह निर्वे से ७१
 का व आगर पर दोनों गाम काणीध के सिवाय बेचना मना करके परगनात में कोठार
 करये सो गामवाले नजीक कोठारसे लैवे निर्वे काना माग लिखने वगैरह कायदे की कि
 ताबे छपाकर बेचने वालों को दी गई कि राज का नमक बेचने की आडत तुलाई की
 जगह का भाडा फीसदी ३ रुपया मिलेगा निर्वे में फर्क न रखें और जो रुपये पेशगी
 दे जिसको ३ रु० कमीशन जुमले ६ रुपया दीये जावै व निर्वे भी ७ रुपया से कमती
 लेने वाले को ५१ सेर कमती देवे - परन्तु दोनों सूरतों में हिसाब हर महीने ताल्लुके
 के हाकिम की मारफत नमक के महकमामें भेजा करें - सो साल तमाम पर नकशा
 तैयार होवै कि किस किस कोठार व गाम में कितना नमक कितने मनुष्यों ने लीया -
 व पैदा खर्च वगैरह सब हाल मालूम हो सकै - और आमदनी वजबा से निष्फ भी
 नहीं होती है सो ऐसे काम चला तो सही हाल खुल जावैगा -

सिवाय इसके नौजै वाय में भी रन है मगर नमक निकालना बन्द है व गाम वरमस
 व पहोडों के रन में खारा पानी के बाइस जरात तो क्या चास भी नहीं होता और न खारी
 नमक होता है - तथा मोहनगढ़ के रन में पानी तो खारा होता है लेकिन जरात दोनों फूस
 में - सम्बत् ४१ से होती हैं - । ख्रीडन्टी में पोटा निर्वे की हर परखवाडे व नमक खानों
 में निकाले व बेचै की से माही व साल तमाम परकी जाती है - तथा सम्बत् ३३ में सरकार

दौलतमदार ने मारवाड वगैरह का नमक ठेकै लिया जब यह से दीवान नथमल जी को जोधपुर बुलाकर जनाव कलां साहिब बहादुर व खीडन्ट साहब ने कहा कि यानो खानो को बन्द करो खर्चे के लिये नमक सरकार से मिलेगा या खानो पर सरकारी बन्दो वस्त मंजूर करो । अर्ज करी कि इतनी गुंजाइश नहीं है कि सरकार नमक निकाले और बन्द करने सरकार को नमक पहचानने में ५०-६० हजार खर्च होगा सो मुनासब जाने तौ सरतै लिखा कर राजकां खर्च जितना नमक निकालने की इजाजत दी जावे जनाव कर्नेब वालदर साहब बहादुर ने मदार से मंजूरी मंगा कर ऐसी ही किया कि नमक १५००० मन से ज्यादा वगैर हक नहीं निकाले । सरकारी महसूल चुकै नमक का इस इला के मेराहदारी नहीं लेना । ३ नमक गैर इलाकह नहीं जावे । १४।५ में निरखे वरपोटका हाल ऊपर लिखा है । ६ मारवाड में सरकारी नमक का काम जारी हो जब से जारी करन चुनावे इस मंजब बरतै है । कानोधमे तौ कामदार गो बछराज व एक दरोणा दो अस्त बार व शहर में गो तुलाराम है । तथा नमक हरजगह पहचाने व वाजरी वगैरह लाने के लिये राज के ऊंट पै हरीदास जीवणदास मिर्धो व कई हाली रखे कि खर्चे से नौच न्द फायदा होगा परन्तु उलटा नुकसान रहा सो अब कोई ठेकेदार ५० ऊंट रख कर शर्तो मंजब काम देतौ बडा ही नफा व सबको आराम रहे ॥

दीवानी फोजदारी

कानवा कायदा सम्बत् ४४ का माघ से अंम लोगों को सुनाया गया परन्तु तामील न हई सो होईगा (खुलासा दीवानी) लैन दैन कारिवाज ७ पीडी का था अब ५५ वर्ष से पहले की सफाई या दावा ५ साल तक कर लै पीछे सुनाई न होगी वरसस मुदई को रूपये दिलाने मे आरम राज व फीसदी ५) रुपया धर्मा दे ऊपर गई के दोनो फरीक से व ७) रुयया फैसला कालेते थे सो छोडकर फीस नीचे लिखे मूजब वक्त दावा के मुदई से

लीजावे सो वक्तू फैसला के हाकिम अदालत वाजिब जाने जिस पर खर्चे व सुवाल तल वाना व नकल फैसला वगैरह वगैरह का इष्टाम भी नीचे लिखे हैं अपील सिर्फ ॥ आना के कागज पर हो सकैगी ॥

फीस

१०७ रुपया का ७ रुपया, तो ५००७ रुपया के दावा तक — ऊपर दावा ५ हजार पर कमती याने रुपया ६७। ३। २ फेर चाहे जितने हो फीस दी ७ रुपया के हिसाब से जिसके जुज रुपया ७ तक ७ आने, रुपया ७ तक ॥ आने, रुपया १६७ तक ७ रुपया, २५ रुपया तक ३ रुपया, ४० रुपया तक ३ रुपया, ५७ रुपया तक ४ रुपया, उपरान्त २०७ रुपया तक जुज २५ को, ५०७ रुपया तक ५७ रुपया का, १००७ रुपया तक १०७ रुपया, २००७ रुपया तक २०७ रुपया का, ५००७ रुपया तक ५०७ रुपया, १० हजार तक १०७ रुपया का, २० सहस्र तक २००७ रुपया का, व २५ हजार तक २५०७ रुपया, पीछे जुज २ आसुत का है। सो हिसाब फीस के ५००७ रुपया के ४०७ रुपया, व १०००७ रुपया के ७७ रुपया, व १५ के ८ व २० के १०॥ व २५ के ११॥ व ३० के १२ व १ लाख के १८०७ रुपया सको। तथा लोगों के आयस में तहरीर सं. ४४ का माघ पिछली स्याम पर सही होगी जिसका दस्तर ॥ (छाम्य) लगाने का यह है कि हंडवी हर किता पर एक दफा १ सौ तक नहीं ऊपर ३०७ आना ६०० तक ३ आना १००० तक ३ आना १५०० तक ७ आना २००० तक ३ आना ३००० तक ॥ आना, ४००० तक ॥ आना, ५००० तक ७ रुपया, ऊपर ७ रुपया नही व पैठ पर पैठ पर सिर्फ ७ आना के पर हंडी पर नहीं लगा हो तो पूरा। सूदी देन लेन पर (छाम्य) चल स्वाता साहूकारी पै नहीं और खत खाता व रुक्का वगैरह में सामले से सही निशांनी करावे तो अंग उधार या जेवर वर्तन वगैरह जंगम चीज गिर्वी पर सूद ॥ तक है तो फीस दी ७ आना का और सूद ७ रुपया तक हो तो फीस दी ॥ आना

बद १ से ज्यादह परदूना जिसका जुज रुपया २५) का तथा एजिस्टर किसी कचहरी से करावै तौ २५) रुपया पै ३ जुज का हिसाब से लगेगा । जगह जमीन खेत कूवा वगैरह स्थान पर आडत पर ऊपर लिखे हिसाब से ड्योढा । नया या पुराना हिसाब करके रुपया बाकी निकालै जिसपर ऊपर लिखे मूजिब । खेत जमीन वगैरह का सनदी हुकम किसी कचहरी से का-रुपया ५) पर लिखा सही होगा । चेटा गोद लेने स्मार्ड करने तलाक लिखने वगैरह ऐसी तहरीर का-रुपया ५) पर लिखी सही होगी । रसीद इकरार नामा जामनी भाडा चिद्दी वगैरह ऐसी तहरीर का- ३) आना पर । फारखर्त अमिगम न दावा की रुमा २५) का ३) आना जुज के हिसाब से रुपया ५) तक हद है । ठेका इजारा किसी किसम का रुपया २५) जुज का ३) आना के हिसाब से । सीर सारा किसी किसम का मवेशी जगह जमीन व कोइ जिनस या ब्योपार दुकान दारि वगैरह की लिखा बट रुपया २००) तक ३) आना रुपया ४००) तक का ७) आना रुपया ८००) तक का १) आना रुपया १६००) तक का ५) रुपया, रुपया २४००) तक रुपया ५५) से उपरान्त रुपया ५) से बडती नही । छत ऊन धान वगैरह जिनस लैनी लिखावै तौ का वध व्याज मूजिव पर मगर ऊन तिल वगैरह खरीद करने का सद्दा ब्योपारी लिखावै तौ का फीसदी ३) आना पर परन्तु इसमें मालक मती तुले का भावनहीं मिलैगा रुपये सूद से लैने होमे ॥

इस्लाम

घरु काम या बेचने को इकट्टे १००) रुपये से वधती खरीदे तौ कमीशन फीसदी ५) रुपये से १०) रुपये तक वधती जिसका जुज यह है कि २५) रुपया तक ५) रुपया १००) रुपया तक ६) रुपया १०००) रुपया तक ७) रुपया व ऊपर १०) रुपया का इस्लाम रुपयो के हिसाब से मिलेगा परन्तु अदालत को फीस का कागज पूरे मोल

कचहरी से हीज लेना होगा . ऊपर लिखे में कामवेश करना श्री जी साहब के हुक्म से हो सकेगा . जिसका इशितहार जारी कीया जावैगा . ऊभसीगा याने चौपाया जवरन छीन लीया है या देने करिके नाहिं दीया है तो दावीदारद-६१ भीतर मजाज कचहरी में दरबास्त देकर सफ़ाई करलै बरना जदही दावा करैगा कीमत मिलेगी . ऐसे ही खाते में लैनी करी जिन्स नहीं आवै तो मियादवाद सफ़ाई करले आव नहीं मिलेगा . रुपयेसद से सही होंगे . तथा जगह ठग की मसवाड़ भी ३ साल तक लेही लें पीछे जमादह इकाही नहीं मिलेगी . खेतमें विगाड़ हो सो तो जिसपर दावा लग सकै उससे भरा लेना परन्तु खेत छोड़ना नहीं अगर खेत छोड़ेंगे तो दावा खारज अलाहाजुल क़्यास से सेरगड़े पुराने रिवाज के नही रहे .

दफः २६

बड़े शहर व रेल तक रास्ते में गाम का नाम व दूरकोस व कू-गहरा व पुखता व बेरी व त-बड़ी छोटी

जोधपुर ९० को.						बालोडा रेल है ५५ को.						रुच्छभुज १४७ को. व माडवी द्वारा					
१	मोकलात	४	रुन्ही	के	छो	१	डामला	४	७मी	है	व	१	जीया	३॥	-	-	छो
२	वासियां	२	४-मी	है	व	२	शकल	२	०	०	व	२	लु-	१॥	-	है	व
३	चांधन	७	१८	है	छो	३	छोड	४	३३मी	है	व	३	पीघोडार	१	२५मी	है	व
४	खेडाकोर	४	३-मी	०	छो	४	देवीकोर	२	६०मी	है	व	४	कोरुवा	४	०	है	व
५	ताडी	२	२-मी	०	रे	५	लखमन	३॥	८०मी	०	व	५	चेलक	४	७०मी	-	व
६	आढानिया	६	२४	-	व	६	खोडिया	१॥	-	०	व	६	देवडा	५	५०ये	-	व

७	पोकरन	६	१०मी	व	५५	७	डांगरी	३	८	क	व	५५	१	कुकासाउ	२	१०मी			५५						
८	लउवा	४		व	५५	८	ओला	४	८	मी	छे	५५	७	जोगीरस	२	८	क	व	५५						
९	मडला	५	मी	व	५५	९	आरग	२	८	मी	रे	५५		रे गांव					५५						
१०	देखू	५	४०५	व	५५	१०	ऊडू	७				५५	८	कोहरा	२	१६	मी	व	५५						
११	डाहीबा	२	मी २५	छे	५५	११	रतेउ	२				५५	१	महाकली जुडीयातपुकापा					५५						
१२	लोडना	२	३०मी	छे	५५	१२	सुवाउ	४				५५	९	हरसानी	१०	११	र	है	व						
१३	चामु	५	४०	छे	५५	१३	उत्तरणी	७		क		५५	१०	गढडा	१२	खा	है	छे	५५						
१४	पाचुला	५			५५	१४	मलवा	५		क		५५	११	मोहली	६	१२	मी		५५						
१५	चडालीपा	२	१०मी	है	५५	१५	खेड	६				५५	१	स्वीवसरवविच्छापोरुकर					५५						
१६	बालगवा	१	नगवावेहे	गे	५५	१६	वलोनरा	०				५५	१२	छाछरा	१४		है		५५						
१७	इद्रोरवा	२	वेग	मी	५५	<p>वहाडमेर । को ४३</p> <p>गाव भू सीत डाई रामा खडमे</p> <p>डाईतक इलाकहहाजा गावगूगा</p> <p>याहडवासेसिवाय ईलाकहमा</p> <p>वाडफेरगावभाडवासेवाहडमेर</p> <p>औरवहासेगुडाहौंथीगावधनी</p> <p>धरवावसुईगाववगैरहहोतेहए</p> <p>कच्छभुजकाभीरस्ताहै</p>						१३	भोरीला	१२	खा			५५							
१८	नाहरसड	१	वेग	मी	५५							१४	मिठी	१०				५५	१५	दीपला	१३	मी			५५
१९	डानीगोवन	१	देग	मी	५५							१६	वलेहारी	५				५५	१	समेधर्मशलफेरदेवाणेकी					५५
२०	सासजोध	३	मी	है	५५													१६	खवडा	२०	मी	छे	५५		
<p>दूसरास्ताथलकेगावमेहोकर</p> <p>दोतीनहैजिससेनामनहीलि</p> <p>खेवबालोवन्नेरेलहै</p>																		१	वीनमे	३	४	गावहैशेर			५५
																		१८	युजनगर					५५	

फेरमाडवीसे००वरत्तागामेना१०जह

जचनहरथोहाकजावेरेनेपागामे

मेगोमतीजीहैप्रवउसेमासापुगंम

उके०५फानगारासको१५है

हैदराबादसिंधको १०० (१) सताको ७ कुवापुखतः १५मीठा त- (२) खुह
 हीकोश ७ कुवापुखता १२मीठा (३) न-बछणाईकोश ६ (४) फलियाकोश ५ कुवा
 पुखता ३७मीठा त- (५) महाजलारकोश ५ कुवापुखता ४०मीठा (६) व्यधीवाबली
 कोश ६ चौहददाँ है कुवापुखता ४५खा (७) सैदाउकोश ५ कुवा पुखता १५मीठा
 (८) जाफराउकोश ५ कुवापुखता १०मीठा (९) रणाउकोश ५ कुवापुखता १६
 मीठा (१०) आसराउहरकोश २ कुवापुखता १८मीठा (११) गपनीरेडंडकोश ६
 पानी लूण छाया (१२) हथूंगाकोश ४ यहां तक कोश ३० रेत के टीबे हैं पानी कानाल
 व कुण्डा हैं (१३) खिपराकोश २ बाबा है (१४) खिराउकोश ६ (१५) मीरपुर
 जूनाकोश ४ (१६) मीरपुर नयाकोश २ (१७) तंडा अलायार कोश ६ (१८) लठी
 कोश ४ (१९) खासशहर है हैदराबादकोश ६। दूसरास्ताकोट महाजलासेगाँव
 सुन्दराकोश ७ ईलाकह भारवाड गाँव रागरादेरकोश ७ ईलाकह सिंध फेर पर
 चौरा बेरी होकरगाँव बोलकोश १५ वेरी है नाला भी है गाँव अमरकोटकोश ७। सांड
 लोकोश ८ फेरढानियां होकर तंडा अजायारसे हैदराबाद। अगाड़ी नगर धरा
 कोश वकिसचीकोश ६ है वहांसे केलांत व बलोचिस्तान व मन्का सरिफ व दे
 हिंगलाजकोजातेहै तथा किराची से बम्बई बन्दर व विलायत ईङ्गलिस्तान को
 जिहज जातेहै ॥

रोहड़ी भरखरयानवीसकवरकोस १०० हांसे १२शहरशिकारपुर व कोश १२खैर
 पुर मीरसाहब का है जिसका रास्ताकोटसहागढ में होकर भी है (१) चुंधीकोश ४
 कुण्डमीठा (२) बजेलकोश ४ वेरीपुखता ७ मीठा (३) कुब्डीकोश ७ वेरीपुखता
 ६ मीठा (४) कोटरुंध्यालाकोश ५ कुवापुखता १२मीठा (५) बांधाकोश ४ वेरीपुखता
 २मी. यानीकम (६) असूकोश ८ कुवापुखता ४०मीठा (७) कोटघोटहूडकोश ८ कुवा
 पुखता ४०मीठा (८) सोजरेका कुवापुखता २४मीठा इलाकह हाजा (९) मिठडाउईसिंध

कोश १६ कूवा पुखता ७ मीठा (१०) उधड कोश देवेरी पुखता ७ मीठा (११) मनेरी खु
ई कोश ४ वेरी पुखता ७ मीठा (१२) वस १२ कोश वेरी पुखता ७ मीठा (१३) सिंगार
कोश ४ कूवा पुखता मीठा (१४) भिडो कोश २ रोहडी कोश ६ दारियाव है ॥

खैरपुर डहर का कोश ७२ (१) रामकुण्ड कोश ४ मीठा (२) लागेला कोश
३ वेरा तलाव (३) भादासर कोश १ वेरा न-है (४) मोकल कोश १ त वेरा (५)
सांनु कोश ६ कूवा पुखता ६० (६) कोटरामगढ कोश ६ वेरे है (७) खैरड कोश ३
वेरे है (८) रणाड कोश ८ कूवा पुखता ३२ मीठा (९) घेढाली कोश ५ कूवा पुख
ता २० मीठा (१०) तणोट कोश ३ कूवा पुखता २५ खारी (११) खैरगढ ईलाक ह
डहर कोश १६ वेरे है (१२) खेजुकारडू कोश ८ कूवा पुखता ८ मीठा (१३) खैरपुर को
श ८ पानी का वावा है फेररेल है सो सकखर कंडेरा अहमदपुर बेगड की गढी बहा
बलपुर पंजाब वगैरह की जाती है ॥

खानपुर ईलाक ह बहाबलपुर कोश ७३ (१) वरमसर कोश ४ तलाव
कुण्ड वेरा है (२) सुलदे कोश ३ तलाव कूवा पुखता २५ मीठा (३) कंडीयाला कोश
३ कूवा पुखता ३५ खारी तलाव है (४) खावलसर कोश ५ तलाव कूवा पुखता खारी
(५) रता कोश ११ कूवा पुखता २५ मीठा तलाव (६) डावर कोश ३ तलाव रुरना है
(७) वराहा कोश १० कूवा पुखता ३२ खारी ईलाक ह हज्ज (८) न्हवर कोश ८
ईलाक ह बहाबलपुर कूवा पुखता ३५ मीठा (९) मूराटोभा कोश १२ (१०) तणारपर कोश
१२ रुरना है (११) खानपुर कोश १२ खु-त वावा है दूसरा रस्ता न्हवर से भिडडा कोश
२४ वेरा है फेररेल है ॥

बीकानेर कोश ८३ चास्रपी चांधना सोढा कोर तक कोश १६ (५) भाडीया को
श ३ कूवा पुखता २५ मीठा तलाव (६) नवातला कोश ३ कूवा पुखता २८ मीठा तलाव
(७) लुहारखी कोश ४ कूवा पुखता ४५ मीठा तलाव (८) टेकरा कोश ६ कूवा पुखता

४५ मीठा कसतलाव करना हैं (९६) सौहड कोश ३ कूवा पुरखता ३८ मीठा तलाव (९७) स-
 खास कोश ६ तलाव (९८) बधाऊडा कोश ३१ तलाव (९९) कोटवाय कोश २१ तला
 व वेरी पुरखता ७ हैं (१००) गाउण कोश ११ तलाव (१०१) वडी सिडे कोश २ कूवा पुरखता
 २० खारी, तलाव (१०२) गुलजीरी सिडे कोश २ कूवा पुरखता १८ मीठा, तलाव (१०३) मोख
 डा कोश ६ वेरी तलाव कूवा पुरखता २६ मीठा इंडाजा (१०४) रावणीयेरी कोश ४ ई० वीका
 नेर कूवा पुरखता (१०५) देयाजा कोश ३ कूवा पुरखता तलाव (१०६) मड कोश ४ कूवा पु-तलाव
 (१०७) चानी कोश ३ कूवा तलाव (१०८) गजनेर कोश ३ वाग तडाग व राजभवन
 हैं (१०९) नाईयागे वस्ती कोश २ (११०) प्लो कोश २ (१११) खाशा शहर बीका-
 नेर कोश ४ फेर सरसा भीयानी देहली वगैरह का भी यही रास्ता है तथा सौह
 डा से फलोधी होकर नागोर का रास्ता कोश ८ है॥

कौम राजपूतों के सादी गमी में खर्च वगैरह की रीत

= जनाव कलां साहब कर्नेल बालदर साहब बहादुर जी ने वमंजिव इबम
 नाइसराय गवर्नर जनरल मात्र रियास्तों के जी इरहयार मौतमद व के वराजों
 की कमेटी से मुकाम अजमेर सम्बत् ४४ का चैत्र में कौम राजपूतों के सादी व
 गमी में खर्च वगैरह का बन्दो वस्त कराया कि सगाई के वक्त वेदी का बाप बडे
 सिरदार तो टीका देते थे और गरीब राजपूत रुपया लेता था यह रश्म कि तई
 बन्द अगर कोई विल्कुल नादार हो तो विवाह के वक्त रुपया १०० से कम लेकर विवा
 ह को लगादे और सगाई करे जब अमल दस्तूर के बाद सगापन कीये की चिठी एक
 दूसरा लिख दे कि फेर रुगडा नहीं पडे तथा विवाह में खर्च की तादाद भी है
 सयत मंजिव लिखी है उसमें चारणों भाटों इमों वगैरह की त्याग की तादाद सादी
 के खर्च में फीसदी धा॥ रुपया उस इलाकह वाले को देवे कि जहां माहा है दूसरे-

इलाकह का मंगल आवै सो ताल्लुके का हाकिम सजा दे और इलाकह करे ली में चारन नही है जिससे शेरवा बाटी का जाने की इजाजत है इस वन्दो वस्त से इलाकह हाजा मे शादी की बाबत बडे सरदारों के तौ ठीक हुअ सो आसानी से चलैगा और गरिबों के रुपया लेना का रिबाज पुस्तों से है सो मुश्किल से भिटेगा मगर यह तज बीज हर हाल है नैक सी रज से पूरी को भिश हो कर मिटी सी ही बाकी मौसर में खर्च की तादाद रकडी है सो चलने की नही क्योंकि पैदा के हिसाव से तौ औसर हो सकै ही नही और करना ऐन फर्ज है ज्युं इस खर्च में हर्ज भी नही है भाई गनायत हेतू वगैरह द्ववदार पूरी मदद देते है अलावा इसके शादी में उमर की कैद लगाई है सो भी हो सकै नही कैद बमूजिब उमर के बरकत्या का मेल लगना मुहाल है हां यह बात वहत मुनासिब है कि टाकरा के कुंवर हों तौ ४५ वर्ष की उम्र बाद शादी न करे तथा इस के बंदो वस्त को रज में कंभरी रहवे वह हर हू माही रपोट प्रजंटी में देने का हुक्म है सो हुसी ही इस वास्त हुकमतों से रपोटों के धाने से नकशे को नमूना जैल में दर्ज है और हुक्म है कि सगाई विवाह होवै उसी दिन नकशे में लिखवें ॥

**नकशा मितो वदी शुदी ६ माही इलाकह जेशल मेर में कौमराज
पूतों के बेटाया बेटी की शादी हर्ड का सबत ४ मितो शुदी १ थी**

बेटी का बाप		बेटे का बाप		रुपया तिषा तौ फतना	कैफियत
नाम	गाव व इलाकह	नाम	गाव व इलाकह		
पिता का नाम व उमर जिरफा	शादी हर्ड	पिता का नाम व उमर जिरफा	शादी हर्ड	विद का नाम व उमर जिरफा	
बाप का नाम	नाम	बाप का नाम	नाम	बाप का नाम	
नाम	नाम	नाम	नाम	नाम	
गाव	गाव	गाव	गाव	गाव	
गाव व इलाकह	गाव व इलाकह	गाव व इलाकह	गाव व इलाकह	गाव व इलाकह	
मन्तर अनाम		मिती दि वा ह रूप की			

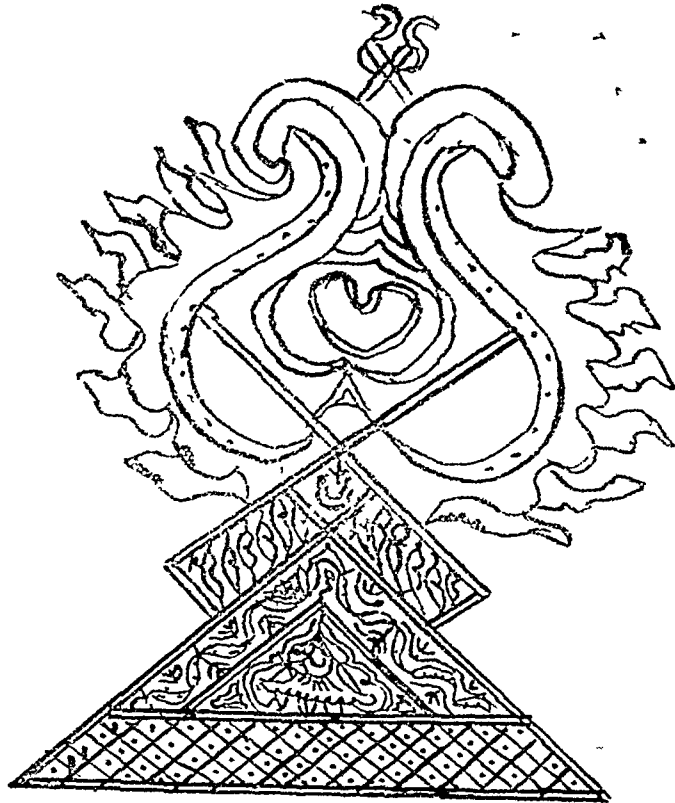
तथा साहकारों को भी बहुत सी हिदायतें: प्रबन्ध बाँधनेकी की हैं व स्वप्न सगाई
बाबत समझाया कि कोई बेटी के रुपये लेवे ही तो उधारे कर लें सो पीछे दीये द्वाद
आड़ा ओसर कर सकें और घटा करे तो सटाई मर्द औरत जीवे जितने आड़ा ओसर
न हो परन्तु बिलफैल तो असर न हुवा मगर यकीन है कि ऐसे ही होगा ॥

इति

शुभम्भूयात्

इति श्री तवारीख जैसलमेर के राजपूतों की सम्पूर्ण

शुभम्



श्रीगणेशायनमो जेनम

तवारेख

अथ तीसरा भाग लिख्यते

॥ (३३) ॥

जोकि ब्रह्माजीके स्वयम्भू मनुजी आदि हिन्दू राजे जो सूर्य चन्द्र वंश में हुए जिनके नाम वराम रुष्मादि अबतार वंशो रहीं बड़े सामर्थवान होकर जो जो काम किये सो भागवतादि पुराणों में हैं ई उ सके पीछे के नाम व हालात् शिलाशिले वार जो मिलता तो तिमिरिनाशकादि बहुत ग्रन्थ बने हैं जिसमें लिखते ही ज और भारी वंश के नाम श्री रुष्मा चन्द्र से आज पर्यन्त तवारीख में लिखे ही हैं बल्कि उदयपुर की तवारीख में नाम थे ज्यों दूसरे रईसों के नाम वगैरह हाल मालूम हो सका सो वह बादशाहान दिल्ली व लाट साहब व रजीडन्ट साहब बहादुर व रजीडन्ट गरबी एज्युताना के नाम व सन्जलूस व चार्ज काइस भाग में लिखा जाता है

दफा १

बादशाहान देहली के नाम और लकब व कौम व जलूस व सन् विक्रमी

(१) सुल्तान साहबुद्दीन गोरिस १२३८ (२) कुतबुद्दीन ऐबक सं १२४८ (३) आरामशाह सं १२६६ (४) समसुद्दीन सं १२६७ (५) रुकनुद्दीन शौरंगजशाह सं १३६६ (६) रजीया बेगम सं १२८३ (७) मोजुद्दीन बहरामशाह सं १२८७ (८) अलाउद्दीन महमूदशाह सं १३०० (९) नासरुद्दीन महम्मशाह सं ३११७ गयासुद्दीन बलवन सं २२ (११) मोजुद्दीन कैकबाद सं ४४ (१२) शमसुद्दीन

कैकाउस सं. ४७ (१३) जलालुद्दीन फ़रोज शाह खिलजी सं. ४७ (१४) शमसुद्दीन इब्राहीम
 खिलजी सं. ५३ (१५) अलाउद्दीन खिलजी सं. ५३ (१६) शाहबुद्दीन उम्र खिलजी
 सं. ७३ (१७) कुतबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी सं. ७३ (१८) गयासुद्दीन तुगलक शा
 ह सं. ७८ (१९) सुल्तान महमूद तुगलक शाह सं. ८२ (२०) फ़ीरोज शाह तुगलक
 सं. १४०६ (२१) गयासुद्दीन तुगलक शाह दूसरा तुर्क सं. १४४७ (२२) अबूचकर शा
 ह तुगलक सं. १४४७ (२३) नासरुद्दीन मुहम्मद शाह तुगलक सं. १६४७ (२४)
 सिकन्दर शाह तुगलक सं. १४५० (२५) नासरुद्दीन मुहम्मद शाह तुगलक सं. १४५०
 (२६) दोलतखान लोदी पठान सं. १४६८ (२७) सय्यद खिजरां सं. १४७४ (२८)
 मोजुद्दीन अब्दुलफ़तेः मुबारक शाह सं. १४७८ (२९) मुहम्मद सं. १४८० (३०)
 अलाउद्दीन सं. १५०२ (३१) हमीरखान पठान सं. १५०३ (३२) सुल्तान बहलूल लोदी
 सं. १५०७ (३३) सुल्तान सिकन्दर लोदी सं. १५४६ (३४) सुल्तान इब्राहीम लोदी
 सं. १५७४ (३५) जुहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर शाह गाजी सं. १५८३ (३६) नसीरुद्दीन
 मुहम्मद शाह हुमायूँ शाह बादशाह गाजी सं. १५८८ (३७) सौहर शाह सूर सं. १५८७
 (३८) सलीम शाह सूर सं. १६०२ (३९) मुहम्मद शाह अदली सं. १६१० (४०) बाद
 शाह इब्राहीम सूर सं. १६११ (४१) सिकन्दर शाह सरी पठान सं. १६११ (४२) नसी
 रुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ बादशाह दूसरा तुगलक सं. १६१२ (४३) अब्दुल मुजफ़्फ़र जल
 लुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह गाजी सं. १६१२ (४४) नूरुद्दीन मुहम्मद
 जहांगीर शाह बादशाह गाजी सं. १६६२ (४५) शाहबुद्दीन मुहम्मद शाह जहांगीर
 बादशाह गाजी सं. १६८४ (४६) मुहीजुद्दीन मुहम्मद औरंगजेब आलमगीर
 बादशाह सं. १७१४ (४७) कुतबुद्दीन मुहम्मद आजम शाह सं. १७६३ (४८)
 शाह आलम बादशाह सं. १७६४ (४९) मोजुद्दीन जहांगीर शाह सं. १७६५
 (५०) जलालुद्दीन मुहम्मद फ़रुख सीयर सं. १७६६ (५१) रफीउदरजात सं. १७६६

(५२) रफीउद्दोला सं १७७६ (५३) रोशन अख्तर सुहम्मद शाह बादशाह सं-
 १७७६ (५४) अब्दुलहसन अहमद बादशाह सं- १८०५ (५५) अजीजुद्दीन आलम
 गीर शानी सं १८११ (५६) महीउलसुनत सं १८१६ (५७) अली गोहर शाह
 आलम बादशाह सं- १८१७ (५८) अकबर शाह बादशाह शानी सं १८५३ (५९)
 सरजुद्दीन अकूजफर बहादुर शाह बादशाह गाजी सं १८६४ सं १९१४ ये काल
 लोगों के गदर से सामिल होने से नामकी बादशाही करके कैद हुआ ॥

दफा २

सरकार दौलत मदार अङ्गरेज बहादुर

जनावमलिकामो औज्जा रफीउलदजात क्यूं इन विकोरिया फरमार बांड
 इङ्गलिस्तान का जन्म सन् १८१८ ईसवी। सन् १८३७ मे काका चौथा उईलियम
 के तरसूनशीन होकर सन् १८४० ई० के जनवरी में जर्मन का पीन्स आलबर्ड साह
 बसे शादी करी और राज काज करने की खूबियों मे बड्क बाल बिलन्द का हाल
 मशहूर आम है लिखने की हाजत न ताकत खुदाउमर दराज करै ६२ किरोड मनु-
 ख्यो का अन्बा नसीब है और औलाद का नाम व शादी नीचे लिखी है मये सन् व
 माह बनारीरव ॥

विकोरिया अडलडी मेरी लुईस का जन्म ४०।११।२९ प्रेसीयो क शाहनशाह
 प्रेडारिक उईलियम से शादी ५८।१।२१।(१) प्रेन्स ओफ वेलस् अलबर्ड इडवर्ड का
 जन्म ४१।११।९ केनमार्क की बेटी अलख जनुरा से शादी ६५।३।१० प्रेन्सस अ
 ल्स मोडमेरी ४३।४।१५ हिंसीडार मिछाड कालुईस से शादी ६२।७।१।(२) प्रेन्स अलिमे
 ड अनेष्ट आलबर्ड ४४।८।६

सन् ६६।५।२४ प्रेन्सस हलेना अगस्टा विकोरिया ४६।५।२६ हसटन का केंवर कसयन

से शादी । । प्रेन्सस लुईस कारोलाइन एलवर्ट ४०।३।१८ लोर्न कामारकुड्स से शादी ७१।३।२१ (३) प्रेन्सस अर्थर विलियम पाररीक अलवर्ड ५०।५।१ (४) प्रेन्सस ल्यूपा वलनजरुडनकेन अलवर्ड । । ।

सन् १८७८।१।१ कोकेशर हिन्दू का खिताब स्वीकार किया सन् १८८० में सन् जुबली की खुशी मात्र जहां में हुई सन् ६१ में प्रेन्सस अलवर्ड के फौत होने का शोक ४ वर्ष रखा था॥

इङ्गलिस्तान में वजीर राजमकेल कबूब नाम वतारीख चारुज

(१) भाई कवंट मेलब्रान सन् ३५।४।१८ (२) सररवर्ट फीलूसे ४१।८।१ (३) लार्ड जोनर सल ४६।७।३ (४) अर्ल ओफ डर्बी ५२।२।२७ (५) अर्ल ओफ अवेर्डन ५२।११।११ (६) भाई कवंट पामरन ५५।२।८ (७) अर्ल ओफ डर्बी ५८।२।२६ (८) भाई कवंट पामरन ५८।६।१८ (९) अर्ल रसल ६५।११।६ (१०) अर्ल ओफ डर्बी ६६।७।१६ (११) वन जामन डीज राइल ६८।२।२७ (१२) विलियम वार्ट गल्लंड एम ७४।२।२१ (१३) डज राइल । । (१४) विलियम वार्ट गल्लंड एम ८०।४।२८ (१५) मार्कुड्स ओफ साल सबरी ८५।६।२४ (१६) विलियम वार्ट गल्लंड एम ८६।२।६ (१७) मार्कुड्स ओफ साल सबरी ८६।८।३

गवर्नर जनरल केशर हिन्दू वतारीख चारुज

(१) राइट आनरबल वार्न ह्यूंस ७४।१०।२० (२) लार्ड कोर्न वाल्सकेजी ८६।८।१२ (३) सर्जन शोरवाडे ८३।१०।२८ (४) दीमारकुड्स ओफ अलस्ली ८६।१।८ (५) लार्ड गेनर सन् १८०७।७।३१ (६) मार्कुड्स ओफ ह्यूंस सन् १८१३।१०।४ (७) लार्ड राबहारा सन् १८२३।८।१ (८) लार्ड ओर्डेलियम वटंग सं १८२८।७।४ (९) सर चार्ल्स सीट कोफ कायम मुकाम सन् १८३५।३।२१ (१०) लार्ड अकलंड सन् १८३६।३।४ (११) लार्ड इलनबरा सन् १८४२।२।२८ (१२) लार्ड हू डीज सन् १८४४।७।२३ (१३) दीमारकुड्स ओफ डेल हवसी सन् १८४६।१।२ (१४) भाई कोटा किना सन् १८५६।२।२८ -

(१५) लार्ड इलेग सन् १८६२।३।१२ (१६) सख्तन लोसे सन् १८६४।१।१२ (१७) अर्ले मेयो सन् १८६६।१।१२ (१८) लार्ड नार्थब्रुक सन् १८७२।१।३। (१९) लार्ड लीटन सन् १८७६।४।१२ (२०) मारकुडुस प्रोफ्रीपन सन् १८८०।६।८ (२१) लार्ड अर्ले प्रोफडफ्रीन सन् १८८४।१२।१३ (२२) दीयाइट आनरबल प्रोफ लेन्स डोन वाइस राय इनुगवर्नर जनरल इडिया सन् १८८८।१२।१० चार्जलिया सम्बत् १९४५ मृगसिरसुदी चन्द्रबा॥

साहबान अजन्त गवर्जनरल सजपूताना

(१) जर्नेल दिवीड अदरर लौनी दिल्ली सन् १८ । । । (२) सरचारल समिटकाफ २५ । । । (३) मिस्टर सर ऐकाल ब्रुक सन् २८ । । । (४) कर्नेल लाकर अजमेर- ३८ - - (५) कर्नेल अलबीस - - (६) कर्नेल जे-सदर लेन- ३८ - - (७) मेजर जेथयोर सी कायम मुकाम- - (८) कर्नेल जे-सदरलेन- - (९) क जे-लेबो- - (१०) सरहनरी लार्नस आबू - - (११) जर्नेल जार्ज लार्नस - - (१२) क- डबल्यू एफ इंडन कायम मुकाम ६० - - (१३) जर्नेल जार्ज लारनस साहब ६१ - (१४) कर्नेल सी के इलियट साहब ६४ - - (१५) क- डबल्यू एफ इंडन साहब ६४ - - (१६) क- आर एच कीटिंग साहब- ६७ - - (१७) क जेसी ब्रुक ७० - - (१८) सरज्यु इंस साहब- ७३ - - (१९) मिस्टर ऐसी लायल साहब ७४ - - (२०) क- सी के एम बालटर साहब कायम मुकाम ७७ (२१) मिस्टर ऐ सी लायल साहब- ७८ - - (२२) क- ए आर सी ब्राड फोड साहब - - (२३) क- सी के एम बालटर साहब कायम मुकाम- - (२४) क- ए- आर सी ब्राड फोड साहब- - -

(२५) क. सी. के. एम बालर साहब बहादुर सन् ८७.

मातहत यूरोपियन साहब बहादुर बहोत से हैं चुनाचैः अलावा सिकन्दरों के अजमेर में कामिश्नर व उदैपुर जैपुर जोधपुर में रजीडन्ट व भरतपुर देवली में अजन्ट साहिबों के पास पड़ोसी रियासतों के वकील वास्तः काम पंचायत वगैरह के रहते हैं तथा बीकानेर अलवर कोटा मालावाड़ में पोलटी कल साहब व नये शहर वगैरह में भी रहते हैं और जैशालमेर सिरोही मलानी का रजीडन्ट साहब जोधपुर व बूंदी टोकलवा का अजन्ट देवली में व डूंगरपुर अंसवाडा देवलिथा यता पगढ़ का रजीडन्ट उदैपुर में व करोली धोलपुर का अजन्ट भरतपुर सम्भाल वरपो ट करते हैं - और अजना व कला साहब बहादुर जी पास १४ वकील उदयपुर जैपुर जोधपुर जैशालमेर बीकानेर किशनगढ़ अलवर भरतपुर करोली धोलपुर टोक बूंदी कोटा मालावाड़ के रहते हैं - तथा यहां के वकील मुंशी लखपति राय थे सं. १८८८ में हजुरी रामजी दास जी फेर सं. ९८ में प्रो. सरदार मलजी गये सं. ९९ में अजमेर का लाला पट्टो करन लाल जी को नायब रक्वा सं. ३ में प्रो. जी मिम्ब र कौशिल रहे व सं. ९ में फोट हुये तो त्वालीजी का यम मुकाम रहे सं. १० में गंधूका का सोदा ठा. ऊमजी गये फेर बेटे जोध सिंह को रक्वा था सो सन् १२ में आया बादलाल जी व बेटा लखपति राय को काम दिया. सं. १९ में व्यास धन सुरव दास वकील हुवे. सं. २० का कार में महता नथमलजी दीवान साबिक जरूरी काम के लीये वहां गये सो कला साहब बहादुर जी के साथ जैसलमेर आये जब सं. २१ के कार्तिक में महता अजीत सिंह जी को साथ ले गये सो सं. २३ के अष्ट में पीछे आये वाद पीह कर लाल जी का बेटा गुलाबरा यजी जो नायब था अच्छा काम देने लगा बहकदार था ही - वकील हुवे सो हैं ॥

पोलटी कल अजन्ट मारवाड़ जैशालमेर के रजीडन्ट गरवी
राजपूताना

- (१) कृष्णान चन्द्रसाहब अजमेर सं १८ - (२) कृष्णान जैमसराड साहब
 उदयपुर - - - (३) चवलीयम साहब अ - - - (४) एच २
 प्रेथर्ड साहब सन् १८३० - - - (५) मेजर जान लडलु साहब
 (६) कृष्णान मोच साहब सन् ४४ - - - (७) मि. ग्रान्ट हेड साहब
 सं. ४५ - - - (८) कृष्णान मेक मीसन साहब - - - (९) मेजर
 मालकम साहब सं. ४८ - - - (१०) कृष्णान हाड कप्टन साहब सं ५१
 - - - (११) क. सिक्त प्रियर साहब सं ५१ - - - (१२) कृष्णान
 मीसन साहब सं ५६ - - - (१३) कृष्णान मारी सन् साहब सं. ५० -
 - - - (१४) क. ब्रुक साहब - कायम मुकाम सं ५८ - - -
 (१५) मेजर निकसन साहब सं ५६ - - - (१६) मेजर ईम्पी साहब सं-
 ६५ - - - (१७) क. ब्रुक साहब का. स. ६८ - - - (१८) मेजर
 ईम्पी साहब सं ७० - - - (१९) मेजर रावर्ट साहब ७२ - - - (२०)
 मेजर सी के एम. बाल टर साहब सं. ७३ - - - (२१) मेजर सी ऐन्वेली
 साहब सं. ७५ - - - (२२) मेजर केडल साहब सं ७८ - - - (२३)
 कृष्णान बार साहब का - - - (२४) क परसी डबल्यू पौवलट साहब
 सन् ७८ - - - (२५) क. येडी साहब सं १८८० - - - (२६) क.
 परसी डबल्यू पौवलट साहब सं ८२ - - - (२७) मेजर सी-ऐ वेली
 साहब सं ८४ (२८) क. परसी डबल्यू पौवलट साहब सन् ८५ - -
 (२९) कराफोर्ड साहब - - - (३०) क. पौवलट साहब बहादुरजी
 स. - - - है

रियासतो के बाहमी मुकदमातर्की पचायत वास्ते पबकील उदयपुर जयपुर
 जोधपुर जैशालमेर सिरोही सिरोही पालनपुर बीकानेर किशनगढ़ रहते हैं ।

यहाँके वकील सं. ४ में व्यास व द्रीदास व सं. १७ में हाफ़्ज़ अबदुल हक जी बासदे
नागौर जो नायब थे सं. ३७ में फ़ौत हुए बाद वेरा अब्दुल हसन जी है दोनों को पैर
में सोना मिला.

अजन्तीमें

नक़शा व रपोर्ट भेजते हैं

(१) हरदेके नक़शा बारस (२) हर परखवार्डे लिखे बाज़ार (३) से माही नक़शे
पांच. १९ में फ़ुटकर नमकडाक ठगी उकैती (४) शासमाही महाजून व दिसम्बर
के अखीर में. तादाद फौज सवार पैदल व तोपा. तादाद मुलाज़िम ईसाई विला
यती मकरानी. तनखाह. सिलावटे व मजदूर. तादाद मुजरमान जो इलाक
ह गौर से आये. मये हाल उसको सलाह व गौरह का. तादाद अफ़यून देश में पैदा
व दिशावर से आया व खर्च हुवा व रूपये महसूल. पैमायश के मिनारे सम्भाल
कर रपोट करना। राजपूतां के शादी गमी का हाल (५) सालयाना रपोट अखीर
दिसम्बर में. तादाद बारोठिये हैं व इमशाल हुवे की. बीज गंदम व रूई कितनी
जमीन में कितना बूहा. कितना पैदा व खर्च व ने काल कहां को हुवा मये निर्ब
व अमदनी राज. तनदरुशती व सेहत आम खलायक. मेउकालेज अजमेर में
कौन गथा. हिसा व कुल पैदा खर्च की. तादाद वारदात साल तमाम व सजा
मुजस्मान. तादाद दीवानी फौजदारी में कितने. बकाया साबक व नये रज व
फैसल मये पैदा राज. जो कोई तरकी व तनज्जुल इमशाल हुवा हो. (६) हला
त पूछने पर. करजा. घास. चारा. घोड़े. बैल खच्चर व गौरह व गौरह लिखा जाता है
(७) खीडन्दी से नक़शा माहवारी महसूल अफ़ीम का जो पाली मे सं. ३८ से लेते
हैं व छः माही हिसा व खजाने की का आता है ॥

यूरोपियन साहब बहादुर शहास खान व डैलाक जैशमल मेरमें

तशरीफ लाये ॐ

(१) जनाब साहब काला लाकट साहब बहादुरजी से १८८२ श्रीसरकार से हथनी एक लक्ष्मी व सोगात लाये (२) बबलिया साहब सं ८९ में बीकानेर महाराज से मुलाकात कराई (३) लडलू साहब बहादुर सं में दाम फलोधी की सौव निकाली (४) जैकिस साहब सं ८२ बहाडमेर मुफसिहो को सजा दी (५) (६) कलंजर साहब मेघलादन साहब श्रीजीगंगाजी पधारेजव साथ थे (७) सा स- में साकल सेजमीन मापते थे (८) जनाब क. ज्यान सदरलेन साहब बहादुरजी सं ४ भाचशुदी १८ का तशरीफ लाये दिन १२ मुकाम डेकर साहब व तिकत्तर साहब मापते (९) कप्तान बीचर साहब सं ५ ६ १७ में आये सिंध से शीव निकाली (१०) कप्तान सिवल सं ८ में पोकरन से शीव निकाली (११) साहब सं में आकर मुल्तान गये वहां काम आये (१२) सिंध से कमिश्नर साहब के भेजे सं १४ गदर में अजमेर जाना मरे फौज बलोचों का बिलाक साहब व ७ दूसरे साहब आये थे तोफारिताला भी साथ था (१३) तरबट साहब साहब अमरकोट से सं १४ मे आये दिन रहकर ऊठ खरीद किये (१४) (१५) (१६) कप्तान ब्रुक साहब व डाकर साहब व डिरुमन साहब सं १४ फाल्गुण शुदी १४ को आये चैवदी की कूच (१७) मकाली साहब सिंध से तोपरवाना ले जोध पुर गये दो साहब साथ थे सो पीछे आकर सिंध गये (१८) मकाली साहब सवार ५०० सिंध से आये थे के जमी साहब सं १४ आषाढ शुदी ७ को सवार ४०० साथ

अरब नारात के आडी टरो मे से पहला आडी टरो जो सन १८८६ ई. के अन्त मे जैसल मेरमे आया उसका नाम मोहली मुहम्मद मुरार अली अडी टरो राजपूताना गजर अजमेर है इनकी मुलाकात श्री महारावल केरी शासनी साहब से हुई शेर दरबारे २०० १०१ कट और दुशाला वं पाग इनको बुखशा था

अजमेर से आकर सिंध गये (१९६) गुलसमद साहब सं- १५ माह शुदी १२ अमरकोट
 से आये दंरहे फेर पौकरन से पीछे आकर सिंध गये (१२०) डिकसन साहब सं-
 १५ कार्तिक वदी ५ सवार दो सौ साथ आये थे (१२१) (१२२) जैकिसन साहब पाटी
 दर साहब सम्बत् १७ माह वदी ६ वहाडमेर तोफा लाये (१२३) नैकिसन साहब
 हादुर अजन्त जोधपुर सं- १७ माह शुदी १ वहाडमेर से आये सो गिरि राज सरत शरी-
 फ ले गये (१२४) सिकदूर हिमलदीन साहब सं- १७ कार्तिक में बीकानेर का कांकड
 देरवा सं- १९ में सरहद निकाली (१२५) कप्तान इष्टन साहब सं- १९ पौष शुदी ११ को
 आये- शुदी १४ को कूच फेर चैत्र वदी ७ को आये- वदी ९ को कूच (१२६) निकसन सा-
 हब बहादुर जोधपुर से सं- २१ के मृगसिर वदी ३ को आये, वदी ८ को कूच (१२७) जना-
 व कलां क- इडन साहब बहादुर जी सं- २१ कार्तिक वदी १३ को त शरीफ लाकर श्री
 जी साहबों को तरबू नशीन कीये- डाकर लोंग साहब व सिंध विलीयर व रापर्ट साह-
 ब साथ थे (१२८) जोधपुर से इस्पी साहब बहादुर सं- २७ कार्तिक वदी १२ को आये
 वदी को कूच पैमायश के काम पर (१२९) टार्न साहब सं- ३० माघ सं- ३२ पौष सं- ३३
 पौष माघ कार्तिक सं- ३५ के कार्तिक में गये (३०) राचर्स साहब सं- ३२ के चैत्र में आये
 सो जनाब बालदर साहब के दोशत लिखने से खातिर ज्यादा करार्ड (३१) आय साहब
 सं- ३१ व सं- ३३ मृगसिर माघ चैत्र व सं- ३४ के कार्तिक शुदी १२ को आये थे (३२)
 बूलर साहब बुम्बर्ड से आकर सं- ३० के माघ में जैन का शास्त्र देखा व कैड उतराया
 कि नया मिला एक साहब शेर करने को बिलायत से आया साथ था (३३) जोधपुर से
 जी डच बालदर साहब बहादुर सं- ३० आसोज शुदी ६ को आये बड़ी धूम से दसहरा हु-
 आ फेर सं- ३२ के फाल्गुण में श्री जी साहब की मिजाजपुर सीके वास्ते: त शरीफ लाये
 डाकर साहब जी से ये युमन साहब साथ थे उनको वाजसत घोड़ा व रुपये देराये (३४) -

विलातफोर्डसाहबसे-३२फाल्गुणशुदीकोपत्थरदेखाडूगरतेमडे ५- तेजुवांमेधाल
 कहकरपत्थरलेगये(३५)कज्ञानकानलसाहबबहाडुरवएवजर्जीडन्तसाहबस-
 ३३केपौषशुदीमेंआकरकेशरहिन्दकादर्वागकिया(३६)यष्टनसाहबसे-३३के
 वैशाखमेंफलोधीसेनमककाआगरदेखनेआये(३७)फिरंटीसाहबसे ३३केवैश
 खवदी १(३८)जनाबवारसाहबबहाडुरजीडन्तजोधपुरसेसे-३५केमायमेंफलोधी
 सेआयेकाबुलपरसर्कारकीचढाईकेलियेकंटररीदकराये(३९)जनाबकलामे ब्राड
 फोर्डसाहबबहाडुरजीसे-३५केकार्तिकवदी५कोतशरीफलायेवदी६कोकूच(४०)जना
 बकपोलटसाहबबहाडुरजीडन्तजोधपुरसे (४१)मि-ओलडामसाहबसे ४२
 ४३मेंदेशकेडूगरदेखे(४२)डाकरएडमसाहबसे- मेआये॥

दफा ३

नकशारियात्तहायजोसुवाअजमेरवआबूकेराजपूतानामेंआवादीव
 आमदनीदौरहकासन१८८१ईस्वीबमूजिब

नं०	नागरियासत	लकब	नामरईस	राजपूरशहरश्रीवाराणसी	राजपूरशहरकावा	म र ड म शु मा री				आमदनीसालधाना
						घर	कुलमनुष्य	मरद	औरत	
१	उज्जपुर	महोमान	श्रीजसवतसिंहजी	१२६७०	५७२२	३२४१६	१४४३१५४	७७२२८५	६० ४५२	५१०००
२	जगपुर	रे	श्रीरामसिंहजी	१४४६१	५६६४	५०६८६	२५३४३५०	१३६६१३४	११५२२६	५००००
३	जोधपुर	से-	श्रीजसवतसिंह जी	३७१००	३७८५	३०६०४	१०५०४०३	६६६११५	७८२२७८	४००००
४	जैसलमेर	महा गयल	श्रीदेवीरामजी	१२४४७	४१४	२६२१७	१०६५४			
५	गोकनेर	महापंजा	श्रीदूगरोहजी	२२३४८	१०३६	१०५१६	६०६०२२	२६३६४०	२१५३०१	१२५००

लोकल जीको राठोड़ों ने चुक करना चाहा जब मंडोवर ही चेली थी छोटे कुं.
 रघुनाथ देवलीये रावत हुवा जिनके सूर्जमल प्रथी सिंह - बाघजी - भानु - हरी
 सिंह - प्रतापसिंह - गोपाल सिंह - सालमसिंह जी अब है - २०५ कुंभाजी
 १६० एनियां सिवाय पास बानाके थीं ३६ किले जहीद वफतह किये - करा-
 नाली ये ब्राह्मनके कालिवसे अपनी सूह तबरील करके स्वर्ग गये ब्राह्मन ग-
 दी देव कर यह ह्रास कइ दिया जब कुं. उदाजी ने उसको मार डाला जिससे
 छोटे कुं. रायमलजी राठोड़ श्रीन हुस - २२७ सांगाजी किला रंगत भीर बना
 जा - उ हंडाड में सांगानेर बसाया मंडसौर तक अमल दारी हुई - कुं. भोजराज
 नो पौन हुस - रत्न सिंह राज बैठे - शेर विक्रमावतजीको खवास बन भीर
 ने चुक किया और आपराज बैठा जिसको निकाल कर २३१ उदयसिंह जी-
 सं १६०० में राज बिरजे - सं. १६२२ में चीतोड़ में बादशाह का कबजा-
 हुआ जब देवडे राज पूतों से गिरदी व कइ गांव जहेज में मिले थे यहां रहे -
 उदयपुर शहर बसाया व उदयसागर तालाब बनाया - सांगा राठोड़ से सलूवर
 लेकर रावसिंगजी सावे वाले की ही बहले कनवारिया दिया - सं. २४ में चीतोड़
 ही कबजे हुई - २३२ प्रतापसिंह जी सं. १६२६ पांचवां कुं. बाघजी जहाजपुरग
 ये - २३३ अमरसिंह सं. १६५२ बादशाह को खिरनी ४ हजार देनी कर थाने -
 थाने उठाये - कर नहीं दी - तीजा कुं. सूर्जमलजी सायपुरे गस - जिनके २३४
 कर्न सिंह जी सं १६७६ शाहजादे खुरम को तरत बैठाया जब इलाका बालवा
 जिनाया - २३५ जगतसिंह जी सं. १६८४ - २३६ रायसिंह जी ब्रजसे पथार
 लो हनेज दराजे है - २३७ जैसिंह जी सं. ३७ इलाके से बादशाही थाने उठाये
 २३८ अमरसिंह जी १७५५ - २३९ सांगारामसिंह जी सं. १७७६ - २४०

जगत सिंह जी स १०८० भानेज माधो सिंह जी को जैपुर गढ़ी नशीन किया-
 दूसखर्व में १५ लाख का इलाका भानपुर रामपुर मलार खव को दिया २४१
 प्रताप सिंह जी स १०७७ - २४२ राज सिंह जी स १०१० - २४३ अडसी
 जी को स १०१७ राज बिठाया जिला नीमच मा जो सीधीये को दिया- २४४
 हमीर सिंह जी स १०२४ - २४५ भीम सिंह जी स ३३ नूगी अखतर साहब
 ने छावनी नीमच आबाद करी यद साहब ने उदयपुर में काठी बनाई - २४६
 ज्वान सिंह जी स २४ - २४७ सरदा सिंह जी स १५ छोटा भाई सर सिंह को
 बाघोरदा - २४ सूरूप सिंह जी स ८८ रियासत सरसवज करी - २४९ शिंभू सिंह
 जी स १८१० अजंटी कायम हुई - २५० श्री सजन सिंह जी स १८३०
 व्यासोज सज्जगढ बनाया - २५१ श्री फतह सिंह जी स १८४१ सावरा सुद
 ४ चिरंजीव

रियासत डूंगरपुर

जो उदयपुर महाराना के खान्दान में प्रारंभ है ॥

वेयात में लिखा है कि अनादि पुरुष ऊं से १६७ पीडी रावल सत सिंह के
 बड़े कु सीहड ने पिता की आज्ञानुसार छोटे भाई भूहरा को गढ चीतोड का
 राज देकर आप उत्तर दिशा में नदी सांम पास खवनो से लड कर धरती ली-
 और राज धानी करी - ॥

१ रावल सीहड ॥ २ दूदा ॥ ३ वीर सिंह ने स १३५५ मे डूंगरा भील को
 जो १० स्हस भीलो का सरदार लुटेराथा मारकर नुसेपुर में शहर बसाय डूंगरपुर
 कही - ॥ ४ भरतुड ॥ ५ डूंगरसी ॥ ६ करमसी ॥ ७ कानड़े ॥
 ८ पाताजी ॥ ८ गोवाने जी गोब सागर तालाब बनाया ॥ १० सोमदासजी

* अशिल नाम दून का एक दर लो नी था यद दूरे नी फौज के ल न ल धे शाद आल म वाद शाद ने दून को नसी
 रुद्धाला का खिनाव दिया था छावनी नसी एबाद उ क सा दि व ने अ प ने ही नाम से बसाई थी - ॥ म मुएद प्र ली

११ गांगाली से गहलीत हुह ॥ १२ उदैसिंह ॥ १३ प्रथीराज ॥ १४ आस
 कर्त ॥ १५ इंसमल ॥ १६ करमती ॥ १७ पूजोजी ॥ १८ गिधरजी
 १९ जसवन्तसिंहजी २० खुमारासिंह ॥ २१ रामसिंहजी २२ सेवसिंह
 जी ॥ २३ देरीसालजी ॥ २४ फतहमलजी ॥ २५ जसवन्तसिंहजी
 हरीसगत हुह बहुत इव पुन्य कर के मथराजी में देह त्यागी ॥ २६ रावलजी
 श्री उदैसिंह जी चिरंजीव कुं. जी श्री खुमारासिंह जी भंवरजी श्री विजय-
 सिंहजी ॥

रियासत जयपुर

श्री जसवन्त जी पूरा अवतारके पुत्र कुसके वंसमें सुमित्र के बेटे कुर्म
 के कूर्क बपौते कनकरवांध के कछवाहे कहीजे मगधदेश के नामवंतीयों
 ने अयोध्या कीन ली जवसे अन्तरवेद में मौजे मुगल फेर नरवर में रहे - और
 अखिअर श्री लखेकिया सो इसरीसिंह ने अपने भानेज तुंवर जेसाको रिया
 पीछे नंदावली में रहे इनके कुं. १ सोड देव ने मोरियां बडगूजरों से दोसा
 लेकर सं. १०२६ में राजधानी करी वादमीना का मुल्क माची षोह गरीर -
 मोटा शहा लेकर किलारामगढ बनाया ॥ २ तुलहराय षोह में ३ का-
 कलदे आकर में राज वैठा - ४ हरादेव ५ जैनड ई प्रद्युमन ७ मलेसी
 ८ ३२ सुत्र हुह ९ वाजल राजवेवा कूकीसे व आन जाति मराजन नाई
 जाद बौर हुह १० राजदेवसे पीछे लडाहुई - छोटे कुंवर भोजराज के -
 ११ सारव कछवाहे हैं १० केलरा - केलरागढ बनाया ११ कुंतल कं. हमीर
 के हमीरदे गांव दूरीगावजी १२ जूयासी कुं. कुंभके कुंभांसी १३ उदैकर्णी

कुं० नरसिंह व बरसिंह के नरूके गाव लहरागा 'उनेहारा लावा वगैरह है'- और
 खाला के सेखावत मौजे मनोहरपुर व सीकर खेतडी चौकडी व गैर में है - व
 सो ब्रह्म के सो ब्रह्म पोते व पातल के पातल पोते व पीथा के पीथापोते (१४) नरसी
 (१५) बन भीर कुं० मगल के मगल पोते व वरा के बरा पोते व नरा के बन भीर पोते
 (१६) उधर्या (१७) चन्द्रसेन कुं० कूमाके कूभावन (१८) प्रथीराज के ६
 पुत्र में पूर्णमल व भीम व भीम का बेटा रत्नसिंह व आसकन नैता थोडा
 थोडा राजकिया और १२ की १२ कोटड़ी हुई जिसमे कई लुप्त हुई ज्योही
 दूसरे मिलाये गये ॥ पिचान के पिचानोत ॥ सुलतानके सुलतानोत ॥
 गोपाल के नाथावत गाम चामू ठाकुर सरमोद रावलजी सुसाहिबीके हक-
 दार है ॥ जगमाल के बेधारोत गाम डिगी ॥ वलचन्द्रके वलभद्रीत-
 गा० अचण्ड ॥ रामसिंहके रामसिंगोत ॥ प्रतापके परतापोत ॥ साई
 दास के साईदासोत ॥ चतुर भुजके चतुर भुजोत गां० बगहू ॥ कलपां-
 गा के कलपारागोत ॥ पूर्णमलके पूर्णमलोत गा० नीमाडा ॥ सांगा
 (१८) भारमल कुं० भगवानदासके वांकावत ॥ सुन्दरदासके सुन्दर-
 दासोत ॥ (२०) भगवती दास कुं० मांधोसिंह के मधारी व सूरसिंह के
 सूरसिंहोत ॥ बनमाली दास के बनमाली दासोत ॥ (२१) मानसिंहजीसे
 राजावत हुये ॥ कुं० दुर्जनसिंहके दुर्जनसिंहोत गां० धूला भावसिंहराज
 किया मिरजाशजाका खिनाब पाथा विश्वा गांव वसाया ॥ सगतसिंहके सगत
 सिंहोत ॥ कलानसिंहके कलानसिंहोत ॥ हिमत सिंहके राजावत ॥ (२२)
 जगतसिंहजी ॥ कुं० जूभासीसिंहके पुत्र संगराम का चलाय ॥ प्रथीसिंह
 के खिरगी व ईशरदे है ॥ अनोपसिंहके राजावत ॥ तानार सिंहने राय

जादा का खिताब बनागौरका परगना पाया ॥२३॥ महासिंह ॥ (२४)
 मिर्जा राजा जैसिंह जी ॥ (२५) राजा सिंह जी बाहशाह ने आमेर खाल
 से कर पीछी बरवगी ॥ (२६) किराई सिंह जी ॥ (२७) विश्वनाथसिंह जी -
 हिन्दुओं का परगना पायाथा ॥ (२८) सवाई जैसिंह जी सं० १७५६ ई बड़े
 ही प्रताप हुये सं० ८४ में शाहू जैपुर बसाय राजधानी करी सबार तधारा
 ज राजेद्र का खिताब था बाहशाह ने आमेर खालसे कर पीछी ही बाहईशर
 सिंह जी राज बैठे - बूढ़ी की न लीयोथी ॥ (२९) सवाई माधोसिंह जी -
 किला ररात भोर फतह किया - प्र० टव बरसपुर दरवनीयो को दिया शाहरमा
 धोपुर वसवाई माधोपुर बसाया वेय प्रथीसिंहने भी १० वर्ष राज किया -
 (३०) सवाई प्रतापसिंह जी सं० १७५६ ई इनके अहह में मांचोड़ी रावनरुद्धा प्रता
 पसिंह जो ई हजारकाजागीरदार था अकल वबीरता से जैपुर - भरतपुर - मे
 वात बगौरह का मुल्क हबाकर अलवर में राजधानी करी - बरवतादा सिंह जी
 को गोद लिया जिनके वनैसिंह जी उनकी शिवदानसिंह जी उनका भंगल
 सिंह जी - अवरराजा है ॥ (३१) सवाई जगतसिंह जी सं० १८६० इनके
 बाह नरवरसे आनसिंह जी को लाकर राजबैठायाथा परंतु कुं० जैसिंह जी -
 पैदा हुये तब उठाहिया - (३२) सवाई जैसिंह जी सं० १८७६ ॥ (३३) सवाई रामसिंह
 जी सं० १८८१ राजविराजे अकलवहोशियारीसे राज बरिआया वसरदारों के ठिकाने सर
 त्तु किये खालसा ३२ लाख काथा सो २५ काहुआ सरकार अंगरेजी की मेहरबानीसे
 कलकत्ता कौनसिलमें मेम्बर हुये कोट काससका प्र० पाया औरनेक निअती या
 नेखास वआम परनेक नज़र बगौरह २ खूवियां अज़हद थीं एक काम बहुदही
 बुरा किया कि श्री बल्लभकुलके मन्दिर उठादिये - उत्राधिकारी नहोनेसे ईशरदेके

* २१मईसं० १८८२ई० कोमहाराजाभंगलसिंहजीनौसूफनैनी तालकेपहाडपरजहांआववहषाबदलने
 गयेथे स्वर्गवाशहुयेलाश२५ कोअल्वरमेंलाईजाकरदागदियागया ३ जूनको इनकेपुत्रजैयसिंहजी१०

पृथकीअवस्थामेंगद्दीनशीनहुये - सं० १८९३

ठा० कायमसिंह को कि जिसको ईश्वरदे तो क्या इलाके सेही खार्ज किया घा हस्त लेकर माधोसिंह जी नाम रखा ॥ (३४) सवाई माधोसिंह जी सं० १८३० राज बैठ चरजीव ॥

नकशाखियासतउदयपुरके१६सएवतोंका

नम्बर	खाप	लकर वनाम	जागीरदार	ठिकाना	आमदनी	कैफियत
१	भाला	राजराणा	राजसिंहजी	साहडी	-	
२	चौहान	रावजी	× वरवतसिंहजी	वेदले		
३	से०	से०	केसरीसिंहजी	कोठारिया		
४	सीसोदिया	रावतजी	जोधसिंहजी	सबूर		
५	पोयार	रावजी	गोवददासजी	बीजौलिया		
६	चूना०	रावतजी	किस्नसिंहजी	देवगढ		
७	से०	से०	मेघसिंहजी	वेसु		
८	भाला	राणा	× फतहसिंहजी	केतावाडे		
९	चूना	रावतजी	शिवनाथसिंहजी	आमेट		
१०	से०	से०	अमरसिंहजी	मोजारी		
११	भाला	राणा	मानसिंहजी	गुंगोदा		
१२	सारगढ़	रावतजी	नहारसिंहजी	कानोड		
१३	सगतावत	महाराज	मदनसिंहजी	भीडर		
१४	मेडनीया	ठाकुर	केसरीसिंहजी	× वदनोर		
१५	सगना	रावतजी	मानसिंहजी	वान्सी		
१५	किस्नावत	से०	प्रतापसिंहजी	भैसरौड		
१६	चुहान	रावजी	रत्नसिंहजी	पारसोली		
१६	किस्नावत	रावतनी	जेवसिंहजी	कुडावर		
५	मेडनीया - धारौरावथासोभपवगोटवाड साथमारवाडमेंगया - ---					

सपजेमे विस्त्तावत रावजी उर्जनसिंहजी गावअस्तीदवालहे -

* इसका भी देहान्त होगया प्रवइन्के पोतेवाकुरसारदुलसिंहजी साहिबबदनोरके वाकुरहे म० मुरादखली

* फतहसिंहजीका देहान्त होगयाउनके पुत्रराजनाजालिमसिंहजीमालिकहे - ॥ मुहम्मदमुरादखली

* रावतसिंहजीका जूनसं० १८८२ ई० के अन्तमें देहान्त होगया इनको जगदइन्के पुत्र करारासिंहजी गान्दीपरवैठेहे मु० मुरादखली

रियासत जोधपुर

कमधज या कमंध याने शठों की तवारीख सिलसिले वार नहीं मिली
 शहर कलोज में बडगराज था ॥ १ राजा जैचन्द्र के बाद २ सैन कारवाड में
 जयधे और कई पुस्तों बाह गोयलां से मुल्क लेकर बडे मे रहे ३ सीहा ४ आ
 स्थान ५ घुंहुड. हीरायपाल ७ जालसाही ८ झाना ९ तीडा १० मलखा
 जी के कडे कुं. मलीनाथ के जगमाल का तो मालानी में बकूपा वगैरह को राज
 जैसलमेर से ज्हाडमेर को बडा गिराव मए परगने मिले और जैतमाल
 अहमदाबाद जाते आतानंदापुरां को गोठ जिमाय चुक करके गुडा राडधरा
 मए ४८ गांवों के लेकर राणा कहीजे तथा ११ वीर्मजी ने दलखां वगैरह जो
 ईचो को पनाह दी फेर उनके मुल्क में जा रहे और वहां ही मारे गये- बाद कुं
 गोगादे ने दलखां वगैरे को मारे दलखां के बेटे ने गोगादे को श्मर्ग भेजा ॥
 १२ चूंदाजी को ईदां ने मंडोवर दी ॥ कुं. चवदे राव मए ॥ १३ रिडमल
 जी उदैपुर में काम आये मंडोवर ही छुटी थी सो १४ जोधाजी ने पीछीली. फेर-
 सं० १५१५ में गढ वशाह जोधपुर आबाद कर राजधानी करी फेरती राज नीत
 जने सैनी धर्म मूजब जमीन के ग्राहक हुए चुनाचे हापीडी में हर तरफ पडो-
 सियो वगैरह का बहुत सा मुल्क दवाने रहे वल्के वीकानेर किशनगढ रतलाम
 आम्बडरा वगैरह कई जगह जुदा २ राज बांधा १५ सूजाजी १६ वाधाजी
 १७ गांगाजी १८ मालदेजी १९ उदैसिंहजी २० सूरसिंहजी २१ गजसिंहजी
 २२ जसवंतसिंहजी २३ अजीतसिंहजी कई वर्ष पहाडों में रहे गढ में बांशा-
 ही आगा रहा २४ अभैसिंहजी को गढ मिला- कुं. रामसिंहजी को निकाल कर

भाई २५ बखतसिंहजी राजबैठे - २६ बिजैसिंहजीकेपोते- २७ भीमसिंहजी सं० १८४८ में राजविराजे- फेरगुमानसिंहजीके कुं० श्रीमानसिंहजी सं० ६० में राजदुस जब फेरमानसिंहजी स्थाको बैजड्डे (टा० सगतीदानजीने कडग स्तेब का मुनशा लाकर राजवेग था - बाद श्रैम नगर से २६ श्री तखतसिंहजी साहब को सं० ८८ में तखतनशीनकिस- सरकार अगरेजीका अजन्त रहने से वाशरामराजकिया सितारे हिन्द का तुगमा पाया -

३० श्रीजसवन्तसिंहजी सं० १८३० फागुरावृदि १ चरंजीव- नेकनियती- कीवरकत व वलन्द अकवाल सेरजीखन्द तो करनल पावलट साहब बहादुर- और कारमुखतार छोटा भाई महाराजसरप्रतापसिंहजी मिले विरिआ- सतसरसब्ज होगई चुनावे सारचीये से जोधपुर- बालोतरा नक रेलहीने वनमक काठे का सरकार अगरेजी को देने वहीवानी फोज दारी व साथगत वगैर- २ कानवावन्दो बस्त करने से आमदनी १८ लाख थी सो सहचन्दहुद और ऐसी ही काररबाई रहीं तो इससे भी दो चन्द होजावेगी तथा सरदारों से हर पीड़ी में कषेडगरहेथा सो नामही नहीं रहा- जसवन्तपुरा गाव व जसवन्तगढ बनाया -

जागीरदारोंके गावोंकी ताराद व आमदनी वगैरका नकशा सं० १८८६के कैस- लामूजव जुदा लिखा है - ॥

जीसी एस आई का तुगमा मिला श्री प्रतापसिंहजी साहब डूगलस्तान- जाकर कॅम्बोसी हासिल करी* के.सी.एस आई का सिवताव पाया- सं० १९०६ में महाराजकुमार श्री सरदारसिंहजी जन्मे -

* डूगरकैसरहीन्द की

आठ मिसलों के खांपांवगांव होहा वसोर्ठा में लिखे बाकी १६।३२
 जाने बहुतसे हैं -

होहा - खांपा कूपा मेडवा ऊहाव कनोत-। आठ मिसल जोधाअ
 ल जैतावंत अमसोत - ॥ सोर्ठा

आउवा वआसोप रियां रायपुर कारागोरां । आठ मिसल अरूप पिखा
 दोकनोरेवट नीमजरास आदामपुरा

काडा खीवसर - ॥ अगनाथानेहकूमतीकेनाम
 (१) जोधपुर (२) नागोर (३) डीडवांरां (४) मरोट (५) परवत
 हर (६) मेडवा (७) जैतार्यां (८) सोजत (९) वीलाडा (१०) पाली
 (११) वाली (१२) जालौर (१३) भीनमाल (१४) सांचोर (१५) शेवाना
 (१६) पचपधरा (१७) शिव (१८) सेराह (१९) फलोधी (२०) सांभर-
 (२१) नवा - (२२) जखन्तपुरा - और बातहतथाने बहुत हैं ॥

दियासतमारवाड-मेंजागीरदारोंकेवधारेकेगावोवआमदनीकी
 तादादसं०१८८६के फेसले मूनव ॥

क्र.सं.	नामखांप	तादादगांव		तादादपैदा		कुल	
		रेष	वधारे	रेष	वधारे	गांव	पैदा
१	खांपावत १००	२३५	× ७५॥॥३	३२०१४)	१०२१२५॥॥	३१०॥॥३	४८२२६८॥
२	कूपावत ५१	७७	× १३	१४४८३७)	५४८२०)	८०	१८०७५७)
३	जैतावंत १६	२२	× ३॥	३८८००)	५२२५)	२५॥	४५०८५)

४	करनोत १८	३७॥	०	१५८६३	०	३७॥	१५८६३
५	मेडतीया २२१	५८६॥॥=	६॥	१४९२३७॥	१५५००	५८६॥॥=	१४९२३७॥
६	जोध १४५	३२२॥	६॥	४९७५७॥	३९०००	३२२	४९८५७॥
७	ऊदावत ७०	१२७	२७॥	२८३५७०	१५६६८०	१५४॥॥	३५२०२०
८	कर्मनोत ३४	४४	१७	२७००००	१३४७५५	६९	४०४७५५
९	नरावत ७	६॥	०	१६५०००	०	६॥	१६५००
१०	महेचा ८	१३॥	६॥	१८६६३५	२०३६६	१८॥	२९६६६
११	धवेचा २५	३४॥॥॥	॥	२०६६६६	४००	३४॥॥॥॥	३९०५६६
१२	जैतावत ३	२॥	०	२७५००	०	२॥	२७५००
१३	पानावत ३७	४२	०	६३५६८०	०	४२	६३५६८०
१४	रुपावत ५	२॥	०	३०००	०	२॥	३०००

१५	वीहावत २	११॥	०	१०५०)	०	११॥	१०५०)
१६	कलावत ६	२॥	३१॥	४२५०)	२४३३॥	५॥१॥	६६६३॥
१७	कांधलोत १	३	०	६२५०)	०	३	६२५०)
१८	रायपालीत ६	३॥	०	६०००)	०	३॥	६०००)
१९	मान्दरातीत ८	७	०	१०५०३)	०	७	१०५०३)
२०	संगला १०	१६	२॥	२२५००)	२२५०)	१५॥	२६७५०)
२१	बाला ३६	६१॥१॥	॥	७६३५०)	१०००)	६१॥१॥	८०३६३)
२२	जहडना २१	४१॥	०	६३३७५)	०	४१॥	६३३७५)
२३	नरानीत १	॥	०	१०००)	०	॥	१०००)
२४	पूनावन १	३	०	३०००)	०	३	३०००)
२५	भीयोत १	०	॥	०	६५०)	॥	६५०)

२६	सी थल १	३८	०	३२६०२	०	३२६	३२६
२७	देवराजोत २	२०	०	२०४७५	०	२०	२०४७५
२८	ज्भाणीया २	१	०	४०००	०	१	४०००
२९	चाडदे	११	०	२६००	०	११	२६००
	जोड २५८	विकानस जोड	२०५	विकानस जान	२२३	जोड कीरविक	२५२२२२
१	भाटी सरदार २४	२५॥	३५॥	१६२८	२०४००	१२०१	२७३३०८
२	चुहान ०४	१५	३	१२६६३५	६६५०	१४८	१६४२२५
३	सेखावत २६	२०॥	१	५७०२२॥	२७५	२२१	५७२२७॥
४	गंशावत २	४८	०	५२२७५	०	४८	५२२७५
५	देवडा १०	२०॥	०	२२२२२	०	२०॥	२२२२२
६	सोलखी ३	२४	०	२२५५०	०	२८	२२५५०

७	सौभाग्य ४	१॥=॥	०	४७५०)	०	१॥=॥	४७५०)
८	वीपडा १	१	०	४००)	०	१	४००)
९	सांखला ३	२॥	०	२६००)	०	२॥	२६००)
१०	बीडा २	११	०	१११२५)	०	११	१११२५)
११	कावा ३	२७	०	२०००)	०	२७	२०००)
१२	रंदा ३	४६	०	१०३५०)	०	४६	१०३५०)
१३	जुमावत १	१॥	०	२०००)	०	१॥	२०००)
१४	सांगडीय २	१३	०	२३००)	०	१३	२३००)
१५	सोळा ४	४	०	५०००)	०	४	५०००)
१६	वालोचा १	१	०	१०००)	०	१	१०००)
१७	सुधी ४	४	०	२७५०)	०	४	२७५०)

१८	पुवार १	॥	०	१०००)	०	॥	१०००)
१९	खालोत १२	२२	०	२२६२५)	०	२२	२२६२५)
२०	गैलोत २	२	०	२४००)	०	२	२४००)
२१	भायल २१	२२॥	२	११७०३)	२२००)	२५॥)	१३२०३)
२२	डोडाया १	१॥	०	१६६६७)	०	१॥	१६६६७)
२३	आसायच १	१	०	७५०)	०	१	७५०)
२४	तुवार ४	७	०	१५५०)	०	७	१५५०)
२५	पूरखीया ३	३	०	१०००)	०	३	१०००)

मजमूईहालतरकबारियासत ३५६०२लीनसुरव्या आवाही १०४६००२ आमदनी
 ०२ लोख रिवराजसरकारअग्रेजी ६० हजार फौजखर्च १लाख १५ हजाररुपयोंहै
 तादादफौज ६ हजार शहनशाहीखिदमतकी फौजके अलावहै
 अखत्यारगोदलेनेकाहासिलहैमलामी १६ तोपे औरसरकारसेसितारःहि
 न्दरनेअवलकाखिनाबमिलाहैखामलकबअस्तिसश्रीनोधपुरसुमस्यान
 सिधसश्रीमहारानधिराजराजेश्वर श्रीमहारजाजसवन्तसिंहजीहै-
 श्रीमहारजकुवारसरदारसिंहजीसाहिमिनीमाखसुदी १ समत १६३६
 कोजमंधेचिजी॥

इनगाओं की पैदा बहुत हो जाती है तथा इसके सिवाय बिलारेखके बहुत गांव हैं - ॥

जो धपुरके अखिल और इसरे हरजके सरदारो कानकशा

नम्बर	नाम ठेकाना	जात	हाथे गांव	सालाना अमदनी	कैफियत
१	पोहकरन	चामपावत राठोड	१००	१०००००)	यह ठिकाना बहुत जबरदस्त है मयो कालिज में ताली मपाई है-
२	आसोप	कुं पावत	५	४०००००)	राठोड
३	खेवह	जोधा	१०	३०००००)	अजिन
४	राम	उदावत	१७	४०००००)	अजिन
५	नीमवाज	उदावत	१०	४०००००)	अजिन
६	आहवा	चामपावत	१६	६०००००)	यह जागीर पहिले जियादः थी मयो कालिज में ताली मपाई है-

८	रायान	मेडतिया	८	३६१००)	राठोर
९	भादराजून	जोच्या	२७	३२०००)	अंजन
१०	रायपुर X	उदावत	३८	५००००)	अंजन
११	कुचामन X	मेडतिया	१६	४८०००)	अंजन
१२	धानेराव	अंजन	४२	४५०००)	सौवर्षपहिलेमेवाड कमातहतथा -
१३	आहोर	चामपावत	१०	२३०००)	राठोड
१४	दासपह	अंजन	१३	२६०००)	अंजन
१५	रुपट	अंजन	१९	१७०००)	अंजन
१६	कन्दालियह	कुंपावत	१२	१४०००)	अंजन
१७	लाधिया	उदावत	७	१८०००)	अंजन
१८	गुलार	मेडतिया	५	२३५००)	अंजन
१९	भाखरी	अंजन	५	१८५००)	अंजन
२०	बूळसू	अंजन	२४	३८०००)	अंजन
२१	मेढा	अंजन	२८	३७०००)	अंजन
२२	तन्नोंदा	अंजन	६	२०५००)	अंजन

X अब इस को बन्सानराकुर हरीसिद्धजीकेनाम से दरीपुर कहते हैं और रेल का स्टेशन भी हीरापुर
निरवा जाता है X इस ठिकाने को अपने यक्षकसान रखना और सिका चलाने का अधिकार
कार है म मुरादअली

२२	खेमसर	करनसोन	३२	१२०००)	राठीड
२३	राखी	चोहवान	२२	२२०००)	गैर कोमजागीरहा
२४	कानानह	करनोन	३	१२०००)	राठीड
२५	मनाना	मेडातिया	७	१७०००)	अँजन
२६	पालासनी	उहावत	२	१४०००)	अँजन
२७	खंनवाडा	चांपावत	१७	१६५००)	अँजन
२८	बाकरः	अँजन	७	१७५००)	अँजन
२९	चंहावल	कुंपावत	८	२२०००)	अँजन
३०	अगोवह	उहावत	३	२१०००)	अँजन
३१	आलन्यावास	मेडातिया	४	१४०००)	अँजन
३२	चांकोर	अँजन	२४	३४०००)	अँजन
३३	जावला	अँजन	८	३८०००)	अँजन
३४	वरु	मेडातिया	१२	३३०००)	अँजन
३५	मीठडी	अँजन	१५	२८०००)	अँजन
३६	लाहनू	जोप्या	७	२००००)	अँजन

३७	बगडी	जेनावत	७	१६०००)	अैजन
३८	कल्यानपुर	चोहान	७	१००००)	गैरकौम
३९	खेजडला	भाटी	८	१५०००)	चंद्रवंसी गैरकौम
४०	भल्लामड	राशावत	८	१५०००)	गैरकौम
४१	हुडियाना	मेडातिया	९	३३०००)	राठोड

सिन्धी साहिबजादद अब्बासअलीखां की इज्जत तमाम सरदारों से खासतौर पर जिघाद है - यह दोनो दरजेके सरदार पांचसौ रुपया सालाना आमदनी पर एक सवारके हिसाब से नोकरी और हाजरी देते हैं - ॥

राज्यबीकानेर

यह राज्य राजपूतानेके उत्तरमें फैला हुआ है जो धपुरके सिवाय दूसरी समस्त रियास्तोंसे लम्बाई व चौड़ाईमें जिघाद है इसके उत्तरमें हरियाना-भठयाना जिलेहिसार व सिरसा पश्चिममें भावलपुर जैसलमेर दक्षिण में जोधपुरका राज्य-और पूर्वमें शेखावाटी है लम्बाई पूर्वसे पश्चिम को २०० मील चौड़ाई उत्तरसे दक्षिण को १६० मील रकबा १७ ६ ७ ६ मील गुल्वा आवादी इलाख आदि भियोंकी है आमदनी खालसा आठ लाख से अधिक है और फौज सवार व पैदल ७ हजारके लगभग है - इस मुल्कमें तीन भाग जाट और चौथा हिस्सा राजपूत राठोड - सारसूत ब्राम्हण जोड़या दरहिया जातके राजपूत (जो मुसलमान हो गये) और चान भाट माली आदि वस्ते हैं इनमें एक हिस्सा चोरी - धानक वगैरे राजतके लोग भी हैं जिनका पेशा चोरी लूट का है - यहां का अंठ उमदा होवा है

४ यह काठानुर श्री दरतार जोधपुरको एक तिलक देता है जब लो तिलक नदे बगडी जन्म गदनीह - ग- मुरादअनी

जिसको रेत की नाथ कहना चाहिए और बेट वकरी भी देहात के रहने वाले
 बहुत पालते हैं जिनके गाली से उमदा कंकाल बनाये जाते हैं बीकानेर का जिया
 नर मुल्क रेगिस्तान है लिहाजा यहां फलत एक फसिल वाजरा मोठ की पैदा
 होनी है तरबूज यहां का जिसको मतीरा कहते हैं बहुत मीठा होता है खास बी
 कानेर की मिसरी मसहर है कुर्ये डोंघे होते हैं और अक्सर खारा पानी निकल
 जा है इसी कारण बहुधा लोगों का गुजर तालाबों के पानी से होना है नही या
 पछाड इस राज्य में कोई नहीं - ॥

बिकानेर

बीकानेर वाले जिलेकी रियासत आज से चार सौ वर्ष पहिले स्थापन हुई थी
 जोधपुर के राठोडों की खांप है राव जी धांजी ने जब सन्मत १५१५ में पु
 नी राजधानी मंडोर को छोड कर जोधपुर बसाया तो उस का बेटा बीका ना
 ने अपने काका कांथलजी की सहायता से तीन सौ राठोडों को लेकर
 उत्तर दिशा के जंगली मुल्क को विजय करता हुआ चला गया और वहां के सा
 खला राजपूतों और पुंगल के भादियों से लड कर कोरमहेसर नानी नग
 पर कबजा किया और उस मुल्क के जाटों को जो आपसके भगडों से बरबाद हो रहे
 थे अपना सहायक बना कर जोरों और भादियों का जोर घटाया और अच्छी
 तरह से इखल कर लिया तो मंडोर छोडने से ३० बरस पीछे वैसाख बही १५
 सं० १५५५ में बीकाने अपने नाम पर राजधानी बीकानेर की बसाया और उसके
 चचा कांथल ने उत्तर देश को अपने कब्जे में कर लिया जहां आजलों कांथ
 लोंत अपनी राजधानी बहादुरग नग के इधर उधर बस्ते हैं - राव बीकाजी
 १५८५ में उत्पन्न हुये सं० १५८५ में पाट बिराजे और सं० १५५९ में बीकाने
 र बसाने में ही बरस पीछे ५६ वर्ष की अवस्था में वैकुंठ बाश हुये यही से बीकाने

राज्य की बुन्याद पड़ी - ॥

बी काजी के १३ पुत्र थे जिनमें से बी काजी के देव लोप होने पर बड़ा बेटा राव नाराजी गादी पर बैठा नाराजी सं० १५२६ में पैदा हुये और सं० १५५९ में गादी विराजे और थोड़े दिन राज करके सं० १५५९ में देव लोप हो गये - ॥

रावलनकरन सं० १५२७ में उतपन्न हुये १५५९ में पाट विराजे और १५८३ में स्वर्ग बाश हुये - ॥

राव जैतसी १५४६ में जन्मे १५८३ में गादी विराजे और सं० १५८८ में देव लोप हुये इनके वक्त में जोधपुर के राव माल देव ने बी कानेर इन से छीन ली थी परन्तु इनके बेटे राव कल्यानमल को अकबर बादशाह ने माल देव से वापिस दिलवा दी - ॥

राव कल्यानमल सं० १५७५ में जनमे और १६०९ में पाट विराजे और सं० १५८८ में देव लोप हुये यह नागौर में अकबर बादशाह के हजूर में हाजिर हुये और अपने भाई काज सिंह की बेटी अकबर को ब्याही जिससे राव माल देव को निकाल कर बी कानेर पर कबजा पाया - ॥

राव रायसिंह सं० १५८८ में जनमे १६२८ में गादी विराजे और १६६८ में देव लोप हो गये इन पर अकबर बादशाह की बड़ी भेहर बानी थी गुजरात की लडाई में बादशाह के साथ थे ताजरां जालोर वाले और सरोही के सरनाम देवडह को पकड़ कर बादशाह के हजूर में हाजिर किया एक हजार का मनसब पाया अकबर के मरने पर उसके बेटे जहाँगीर ने रायसिंह को पाच हजार का कामनसब और चार हजार सवार रखने का हुक्म बखशा - ॥

राव दलीपसिंह सं० १६२९ में जन्मे १६६८ में पाट विराजे सं० १६७० में परलोक बाश हुये इन्होंने अपने पिता रायसिंह के मरने पर हाजिर हो कर जहाँ

गोर बादशाह से राव का खिताब और खिलअत पाया - खुद जहांगीर ने अपने हाथ से हरबार के राजतिलक देकर हो हजारी जात और हजार सवार का मनसब खड़ा - परन्तु अंत को बादशाह से बगावत करने के अपराध में कतल किये गये और राज इनके छोटे भाई सूरसिंह को मिला - ॥

राव सूरसिंह सं० १६५१ में जन्मे और १६७० में गादी विराजे और १६८८ में देहान्त होगया हो हजारी जात और हजार सवार का मनसब पाया सं० १६८८ में दक्षिणा की लडाई में काम आये - ॥

राव करनसिंह सं० १६७३ में जन्मे और अपने पिता सूरसिंह की जगह सं० १६८८ में पाट विराजे सं० १७२६ में देवलोप हुये यह दक्षिणा की लडाई में बादशाह से सीख लिये बिना भाग आये थे बादशाह आत्मगौरव खफा हो कर इनके बड़े बेटे अनूपसिंह को गादी पर विरा दिया और यह दो वर्ष कैद भुगत कर मर गये - राव अनूपसिंह १६८५ में जन्मे १७२४ में पाट विराजे सं० १७५५ में देवलोप होगये सं० १७७८ में अनूप गढ़ बसाया और कारगुजारी दिखला कर आलमगीर बादशाह से राजा का खिताब पाया - ॥

राजा सरूपसिंह सं० १७५६ में पैदा हुये सं० १७५५ में पाट विराजे सम्मत १७७५ में देवलोप होगये - ॥

राजा सुजानसिंह सं० १७५७ में जन्मे सं० १७५७ में गादी विराजे और सं० १७८२ में देहान्त होगया - सुजान गढ़ बसाया - ॥

महाराजा जोरावरसिंह सं० १७६८ में जन्मे और सं० १७८२ में पाट विराजे और १८०२ में परलोक बाश् हुये - इनके अहद में जोधपुर के महाराजा अश्वयसिंह ने बीकानेर का मुहासरा कर लिया था परन्तु सं० १७५० में जोधपुर के महाराजा सवाई जयसिंह और नागौर के हाकिम तरवतसिंह ने बी

कानेरसे २१ लाख रुपया दिलवा कर जोधपुर का कबजा उठवा दिया - ॥

महाराजा गजसिंह सं० १७८० में जन्मे सं० १८०२ में अपने भाई जोरावर सिंह की जगह पाट विराजे और सं० १८४४ में देवल्लोप हुये - ॥

महाराजा राजसिंह सं० १८०१ में जन्मे सं० १८४४ में पाट बैठे और दो

टे भाइ सूरत सिंह की भांके जहर देनेसे १५ दिन राज करके सं० १८४४ में मरण ^{रा}
 महाराजा प्रतापसिंह सं० पैदा ^{रा} मालूम नही सं० १८४४ में पाट विराजे सं० १८४५ में देवल्लोप हुये ॥

महाराजा सूरतसिंह सं० १८२२ में जन्मे और सं० १८४५ में अपने भतीजे की मार कर पाट विराजे और सं० १८८५ में फौत हो गये - इन के वक्त में संमत १८६१ में किला भटनेर मुसल मान जोईपेराज पत्नी से फतह हुआ जोधपुर के दावीदार धोकलसिंह का साथ देने में २४ लाख रुपया खर्च किया परन्तु नवाब मीरखां के दबाव से हार कर बैठ रहे संमत १८७४ में सरकार अंग्रेजी से अहहनामा हुआ महाराजा साहिब सवनागबरहेअंतको ५० वर्ष राज्य करके देवल्लोप ^{हो}

महाराजा रतनसिंह १८४७ में पैदा हुये सं० १८८८ में गादी विराजे और १९०८ में देवल्लोप हुये - ॥

महाराजा सरदारसिंह १८७५ में जन्मे और सं० १९०८ गादी विराजे और १९२८ में देवल्लोप हुये इन्हो ने गहर सं० १८५७ ई० में मदद देने के बदले में सरकार अंग्रेजी से टीवी का परगना पाया जिस की आमदनी १४ हजार ३ सौरुपया सालाना है इनके समय में सरदारो और दरवार में बखेडा खडा हुआ - जिसका सरकार ने फैसला कराया - ॥

महाराजा डुंगरसिंह सं० १९११ में जन्मे और १८२९ पाट विराजे और सं० १९५० में वदनजी रियासत के सबब माजूल किये गये और माजूली

^२ यह बहुरपुराना किला है सुलतान महमूद गजुनवी ने हिन्दुस्थान में गधारवां इमला इसी गढ पर किया था सरकारी जिला सिपसा और वीकानेर की ठीक सीमा पर है - हमने भी इसे देखा है - म. सुराह अली

ही की हालत में सं० १८५५ में परलोक बाध हुये- यह महाराजा गज सिंह जी में छठी पीढ़ी में मिलते थे इनके वक्त में समस्त जागीरदार नाराज हो गये थे अन्त को सरकारी फौज ने सं० १८५० में बिदासर में जाकर ठाकुर राम सिंह रईस महाजन बदाकर मेघ सिंह रईस जसाना और ठाकुर बिदासर को पकडा और महाराजा साहिब को माजूल कर दिया चार वर्ष पिछे उक्त सरदारों के वीकाने रजाने की आज्ञा मिली - ॥

महाराजा गंगा सिंह - जी ये सं० १८३६ में जन्मे और १८५५ में अपने बड़े भाई महाराजा दु. गुर सिंह जी की जगह पर पाट विराजे अभी आप की उमर ग्यारह वर्ष के लगभग है मयो कालिज में तालीम पाते हैं चिरंजीव रियासत का बन्दो बस्त साहिब एजन्ट बहादुर की निगरानी में कौनसिल दूरा हो ता है जिसके वाइस प्रेसीडन्ट राय बहादुर सोदी हुकम सिंह जी है - ॥

तवारीख राज्य किशन गढ

राजपूताने के मध्य में राठोड़ों की छोटी सी (परन्तु रुत्वे में बड़ी) रियासत है जिसके उत्तर व पश्चिम में मारवाड और पश्चिम व दक्षिण में अंधेजी जिला अजमेर और पूरब में जैपुर का मुल्क है रकबा ७२५ मील मुरब्बा - आबादी एक लाख १२ हजार से अधिक खालसा आमदनी साठे तीन लाख और इससे कुछ कम आमदनी की जमीन जागीरदारों के कब्जे में है फौज सवार व पैदल ६०० आदमी कहे जाते हैं तोपें ३० हैं सलामी १५ तोपों की है जमीन कम पैदावारी की है अतएव तलाशों के पानी से खेती होती है - जियादः जमीन पहाडी है जिनमें घूहड के रुख बहुत हैं - समस्त राज्य में किशन गढ - रुपनग्र - सरवाड * तीन ही परगने हैं जागीरदारों में ठिकाना फतह गढ मशदूर है जो राजा कहलाता है -

* सरवाड में तांबडा पत्थर बहुत अच्छा निकलता है जिसके कंठे और नगदूर २ जाते हैं कले द्वारा खान की खुदाई हो तो राज्य का बहुत फायदा हो - मः मुसद अली -

खास राजधानी किशनगढ मे - हजार आदमी बस्ते है - ॥

इतहास

यह रियासत आज से पौने तीन सौ वर्ष पहिले जहांगीर बादशाह की मेहरबानी से कायम हुई थी जहांगीर ने जोधपुर के मोटा राजा उदय सिंह जी के बेटे किशनसिंह को उस की खिदमत गुजारी और अच्छी चाकरी से खुश होकर जिले अजमेर में सीटूला आदि गाव सं० १६६६ में बखशे थे उसके दो वर्ष पीछे किशन सिंह ने अपने नाम पर किशनगढ बसा कर वहां रहना अखतियार किया - किशनगढ वाले यध्यपि जोधपुर के छुट भईये हैं परन्तु वंशों की जागीर मे से कुछ हिस्सा न पाने और अपने परीश्रम से ठिकाना बनाने के कारण जोधपुर वालों का अहसान नही मानते - बादशाही राज्य में किशनगढ के रईस का कुर्बे जैपुर - जोधपुर बीकानेर - बूंदी कोटा के पीछे माना जाता था परन्तु आलमगीर बादशाह के मरने लो उसको राजा थाराव आदि कालकव नही मिला था तो भी चारह जारी मनसवरखता था मुहम्मदशाह बादशाह ने बहादुर सिंह को राजा का खिताब वखशा और २०० वर्ष में १५ रईस इस गादी पर बैठे जिनका हाल यह है - ॥ किशनसिंह ने सं० १६६६ में सिटूला की जागीर बादशाह से पाई मद्दवत खा के साथ मेवाड में साका किया २० आदमियों को मारा ३०० को पकड कर बादशाह के पास लेगये बादशाह ने खुश होकर ३००० हजारी मनसब और १५०० सवार रखने का कुर्बे वखशा १६७२ में गोविन्ददास भाटी प्रधान मारवाड से लड कर अपने भतीजे करन समेत काम आने राठोड सुहंसमल राठोड जगमाल यह मद्दवत खा के बेटे अमानुल्ला खां से लड कर काम आये - राठोड हरी सिंह सं०

१६८५ में गादी बिरजे १५ वर्षी राज किया राठोड इन्द्रसिंह १७०० में गा
 दी बिरजे इन्होंने बादशाहों कोज के साथ बलख बहुवशा काबुल आदिमें
 अन्धी शकरी की साहुल्ला वजीर के साथ चिनोड का गुरु तोड नेमें व
 हादुरी दिख लाई जिससे बादशाह ने खुशहो कर मांडल गुरु इन्को मेवा
 ड का परगनह बखशा सं० १७१५ में आगरे के निकट औरंगजेब और शाह
 जादे द्वाप्रिकोड की लडाई में द्वाप्रिकोड की तरफ से औरंगजेब के हाथी
 पर तलवार मारते हुये काम आये - राठोड मानसिंह सं० १७१६ में साका कर
 के काम आये - राजा राजसिंह १८०५ में देवलोप हुये - राजा साहबलसिं
 ह राजा बहादुरसिंह रियासत की आमदनी के दसवें हिस्से की जागीर फ
 लहगल इन्हीं हीने अपने बेटे बाघसिंह को दिनारेख बखशी थी महाराजा
 सिद्धसिंह सं० १८५५ में गादी बिरजे और सं० १८५२ में देव लोप होगये
 महाराजा कल्यानसिंह १८५५ में गादी बिरजे परन्तु सरदारों ने फसाद
 किया तो साहिब एजन्ट की सलाह से ३६ हजार रुपया सालाना तनख्वाह
 लेनी करके राज अपने बेटे मुहकमसिंह जी को सौंप कर दिल्ली चले गये ज
 हां ६ वर्ष पीछे मित्तु को आह हुये - महाराजा मुहकमसिंह ८ वर्षी राज
 करके सं० १८६७ में दे आलाह मर गये - महाराजा प्रथी सिंह संमत
 १८६८ में ठिकाने फतहगल से गोद लिये जाकर चार वर्ष की अवस्था में राज
 बिरजे - वह बडे बुद्धिवान व दयावान रहिष थे सं० १८२७ में ३ लाख रु
 पया खर्च करके अपने राज्यमें शताब्दी खुदवाये इन्को राज्य में ही कर रेल निकलने
 से ६० हजार रुपया सालाना राठोडों के महसूल की आमदनी का मारागया
 परन्तु महाराजा की लाय की और गरीबी को देख कर २० हजार सालाना सर
 कार उक्त हानी के बदले में देवी है बहुतसे सुभ कार्य करने और धमीरा

कारने के पीछे सं० १८३६ में स्वर्ग बाश हुये माहाराजा सारदूलक्षि
हजी (चिरंजीव) जैनवरी महीने की - ता: सं० १८३६ में पादविराजे अप
ने पिता के समान नेक नीयत सादा मिजाज धर्म कर्म के पक्के हैं सं० १८४५
में बाबू शामसुन्दर लाल जी मयों कालिज के दीयम मास्टर ननाब कार्ने
ल ब्राडफर्ड साहिब बहादुर एजन्ट गवर्नर जनरल राजपूताने की आज्ञा
अनुसार किशन गठ के प्रधान नियत हुये बाबूजी ने दीवानी फौजदारी -
अपील आदि महकमे जारी किये और श्रीद्वार का इजलास महकमास
स कहलाता है - इस्टेम्प भी जारी किया गया - श्रीमहाराजा साहिब बहादुर
को मई सन १८८२ ई० में सरकार से जी० सी० एस० आई का तमगा भी
इनायत हुआ जगदीश्वर सुवारक को सरकार अंग्रेजी के श्रीहोश्वरीता के
लिफाफे पर बमुताले महाराजा साहिब मुशफिक मेहरबान मुस्त
लिसान महाराजा धिराज - लकब और श्रीनामे पर महाराजा
साहिब मुशफिक मेहरबान मुखलिसान सलामत लिखा जाता
है कागज सुन्दरी येली कमखाव की होती है - ॥

राज्यबूंदी

राजपूताने के दक्षिण और पूरब दिशा में बूंदी का राज्य दूसरे दरजे का पु
राना राज्य है जिसके उत्तर में जैपुर पश्चिम में जहाजपुर इलाके मेवार - दक्ष
िण में गदालियार - पूरब में कोटे का इलाका है - लमयाई ५० मील चौड़ा
ई ५० मील रकबा २२८१ मील मुखवा आवादी २ लाख ५५७ - १ आदिमि
यों की है खालसा की सान्नाना आमदनी ५ लाख रुपया और इसीके लगभ
ग नागौरदरों की आमदनी है - फौजसवार और पैदल दोनो २५०० हैं २ ला
ख २००० का सरकार अंग्रेजी को खिराज देते हैं सत्तामी १७ तोपें हैं शहर बुंदी

जो इस राज्य की राजधानी है आगरा से १८५ मील दक्षिण दिशा में पहाड़ी घाटि के मध्य में बस्ता है इसमें ४० हजार आदिभियों की आबादी है महाराजा साहिब के महल ऊंची पहाड़ी के ऊलावपर उत्तम शीति से बने हैं जिनकी खूबसूरती प्रसंसा के योग्य है - ॥

बंदीखाने

बंदीखाने चौहान जाति के हाडा खानप में अजमेर के राजा मानक चंद के पोते अस्तपाल के बंसमें से हैं आदि में हाडा सिद्ध २ स्थानों में रहे और अंत को सं० १३८८ में मेवाड के महाराजा की सहायता से बंदी का राज पाकर सवा दो सौ वर्ष चीतोड़ के मातहत रहे और सं० १६२६ में वह रतम मोर का गुरु अकबर बादशाह को सौंपकर खुदमुखतार राजा और बादशाही मनसबदार बने - मतलब यह है कि आजसे ५५६ वर्ष पहिले वह राजपूताने में सरदारी के दर्जे पर पहुंचे थे और ३१८ वर्ष पहिले खुदमुखतार राजा हुये राजपूताने में आने के समय से आज लों उनकी २५ पीढियां हो गुजरी हैं बंदी के रईस मेवाड की मातहत से इनकार करते हैं - परन्तु सत्य यही है कि उनको दक्षिण से निकलने के पीछे मेवाड ही में पनाह मिली और मेवाड ही की सहायता से पहिले भंसरोड़ और फिर बंदी का राज्य पाया जैसा कि बादशाही मनसबदार बने से पहिले अकबर का वजीर अबुल फजल रावसरजन को मेवाड का मातहत लिखता है और इकबाल नामें जहांगीरी व बादशाह नामें शाहजहान की आदि इतहासों में भी औसाही लिखा है अस्तपाल के बड़े रों में से अजेपाल ने अजमेर को बसाया उसके पीछे मानक राव ने सं० ७५१ में साखंभरीदेवी के नाम से साखंभरीग्राम बसाया - जिसको अब सांभर कहते हैं (सांभर कालोन प्रसिद्ध है) इसी मानक

राय की औत्साह में एक खाप की नवी पीठी में प्रथ्वीराज उतपन्न हु
 वा था स्त्रीचा हाडा मोहल-निरभारा-देवडः हिडोरिया-भोरीचा
 धनेरया-बागेरचा-आदि चौहानो की खापे है मानक राय का वेदा
अनोरराज असी अर्थात् **हांसी** काराजा था जिस के बेटे अस्तया
 लको शत्रुओ ने सं० १०-२१ में वहा से निकाल दिया वह दृष्टगा मे जा
 कर **असीर** का राजा हुवा वही से हाडा खाप चली अस्तपाल के पीछे
लोकपाल हुआ जिस का वेदा **हमीर** प्रथ्वीराज के साथ सं० १२४६
 में **शाहाबुद्दीनगोरी** से लड कर काम आया हमीर के पीछे काल क
 रन-माहमगदः राव बांचा राव चंद्र आसीरके राजा हुये राव चंद्र को सं०
 १३५२ मे **अलाउद्दीन खलजी** बादशाह ने कतल किया तब उसका
 वेदा **रैनसी** काई वर्ष की अवस्था में हिफाजन के लिये चितोड मे लाया ग
 या रैनसी ने जवान होकर मेवाड वालों की सहायता से **डोंगा** भीलको
 मार कर भेंसरोड गढ लिया -रैनसी का वेदा **कोल** और उसका वेदा बां
 गा हुआ बाग् के बेटे देव ने जोर पाकर मीनों को जेर किया सं० १३६८ मे वा
 दो घाटा के बीच मे शहर **बूंदी** बसाया जिस के गिर्द हाडो के फैल जाने से उ
 सदेश का नाम भी हाडोती होगया राव देव का वेदा **समरसी** और **समर**
सी का **नापूजी** नापूजी का वेदा **हामुं** सं० १४४० में गादी पर बैठा और
 १६ वर्ष राज करके मरगया उसका वेदा **वीरसिंह** सं० १४५६ मे पाटवैठा
 और सं० १५२६ में मरगया तब उस का वेदा राव बांदो गादी पर बैठा पर
 न्तु उनके दो छोटे भाइयो ने मुसलमान होकर बादशाह की सहायता से व
 ही दीनली और **समरकन्दी** व **उमर कन्दी** नाम से बूंदी के राजा फदला
 ये राव बांदो २९ वर्ष पहाडो में खराव हो कर मरगया तब राव नरायन

बादशाह अपने भोजी सुलतान का काश्री को कतल करके राज विराजे और
३२ वर्ष राज करके मर गये उनका छोटा भाई महाराना संग्रामसिंहेसाथ बाबर
बादशाह से लड़ कर काम आया - ॥

राव सुरजमल सं० १५८० में पाट विराजे और महाराना सां मा के बेटे
तनसी से शिकार में लड़ कर काम आये - ॥

राव सुलतान सं० १५८१ में गादी विराजे परन्तु राज का काम न चला सके
सरदारों ने इनको गादी से उतार दिया इन के कोई बेटा नथा अतएव सरदारों
ने राव बांदो के पोते अरजुन को पाट विठाया - राव अरजुन सं० १५८२ में
५०० हाडों समेत चीतोड़ के गढ में बहादुर शाह गुजराती के सुरंग उडाने
से उह गया - ॥

राव सुरजन सं० १५८८ में गादी विराजे और सं० १६२६ में रतम भोर का
गढ अतएव बादशाह को सोंप कर मेवाड की मातृती से निकल कर बाद
शाही चाकरी में गये इसी कारणा उनका कुर्ब जैपुर जोधपुर के पीछे बीका
नेर आदि के बराबर रखा गया और सुरजन सं० १६४१ में देवलोप हुये - ॥

राव सोजा अपने पिता के सामने सं० १६३५ में गादी विराजे और १६६५
में मित्यु को प्राण हुये (कियो कि इनके पिता इनको राज्य सोंप कर बादशाही चाकरी कसे चले

सरबुलन्द राव रतन गादी पर बैठ कर बादशाह से सरबुलन्द का लकड़
और ठाई हजारी जात मनसब और १००० सवार का कुर्ब पाया और अंत
को पांच हजारी मनसब और राव राव का खिताब पाकर सं० १६८८ में द
कन की लडाई में काम आये - राव रतन का पाटवी कुंवर गोपीनाथ पहिले
ही मर चुका था इस वास्ते बादशाह ने उन के पोते शत्रुपाल को बंदी का राज दि
या और दूसरे बेटे माधोसिंह को कोटा और थलायता की जागीर दे कर

ढाई हजार मंनसुव बरवशा उसी दिन से कि (२५०) वर्ष दुये कोटा बूही से अलग हो गया - ॥

राव शत्रुसाल सं० १६८८ मे राज बिराजे सं० १७१५ में आगरे के निकट लडाई मे काम आये ॥

राव भाउ सिंह सं० १७१५ में बाप की जगह पाट बिराजे और सं० १७३२ मे वे शौलाद मिर्चु को प्राप्त हुये ॥

राव अनरुध सिंह सं० १७३४ में पाट बिराजे और सं० १७६२ मे काबुल में लड कर काम आये - ॥

राव राजा बुध सिंह इन को बादशाहने राव राजा की पदवी बखशी इन मे और कोटे वालो में खूब लडाइयां हुई यह अंत को सं० १७८६ मे बंगों में देवलोप हुये - बुध सिंह के छोटे पुत्र दीप सिंह को कापरल जागीर मे मिली और बडे उमेद सिंह राज के मालिक हुये - ॥

राव राजा उमेद सिंह ने सं० १८०० में राज पाया कुंवर अजीत सिंह उदयपुर के महाराना आरसी जी सिंहों ही ने शिकार मे धोरखे से मारा था - जिसका राज बूही और मेवाड ने आज लो है परन्तु उसी पाप से कुछ दिन पीछे अजीत सिंह कधी होकर मर गया ॥

राव राजा विशन सिंह सं० १८६९ में पाट बिराजे और सं० १८७५ फरवरी महीने की २० ता को सरकार से शेस्ती का अहदनामा किया और संमत १८७८ मे देवलोप हुये - ॥

महाराव राजा राम सिंह १८७८ मे दस वर्ष की अवस्था में कर्नेल राडसाहिव के सामने पाट बिराजे यह रईस बहुत बुद्धिवान और विद्वान थे उनके समय में बही २ बाने हुई सरकारने दिल्ली के दरवार सन १८७७ ई०

में इन को सितारहिन्द और मशीरकैसरहिन्द की पदवी बखशी यह बड़े पांडित और धर्म कर्म के बहुत पाबन्द थे परन्तु जैसे दाना और ह्यावान होने पर भी का पद का ठिकाना जगत कर लिया जिससे कई सरदार इनसे नाराज रहे - राजपूताने में इनकी उमर से बड़ा कोई रईस नथा इस लिये सरकार इनकी बहुत इज्जत करती थी सन १८७८ ई० में ८० वर्ष की अवस्था में ७० वर्ष राज करके नेकनामी से देवलोप हुये - ॥

महाराज राजा रघुबीर सिंह २८ ता: सैप्टम्बर सन १८६८ ई० को जन्मे थे और बड़े भाई भीम सिंह जी के स्वर्ग वाश होने से पाटली करार पा कर सन १८७८ ई० में अपने पिता की जगह राज विराजे यह भी अपने पिता के समान धर्म संबन्धी कामों में सरगम और अच्छे रईस हैं रिवास्त का काम बहस्त्र पुरानी रीति से चल रहा है वूंदी के राज्य में ४० सैन्यकृत पाठशा ला और १० फारसी के महरसे हैं - ॥

राज्य कोटा

राजपूताने के दक्षिण और पूरब में कोटा का राज्य आमहनी के लिहाज से जै पुर- उदयपुर- जोधपुर के पीछे दूसरी रियास्तों से बड़ा है इसके उत्तर में वूंदी पश्चिम में असेरोह इलाके मेवाड दक्षिण में मकन्दरः घाटा इलाके इन्हीर हुल कर और पूरब में टोंक और गवालियार है लम्बाई पूरब से पश्चिम को ८० मील चौड़ाई उत्तर से दक्षिण को ८० मील - रकबा ४३४० मील मुरब्बा आबा दी ५९७२७ ५ आदमियों की सवार बयैदल ५००० आमहनी खालसा २८ लाख रुपया है जिसमें से ३ लाख ५० हजार रुपया खिराज और देवली की सरकारी फौज के खर्च की बाबत सरकार अंग्रेजी को दिया जाता है शहर कोटा जो राजधानी है चंबल नदी के किनारे परबस्ता है और नदी में रईस के रहने को जल महल

भी बना है इस रियासत की जमीन सरसबज है परन्तु दवाखराव होने से बीमारी
अक्सर रहती है ॥

तवारिख

कोटा के रईस दाडा जाति के राजपूत बूंदी वालों से निकले हैं जैसा कि बूंदी के इत
हासमे हमने लिखा है. शाहजहां बादशाह के शुरु अहदमे उन्ही की मेहरबानी से
यह रियासत कायम हुई है. ॥

राव माथो सिंह बूंदी के राव रतन के मरने पर इनके भतीजे बूंदी की गादी
पर बिराजे और शाहजहां बादशाह ने इनकी चाकरी से खुश होकर कोटा और पला
यता की जागीर इनको सं० १६८८ में वसूली और तीन हजार जाति का मनसब
दिया उस वक्त इनकी अवस्था १५ वर्ष की थी सं० १७०० में देव लोप हुये. ॥

राव मकुन्द सिंह माथो सिंह के पांच बेटे थे बड़े मकुन्द सिंह गादी विराजे
और मोहन सिंह को पलायता जुभार सिंह को कोटा कन्हाराम को कोयला और
किशोर सिंह को सांगोद जागीर में मिले. राव मकुन्द सिंह सं० १७१५ में उज्जैन के
निकट लडाई में काम आये इन्होंने उस बड़े घाटे में जो हाडोती की मालबह से
जुदा करता है महल बनाये थे इससे वह प्याटा मकुन्दरा के नाम से आज लो प्रसिद्ध है

राव जगत सिंह यह अपने दादा मकुन्द सिंहके मारे जाने के पीछे आत्मगो
र बादशाह के हजर से दो हजार मनसब पाकर पाट बिराजे और बादशाह के सा
षदसरा की लडाई में लडकर सम्मत १७२६ में काम आये. ॥

राव भीम सिंह जगत सिंहके मरने पर कन्हाराम के बेटे भीम सिंह गादी
पर बैठाये गये परन्तु सरदारों ने उनको बेवकूफ समझ कर कोयला की जागी
र पर भेज दिया जहां अब लो उनकी औलाद मालिक है. ॥

राव किशोर सिंह भीम सिंह की निकालने के बाद सांगोद से किशोर सिंह

को लाकर गादी पर बिठाया यह सं० १७४२ में बादशाही फौज के साथ दक्षिण में लडकर काम आये इनके तीन बेटों में से बड़ा बेटा विशुन सिंह बादशाह की चाकरी में नजाने के कारण राज से महरूम रहा उसको अंता की जागीर मिली और दूसरे बेटे राम सिंह ने राज पाया - ॥

राव राम सिंह इन्हीं ने बादशाही चाकरी दक्षिण में दिल से करी जिसके बदले में मौ मैदाने का परगनह भी जागीर में पाया और राव राजा की पदवी मिली - बूंदी और कोटा में इन्ही के अहह में बैरपडा सं० १७६३ में काम आये महाराव भीम सिंह सं० १७६४ में गादी बिराजे और सं० १७७७ में सात हजार मन सब तक पहुंच कर नरवर के राजा गज सिंह के साथ बादशाह की तरफ से हैदराबाद के निजामउलमुल्क से लडकर बुरहानपुर में काम आये - ॥

महाराव अरजुन सिंह सम्मत १७७७ में पाट बिराजे और चार वर्ष राज करके लावल्लू फौत हुये - ॥

महाराव दुरजन साल सं० १७८१ में पाट बिराजे मुहम्मदशाह बादशाह ने इनको राज तिलक और खिलअत बखशा मरहठों को मदद देने के बदले में नाहरगढ पाया इसके दूसरे वर्ष पीछे हिमत सिंह किलेदार का भतीजा जालिम सिंह भाला (भालावाड वालों का बडा) पैदा हुवा इन्ही महाराव को मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह बेटी व्याह कर गादी के बाई तरफ बैठने की इज्जत बखशी सं० १८०० में जैपुरने बूंदी दवा कर कोटा लेना चाहा परन्तु हार कर वापिस आये सं० १८०५ में महाराव ने हुल कर से सिफारश करके बूंदी उल्टी जैपुरसे बूंदी वालों को दिलाई सं० १८१३ में महाराव लावल्लू देव लोप हुये - ॥

महाराव अजीत सिंह ८ वर्ष की अवस्था में अंता की जागीर से गोद

आकसं० १८१३ में पाट विराजे और छान्द वर्ष राज करके स्वर्गीवाश हुये इन्हीं के समय में हिम्मत सिंह भाला के मरने पर जालिमसिंह भाला उनका भतीजा किलेदार हुआ - ॥

महाराव शत्रुभाल १८१६ में पाट विराजे जैपुर की फौज कोटा पर चढ़ाई परन्तु जालिमसिंह भाला की बहादुरी से जिसने हुलकर को मदद के लिये बुला लिया था वटवारद नामी स्थान से लोट गई सं० १८२२ में देवलोकपुत्र महाराव गुमानसिंह अपने भाई शत्रुभाल की जगह राज पाकर जालिमसिंह किलेदार की जागीर जबत कर ली वह मेवाड में चले गये परन्तु फिर कोटा को लोट आये और भरहठों से ६ लाख रुपया देकर महाराव की सुलह करा दी जिससे फिर नांदलह की पुरानी जागीर महाराव ने उन्हें वापसी सं० १८२७ में महाराव ने बीमारी की हालत में अपने बेटे उमेश सिंह को जिन की अवस्था १० वर्ष की थी जालिमसिंह की गोद में बिठाया और आप देवलोकपुत्र हुये - ॥

महाराव उमेशसिंह इन के समय में दीवान जालिमसिंह को राज का कुल कुला अधिकार होगया दीवान ने २५ लाख के बदले ३५ लाख की खालस आमदनी बछाई फकीरों मेहनतों रेंडियो आदि पर टिकत लगया जागीरदारों की जागीरें दबाली हुलकरने चढाई करके १० लाख मागा परन्तु भीरखा की सिफारिश से तीन लाख लेकर चला गया जालिमसिंह के पास २० हजार फौज बहादुर पठानों की थी सं० १८७४ में जालिमसिंह ने अग्रेजी को बहुत मदद दी जिससे खुश होकर सरकारने दिग-पंच पहाड अहवा-गगरार जनाम ये दिये परन्तु जालिमसिंहने महाराव उमेशसिंह के नाम इन परगनों की सन्द लाडी इसदंगर सादिव से कगली खुद नही लीये - इसी सम्मत में सरकार से कोटा का मद्र नामा हुया जिसने जालिमसिंह के खानदान में सदा लोदीवानी का

ओहदा रहना सरकारने मनजूर किया जिससे रियासत आलाग पावन की बुन्याद पडी सं० १८८६ में राव उमेद सिंह लावलद फौज होगये - ॥

महाराव किशोरसिंह १८८६ में पाठ बैठ कर जालिमसिंह आलाके अस तियारत लेने की कोशिश की परन्तु नही लेसके कियो कि अंग्रेजीअफसर जालिमसिंह की मदद पर रहे महाराव नाशज होकर सं० १८७८ में विन्दरा बन चले गये परन्तु थोडे दिनों मे वापिस आकर दीवान को बेदखल करना चाहा दीवानने भी लडने की तैयारयां कर लीं जिस की मदद पर सरकारी फौज की दो पलटने छे रिसाले और एक तोपखाना था दीवान के पास ८ पलटने १५ रिसाले और ३२ तोपें थी इन सब को साथ लेकर दीवान ने महाराव पर दल्ला किया महाराव के बहादुर राजपूतों ने भी बडी बहादुरी दिखलाई बडी यमसानकी लडाई हुई महाराव साहिब अपने साथियों समेत चंबल नदी के पार उतर गये और जुवार के खेतों की आड पकड कर फिर लडे जिससे अंग्रेजी रिसाले कामुं ह फिर गया कर्नैल बिर्च साहिब घायल हुये किलार्की साहिब और रीड साहिब दो सरदार मारे गये महाराव के छोटे भाई प्रथमी सिंह भी काम आये महाराव अपने साथियों समेत मेवाड में हो कर नाथ द्वारा में पहुंचे और कोटा को नाथ द्वारा के नाम श्रीकिशनार पुन्न कर दिया (जिसके बदले में ५००० रु० सालाना कोटा के गऊ का किराया अब लों नाथद्वारा में दिया जाता है) कुछ दिन पीछे महारावा भीम सिंह जी की सलाह से मेजर टाड साहिब ने दीवान और महाराव की सुलह करा दी जेठ सुदी ८ सं० १८८० को ८५ वर्ष की अवस्था में दीवान जालिमसिंह देव लोप हुये यदि सरकार से कोटा का अहदना माहूआ होता और दीवान से केवल ओहदः दीवानी के बहाल रखवाने का जिम्मा सरकार न करती तो दीवान के कोटा ले लेने में कोई संदेहन

था जालिम सिंह के मरने पर उसका बेटा माधो सिंह दीवान हुआ उस
नेरईस को राजी रक्खा स० १८८५ में महाराव किशोर सिंह और थोड़े दिनों
पीछे दीवान माधो सिंह दोनों परलोक वाश हुये -॥

महाराव रामसिंह इन के गादी बैठने पर माधो सिंह का बेटा और जालि
म सिंह का पोता मदन सिंह दीवान हुआ परन्तु महाराव और दीवान में हमेशा
बिगाड रहने से दीवान के लिये कोटा राज के तीसरे हिस्से की अर्थात् १२ लाख सा-
लाना की जागीर सरकार अंगरेजी और महाराव की मंजूरी से स० १८९४ में निकाली
गई - और मदन सिंह से दीवानी कोटा की वावत हमेशा के लिये इस्तेफा लिया गया
सरकार अंगरेजी से मदन सिंह को महाराज राना का खिताब मिला और असी -
हजार रूपिया सरकारी रवराज कायम किया गया - महाराव राम सिंह जी सम्बत -
३९८२ में फोटो हुये ॥

महाराव शत्रुसाल जी स० १९२२ में पाट विराजे - यह नानजरवा कारो के वस
में फसक महान करने लगे - रियासत क़रजा से ज़ेरवार हो गई - नव स० १९२६
में अजन्त साहब ने सरकार में बहुत बड़ी शिकायत लिखी - महाराव साहब ने भी -
तग़ा आकर साहब की सलाह से सरकारी बन्दोबस्त होने की दरवास्त की - जिस
पर स० १९२८ में नवाब ग़वश्री फ़ौज़ अली ख़ान जी जो जैपुर में बस ग़री फ़ौज और
प्रधान रह चुके थे सरकार की तरफ से मुपरन्त रघट रियासत होकर आये - इन्होंने
ने कोटा का राज ८ निज़ामती में तकसीम करके नया बन्दोबस्त किया - दीवानी -
फ़ौजदारी और माल के मूकमे कायम किये - नवै लाख रूपिया जो राज के जिम्मे कर्जी
था उस के सतारने का यह बन्दोबस्त किया कि कर्जदारों को रूपिया पीछे ॥५ देने
करके अजमेर के राय बहादुर सेठ समीरमल जी नोटा से इकट्ठा रूपिया कर्ज
लेकर सबको चुका दिया - फ़ौज के खर्च में ८ लाख की कमी की गई - रसोडा आदि

का खर्च भी घटाया और अच्छा बन्दोबस्त किया परन्तु दुशामदीलोगो ने-
 महाराव जी के दिल में यह बहेमदाल दिया कि जालिमसिंह भाला के समान नवाब
 भी कोटा का मालिक बन बैठेगा - इससे महारावजी घबराये और नवाब की शिका-
 यत बड़े साहब को लिखीं इसपर नवाब ने सं० १८३२ में इस्तेफादे दिया और कय-
 तान सबट साहब बहादुर नियत हुए - इन्होंने भी अच्छा बन्दोबस्त किया फिर
 मेजर पावलट साहब बहादुर और फिर मेजर वेली साहब बहादुर सं० १८३६ में सु-
 करार हुए - जिन्होंने मीरजाफर हुसेन और बाबू अबदुल्ला इत्यादि अफीसों-
 को सरकारी इलाके से बुलाकर अच्छा बन्दोबस्त कराया - कोटामें ४० लाख आम
 दनीके १४८३ गांव हैं जिनमें से चौथा हिस्सा जागीरदारों व धर्मार्थके कब्जे
 में हैं - ८ जून सन १८८८ ई० को महारावजी ने बीसारी की हालतमें महाराज -
 छगनसिंहजीके छोटे कुंवर उदैसिंहजीको गोद लेकर नाम उनका उमैदसिंहजी
 रखा और मजूरीके लिये सरकारमें खरीता भेजा - परन्तु जवाब आनेसे पहिले ११
 जून सन १८८९ ई० को ई घड़ी दिन चढ़े महाराव शत्रुसाल देवलोप होगये - अन्त
 समय महारावजीने एक लाख रुपया दान किया - ब्राह्मणों की ११ कन्याओंका
 विवाह करा दिया - १६ हजार ब्राह्मणोंको भोजन दियाथा इनके देवलोप होने
 के पीछे रामचन्द्र जी राजवैद और धा भार्दधीसाजी महारावजीको जहर देने की
 इहलतमें कैद हुए परन्तु सबूत न होनेसे छूट गये -

महाराव उमैदसिंहजी - जेठ सुदी ८ सुताविक ८ जून सन १८८९ ईस्वी
 को १६ वर्षकी अवस्थामें पाट बिराजे - मेरु कालिजमें तालीम पाते हैं - सरदार
 हो नहार सालूम होते हैं - चरजीब - राजका बन्दोबस्त सरकारके हाथमें है -॥

राज्यभालरापाटन

राजपूतानके दक्षिण व पूरबमें समस्त रियासतोंसे पिछली और आमदनीके लिहाज

से दूसरे दरजे की रियासत भालरा पाटन है- इसके उत्तर में घाटा-मकुन्दरा और कोटा-पौर पश्चिम में राज्य हुलकर-वगवालियार और पूर्व में राज्य टौक वगवालियार वर्द्धनरा में भी इलाका टोंक है- रकबा २५०० मील मुल्का आबादी ३४५०० आदमी ओ की- और आमदनी खालसा १८ लाख रुपया सालाना है- फौज सब वपैदल ४००० जागीरदारों के कब्जे में केवल एक लाख की जागीर है ८० हजार रु० सरकार अंगरेजी को खराज दिया जाता है- रईसको सरकार अंगरेजी से राजराना-का खिताब और १५ तोपे तलामी का कुख हासिल है- इस रियासत की जमीन बलिहा ज पैदावारी सब से अच्छी है- क्यों कि भालों ने अपनी मरजी के अनुसार कोटा की रियासत में से अच्छी २ पैदावारी की जागीर निकाली थी- यही कारण है कि सिधर-होने की अवस्थामें जो जागीर १२ लाख की थी- अब उसी में २० लाख उत्पन्न होते हैं- राजधानी शहूभाचार पाटन जिसको जालिमसिंह जी ने बसाया था बकौल-करनल इटन साहब वहादुर बहुत ही खूबसूरत जैपुर नगर के समान बसा है- और साहूकारों के अधिक होने से बरिाज व्योपार बहुत होता है-

तवारीख भालरा पाटन

कोटा की तवारीख में दूसराज के स्थिर करने वाले का हाल हम लिख चुके हैं अतः अब-यहां दुबारा लिखना फिजूल समझकर मुख्तसिर लिखते हैं- अल्लाह पूतों का पराचीन ग्राम भालावाड इलाके काठियावाड है- राजराना जालिमसिंह जी हलोद के मन्त्रालयसरदार की औलाद में से थे- हलोद वालों में से भाऊसिंह नामक सराजपूत ने आलमगीर बादशाह के फौत होने के पीछे आजसे डेढ़ सौ बरस पहिले नोकरी की तलाश में अपना देश छोड़ा था भाऊसिंह का बेटा माधोसिंह कोटाके महाराव भीमसिंह के पास आकर नौकर हुआ और उसकी बहिन के साथ महारावके बेटे दुरजनसाल की शादी हुई- इस सम्बन्धके कारीनादता

ग्रामकी जागीर और फौजदारी उनको मिली कोटा में उनको मांमाजी क
हाजाता था - माधोसिंहके पीछे मदनसिंह और उसके मरनेपर हिम्मतसिंह
किलेदार व फौजदार हुआ - इन्होंने मरहटोंके साथ अहेदनामाकरके कोटाको उन
का खराज गुजार बनाया - और राज्यको मरहटोंसे बचाया - जिससे दरबारकोटा में
इनको इज्जत मिली - हिम्मतसिंहके देवलोपहोने पर जालिमसिंहजी उनके
भलीजि किलेदार और फौजदार नियत हुए - और जैपुरकी फौजसे लड़नेमें नामपाया
परन्तु महाराव गुमानसिंहजीसे बिगाड़ होनेके कारणा जालिमसिंहजी मेवाड़ में च
ले गये - और रईस दैलवाड़की मारफत दरबार मेवाड़की नौकरी करली - किन्तु
थोड़े ही दिनों पीछे कोटेको लोट आये - और महाराव गुमानसिंह और मरहटोंमें सु
लह कराही - जिससे नांदताकी जागीर और फौजदारी जो जल हो गई थी देवारा
पाई - और महारावने मरनेके समय अपने बेटे महाराव उमेदसिंहको जो १० वर्ष
के थे इनकी गोदमें बिठाकर राजकाज जालिमसिंहजीको सौंपा - जालिमसिंहजी
ने उमेदसिंहजीके राजमें कि पचास वर्ष लो रहा बड़ी ताकत पैदाकी - (देखो तवारीख
कोटा) और महाराव किशोरसिंहके अहदमें २५ वर्षकी अवस्था पाकर सं० १८२० में
जालिमसिंहजी अद्भुत चरित्र दिखलाकर स्वर्गबास हुए - इनके पीछे इनके पुत्र
माधोसिंह दीवानकोटा नियत हुए - और सन १८२८ में देवलोप हो गये - माधो
सिंहके देवलोपहोने पर उनके बेटे मदनसिंह दीवान नियत हुए - परन्तु महारा
व और दीवानमें कभी मिलाप नहीं हुआ - नित प्रति दिन बखेडगरहताया अतएव
कोटाके महाराव रामसिंहजीके अहदमें सरकार अंगरेजीने यह फैसला कराया
कि कोटाके राजके लिहाईकी जागीर जिसकी आमदनी १२ लाख सालाना होती है
मदनसिंहको अलग देकर दीवानीसे हमेशाके लिये दस्तफाले खिया जाय - सं० १८६५
में यह तजवीज सरकार अंगरेजीकी सलाहसे महारावकोटाने मंजूर करके मदनसिंहजी

को १२ लाख की जागीर रियासत कोटा में से निकाल दी - और बह खुद मुखतार रईस माने गये - और स० १९०१ में ७ वर्ष राज करके मदन सिंह जी देव जो प हुस - ॥

महाराजराना प्रथवी सिंह जी स० १९०१ में अपने पिता की जगह राज बिराजे और स० १९३२ में ३० वर्ष राज करके स्वर्गवास हुस - इनके अहद में फजूल खारची के कारी रियासत १४ लाख की करजदार हो गई थी तो भी इन्होंने अच्छे २ मकाना बनवाए - बागात लगाये - आगरा - काशी जी - दिल्ली - आवू - नाथद्वारा - आदि की यात्रा और सैर की - राज पूताना के प्राचीन रईस इनको बराबर कुर्ब देने में उजर करते थे - परन्तु महाराजा **शिमू सिंह जी** स्वर्गवाशी मेवाड़ा धीश ने महाराजराना प्रथवी सिंह जी को ताजीम देकर अपने वार्द तरफ बराबर बिठाया जिससे अब को रईस उजर नहीं कर सकता ॥

महाराजराना जालिम सिंह जी इनका नाम पहिले कंवर बख्त सिंह जी था अक्राने तरौन इलाके काठियावाड से सरकार की मजूरी लेकर गोद लिये गये परन्तु महाराजराना प्रथवी सिंह जी स्वर्गवाशी की एक महारानी साहबाने कहा कि हमको हमल है - इस रास्ते मसनद नशीनी बहुत दिनों तक मुलतबी रही - अत को रानी साहबा की बात बेस्तवार सांगित होने पर इन्ही को वारिस करार दिया और नाम इनका राजराना जालिम सिंह जी रखा - स० १९३२ में गोद लिये गये थे और जब जो नाबालगी में भेक का पिज में इल्म पढे रहे - रियासत का बन्दोबस्त सरकार के हाथ में रहा - पहिले कपतान **एबट माहबबशादुर** (जो अब करनल एबट साहब रजी इन्ट मगरबी राज पूताना है -) रियासत के मुन्तज़िम रहे - एबट माहबसौ सूफ ने चडे २ छाथक अहितकारो को सकत्र किया - राज भवन - बागात - सड के बनवाई - दीवानी - फौजदारी का बहुत अच्छा बन्दोबस्त किया रियासत का करज खन्दी करके उतारने का बन्दोबस्त किया - रियासत सरसबजस हो गई - इनके पीछे कपतान रफ - मारटगर्ल साहब रियासत के मुन्तज़िम रहे स० १९४३ में सरकारी बन्दोबस्त चड गया और राजराना जालिम सिंह जी को रियासत के पूरे अधिकार सरकार ने देनायत किये

परन्तु महाशोक कि इन्हीं ने राजा का सरकार की मरजीके अनुसार काम नहीं किया- जिसका पूरा २ प्रतांत हमनही करसकते अन्तको उन बातों का यह फल प्राप्त हुआ कि सं० १८४४ में सरकारके हुकम से मेजर टाल्वट साहब बहादुर ने आलरा पाटनमें पहुँचकर राजराना ज़ालिमसिंहजी को माजूल करदिया और राजके कार्यों का अधिकार अपने हाथमें लिया - जबसे आजलों सरकारी बन्दोबस्त है राजका काम एक कौन्सिल के द्वारा चलता है - जिसके मेम्बर बडे २ लायक और विद्वा न लोग हैं - जैसे धामाई - हर लाल जी साहब - दमुन्शी कालीचरन जी आदि - राजरानाके लिये तनख्वाह मुकुरि है - राजके कामोंसे कोई सरो कार नहीं - यदि अब भी राजराना साहब अपने को संभालें और सरकार अंगरेजीके अफीसोंकी सम्मति पर चलें तो अंगरेजी सरकार जो दयावान और व्यावशीला सरकार है अवश्य करके इनको क्षमा करेगी सरकार से इनको खरीतेके लिए फाँके पर महाराज राना बिसियार मेहरबान दोस्तान महाराज राना ज़ालिमसिंह बहादुर सलामतु अल्लह तआला और श्रीनाम पर महाराज राना साहब बिसियार मेहरबान दोस्तान सलामत लिखा जाता है - खरीता सुनहरी कागज़ पर और थैली कमरवाबकी होती है -

राज्य करौली

राजपूताना के पूर्व हिस्से में करौली का राज एक छोटा परन्तु पुराना राज्य है - जिसके उत्तर में भरतपुर और जैपुर - पश्चिम में जैपुर - दक्षिण में जैपुर और पूर्व में गवालियार और धौलपुर का मुल्क है रकबा १९०० मील मुख्वा - आबादी ४०६७० आदिमीशों की और अमदनीरवालसा ५ लाख रूपियाँ सालाना - फौज सवार व पैदल दोनों २००० से अधिक है - इसराजमें जागीरदारों के चार ठिकाने - हाडगैती - अमरगढ़ - रानोतरा - हनायती - अब्बल हस्तेके है - और राजका बन्दोबस्त ४ तहसीलोंके द्वारा होता है -

करौली- मंडरायल- आदतगिर- माचलपुर- इसरियासन की बहुधाजमीनपथरी-
लीहै- प्राय पूर्व और दक्षिणामे चम्बलनदीके काठीबरसातमें नाले और गढे पडजाते
है इसी राज्यमें यादो राजपूतो के सिवाय गूजर-जाट-माली-मीना-आदि भीवस्ते है-
करौली जो राजधानी है गवालियारसे २९ मीलके फासले पर पश्चिममें बंस्ता है- नद्य
के गिर्द ब्रह्मो के होनेसे दूर तक लहलहाती हुई हरियालीदरवाई देती है- नदीनालों और
दलदलके होनेसे इसदेशमे शत्रुओंका गुजर नहीं हो सकता करौलीके गिर्द सुखता श
हरपनाहै- और बाहर दो पहाडियों पर रईसकी गढिया भौजूद है- करौलीका पूरा और
परसिध्य तवारीखनही मिलती तौ भी जौ कुछ मिली है लिखीजाती है- ॥

तवारीख करौली

करौलीके रईस जैसलमेर वालोंके समान यादों नसलके चन्द्रवंसी राजपूत है बह्मिज
(मथरा) हीके आस पास रहे- सुसलमानो ने जब बयाने शेहनको निकाला तो इन्हों
ने चम्बलनदीके کنارे करौली और सबलगढ बसाया- परन्तु स० १५१०में मालवाके
बादशाह शिवलजीने करौली फतह करके खालसामें मिला ली और इहलोग पहाडो
में फिरते रहे- अकबर बादशाह ने राजपूताना फतह किया- तौरौली वालों
को भी कुछ जागीर और मन्सब दिया- राजा गोपाल जादो अजमेरमें बादशाही
किलेदार रहकर स० १६२६में मृत्युको प्राप्त हुआ- तब उसका बेटा कल्याणदास
स० १६६० में बादशाही मन्सबदार बना- और बहुत सी लड़ाइयो में बादशाही खा
करी बहादुरी से की- सुसलमानोंकी सलतनत कमजोर हुई तो महाराजा सीधिया
ने सबलगढ दबाकर करौली महाराजाही कबजे में छोड दी उसदिनसे रईस करौ
ली २५ हजार रुपिया सालाना खराज पेशवाको देने लगे स० १८७३ में सरकार-
अंगरेजीने राजपूताना से मरहटो का कब्जा उठाया तो महाराजा करौली भी अहद
नामा करके सरकारकी हिफाजत में आये- और खराज माफ हो कर माचलपुरका

परगना जिसको मरहटों ने खराज के बदले हवारवा था - उलटा दिलाया गया सं० १८८१ में लावलद गुजर गये - ॥

महाराजा परताप पाल सं० १८९० में पाट विराजे और सं० १९०४ म मृत्यु को प्राप्त हुए - ॥

महाराजा नरसिंह पाल - यह राजका अधिकार पाने नहीं पाये थे कि सं० १९०८ में देव लोप होगये - ॥

महाराजा भरत पाल सं० १९०८ में गारी विराजे - परन्तु महाराजा नरसिंह पाल के दे औलाद मरने पर लार्ड डिल्हो सी साहब गबर नरज नरल ने पुरानी कानून के अनुसार करौली को ज़बती का हुकम भेज दिया क्योंकि उक्त लार्ड साहब की समझति यह थी कि जिस रईस के असली औलाद नही उसका मुल्क ज़बत कर लिया जाय - गौद नर रईस न बनाया जाय - परन्तु पारलेमेन्ट ने लार्ड साहब की राय को नामजूर किया और रईस करौली को गौद लेने का अधिकार मिला (इसी लाद साहब ने भांसी - नागपुर आदि रियास्तों को रईसों के लावलद मरने पर ज़बत किया था) ॥

महाराजा महिन पाल सं० १९१० में पाट विराजे इन्हीं ने सन १८५७ ई० के ग़रर में सरकार को मदद दी थी जिसके बदले में १ लाख ७० हजार रूपिया सरकारी कर जमा कें हुआ - और १५ तोपों की जगह १७ तोपों की सलामी हांगर्ड - नैकनामी का हिल ज़न पाया - १९२२ में सितारे हिन्द का तमगा मिला - यह महाराजा साहब १५ वर्ष राज कर के सं० १९२६ में स्वर्गवादा हुए - ॥

महाराजा जैसिंह पाल १९२६ में गौद आकर गारी विराजे और १९३२ में ६ वर्ष राज कर के देव लोप हुए - ॥

महाराजा अर्जुन पाल सं० १९३२ में पाट विराजे और जागीरदारान भवरतन और इनायती को जो सरकशी करते थे फौजी दबाव से ताबे किया - सं० १९३८ में -

दरबार के दिरङ्ग रईयत व जागीरदारों ने अजन्दी में फरयाद की जिस पर महाराजा से राजका अधिकार लेकर अजन्त साहब को सौंपा गया - जिन्ही ने पंचायत द्वारा राजका बन्दोबस्त किया स० १८४३ में महाराजा अर्जुनपाल देव लोफुस महाराजा भंवरपाल साहब (वख्तीव) स० १८४३ में पार विराजे - यह रईसरहमदिल औरनेकमिजाज है - रियासत का बन्दोबस्त साहब अजन्त की निगरानी में लाथक पहिलकार करते है - राज करौली में ४५० गाव है जिन में से खालसा के २५० ग्रामों की आमदनी ५ लाख रुपिया साल है - बाकी गांव जागीरदारों के कब्जे में है - जिनकी सालाना आमदनी खैट लाख है छोटे बड़े जागीरदारों की तादाद ४० है - सरकारकी तरफसे खरीनाके लिफाफे पर " बमुत्रालै - महाराजा साहब मुशफक मेहरबान मुखलिसान सलामत महाराजा यदुकुल चन्द्र भालची सिंह मालजी देव सल्लमहु अल्लाह तआला " और श्री नामे - पर महाराजा साहब मुशफक मेहरबान मुखलिसान सलामत लिखाजाता है - कागज़ सुनहरी चैतीक मखाबकी होती है -

राज्य टोंक

राजपूतानाके मध्यमें टोंक मुसलमानों की रियासत है - जिसका बन्दोबस्त टोंक - रामपुरा - नीमाहेडा - छबडा - सरोज - पडावा - छ परगनों के द्वारा होता है - एक परगना से दूसरा परगना बहुत दूर और दूसरी रियासतों से घिरा हुआ है - इसलिये इस राज्यकी कोई हदस्थिर नहीं हो सकती - टोंक जो राजधानी है - जैपुरराजके दक्षिणी इलाकेसे घिरा हुआ है - रामपुरा दक्षिणकी और बूंदी से मिला हुआ है - नीमाहेडा पश्चिममें मेवाड और उत्तरमें नीमचसे मिला हुआ है - छपरा - बूंदी भा बरापाटन और गवालियारसे घिरा हुआ है - पिडावा हुलकर

और गवालियार के राजसे घिरा हुआ है- सरोजके चारों ओर गवालियार बहुत
कर का मुल्क मालवा और सागर का जिला फैला हुआ है- तीन परगने टोंक, सरोज,
नीम्बाहेडग, १० लाखके औरवाकी तीन परगने पांचबारव की आमदनी के हैं- ख
राज और फौजरखर्च इसराज्यको माफ है- जमीनसब परगनां की पैदावारी के-
लिये अच्छी है- टोंक चम्बल नदीके कनारे बस्ती है- और नदीके सदाबहनेसे -
गेहूं और खरबुजा बहुत उत्पत्ति होता है- छपराके पूरबमें हीकर पारबती
नदी बहती है- इससे भी पैदावारको बड़ा फायदा है- इसराज्यमें सम्मत ग्राम-
११४३ है और सब परगनां की जमीन मिलकर २३३० मील मुर्ब्बा, आवादी-
३ लाख ३८ हजार - आमदनी खालसा १५ लाख सालाना - फौज सवार खपैदल
४००० खराज माफ - सलामी १० तोपें सर होती हैं ॥

तवारीख टोंक

टोंकके इस बुनेरवाल पठान हैं जिनका निकास बुनेरालाके काबुलसे हुआ है-
महम्मद शाह बख्श शाहके अहम में तालैरवां पठान चोरहर इलाकेके से हिन्दो
स्तानमें आकर अली महम्मद रवां सहेलाकी फौजमें नौकर हुआ - उनके-
मरनेपर उनके बेटे हैदर रवां ने रुहेलोंसे सम्भल जिले मुरादाबादमें थोड़ी सी
जागीर पाई - सं० १८२२में हैदर रवांके बेटे अमीर रवां उत्पन्न हुए - अमीर रवांने
जवान होकर मालवाकी रियास्तोंमें नौकरियां कीं और जोर पकड़ते पकड़ते -
वह दबदबा हासिल किया कि मालवा और राजपूतानाके बड़े २ शूरवीर राजा इनसे
डरते थे - सरकार अंगरेजीने भी इनकी बहादुरी और जोर देखकर सन १८०० ई०-
में इनके साथ अहम नामा किया - और जोर परगने हल करने फौजरखर्चके लिये
अमीर रवांको दे रखे थे - सरकारने हमेशाके लिये अमीर रवांके कबजेमें करा दिये और
सन १८१०में वह खुद मुख्तार रईस मीर्जा अमीर रवां सं० १८४२में -

बीसवर्ष की अवस्थामे दससिपाही और एक भाई को साथले कर घरसे नौकरी-
 की तलाशमे निकले थे मालवा के रईसके यहाँ नौकरी की- फिर भोपालके नवाब
 हयातमहम्मदखा की नौकरी की फिर राघोगढ़ के राजपूतोंकी चाकरीमे रहे- फिर
 वालारावईगला के नौकर रहे- इसके पीछे वह स० १८५४ मे हुलकरकी चाकरी में
 जाये और यही से उनके भाग्यने पलटारवाया- स० १८०६ मे जैपुर के महाराजा
 जगतसिंह जीसे दोस्ती की- और नवाब की मददसे कछवाही ने मारवाड की सी-
 मा पर फतह पाई- जिसपर महाराजामानसिंहजीने नवाब को पगडी बदल भाई-
 बनाया- और जैपुर पर मुसीबत आई दोनो रियासतो से लाभ उठानेके पीछे उदैपुर
 के महाराजा भीमसिंह की कवरानी जी किशनकंवरजी की कतल कराया-
 जिस्से आजलो अमीरखाको जालिम कहाजाना है- इसके पीछे नवाबने नागपुर
 के ऊपर चढ़ाईकी सरकार अंगरेजीने यहजोर उनका देखकर यहां तक दबाया- कि
 सन १८१० मे उनको सरकारके साथ अहदनामा करना पडा- जिसके अनुसार बूट
 मारउन की वन्द होगई- तान प्रथम यह है कि नवाब अमीरखा ने बीसवस नौकरी
 और दसवर्ष छूट मार और १७ वर्ष टोक काराज करके स० १८६० मे ६७ वर्ष की अ-
 वस्थामे देहत्याग कर परलोक कारास्ता लिया- मरनेके समय नवाब अमीरखा
 के ११ बेटे ८ बेटियां ५० पोता पोती- और ३० बेटियोकी औलाद थी ॥

नवाब वजीरुद्दौला वजीर महम्मदखां स० १८९० मे अपने पिता
 नवाब अमीरखां की जगह पाट बिराजे- यह धर्म कर्म में बहुत ही सावधान थे- दूरे
 नेशाराब गांजा - चरस आदि नशाकी बिकरी और लेने देने अपने राज्यमें बन्द
 कर दिया- कोई पात्र या वैश्या राजमें नहीं रहने पाती थी- नवाब रात दिन मौ-
 लीयो की सोहबतमें रहकर धर्मके अनुसार राज का काम करते थे- गद्द सन-
 १८५७ के उपद्रवमें नवाब ने सरकारकी अधिक सहायता की जिससे रईस-

टोंक को भी दूसरे रईसों के समान औलादन होने पर गोट लेने का अख्तियार मिला और नीम्बाहेड़े का परगना जिस पर टोंक के वखशी की सरकशी के बदले में करनल शोर साहब पोलीटेकल एजन्ट ने मेवाड़ वालों का कब्जा करा दिया था वापिस दिला दिया गया - क्योंकि जागीर की वगावत से रियासत को बागी नहीं समझा जाता - १८ जून सन १८६४ ई० को ३० वर्ष राज करके नवाब वजीर महम्मद खां देवसोपट्टण ॥

नवाब महम्मद अली खां यह सात भाईयों में से बड़े भाई पाटवी के मर जाने पर स० १८२० में राज बिराजे और राज के कामों में भली भांति चित्त लगाया परन्तु स० १८२९ में इनके खराज गुज़ार ठाकुर **लावा** में और इनमें सरवर शाह प्रधान की नालायकी से भगडगर खडग हुआ - ठाकुर ने चाकरी में कमी की और नवाब ने नज़राना बढ़ा दिया - यह भगडग चल ही रहा था कि हकीम सरवर शाह प्रधान टोंक ने हत्या करके ठाकुर को टोंक में बुलाया - और ठाकुर का काका **रेवत सिंह** कामदारों और १३ साथियों समित दीवान के मकान पर बुलाकर कत्ल किया गया - इस फिसाद की खबर जल्दी से सरकार को मिली और एक अंगरेज़ आफ़ीसर फौरन टोंक में जा पहुँचा - जिससे फिसाद बढने नहीं पाया - ठाकुर को लावा जाने की आज्ञा दी गई - और फिसाद की लहकी कात करके सरकार ने यह न्याय किया कि नवाब महम्मद अली खां टोंक की गादी से उतार दिये जायें और १७ तोपों सलामी के बदले ११ तोपें सलामी की जाय - दीवान सरवर शाह उमर कैद करके किसी किले में रहवा जाय और लावा की जागीर एजन्टी के मातहत कर दी जाय - इस हुकम की तारीख हर्द महम्मद अली खां बनारस को भेजे गये और ६० हजार रु० साल रियासत से उनकी तनख्वा मुकरर की गई - हकीम सरवर शाह दीवान बनारस में उमर कैद किया गया - जहाँ वह स० १८८८ ई० में मर गया - लावा का ठाकुर एजन्टी हगडोती में रह ख भर देता है - वहाँ से टोंक के खजाने में जमा कर दी -

जाती है- दरबारों के से कोई वास्ता नहीं - मुहम्मद अली रवा बनारस में नजर बन्द है ॥

नवाब हाफिज मुहम्मद दूबराहीम अली रवा साहब बहादुर- यह अपने बाप के गादी से उतारे जाने पर १२ भाइयों में सबसे बड़े होने के कारण २० वर्ष की अवस्था में सं० १८२३ में पाट विराजे- परन्तु भाई बेटों की सरकशी से जो साहब जादे कहलाते हैं और ४ लाख की जागीर पर कबज़ा रखते हैं राज्य का बन्दोबस्त न कर सकें इसलिये नवाब के काका साहब जादे मुहम्मद अबीदुल्ला रवां- साहब बहादुर दीवान न्यत किये गये इन्होंने रियासत का बहुत अच्छा बन्दोबस्त किया जनवरी सन १८७७ ई० के दिल्ली दरबार में नवाब साहब सामिल हुए जहा पर १७ तोपें सलामी की बहाल होगई- साहब जादे अबीदुल्ला रवा दीवान को सरकार ने प्रसन्न होकर- के० सी० एस० आर्द० का विताब वावशा - पिछले २० वर्ष में १५ लाख रुपया का कर्ज रियासत पर हो गया था- दीवान और कौन्सिल ने अजमेर के राय बहादुर सेठ समीरमल जी लोढा से सं० १८६३ में रुपया उधार लेकर करज दारों की खन्दी कर दी और खजाना राज्य का सेठ जी की निगरानी में रखा गया- जबलो इनका रुपयान चुके- सन १८७७ ई० में नवाब साहब ने एक कौन्सिल (पंचायत) अपनी मातहत में स्थिर की है- उसी के द्वारा राज का कारुवार होता है- इस कौन्सिल के सभापती खुद नवाब साहब और नायब सभापती साहब जादे अबीदुल्ला रवा जी दीवान है- सन १८९० ई० में नवाब साहब को अजमेर में बुलाकर बड़े लाट साहब लार्ड लइन्सडौन साहब बहादुर ने सितारे हिन्द दर्जे अब्बल का तगमा इनायत किया- रियासत का काम ग्याजक लगी क चल रहा है- करजा भी उतरता जाता है- कुल आमदनी २० लाख रुपया की है जिसमें १५ लाख खालसा और ५ लाख जागीर दारों की है- सरकार की ओर से

खरीता के लिफाफे पर "बमुताले नवाब साहब मुशफक मेहरबान मुख
लिसान नवाब अमीनुद्दौला वजीरुलमुल्क नवाब महम्मद इबराहीम अली खां
बहादुर सोलत जंग सल्लमहु अल्लहत आला" और भीना में पर "नवाब साहब मुश
फक मेहरबान मुख लिसान सलामत" लकव लिखा जाता है कागज़ सुनहरी और
थैली कमरवाब की होती है ॥

राज्य अलवर

राजपूताना के पूरब और उत्तर दिसा में आमदनी के लेहाज़ से दूसरे दर्जे
की रियासत अलवर है- जिसके उत्तर में सिरकारी ज़िला गुडगांवां और कोट-
कासिम राज्य जैपुर का इलाका और पश्चिम में नाभा पटियाला और जैपुर-
काराज्य है- दक्षिण में जैपुर- और पूरब में भारतपुर राज्य की अमलदारी है-
लम्बाई उत्तर से दक्षिण को ८० मील- चौड़ाई पूरब से पश्चिम को ६५ मील- र
कवा ३५७३ मील मुरबा- आबादी ६८२८३२ आदमीओं की- और आमदनी २०
लाख रुपया सालाना- फौज सवार पैदल ४००० (शहन्शाही खिदमत के अलावा)
है- सलामी की ५ तोपें और खराज माफ है- इस राज में **भूंगा** और **साजी**-
नदियों के बहने से जिनमें से पहिली नदी सदा बहती रहती है- पैदावारी खूब ही ती
है- अलवर का राज्य चार भिन्न २ इलाकों में है (१) **दूंगड** में मालारखेड़ा- राज
गढ़- राजपुरा- टीला (२) **नीहडग** में थामा गाज़ी- परताबगढ़- अजबगढ़
और बलदेवगढ़ (३) **राठ** जिसमें माडन- वीरोड- मंडावर- करनीकोट
नीमराना- हरसोरा- जीहोली- ततारपुर- हाजीपुर- हमीरपुर- बालसाज़-
और रामनगर हैं- (४) **मेवात** - जिसमें अलवर- बहादुरपुर- रामगढ़

* नाभा और पटियाले को सन १८५७ की खैरखाही में यह मुल्क सरकार ने बखशा है पहिले नवाब मन्तर
काथा - मुहम्मद मुराद अली - ॥

गोविन्दगढ़ - पीपताखेडा - किशनगढ़ - इसमार्इलपुर - तजारा - और पतो करा परगने हैं - राजका बन्दोबस्त करनेके लिये १२ तहसीले हैं ॥

मेव और खानजादः जातिकइलहास

अब खरराज्य के इलाके में मेव जातिके लोग अधिक रहते हैं जो मुसलमान म-हम्मद तुगलक के समय में मुसलमान हुए थे- इतिहास बतलाता है - कियह राजपूतो और मीनो से मिलकर एक जाति पैदा हुई है - सदा मन्द से यह जाति डकैती और चोरी में परसिद्ध है - जैसे इस देशके जाट-गूजर-और मीने है - राज खरखरके परगने तजारा में एक दूसरी जाति खानजादा के नामसे परसिद्ध है - जो श्रीकृष्ण चन्द्रजीके वंसमें चन्द्र बसीयादो राजपूतों कीनसल है खानजादः नामपडनेके दो प्रमाणा इतिहासोंसे मिलते हैं - एक यह कि खाननामी कोई यादों नसलका राजपूत मुसलमान होगयाथा - अतएव उसका और उसकी औला का नाम खानयादो पड गया - जिसको परजा सहस्सरो वर्षे चिहीतहोनेसे खानयादों कहन खानजादः कहने लगी जैसे अजमेर को अजमेर और गंधार को कंधार और असीको हांसी कहने लगे - दूसरी कथन - वह है कि फीरोज शाह बादशाह तुगलक के समय में दोतीन राजपूत-मुसलमान हुए थे उनको बादशाहने खानेजाद की पदवीबरवशी थी - उनकी औलाद आजको खानाजाद अर्थात् खानजारा कहलाती है जिसका अर्थ चाकर है - दोनो बातों में से कोई बात ही परन्तु यह सावित है कि उक्त खानजादा यादो वस राजपूत है - और उनके सम्बन्ध आजलो चौहान - भाटी आदि मुसलमान व हिन्दू राजपूतोंके साथ होने हैं - जो हरयाने के देशमें फैले हुए हैं - और राघडकहलाते हैं - खानजादा जातिके सरदार ५०० वर्षसे सूरबीरके नामसे परसिद्ध हैं - नवाब हसनखां मेवाती जिसका नामपुराने इतिहासों में सूर्यके समान

चमकना हुआ दिखाई देता है - उदैपुर के महाराजा हिन्दू पति **दुंगराम सिंह** जी के साथ होकर **बाबर** बादशाह की लडाई में १००० सवारों के साथ काम आया था - इसी सूरवीर की बेटी के ^{गर्म} से **बीरमर्वा** का पुत्र **अबदुलरहीम** बरवान खान उतपत्ति हुआ था - और जो अंकवर बादशाह का मुसा ह्व था - जिसने हिन्दोस्तान के इतारों और सूरवीर छत्रियों में नाम पाया और एक कवित्तके बदले में **चाडा चारन** सारवाड वाले को ५ लाख रुपया दिया था - इन दो जातियों के उपरान्त अहीर - जाट - आदि भी बस्ते हैं - राजधानी शहर अलवर अहली परबत के ठाँव में बस्ता है - और ५० हजार आदमी उसमें रहते हैं - पहाड के ऊपर मजबूत किलाके अन्दर एक महल चार कुन्द एक तालाब **सलेम सा-भार** और एक बावड़ी है - वर्तमान नरुको के कक्जे से ^{पहले} जैपुर का किलेदार उसमें रहता था - अलवर की कच्ची शहर पनाह और खाई है - जिसको महाराजा **परताप सिंह** ने सं० १८३२ में तयार कराया था - कम्पनी बाग और बने विलास से जो **मोती दुंगरी** पर है शहर की बहुत रौनक होगई है - इन बागों की सी नारंगियां कहीं नहीं होती ॥

लुवारी व अलवर

अलवर के रईस जाति के कहवाते हैं जो प्रांवेर के वारहवे राजा **उदय करन** के परपोते **नरु** जीकी औलाद में होने से **नरु** के कहलाते हैं - इनका कुरसीनामा यह है - महाराजा उदय करन के बेटे वीर सिंह - उनके महाराज - उनके नरुजी - उनके लालाजी - उनके ऊदाजी - उनके बाडवां - उनके फतह सिंह - उनके कल्यान सिंह - उनके उग्र सिंह - उनके जोरावर सिंह - उनके मोहब्बत सिंह - उनके राव राजा परताप सिंह - ग्यारह पीढीलो यह जैपुर के मातहत जागीरदार रहे परन्तु वारहवी पीढी में राव राजा परताप सिंह ने अपनी असली जागीर **माचेरी** व रामपुरा पर अपने भाइको उग्र सिंह

तेजसिंह - जोरावरसिंह - मोहनवतसिंह को छोड़ा - और अपनी तलवार के जोर से - जैपुर भरतपुर के राजमे से बहुत सा इलाका दबाकर १८३२ मे रियासत अजवर की बुनियाद कायम की - और रियासत स्थिर रहने के लिये उन्होने नवाब नजफखान के साथ बहादुरी से त्वाकरी करने और नवाब को भरतपुर और आगरा पर कब्जा दिलाने के बदले में दिल्ली के पिछले बादशाह शाहजहाँ से सनद और पंजहजारी मन्सब और माहीमरातिव का क़ुख हासिल किया - जिससे जैपुरवालों का अजवर पर दावानदा और स० १८३६ मे जबकि मरहटे लूटमार कर रहे थे उन्होने बड़ी बहादुरी से बहुत सा मुल्क दूध उधर से दबा लिया - और २० लाख रुपया नकद परगने विसवा को लूट कर खजाना भर लिया जिससे रियासत को पूरी ताकत हासिल हो गई - रावराजा परतापसिंह जी पूसवटी ५ सं० १८४७ मे पचासवर्ष की उमर पाकर देवजोष दुष्ट ॥

महाराजराजा बरवतावरसिंह स० १८४७ में गोद आकर पाटविराने - स० १८६० मे ग्राम सवांडी इलाके अजवर में मरहटो और अंगरेजी फौजे से भयानक युद्ध हुई - उसमें नवाब अहमद खान वकील अजवर - और ठाकुर **समरसिंह** जी ने अंगरेजों को बहुत मरहटी - जिससे सरकार ने खुश हो कर विनालेने राज के अहह नामा किया - और ८ परगने रावराजा को इन आम में दिये - जिनमे लुहारू - दादरी - नीमराना भी है - और नवाब को लुहारू और पीरोजपुर के परगने इन आम में मिले - महाराज बरवतावरसिंह माघ सुदी २ सं० १८७९ में भक्त्यु को प्राप्त हुआ ॥

महाराजराजा विनयसिंह स० १८८० में पाटविराने - दूसरे टावीदार बलवन्तसिंह को चार नारदनी नागौर नारादीगर्दची जा बलवन्तसिंह के दे औचाद

महनेसे २ वर्ष पीछे राज अलवरमें पीछी मिलाई गई- सावन बरी सं० १८१४ को ५० वर्ष की अवस्था में देवलोप हुये ॥

महारावराजा शिवदान सिंह १३ वर्ष की अवस्था में सं० १८१४ में अपने पिता की जगह पाट बिराजे - यह महाराजा साहब फ़ज़ूल ख़ची और दातारी और वरनज़मी के कारी दोबेर रियासत से माज़ूल किये गये - और दोही बेर रियासत का अधिकार मिला - अन्त माज़ूली ही की हालत में सं० १८३१ में स्वर्गवाश हुये ॥

महारावराजा मंगल सिंह १४ दिसम्बर सन १८०४ ई० को गोद लिये जाकर पाट बिराजे - महारावराजा शिवदान सिंह जी के काका ठाकुर लखधीर सिंह जी गादी के दावीदार थे - पर अंगरेजी अफ़सरों ने उनको बूटा समझकर गादी से महसूम रखा - ठाकुर साहब ने महारावराजा के हज़ूर में नज़र पेश नहीं की और ख़फ़ा होकर सरकार के हुकम से अजमेर में चले आये - और उसी हालत में मृत्यु को प्राप्त हुये - महारावराजा मंगल सिंह जी ने मेऊ कालिज में अंगरेजी विद्या सीखी - और सं० १८३४ में राज के अधिकार पाये - सं० १८४२ में जी० सी० ग़स० आर्द० कातमगा सरकार से पाया - और सं० १८४५ में सरकार ने महाराजा का खिताब बरवशा - २२ ता० मई सन १८८२ ई० को नैनीताल के पहाड़ पर जहां वह दो वर्ष से आबो हवा की बटली के लिये जाया करते थे - जिगर की बीमारी से देव लोप हुये - ॥ और लाश अलवर में लाकर दफ़न किया गया ॥

महाराजा जै सिंह जी (चरजीव) १३ ता० जून सन १८९२ ई० को १० वर्ष की अवस्था में अपने पिता की जगह राज बिराजे - रईस होनहार मालूम होते हैं राज का काम एक कौन्सिल द्वारा चल रहा है - जो करनल फ़रीज़र साहब पोलिटिकल एजन्ट की निगरानी में है - अलवर में आजकल एक विचित्र मुक़द्दमा चल रहा है - महाराजा साहब के नैनीताल में देवलोप होने से एक दिन पहिले अलवर

मे राज्यके हीवान कुंजबिहारीलाल सडकपरमारेगये- इसमुकदमाकीतह कीकातअंगरेजीपुलीसकेअफीसरोनेकरकेरामचन्द्रआदिईमनुष्योपरकुंजबिहारीलालकेमारनेकादोषलगायाहै-मुकदमाहौरासिपुर्दहोगयाहै ॥

राज्य भरतपुर

राजपूताना परदेशके पूरबदिसामें भरतपुरविचले दरजे काराजहै जिसकेउत्तर मेंगुडगावां जिलाअंगरेजी पश्चिममें अरावर और जैपुर- दक्षिणामें जैपुर करोली धौलपुर के इलाके और पूरबमें जिला आगरा और मथरा है- लम्बाई ७५ मील और चौड़ाई ४८ मील- रकबा १९७४ मील मुरब्बा- खावादी ई ४५५४० खादनीजोकी- खासदनी २२ लाख- फौजसवारव पैदल ५००० है- खराजमाफ है- सलामीकी १० तोपें भर होती है- इसराजमें होकर चार नदियां वानगंगा- घनवीर- कावन्द- और रूपरेख बही है- जिससे पानीकी कोई कमी नहीं- इसके उपरान्त देसकी नीची जमीन होनेसे १२ महीने बरसातका पानी भरारहताहै और बहुधा यह पानी खेतो को नुकसान पहुंचाता रहताहै- दक्षिणदिशामें पहाडिया है जिनमें जगली ब्रह्मो के अधिकतर होनेसे पशुओको घासचारा हरमौसममें बहुत मिलताहै- बयानाकागट और दीग इसराज्यमेंपुराने और परसिद्ध स्थान है राजधानी भरतपुर नगर नीचीजमीन पर तीन मील लम्बा और एक मीलसे अधिक चौड़ाईमें बस्ता है- शहरपनाह यद्यपि कच्ची है- परन्तु उसके गिर्द जो खाई है वहसदापानीसे भरीरहती है और लडाईके समय बाहरके तालाबो का पानी ढोड देनेसे नगर एकटापू बनजाताहै- जिससे शत्रुओका नगर लो पहुंचना कठिन और दुभर होजाताहै- इसनगरको महाराज रामचन्द्रके भाई भरतने अपने नामपर बसायाथा- परन्तु किला आदि राजा सूर्जमल

के बनाये हुस है ॥

नवारीख

भरतपुरवालों के पुरखे कौमजाट संसनी नामी ग्राम के रहनेवाले हैं - यह खेती बाड़ी के सिवाय लूरमार भी करते थे - राजारामजाट को सं० १७४५ में आलमगीरवाद्शाहके पोते वेदारबख्श ने डकैती का दोश लगाकर कतल किया और गठी संसनी को उजाड़ दिया था - आलमगीर के मरने पर फिर इन लोगों ने लूरमार प्रारू की थी परन्तु फर्रुख सेय्यर वाद्शाहके वजीर सैयद अबदुद्धाने चूड़ामनजाटको जो राजारामके कतल होनेसे जाटों का मुखिया बनाथा लूरमारसे बन्द रहने और रास्तों की हिफाजत करने का जिम्मेवार ठहरा कर सहदारवां का खिताब और कुछ गांव जागीरमें बख्शे - परन्तु यह लोग अपनी शरारतसे वाज न आये इसलिये वाद्शाहने सं० १७७४में जैपुरके महाराजा सवाई जैसिंहको भेजा कि चूड़ामनको सजादे - चूड़ामन वजीरसे मिला हुआ था अतएव कुछ बन्दोबस्त न हो सका - चूड़ामनने जोर पाकर अपने भतीजे बदनसिंहको कैद कर लिया - ३ वर्ष पीछे बदनसिंह कैदसे छुटकर सवाई जैसिंहको अपनी सहायताके लिये चढा लाया - ईमदीने महासरा रहा - अन्तको इतीने नामी स्थानको महाराजाने विजे कर लिया - और चूड़ामन अपने पुत्र मोहकमसिंहसमीत भाग गया - सन १७२३ ई० में बदनसिंह जाटोंका रईस नियत किया गया - महाराज सवाई जैसिंहने इसको राज तिलक दिया - बदनसिंहने बहुतसे ग्राम इधर उधरसे हबाये - परन्तु दूलाहाबादके बादशाही सूबेदारने इसको मारकर भगा दिया - अन्तको बदनसिंह मरहटोंसे मिल गया - जिससे राज भरतपुरकी बुनियाद स्थिर होगई - जेठ सुदी १० सं० १८१२में मर गया ॥

सूजमल सं० १८१२में अपने पिताकी जगह राजविराजे और सन १७३३ में

छोपा मार कर खीसा लाट से भरतपुर छीन लिया और स० १८२० में इलाहाबाद के सूबेदार नजीबुद्दौला से लड़ कर मारे गये ॥

राजाजवाहर सिंह पूस बंदी १३ स० १८२० को गद्दी बिराजे और स० १८२५ में किला आगरे में तवावार से घायल होकर परलोक बास हुए ॥

राजारतन सिंह भादों बंदी ९ स० १८२५ में पाट बिराजे ७ महीने राज करने के पीछे एक कीमियागर गुशार्द के हाथ से चैत सुदी ५ स० १८२६ में कतल हुये- इनके आदमी श्रीने गुशार्द को बंदी मार डाला ॥

राजा केसरी सिंह स० १८२६ में राज बिराजे- बादशाह के बज़ीर नज़फ़र खाने स० १८२८ में आगरे का परगना दबालेने के दोष में भरतपुर के सिवाय समस्त राज जब्त कर लिया था परन्तु इनकी मां रानी किशोरी की आचारी से नवाबने राज वापिस दे दिया चैत बंदी १५ स० १८३४ में देवलोप हुोगर ॥

राजारनजीत सिंह स० १८३४ में पाट बिराजे नवाब नज़फ़र खाको र्थ लाख रु० नजराना का देकर राज तिलक पाया स० १८४१ में शाह आलम बादशाह को महाराजा साहब दीग की खैर कराने को लाये- बादशाहने खुश होकर बदलवेग से जिनके कंबने में दीग का गढ़ था राजा को दीग दिला दिया- और दाऊदवेग से आगरे का किला महाराजा से छिया को दिला दिया जिससे नाराज़ होकर गुलाम कादर रुहेला ने बादशाहकी आंखें निकाल ली और दिल्ली के लाल किले को लूट लिया- परन्तु अन्त को पिंजरे में बन्द होकर बड़े दुखों से मारा गया- स० १८६१ में आंगरेजी सेना ने भरतपुर पर हमला किया- जिसके सैन्य पतौलार्ड लीक साहब थे- बड़ी घमसान की टाडई हुई- ३००० आदमी आंगरेजी फौजके मारे गये- जो भी भरतपुर दिख नहो सका- अन्त को महाराजाने १३ लाख रूपिया देकर आंगरेजी से सुलह कर ली- अ अून सुदी १५ स० १८६२ में देवलोप हुग - ॥

महाराजा नधीरसिंह सं० १८६२ में राजविराजे और सम्बत १८८० में देवलोप हुण - ॥

महाराजा बलदेवसिंह सं० १८८० में पाटविराजे और सं० १८८१ में देवलोप हुण - ॥

राव दुर्जनसाल - पाटवी तो बलवन्तसिंह थे परन्तु दुर्जनसालने जो महाराजा बलदेवसिंह के भतीजे थे फौज और सरदारों की सहायतासे बलवन्तसिंह को गाढ़ी से उतार कर खुदमालिक बन गये सरकारने फौज भेज कर दुर्जनसाल को निकालने का बन्दो बस्त किया किन्तु फौजके आनेमें देर हुई इस दोषमें जनरल **एकटरलोनी** साहब मौजूफ हुस - और उसी दुःखसे मर गये - अन्तको २५ हजार अंगरेजी फौजने आकर भरतपुर लिया और दुर्जनसालको पकड़ कर आगे के किलेमें कैद कर दिया और बलवन्तसिंहजी पाटविराजे ॥

महाराजा बलवन्तसिंह सं० १८८२ में पाटविराजे और सम्बत १८०० में देवलोप हुण - ॥

महाराजा जस्वन्तसिंहजी (चरनजीव) सं० १८२० में पाटविराजे नालगीमें सरकारी अफसरोकी रायसे राजका बन्दो बस्त हुआ - थाने - तहसील - कचहरियां - दीवानी - फौजदारी - माल - आदि का बन्दो बस्त किया गया - सं० १८२३ में महाराजा साहबको राजके अख्तियारात दिये गये - सं० १८२८ में महाराजकुंवारा **रामसिंहजी** उतपन्न हुण - १८७७ ईस्वी में महाराजा साहबको सितारे हिन्दके अखिलका तमगा मिली - भरतपुरराजके समस्त ग्राम ३०० हैं इनमें १०० मन्दो बंधमार्थके निमित्त हैं - बाकी खालसा हैं - कोई सरदार या जागीरदार नहीं है - महाराजको फौजसे बहुत सुहबत है - सरकारकी ओर से खरीताके लिफाफेपर "बसुताले महाराजा साहब मुशफक मेहरवान मुखलिसान महाराजा ब्रज इन्द्र -

सवाई जसवन्त सिंह बहादुर बहादुरखेजंग सल्लमहु अल्लहत जाला" और श्री नामे पर महाराजा साहब मुशफक मेहरबान सुखलिसान सलामत लिखा जाता है - का गज मुनहरी खैची कमरवाव की होती है - ॥

राज्य धौलपुर

राजपूताना की पूरब दिसा में एक छोटी सी रियासत है - जिसके उत्तर में सरका रीजिना आगरा और पश्चिम भरतपुर करौली - दक्षिण और पूरब में गवालियार राज का इलाका है - दूसराज की लम्बाई ५४ मील - चौड़ाई ३२ मील - रकबा १६२६ मील मुरब्बा - आमदनी ८ लाख मुरूपया - और फौज सवार व पैदल ३००० के लगभग है - खराब माफ - पटवी महाराज राना - सत्तामी की तोपें १५ सर होना है - दूसराज की दक्षिण और पूरब दिसा की सीमा पर चम्बल नदी ६० मील गो बह कर - गवालियार और आगरे की सीमा बन गई है - पश्चिम व दक्षिण दिसा में पहाडियां हैं - और बाकी जमीन सीधा मैदान है - बर्षा होने पर पैदावारी अधिक होती है - आंब के ब्रह्म इस देश में अधिक है जिससे समसत जमीन लहलहाती हुई दिखाने देती है - **धौलपुर - बाडी - राजरवेडा** - तीन बडे पर गने है - राजधानी **धौलपुर** आगरा और गवालियार की सड़क पर गवालियार से ३० मील उत्तर में और आगरे से ३४ मील दक्षिण में बसता है - धौलपुर की दक्षिण दिसा में एक मील पर चम्बल नदी बडे जोर से बहा करती है - नदी के बाईं ओर बहुत मजबूत किला बना हुआ है - और कई महल और मसजिद है - जिनमें एक मसजिद सन १६३० ई० में शाह जहा बादशाह ने बनाई थी यह उन जोगो के निशान है जिनको सैकड़ो वर्ष हुए काटा खा गया - हां - इतिहास उनके नामों और कामों को भली भांति दरसा रहा है - ॥

तवारीख

धौलपुर वालों का निकास गोहद नामक ग्राम से है- जो किला गवालियार से २८ मील पर बसता है- इनके पुरखे ने जो जाट जाति का जमींदार था बाजेराव पेशवा की चाकरी में रहकर इज्जत पार्थी और सं० १७८६ में बाजेराव ने इनको गोहद जागीर में वरवी सं० १८१७ में अहमद शाह बादशाह अबदाली ने पानीपत के निकट बड़ी घमसान की लड़ाई लड़ कर मरहटों को भगा दिया उस समय गोहद का एक जाट जागीरदार लोकेन्द्र नामी गवालियार का किला रवाकर राना गोहद कहलाने लगा- राना पदवी इसको दिल्ली के बादशाह ने वरवी थी- महाराज राना लोकेन्द्र सिंह से सं० १८२३ में मरहटों ने दूसरी बेर जोर पकड़ कर गोहद व गवालियार छीन ली- परन्तु ३ लाख रूपिया लेकर अपना खराज गुज्जार बना कर गोहद लौटा दी- और गवालियार को अपने कब्जे में रक्खा सं० १८३५ में सरकार अंगरेजी ने इनसे सन्धि करके अपनी ओर मिला लिया- और मरहटों से लड़ कर गवालियार भी इनको दिला दिया- परन्तु ३ वर्ष पीछे दुश्मनों से मिनारहने का दोष लगा कर सरकार ने इनका साथ छोड़ दिया- यह खबर सुन कर माधोराव सेंधिया ने हमला किया- और गोहद व गवालियार दोनों इनसे छीन लिया- और राना को कैद कर दिया- २२ वर्ष लों यह कैद में रहे- और बड़े-२ दुःख भुगत कर अन्त को सरकार अंगरेजी ही की सहायता से दूसरी बेर रईस बने- इनके देवलोप होने की मितली का पतान ही मिलता- ॥

महाराज राना कीरत सिंह सं० १८५८ में सरकार अंगरेजी ने गवालियार का किला अपने कब्जे में कर लिया- और गोहद लोकेन्द्र सिंह के बेटे कीरत सिंह को दे दिया- किन्तु सं० १८६२ में जब दौलतराव सेंधिया और सरकार में अहदनामा हो कर सुलह हो गई- तो सरकार ने गोहद और गवालियार दोनों सेंधिया के हवाले कर दिये- राना गोहद के पास कुछ भी न रहा- राना गोहद ने कोई कसूर नहीं किया था जिसके बदले में

उनको राजमरहटों को दिया गया इसी बात का विचार करके सरकारने गोहदके राना से गवाअहदनामा किया और उसहानि के बदले में जो गोहदके दिनजाने से हुई थी सरकारने रानाजी गोहदको धौलपुर- बाड़ी- राजाखेडा- तीन परगने इनायत किये- तात्पर्य यह है- कि ७४ वर्ष यह गोहदके राना कहलाये और आजसे ८४ वर्ष पहिले गोहद तोड़ कर धौलपुरके गदमबने- सं० १८८२ में महाराज राना कीरतसिंह मृत्यु को प्राप्त हुए - ॥

महाराजराना भगवन्तसिंह सं० १८८२ में- पाट बड़े सं० १८५७ ई० के उपद्रव में गवालियार संजोअगरेज भागकर इनके पास आये थे- उनको हिफाजतसे ^{किया} जिससे इनको भी दूसरेरईसों के समान गोदलेनेकी सनद मिली- सं० १८८७ में धौलपुर और गवालियार दरवार में सख्तदुश्मनी हो गई जिसके कारणा महाराजरानाने गवालियारके महाजनो को हु ख देनेके लिये पारसनाथजी कामन्दिर तोड़ दिया- इससे महाराजा साहब गवालियार का कोप भडका- परन्तु सरकारने फिसाद नही होने दिया सं० १८२६ में इनको सरकारसे दर्जेअब्वलकानमगामिला राजरा नामकी वैश्याकी दोस्तीसे रियासतके बहुधा कामो मेखयवी आगई थी और करजा भी कई लाखका होगया था देवहंस कामदारने रानाजी को दबा लिया था- अन्तका राजन्त साहबने देखल देकर तुरे आदमीओ को राजसे निकाला कामदारकैद किया गया- परियाला का मुन्शी अबदुल नवीरवा और राजा इनकर रावके भाई गजाधर हीवान नियत किये गये- उन्होने नयेसिरेसे राजके कामोंको हुरुस्त किया परन्तु पहिले अबदुल नवीरवां और पीछे महाराजरानादे गुनोप हुए - ॥

महाराजराना नेहालसिंह (चिरनजीव) इनके पिता जो पाटवी थे अपने पापमहाराजराना भगवन्तसिंजी हीके सामने स्वर्गवास हो चुके थे- अतएव यह सं० १८२५

में आपने दादा की जगह द्वादशवर्ष की अवस्था में पाटविराजे इनकी नाबालगी में पहिले राजा उनकराव नफर मेजर डेन्ही साहब पोलीटिकल सजन्ट - इनके अतली क और राज के मुन्तज़िम रहे - महाराना अंगरेज़ी - फ़ारसी - हिन्दी में भली भांति लिख पढ़ सकते हैं - सं० १८४० में इनको राज का अधिकार मिला - परन्तु फ़ज़ूल ख रची और खद इन्तज़ामी के कारण मारटेली साहब पोलीटिकल सजन्ट की निगरानी में काम होने लगा - और दो वर्ष से रायबहादुर मुन्शी **विप्रानस्वरूप साहब** जो अजमेर के ज़िले में डिप्टी मजिस्ट्रेट थे राज्य के दीवान नियत हुए हैं - इनके श्री श्रम से रियासत का काम अच्छी तरह से चल रहा है - सरकार की और से खरीता के लिफाफे पर "व मुताले महाराजा साहब मुशफ़क़ बिसियार मेहरबान मुख़्तार अ नरदे सुदीना सिपहरा रुल मुल्क महाराजधिराज श्रीसवाई रानालोकेन्द्र व हादुर दिलेर जंगजी देवसल्लम हु अहल ह तआला" और श्रीनाम पर "महाराजा सा हव मुशफ़क़ बिसियार मेहरबान मुख़्तार सलामत" लिखा जाता है - कागज़ सुनहरी थैली कमरबाब की होती है - ॥

राज्य परतापगढ़

परतापगढ़ का इलाका जिसको कांठल कहते हैं - मेवाड़ के दक्षिणपूर्व में है - इसके पश्चिमोत्तर में मेवाड़ - दक्षिण में बांसवाड़ा - और पूर्व में तलाम - दुलकर आदि मुल्क मालवा फैला हुआ है - लम्बाई उत्तर से दक्षिण को ५० मील चौड़ाई पूर्व से पश्चिम को २५ मील - रकबा १४६० मील मूरब्बा - आबादी १५०००० आदमी - ओंकी - आकृती खालसा ३५०००० रु० सालाना - फौज सवार व पैदल ६०० आदमी तम भेजाते हैं - परतापगढ़ का वह भाग जो बागड़ कहलाता है - पहाड़ी और तूना है भील इस राज्य में अधिक रहते हैं पहाड़ों के उपरान्त वास यहाँ

कापसिंह है- वह भाग जो कांठल कहताता है- नीची धरती है- जिसमें गेहूं आदि उत्पत्ति होते हैं- राजधानी परतापगढ़ ऊंची धरती पर सत्तेहस मुन्दरसे १६५८ फीट ऊंचा और नीमचसे ३३ मील पर दक्षिण में बस्ता है- रईसके महजनगरसे आधमील पर है देवलिया यहाँकी पुरानी राजधानी है- खराजसकारी ५६५००० सलामीकी १५ तोपै है- ॥

तवारीख

परतापगढ़ वाले सीसोदियाराजपूत सूर्यवंसी खान्दानकी छोटी शाखहोनेसे महारावत कहलाते हैं- आजसे चारसो वर्ष पहिले चीतौड की दूसरी लडाई में परतापगढ़ वातो के एक पुरखा बाधसिंहजी बहादुरशाह गुजरातीकी लडाई में महाराना विक्रमादत्तके कायम मुकाम बनकर मारे गये थे इसकारणसे जैसे मेवाड वातो अपने आपको श्री ईकलंगजी का दीवान कहते हैं उसी प्रकार परतापगढ़ वाले भी अपने नामके साथ दीवान का तक़ब लिखते हैं- ॥

महारावत खेमकरन स० १४८० में चीतौड के महाराना मोकलजी मारे गये तो उनके दो बेटों कूभा व मोकलजी में से कूभाजी गादी विराने- और मोकलजी को सादडीजावद जागीर में मिली- जहाँसे वह तरकी करके परतापगढ़ चले गये- और दूसरे राज्य की जड- जमाई- ॥

महारावत सूरजमल स० १५१५ में पिताके मरने पर बड़ी सादडी के मालिक बने- परन्तु चीतौड के पाटवी प्रथीराज से बखेडारहनेके कारण यह दक्षिण दिसा के पहाडों में चले गये- और देवलिया बसाया- महाराना चीतौड ने इनकी जागीर जब्त करली- ॥ * ॥

महारावत बाधसिंह स० १५७८ में पाट विराने परन्तु अपनी पुरानी जागीरके जब्त होनेसे नाराज होकर बखेडाह मालवाके पास चले गये वहाँ इनको

बादशाह ने डेढ लारव की जागीर बरवशी और इन्होंने बांधवाडन ग्राम बसाया-
सं० १५१५ में चीतौड-गढ़ की लडगई में बहादुरशाह बादशाह गुजराती से लडकर
काम आये - जहां वह महाराना साहब की सहायता के लिये मालवा से आये थे-
महारावत रायसिंह १५८२ में चीतौड-गढ़ के मुकाम पर पाट बिराजे-हु-
साथ बादशाह के डर से गुजराती से वाड से भागे- तो यह चीतौड महारा को सौंपकर
अपनी जागीर को चले गये - ॥

महारावत बीकाजी १६०८ में पाट बिराजे- और मेवाड छोड कर मंदसौर
के बादशाही हाकिम से जा मिले- इनके साथ सूरजमल का पोता कान्हल भी नी
म्वा हेडन की जागीर छोड कर चला गया था- महारावत ने उक्त हाकिम के कहने से
सोनगरा राजपूतो से सुहागपुर छीन लिया और इसी तरह खेरोद- कोटरी- ननौद
रबा लिये- और अपने काका कान्हल को घमोतर जागीर में डी- सं० १६१० में देव
मीना को मारकर पहाड़ी मुल्क पर कब्जा कर लिया- इन्होंने बादशाही चाकरी-
में कृष्णादास के बेटे समरसी को दिल्ली भेजा- १६३५ में देवलोप हुए ॥

महारावत तेजसिंह सं० १६३५ में राज बिराजे और १५ वर्ष राज कर के देवलो
प हुए- तेजसागर इन्हीं ने बनवाया था - ॥

महारावत भानसिंह १६५० में पाट बिराजे- और सं० १६६० में मकरवन
खां जागीरदार मंदसौर के साथ जोधसिंह सीसोदिया को मारकर काम आये - ॥

महारावत सिंधास सं० १६६० में पाट बिराजे- और १८ वर्ष राज कर के देव-
लोप हो गये - ॥

महारावत जसवन्तसिंह सं० १६७८ में पाट बिराजे- सं० १६८८ में महाराना
जगतसिंह ने उनको उदैपुर में बुला कर चंपा बाग में ठहराया- इनके पाटवी कंबर -
महासिंह भी साथ थे- रात हुई तो महाराना ने रामसिंह राठोड को बहुत सी फौज

साथ देकर दाग में भेजा कि महारावत जी को चुककरो क्योंकि महाराना के दरि
में महारावत के बादशाह से मिल जाने का रंज था - महारावत अपने पाटवी और सा
थियो समीत जड़ कर काम आया - ॥

महारावत हरी सिंह यह अपने पिता और बड़े-भाई के उदै पुर में मारे जाने पर स०
१६८० मेराज बिराजे और दिल्ली में पहुंच कर महाराना के इत्याचार और भाई और
पिता के मरवा डालने का हाल अर्ज कराया जिस पर बादशाह ने इनको इन आम और सि
ता अतव मन्सब देकर हाकिम मन्सूर के नाम हुकम लिखा कि मेवाड का कवजा
देवालिया से उठवा दो - दिल्ली से लौट कर महारावत ने उक्त हाकिम की सहायता से -
मेवाड का कवजा उठा दिया - और ३२ गांव और भी मेवाड-के देवालिये - स० १७३०
में देवलौपपुर - ॥

महारावत परताप सिंह १७३० में पाट बिराजे ईडर विवाह करने को गये थे
लौटते समय मलूम के रावत किशन सिंह के पोते मनोहर दास को साथ ले आये
उनको स० १७३५ में बडलिया आदि जागीर में दिया जो चूड़नवतो की जागीर में आ
जली है - स० १७५३ में अपने नाम पर परतापगढ़ बसाया - और गढ़ बनाया स० १७६४
में देवलौपपुर - ॥

महारावत प्रध्वी सिंह स० १७६४ में पाट बिराजे - १७७० में फर्रुख सेर
वादशाह ने दिल्ली में हाजिर होने पर रावत के उपरान्तराव की पदवी और रिबल अत
वरवशा और सज्य में एक सात जारी करने का अधिकार दिया - स० १७७३ में मृत्यु
को परामुहुर - ॥

महारावत गम सिंह १७७३ में पाट बिराजे और ई महीनैराज करके उसी स-
म्वत में देवलौपपुर ॥

महारावत उमेश सिंह १७७४ में पाट बिराजे - और पांच वर्ष राज करके - वे

श्रीलाह ही देवलोप हुस - ॥

महारावत गोपाल सिंह सं० १७७८ में राज विराजे-सं० १७८८ में पेशवा हुलकर-मल्हारराव तीनों के साथ होकर महाराना उदैपुर ने डूंगरपुर घेर लिया- तब महा रावल शिवसिंह जीके बुलाने से यह डूंगरपुर गये और महारावतजी के-समझाने से डूंगरपुर वां सवाडे का स्वराज पेशवा को देना स्वीकार किया- महासराउठ गया-गोपालगंज बाजार बसाया- ३४ वर्ष राज कर के स्वर्गवास हुस ॥

महारावत सालम सिंह १८१४ में गद्दीनशीन हुस-परनापगढ की नई-शहर पनाह बनवाई- सालमपुरा बनाया- दिल्ली जाकर आलमगीर सानी से-रक साल का हुकम लाये-सालमशाही रूपया आजलों हर जगह चलता है-महता सूरत सिंह को जिसने महाराना के विरुद्ध बगावत की थी सजा दी- हुलकर और-सेंधिया उदैपुर पर चढ़ाये- तो इन्हीं ने महामना अड-सीजी को मरदही-जिस से-रावत की पदवी जो वादशाहने बखशी थी बहाल रही-और धारवावद की जागीर-पाई-द्वारकाजी में एक सदावर्त जारी किया- जो आजलों है- १७ वर्ष राज कर के देवलोप हुस - ॥

महारावत सावंत सिंह - छोटे भाई लाल सिंह को अरनोद जागीर में मिली- और आपस १८३१ में राज विराजे- उदैपुर में सरदारों को चाकरी के लिए भेजने से धरयावद महाराना भीमसिंह ने जवत कर ली- इनके समय में मरदों ने राज्य परनापगढ को बहुत बरवाद किया- १५ हजार सालाना वादशाही स्वराज के बदले ७२ हजार स्वराज हुलकरने लगा दिया- जिसके बदले में रुपया घोडे- ऊट- धान दिया जाता था- तो भी पूरा नहीं पडता था- अन्त को मरदों के इत्याचार से कुटने के लिये सं० १८७५ में कप्तान मेगडा लड की मारफत महारावत ने सरकार से सन्धि की- पाटवी कंवररूप सिंहने महारावतके विरुद्ध

फिसाह उठाया - सरकार अंगरेजी ने गिरनार के गढ मे कबरजी को कैद कर दिया
जहां वह स० १८८२ में मर गये - महारावत जी स० १८४४ में ई० वर्ष की अवस्था मे
परलोकवास हुए - ॥

महारावत दलपत सिंह जी कंवर ही पसिंह जी के दो बेटे थे बड़े के सरी सिंह
जी और छोटे दलपत सिंह जी - महारावत सावन्त सिंह जी ने पाटवी क० के गिर -
नार में मर जाने पर बड़े - पोते के सरी सिंह जी को आपगोद लिया और छोटे दलपत
सिंह जी को डूंगरपुर महारावल जसवन्त सिंह जी की गोद भेजा - परन्तु के सरी सिंह
जी स० १८६० मे मृत्यु को पराम्र हुए - जिनके कोई भोलाद हीन थी - अतएव
महारावत दलपत सिंह जी डूंगरपुर से उलटे आकर परतापगढ की गादी पर स०
१८०० मे बिराजे - और सरकार की मंजूरी से अपनी जगह डूंगरपुर की गादी पर -
शावली के कंवर उदै सिंह जी को गोद ले कर स० १८०३ में बिठा दिया और सरदा
रोच सरकार के कहने से आपहीनों रियास्तों का काम करते है - कियो कि डूंगरपुर
के महारावल जिन को इन्हीं ने गोद लिया था - कम उमर थे - अन्त को पाठ वर्ष लों
डूंगरपुर का काम चलाकर परतापगढ में आ गये - और फिर न ही गये - क्यों कि
महारावल उदै सिंह जी डूंगरपुर के रईस भी होशियार होकर अपनी रियासत -
का काम अच्छी तरह चलाने लगे थे - सन १८५७ ई० के उपद्रव मे सरकार को मदद
दी - जिस से कनाभी का रचरीता सरकार से आया - तात प्रय यह कि १६ वर्ष डूंगरपुर
मे और २० वर्ष परतापगढ में राज्य कर के महारावत जी स० १८२० स्वर्ग वास
हुए - ॥

महारावत उदै सिंह जी १७ वर्ष की अवस्था मे स० १८२० में पाट बिराजे - पहि -
ले पहिले इन्हां ने भीलों और दूसरे लुटेरों को दण्ड देकर रियासत का अच्छा व दो -
वस्त किया - स० १८२२ मे श्रीमान कारनल ईडनसाह बहादुर रजीडर राजपूताना

रवां पके सरदार हैं- आज से ३५६ वर्ष पहिले **डूंगरपुर** में शामिल थे- जिसकी बुनि
 याद १७०५ वर्ष पहिले पडी है- बांसवाडन वालों का कथन है कि हमारे पुरखा **जगमा
 ल जी** ने तलवार के वल से डूंगरपुर का आधार राज र्वा लिया- डूंगरपुर वाले कह
 ते हैं- कि हमारे बड़े **प्रथवीराज जी** ने प्रसन्न होकर अपने छोटे भाई **जगमाल**
 को आधार राज वा वशा दिया- मेवाड- वालों का कहना है कि जब यह दोनों भाई राज्य
 के विषय में लड़ने लगे- तो हमने दोनों को आधार वांट दिया- परन्तु **तारीख फ़-
 रिशता** में **अकबर बादशाह** के वजीर अब्दुल फ़जल ने असल हाल यूं लिखा
 है- कि जब सं० १५८४ में डूंगरपुर के महारावल उदयसिंह जी महाराना **संगरामसिंह**
 जी के साथ **बाबर बादशाह** से बयाना में लड़ कर काम आये- तो उनके बड़े
 पुत्र **प्रथवीराज** पाट विराजे ३ वर्ष पीछे सुलतान **बहादुरशाह** गुजराती- डू-
 गरपुर पर चढ़ि आया- प्रथवीराज जी लाचार होकर बादशाह के हज़ूर में हाज़िर हो-
 गये- उस समय जुगा नूर मार करता था- और पहाड़ी में छिपा रहता था- वह पकड़े
 और मारे जाने के भय से चीतोड़ के महाराना रतनसी के पास चला आया- और-
 महाराना की सिफ़ारिश से बादशाह ने उसकी तकसीर हिमा करके **प्रथवीराज** और
जगमाल को आधार राज्य वांट दिया- और आप कई दिन बांसवाडन में शिकार
 र्वेक्ष कर चला गया- (देखो तारीख़ फ़रिशता मकाला ४) यह ग्रंथ ३०६ वर्ष पहि-
 ले अकबर के बड़े मंत्री के हाथ से लिखा गया है- जिसकी सन्दर्भान् अंगरेज़ भीस्वी
 कार करते हैं- इसी ग्रंथ में लिखा है कि सं० १६३३ में जब अकबर बादशाह अजमेर
 और मेवाड को विजय करके मालवा को जाना था- तो जगमाल के पोते **परतापसिंह**
 ने हाज़िर होकर अता अत कबूल की- और चाकरी देकर दूसरे रईसों की बराबर कुरब पाया
 सं० १६५० में परतापसिंह के पोते **दामसैन** ने सरकशी करके बादशाही मुल्क को
 छूटना प्रारम्भ किया- इस दोश में मालवा के सूबेदार मिस्त्र **प्रमह** हुस्व ने बादशाह

के हुकूमसे बांसवाड़ न ज्वत कर लिया - महारावल परतापसिंह अपने पोते समील-
 भयके मारे पहाड़गे में जा छिपे - और वही से बादशाही राज्यमें लूटमार करने लगे - उ-
 क्त सुबेदार स्वयं आकर गालवा को गया पीछे से महारावलने बांसवाड़गे ले लिया - दूस-
 रे वर्ष सुबेदार बडी फीज कर बांसवाड़गे पर चढ़ि आया - परन्तु महारावलने नजरना-
 देकर अपना कबूल कर ली और फिर अंगरेजों का राज्य होने लो कभी नमकहरामी-
 नही की - सं० १६८५ में महारावलके पोते **समरसी** जहांगीर बादशाहके हजूरमें दि-
 ल्ली में हाजिर हुए - ३००० नकद ३ हाथी १ पॉन्डान १ खंजर नजर किया - बादशा-
 हबहुन असन्न हुए - और **शाह** जहां ने गादी पर बैठकर उनको १०००० जात का म-
 न्सब १००० सवार का अधिकार - सोबर्ण कालंगर जडनक २५ हजार का - १ लाख न-
 कद - और ८० हजार का सरोपा वर प्रशा - महारावल जी के पोते **अजब सिंह** ने उदै-
 पुर की सीमा पर भगडंग किया - जिसका बैर महाराना **अमर सिंह** जीने लेना चा-
 हा - परन्तु बादशाही वजीर नवाब **असद खां** ने दोनों को समझाकर राजी नामा-
 करा दिया - मुगलोंने अलाप शोक समुद्र में डूबनेके समय सं० १८५० में महाराजा
भीम सिंह जीने जो **ईडर** न्याहने पधारये - महारावल जी से कई हजार नजर
 ना लेकर छोडगे - ॥

महारावल उमेश सिंह जी शाह बैठकर दिल्लीके मालकों का भरोसा नही दे-
 रवा - तो मरहटों को मुल्क से निकालने के लिये - जिन्होंने मात्र देश को छूटकर चलाव
 कर दिया था - सं० १८६८ में अपना वकील बंडी धा के अंगरेजी रजिडन्ट के पास -
 भेज कर सरकार से अहद नामा करना चाहा - परन्तु वहां से जवाबमिला कि दिल्ली
 को जाओ - पांच वर्ष पीछे सं० १८७४ में इनके वकील ने दिल्ली जाकर रजिडन्ट द्वारा -
 सरकार से अहद नामा किया - इसी वर्ष में सरकार और महाराजा धार से जो अहद
 नामा हुआ था - उसके अनुसार धार में ३५ हजार का खराज जो डूंगरपुर व बांसवाड़गे

सेलियाजाताथा सरकारको दे दिया - महारावल उमैदसिंहजीका देहान्त इसी वर्ष
में हो गया - ॥

महारावल भवानीसिंहजी सं० १८७५ में पाट विराजकर दूसरा अहदनामा
सरकार से किया - सरकार ने धारवालेखराज के उपरान्त सं० १८८० में २००० रुपया
फौजखर्च भी वासवाडग परल गया - किन्तु आमदनी के कम होने से कुछरिन पीछे
माफ हो गया - इनके समय में फौजखर्च और कामदारों की नालायकी से कर्ज हो
गया - अतएव महारावल खूं-गारपुर ने वन्दो बस्तन में मदद दी - सरकार ने कप्तान सैपर्स
साहब एजन्ट को वासवाडग भेजा - उनको एक सिपाही ने मार डाला - जिसको काले
पानी का दण्ड दिया गया - परन्तु रासते में से भाग गया - सं० १८८३ में महारावल
देवलोपहुर - ॥

महारावल बहादुरसिंह गोद आकर सं० १८३४ में पाट विराजे और कई
वर्ष राज करके देवलोपहुर - ॥

महारावल लक्ष्मनसिंहजी (चरजीव) सन १८४२ ई० में गादी विराजे - ३
पुत्र महारानी साहबों और एक पासवानजी से है - महाराज कंवार हिन्दी उरदू लिख
पढ सकते हैं - महारावलजी पुरानी बातों को बहुत पसन्द करते हैं - १८४३ में म्हा
रावलजीने मुसलमानों की ईदगाह (मसीत) को जो दूट गई थी राजकारु पया ल
गा कर मरमत कराकर दुरुस्त करा दी - जिससे मुसल्मान राय त इनसे बहुत खुश है
इस राजमें समस्त ११०१ ग्राम हैं - जिनकी सालाना आमदनी ५ लाख है - इन
में से ५३३ ग्राम खालसा के हैं - उनकी आमदनी २६७५०० रुपया और -
११२ ग्राम धर्मी र्थ - नौकरी - वचारन आदिकी जागीर में हैं - इनकी आम
दनी २५ हजार सालाना है - और ५४३ ग्राम राजपूतों की जागीर में हैं - इनकी
आमदनी ३ लाख सालाना है - इनमें १४ सरदार अख्तियार और १८ दूसर दर्जे के हैं

नमूना की रवाना बहुत है - परन्तु डीउवाना-पंचमड्रा-फलोदी-सांभर यह चार खाने मारवाड़ राज्य में पसिद्ध हैं जिनमें से सांभर की भील २२ मील लम्बी और ६ मील चौड़ी है - इसका लीन बहुत ही उत्तम होता है - पहिले बादशाही खालसा में थी - मुगलों की बादशाहत जाने पर मारवाड़ ने उस पर कब्जा कर लिया - परन्तु थोड़े दिनों पीछे नवाब अमीर खाने दरख्त करके अपना थाना बिठाया - जब मीरखां चले गये - तो मारवाड़ और जैपुर दोनों ने मिलकर स. १८४६ में एक लाख २५ हजार रुपया पर सरकार को सांभर का ठेका दे दिया - और ना बाका ५ लाख सालाना पर दूजारा दिया गया - और १८ मई सन १८७८ ई. को दरबार मारवाड़ ने - डीउवाना-पंचमड्रा-फलोदी और लोनी का भी ५ लाख ३५ हजार ५८५ रुपया सवा पाच थाना सालाना पर सरकार अंगरेजी को ३९ वर्ष के लिये ठेका दे दिया - ॥

राजपूतानाके चार भाग

सरकार अंगरेजी की अमलदारी में बन्दोबस्त की आसानी के लिये - राजस्थानके चार हिस्से किये गये - और हर एक हिस्से का निगरानी जिम्मे में करू रखवाड़े होते हैं एक रज्जिडेन्ट नियत किया गया जिसका ब्रतान्त इसतरह पर है -

जनूबीराजपूताना रज्जिडेन्ट साहब उदैपुर में रहते हैं - और डूंगरपुर परतापगढ़-बासवाहग आदि रियास्तें इस रज्जिडेन्सी की निगरानी में हैं ॥ *

मगरीराजपूताना रज्जिडेन्ट साहब जोधपुर में रहते हैं और सिरोही जैसलमेर की रियास्तें व मलानी उनकी निगरानी में हैं ॥

मशरकीराजपूताना रज्जिडेन्ट साहब जैपुर में रहते हैं - किशनगढ़

१० उसपर कब्जा कर लिया और आज भी दोनो ही का कब्जा है परन्तु दरबार मारवाड़ ने १०

* कोटडूह-झावनी खेरवाहद दोनो स्थानों में अक्सिसटन्ट रज्जिडेन्ट मेवाह रहते हैं जो मोगियों और पदाही भीलों की निगरानी भी रखते हैं-मु. मुण्डअली - ॥

और शेखावाटी इनकी निगरानी में है-॥

राजन्सी हाडोली - राजन्त साहब देवली में रहते हैं - टोंक - कौरा -
दूरी - मालावाड - शाहपुरा आदि इनकी निगरानी में हैं ॥

इनके सिवाय **करोली** - **भरतपुर** - **अलवर** - **बीकानेर** -
कोटा - **मालावाड** - में खासतौर पर पोलीटिकल राजन्त रहते हैं-

यह चारो राज्डीडन्सी और राजन्टी साहब राज्डीडन्त राजपूताना के मातहत हैं
जो **अजमेर** पर रहते हैं और जिला **अजमेर** की चीफ कमिश्नरी का
अधिकार भी रखते हैं - और जन्बी राज्डीडन्टी के दो अंगरेज असिस्टन्ट
कोटरा और खैरवाडग में भी रहते हैं - जो सरकारी सैना के अफ़ीसर हैं
और बासवाडग वगैरा रियास्तों की निगरानी रखते हैं - जो रियास्तों
जिन २ राज्डीडन्टों की निगरानी में हैं वह अपने २ वकील राज्डीडन्टी में रह
ते हैं - और यह सब मिलकर पंच वकला कहलाते हैं - और अपनी रिया-
स्तों के मुशतरका मुकदमें फैसल करते हैं - ॥

राजपूताना में सरकारी फौज

इन्तजाम और वक्त पर काम लेने के लिये राजपूताना की हद में निम्न
लिखे हुए पांच स्थानों में सरकारी फौज रहती है - नसीराबाद - देवली -
सैनपुरा - खैरवाडग - अजमेर - इनमें से नसीराबाद और अजमेर की
फौज कबायद जान्ती है - बाकी बेकाबद है - नसीराबाद में सुकतोपरवा
ना - गोरो की सक पूरी रिजमेन्ट - और पूरा ६०० सवारों का रिंसाला रहता है
समस्त सरकारी सैना की तहाद जो उक्त स्थानों में रहती है ६०५० आद
मी है - इनमें से ६६२ गोरा और बाकी देसी सैना है - नसीराबाद और
अजमेर का खर्च सरकार देती है - बाकी फौज का खर्च रियास्तों से इसतरह

पर लिया जाता है- देवली की फौजके लिये कोटासे २ लाख सालाना-
रोरनपुर के लिये जोधपुरसे एक लाख १५ हजार - रवेरवाडन के
 लिये उदैपुरसे ५० हजार सालाना लिया जाता है- (रजवाडों की कुल फौज ५०००
 गिनी जाती है)

सरकारी खराज

राजस्थानके समस्त रजवाडों और जिला अजमेरके जागीरदारोंसे मि-
 लाकर कुल २१ लाख रुपया सालाना खराज सरकारको वसूल होता है-॥*

शाहिन्शाहीनौकरी देनेवाली सेना

स १८८७ मे कि १५ वर्ष हुये जै पंज देह नामी स्थान चों जो काबुल की पश्चमी सी-
 मा पर है- रूसी बढ आये थे- तो हिन्दो स्थानमें को लाहल मच गया था- उस
 समय पहिले पहिले हैदरावाद दखिन की रियासत ने सरकारकी सहायतामें
 ६० लाख रुपया दिया और कहा कि यह रुपया हिन्दो स्थानकी हिफाजत-
 में खर्च किया जाय- सरकारने दरबार दक्षिणा का शुकरिया (धन्यवाद)
 अदा किया- परन्तु रुपया लौटा दिया- कों कि इतनी बडगे सलतनतकी-
 खानके खिजाफ है- कि खराज गुज्जर दोस्त रईसोंसे यों रुपया वसूल करे-
 परन्तु इस बातको सरकारने मंजूर किया कि जो रियासत सरकारकी सहा-
 यताके लिये अपनी औरसे फौज देगी (जैसा कि मुसलमान बादशाहोंके
 दरबारमें समस्तही रियासतें चाकरी करती थी और अपनी २ फौजे लेकर
 वक्त पर साथ होती थीं) तो सरकारने मंजूर कर सनी है- उसी दिनसे हि-
 न्दो स्थानकी बहुतसी रियासतोंने सरकारके हजूरमें फौजे देनेकी दर-
 खासतें भेजनी शुरू कर दीं- और सरकारने भी उनकी दरखास्तोंको
 मंजूर कर लिया- किन्तु यह कहा कि जिस फौजको आप देना चाहते हैं अको

* फौज खर्च जिसका बयौरा ग्रंथ करना ने किताबमें लिखा है इसरकममें शामिल नही है-

सरकारी फौज के समान कवायद सिखाकर लै सरावना चाहिये - ऐलाही हुआ
 इन फौजों का नाम शहि-शाही खिदमत की फौज रखा गया और बरही-तल
 खाह - हथियार आदि सरकारी सैना के समान दिये गये - और हीन अंगरेज -
 सरकारी सैना के सरदार सरकार ने देसी खवाडों की उक्त फौजों पर अफस
 नियत किये हैं जो साल भर में दो चार बेर इनको सँभालते और कवायद लेते हैं
 इसके उपरान्त यह भी हुकम है - कि रियासत के निकट जो सरकारी छावनी हो
 वहाँ यह फौज सरदी के मौसम में तीन महीने रहकर कवायद सीखे - हमारे
 सूबे में निम्न लिखी हुई रियासतों ने फौजे दी हैं - जोधपुर १ रिसाला -
 बीकानेर ऊँचों का १ रिसाला (या शत्रुतर सवारों का रिसाला) जैपुर - फौज -
 की वार बहारी के लिये १००० टट्टू सामान समीत - अलवर - १ पियादा -
 पलटन - भरतपुर १ सवारों का रिसाला - उदैपुर १ पैदल पलटन - जिस री
 यासत की जो फौज है उसका समसत्तर रच रियासत ही के जिम्मे है - ॥

राजपूताना में विद्या की उन्नती

सबसे पहिले जैपुर के महाराजा रामसिंह जी स्वर्गवाशी ने जैपुर नगर में -
 स्कूल जारी किया था जो आज के दिन महाराज कालिज कहलाता है - अब लहजे
 की तालीम इसमें दी जाती है - सन १८७० ई० के पीछे जोधपुर - उदयपुर
 बीकानेर - अलवर - भरतपुर - धौलपुर - भाखावाड - टोंक - शाहपुरा
 करौली - कोटा में बडे- २ स्कूल जारी होगये - जिनमें आज के दिन अंगरेजी
 फारसी - हिन्दी खूब पढाई जाती है - मेवाड - मारवाड - बीकानेर - अलवर -
 भरतपुर में मातहत हुकूमतों के अन्दर भी पाठशाले जारी होगये हैं - इन-
 सब स्कूलों के विद्यार्थी आज मेरगवर्नमेन्ट कालिज की निगरानी में हर साल पीछे
 नेको आते हैं और प्रति वर्ष विद्या की उन्नति राजपूताना में होती जाती है - ॥

* अंग्रेजी में इमप्रयल सरविस कहते हैं - म० मुरादअली होशियार - ॥

† बडे सरदार का नाम करनैल मेलस साहिब है - ॥ उक्त फौजों की देखभाल इन्हीं के सुपुर्दे है -

म० म० अली - ॥

नवारी खजैसलमेर-

राजपूत

(३८८)

नम्बर	नाम	खिताब	नाम	
गिन्ती	खियासत	रईस-॥	रईस	
१	उदपुरमेवाड	महाराजा-	फतहसिंहजी सीसोदिया	नेदारराजामान समयसीस्त फतहसिंहजी जमिना है-॥
२	जैपुर	महाराजा	माधो सिंह कछवाहा	मिला है- मशीरकैसरकीप
३	जोधपुर	महाराजा	जसवन्तसिंहजी (२)राठौड-	अबलमिवा है-
४	बीकानेर	महाराजा	गंगासिंहजी बीकाराठौड-	नकले हैं-॥
५	बूंदी	महाराजाराजा	रघुवीरसिंहजी हाडा	सन १८७७ ई०
६	कोटा	महाराज	जमेद सिंहजी हाडा	कले हैं
७	टोंक	नवाब	खराहीमखलीखांसा हब- पमान	-॥
८	भरतपुर	महाराजा	जसवन्तसिंहजी जाट	
९	करौली	महाराजा	भंवर पालजी जदेवंगंम राजपूत	
१०	अलवर	महाराजा	जैसिंहजीकछवाहा नरुका	खर्गवाश को सखार नातालिा है जैपुर

नम्बर गिन्ती	नाम रियासत	खिताब रईस	नाम रईस वजासी	सिंघाराना सन १८३० ई. में कागज रईस	रकबासुब्बा मील	वित्त आ
११	भालरापाटन	महाराजराणा	जालिमसिंहजी भालाराजपूत	सन १८३० ई.	२५००	३६
१२	धौलपुर	महाराजराणा	निहाल सिंहजी जाट	सन १०६१ ई.	१६२६	२४
१३	किशनगढ़	महाराजा	शासु लसिंहजी राठौड	सन १६०० ई.	७२४	११
१४	जैसलमेर	महारावल	शालवाहनजी भाटी	सन ७३९ ई.	१२२५२	१०
१५	सिरोही	महाराव	केसरी सिंहजी देवडाचौहान	सन १२०४ ई.	३० २४	१४
१६	डूंगरपुर	महारावल	उदै सिंहजी सीसोदिया	सन १३३५ ई.	१०००	१३
१७	बांसवाडन	महारावल	नरुमन सिंहजी सीसोदिया	सन १५३५ ई.	१४५०	१५
१८	परतापगढ़	महारावल	रघुनाथ सिंहजी सीसोदिया	सन १४३४ ई.	१४००	१७
१९	अजमेर	कनिश्चरसाहब	मिस्टर भाखंडेलसाहब बहादुर	सन १८१८ ई.	२७५५	४६०

नोट कमिशनरीके उपरान्त ७ क चहरियां रबासअजमेरमें और २ व्यावरमें शहीद
लीफौजदारीमु कदमो के पैम ले का अधिकार है और यह सब कमिशनरीके

मयो कालिज अजमेर

राजपूताने में औसा कोई पाठशाला नहीं था जिस में राजा महाराजों के पुत्र सिखा पाये अतएव सन १८७० ईसवी में हिन्दुस्थान के गवर्नर जनरल श्री मान लार्ड **मयोसाहिब** बहादुर स्वर्गवाशीने (जिनको काले पानी अर्थात् इन्दुमान के टापू में एक उमर कैदी मुसलमान ने टुरी से भार डाला) अजमेर में दरवार किया जिसमें इस सूबे के समस्त राजा महाराजा एकत्र हुये थे इस दरवार में लार्ड साहिब ने कहा कि रईसों को औलाद के लिये एक कालिज होना अवश्य है इस बात को सब रईसों ने मंजूर करके सालाना खर्चा देना स्वीकार किया और ईलाख से अधिक उसी दम एकत्र होगया और लार्ड साहिब ही के नाम से अजमेर में मयां कालिज बनाया गया इस में राजपूताने के रईस जिन की अवस्था २५ वर्ष से कम हो सिखा पाते हैं सिपाहियाना करतव भी शिखाये जाते हैं सब रईसों के एक जगह रहने से एक दूसरे में मुहब्बत हो जाती है और पिछला रज दरवजोसैकडोंबरसो से चला आता था दूर हो जाता है यह सरकार की राजनीती है - ॥

॥ - तवा गिरव के मत अल्लिक जानने के योग्य बातें (मनसब)

इस ग्रंथ में बहुत जगह माही मरातव और मनसब का शब्द लिखा गया है इस लिये हम चाहते हैं कि पाठकों को इन शब्दों के मतलब से वाकिफ करे - ॥

विदित हों कि **मनसब** एक मुलकी और पौजी दरजा है - **मौलवी उबैदुल्लाह फारुती** ने मुहफे राजिस्थान में आईन अकबरी के दवाले से लिखा है कि मनसब और माही मरातव दोनो **अकबर बादशाह** के समय से हिन्दुस्थान में प्रचलित हुये हैं - अकबर से पहिले बादशाह १०० और १००० नंबर के सरदार रखते थे परन्तु अकबर बादशाह ने गादी पर बैठ कर इस रीति को

कायदे के साथ प्रचलित किया मनसब में २ भाग किये एक जात दूसरा सवार का जातसे मत लब ओहदेदार की तनख्वाह अर्थात् पंजहजारी को ५ हजार और ७ हजारी को ७ हजार रूपया मदीना बादशाही खजाने से जागीर के उपरान्त तनख्वाह मिलती थी और सवार से उसकी फौज की जामइयत सम भी जाती थी-

बादशाही राज्य में फौजके अंदर सबसे जियादह इज्जत इत्कों की थी और उनसे ब क़दर मनसबदार गिने जाते थे जिसका मनसब अधिक होता था वही युध्य के समय सेनापती नियत किया जाता था अकबर के समयसे आत्ममंगीरके मरने लों अख्तल दरजे के सरदारों को केवल ५ हजारी मनसब मिलता था और ७ हजारी किसी मंत्री या खास मुसाहिब को दिया जाता था १० - २० - अथवा ३० हजारी मनसब शाहजादों ही को मिल सकता था - राज पूताने के रईसों मेंसे मि

राजा राजामानसिंह कछवाहा को अकबर ने और **महाराजा जसदन्तसिंह** राठोर को शाहजहां बादशाह अकबर के पोतेने सात २ हजारी मनसब दिया था और किसीको नही मिला - बीकानेरके **रावरायसिंह** और बूंदीके **रावरतन** ने पांच २ हजारी मनसब का कुर्ब पाया था आत्ममंगीरके पीछे **किशनगढ़** वालोंको **मुहम्मद शाह** बादशाहने भी जो उनका भानजा था यह कुर्ब दिया था परन्तु बिना तनख्वाह के केवल जवानी जमा खर्च होनेसे लोगों की नजरों में उसका कुछ मान नही किया गया (यह भूल है सरकार अंग्रेजी का खिताब भी तो जवानी जमा खर्च है वल्कि खिताब पाने वाले को उल्टा कई हजार रूपया खर्च करना पडता है परजो उसका मान नको मूर्ख है) - ॥

माही मरातब

माही फारसी में **मदली** को बोलते है और "चांदवाली" भी इसका

अर्थ है और मराठब या मराठवा दरजे को कहते हैं - इसका ब्रतान्त पुराने इतिहासों में
 खुलिखा है कि ईरान के बादशाह **नोशे रवां** के पोते **खसरो** को जब देश नि-
 काला दिया गया तो वह इम में जहां के बादशाह की बेटी **शीरी** नामी उसे वि-
 याही थी चला गया और वहां से फौज की मदद लेकर अपने देश पर चढाई की इ-
 मी फौज की सहायता से उसने ईरान विजै कर लिया फतह पाने के समय चन्द्रमां
 मी (मछली) का था खुसरोने उस चन्द्रमां को अपने लिये जो तिस के अनुसार अच्छ-
 शगून समझकर सरदाये को जो निशान दिये उनपर चांदी सोने से चन्द्रमां और म-
 छली की मूर्तियां बनाकर लगा दी थीं इसी चीज का नाम माही मराठव पड गया - गुग-
 ल बादशाहोंने भी जो इरानियों के पडोसी होने के कारण बहुधा बातों में उनकी गव-
 ल उतारा करते थे हिन्दुस्थान में इस को रिवाज दिया और पांच या सात हजारी मनसव-
 बालों को माही मराठव मिलता था - ॥

सरदार या जागीरदार

राज पूताने की मात्र रियास्तों में तीन अथवा चार दरजे के जागीरदार हैं जिनको किसी
 बदादुरी या रईस की रिश्तेदारी के कारण जागीर मिली है - पहिले दरजे की जागीरें ला-
 ख से सवा - डेढ लाख तक की हैं इनको सान भरमें दसेहरा या शादी गमी के मौके पर द-
 वार में हाजिर होना पडता है मेवाड में ३ महीने और जोधपुर - जैपुर में साल भर तक ज-
 मईयत रखनी पडती है पहिले जमाने में यह लोग फौज के सरदार बनकर चाकरी देते
 थे किन्तु आज दिन अमन व अमान होने से इनको सादिव लोगों की पेशवाई या राज्य
 के कामों में सलाह देने का काम पडता है जैसे सरदार बहुत कम हैं मेवाड में २६ - जोध-
 पुर में - और जैपुर में २२ - और कोटा में ३ बाकी रियास्तों में इनकी वरावर आगद-
 नी का कोई सरदार नहीं है **दूसरे** रईस की जात के सरदार होते हैं वह महाराज कहला-
 ते हैं इनकी जागीर २० हजार से ५० हजार तक है यदि कोई रईस लावलद फौत हो जाय

तो इनमें से जो नजदीक का हो उसका बेटा गोद लिया जाता है - ॥

तीसरे जागीरदार १० हजार से ५० हजार तक जागीरें रखते हैं यह भी राजधानी में अव्वल दर्जे वालों जियादत चाकरी देते हैं और राज्य के कामों में सलाह भी दिया करते हैं **चौथे** दर्जा के जागीरदार ५ हजार रुपये सालाने की जागीर से जियादत नही रखते यह परगनों में हाकिमों के पास चाकरी देते हैं - ॥

पांचवे दर्जे के जागीरदार ब्राह्मण - चारन - मंदिहों के पुजारी - जोगी - अतीत आदि हैं इनके सिवाय उपर के चारो दर्जे वाले जागीरदार खेव भरने के उपरान्त वक्त पर अपने स्वामी की चाकरी भी करते रहते हैं - ॥

हिन्दुस्थान की मजमूद कैफियत

हिन्दुस्थान का कुल रकबा १५८०००० मील मुरब्बा है जिसमें से अंग्रेजी राज्य के कब्जे में ८५०००० मील मुरब्बा और देशी रियास्तों के कब्जे में ६५०००० मील मुरब्बा जमीन है अंग्रेजी असलदारी में (सन १८८१ ई० की मनुष्य गिराना के अनुसार) ५२८०३७०० धर हैं जिनमें केवल २२०००००० आदमी बसते हैं और देशी रजवाडों के राज्य में १८०५६२१ धर हैं जिनमें ६६००००० आदमी बसते हैं अंग्रेजी और देशी रजवाडों की समस्त आबादी २६७२८८७८३ आदमियों की है हिसाब से मालूम हुआ कि अंग्रेजी राज्य में फी मील मुरब्बा ८६२०७० और देशी रजवाडों में फी मील मुरब्बा ८५१९६ आदमी बस्ते हैं पिछले (सन १८८१ ई० की मनुष्य गिराना को सन १८८१ ई० की मनुष्य गिराना के मिला ने से ज्ञात हुआ कि अंग्रेजी राज्य में पिछले दस वर्षों के अंदर सेकडे पीछे ८३ और देशी रियास्तों में ३ आबादी की उन्नती हुई इन पिछले दस वर्षों में मरदों से स्त्रीयां अधिक उत्पन्न हुई एक अथभुत बात यह भी पाई गई कि अंग्रेजी राज्य में कन्या १२ फी सेकडा अधिक और देशी रजवाडों में लड़के १६ फी सेकडा जिफत

और ८६ पर हिन्दू राज्यों का कवजा है इनमें से ३ मुगल १ वल्लोच ११ पटान-
 ६६ राजपूत ५ मरहठा २ ब्राह्मण ५ जाट १ जोगी ३ सिख १ बन्ना १ गुजरात्र
 हीर १ राजबंगशी १ छेतर १ खत्री है - ॥

दुनियाके बड़े नगों की आबादी

आज दिन समस्त दुन्या में बड़े और प्रसिद्ध ११ नग हैं जिनमें निम्न लिखे समान
 आदमी बस्ते हैं (१) लेण्डिन राजधानी इंगलिस्थान में ४१ लाख ५८ हजार
 १५३ (२) पैरिस राजधानी फ्रांस २२ लाख ५४ हजार ५५० (३) बिरल
 न राजधानी जर्मनी १३ लाख १५ हजार ५११ (४) निउयाकी राजधानी इ
 मरीका १२ लाख २ हजार २८६ (५) असतम्बोल पाकुस्तुनतुन्या राजधा
 नी तुर्की रूस १२ लाख (६) वयाना राजधानी इमटिरिया ११ लाख ३ हजार
 २५७ (७) सैन्ट पीटर्स बर्ग राजधानी रूस ८ लाख २८ हजार - ॥

(८) कलकत्ता बर्लान राजधानी हिन्दुस्थान ७ लाख १५ हजार १६६ - ॥

(९) फ्लाडलफिया मुल्क इमरीका ८ लाख ५७ हजार १७० - ॥

(१०) बम्बई मुल्क हिन्दुस्थान ८ लाख २१ हजार ७६ (११) मासकू पु
 नी राजधानी रूस ८ लाख ५३ हजार ५६८ - इसहिजाब से लेण्डिन नगर राज

धानी इंगलैन्ड की आबादी सबसे अधिक पाई जाती है जिससे अग्रेजों की उन्नती
 का पूरा सबत मिलता है - ॥

॥ राजपूतानेमें राज्यकारनेवाले राजपूत

सूर्यवंसी व चन्द्रवंसी राजपूत

हिन्दुस्थान में पहिले पहिले यहूवाक नामी राजा सूर्यवंसी नें राज्य की जड ज
 माई थी इनकी औलाद सूर्यवंसी कह लाती है - इनके पीछे बुध नामी एक मनुष्य
 ने तातार से आकर राज यहूवाक की पुत्री एलानामी से विवाह किया इनकी औ
 लाद

चंद्रवंसी कहलाती है ॥ **सूर्यवंसी** राजपूतों में पहिले गहलोत फिर सी लो-
 दियः राठोर कछवाहे आदि हिन्दोस्थान और राजपूताने में राज्य करते आये है
 फिर चंद्रवंसी बंस के राजा भाटी - यादो - जरीजा - समतीजा आदि है जो हि-
 न्दोस्थान के प्राचीन रईस माने जाते है राजपूताने के सिवाय इस बंस की बडी शा-
 ख भायीयो की हुकमत खुगासान - गजनी काबुलखिस्तान - और पंजाब में बहुत वषो
 तक रही है - छत्रगोपाल की चार खांपे सो लखी चौहान परया पडहार भी
 इस देश में हुकमत करते आये है जिनमें से चौहान तो मुसलमानो के आने तक
 बडे दरजे के रईस थे ॥ इनके उपरान्त तंवर भी पुराना बंस है जो वनो के आ-
 ने तक हस्तनापूर (दिल्ली) का मालिक था इस के सिवाय जावरा ताक यात
 सवा - भाला - गोड - जतीयूह - गोहल - काटी - बाल - सरोया - दानी - होडर
 ह - धैरवाल - बुंदेले - दड़गंजर - सोनतार - संगरवाल - वैस - वाडिया - जोदेल
 गोदल - निकोम्या राजपाली - दाहरया - वादी आदि राजपूतों की बहुत सी खां
 में राजपूताने में पाई जाती है परन्तु कोई शियास्त आज दिन इन के कबजे में नही है
 अलगना बुंदेले राजपूतों के कबजे में पन्ना - चारखारी ओडका वन्था यह चार रि-
 यास्ते आज दिन बुंदेल खंड में मौजूद है - ज्ञातपर्य यह है कि समय के देर फेर से
 बहुत से राजपूतों की शियास्ते नाबूद हो कर नाम वनिशान ही जाता रहा तो भी सूर्य
 वंसी और चंद्रवंसी व अग्नी कुल के पंवार - सोलंखी चौहान वगैरह इस देश के
 प्राचीन क्षत्रिय माने जाते है ॥

राजपूताने के शियास्ते हिन्दोस्थान में जितनी शियास्ते कायम है उनका नाम

दंडराबाद दक्षारा - भोपाल - भावलपुर - नूनागढ - रामपुर - जावरा राधनपुर पाल
 नपुर - खंबे - खैरपुर - मालियरकोटला भावनी वालासिनोर - कोडवाई - अने

गठ अलीराजपुर - बांसदा - बरया - बडोद्या वडवानी - बनारस - बरौदा - भावन
 ग्र-बिजावर - कश्मीरदजम्बू - चंबा छतरपुर - चरखारी - छोटाउदयपुर - कोची
 न - दतिया-देवास - धार - धर्मपुर - धरवल - दरंगदरह - ईडर - फरीदकोट -
 ढिठी - गोंडाल - गवालियार - इन्हौर-भाबुवा - जेंद - कछ - बिलासपुर - कपूरथ
 ला - खरेंद - खलजीपुर - कोलापुर - कोचबेहार - नेमडी लोनावाडह - मैसूर -
 मंडीमनीपुर - मोरवी - मेहर - नाभा - नागौद - नरसिंगगठ - नवानगर -
 पन्ना - पालीताना - पटियाला - पुरबन्दर - राजपीपला - राजकोट - रीवां - रतलाम
 समथर - सावेनवाडी - सलाना सरमोरनाहन - सीतामौ - सोठा - सोकेत - बेतर -
 टावनकौर - श्रीरहा - बरदान - वंकानेर - राजगठ - जोड - २३ - राजपूतानेकी
 रियास्ते १८ कुलजोड - १०१ - ॥

इति श्रीतवाशिख जैसलमेर का तीसरा भाग सम्पूर्ण शुभम् विज्ञापन

कोटा कोट धन्यवाद है श्री जगदीश्वर को जिनकी कृपा से यह ग्रंथ आज स
 याप्त हुआ बहुत से हालात जो पीढ़े से मालूम हुये हैं - जैसे भावलपुर खैरपुर
 व केलनजी वगैरह के हालात उनको हम अगामी चल कर ग्रंथ के अंत में
 जमीनों अर्थात् किरोड पत्र के तौर पर छापकर लगा देते हैं पाठक किताब
 में मिलाकर उनको भी पढ़ें - ॥ देश हते श्री सेवक लखमी चंद - ॥

التماس

ہزار ہزار شکر ہے پر مشور کا کہ آج تواریخ جیلیر کا تیسرا حصہ ہی اوسکی عنایت سے تمام ہو گیا - عقب
 سے جڑلات معلوم ہوئے ہیں مثلاً تواریخ بہاولپور - خیرپور سندھ - کیلن جی کا اتہاس وغیرہ وغیرہ
 اونکو ہم آگے چکر بطور ضمیر کے لگا دیتے ہیں ناظرین مضمون کتاب سے لاکر پڑھیں -
 راقم خیر خواہ ملک سیوک لکھی چند -

जमीमानम्बर (१)

तराोटकेउनडोका हाल *

सफा १६६ पराने तराोटके हाल में सतर श्केवाट पटनाचाहिये

प्र० जामदावट काजी के सहरमें उनडोकाराजहै कैमाल काबेटा
बंदा भायां से नाराज हो नोहवर में आरहा बड़ा बेटा सांहरा की सारी
नोहवर में कौम कटा के और छोटे वीसे कीसारी झूडे की वस्ती कौम ब्रंदां
के करी नोहवरीया कहीजे सांहरा का पद-पोता लखमीर जैसलमेर से-
पीछा जानेको नोहवर का कामदार मिला कि पिछाडि कटक आताहै यह
दोला अब अगाड़ी नहीं आने दूंगा तुनाचे कटक से सुकाविलाहुआ गले
चों को मारके मरा श्री दरबार ने उसके बेटे हमीद को चुलाकर कुख वस
तोपावदिया - हमीद ने सांहरा के बड़े बेटेदीने के खमी से को पघडी बंधा
वार्द - बोह पाटवा है फेर तराोट में आवाटकर कोद सौपा - घाबतों से -
पानी पर तकरार हुई तो खमीसे का पद-पोता ताहरखां बहावलपुर गया
खान साहब काही तराोट लिख दे जवाब दिया मेरे लिखने से लिखको -
तो दिघां भी लिख दूं जब ताहर को कैद किया - सो श्री दरबार ने व-
कील भेज के छुड गया - जब दूसरे खुडे वीसा को भी साथ जाया - तराोट
पर खान साहब की पौज आई सो हारकर पीछी जाती गांओं जेगई -
खज में खान के सवारी के १२० ऊंट लाये सो बेच के पद कोटा बना
या - जब से नचाव का गिदताव दिया खुडे सांहरा में जान ताहर - व
नीसां में जाम दाहर की तनखा रु३) पौज बदांरा में कनोती व गांम

* यह हाजान किताब लिखने वाला कानिब खपनी चले फीसे खोड गया भाइस लिखे जमीमे में लिखि गये
हे पाटल मन्थन में जान पडे - मुहयार मुफरकी -

धामद पद दिया सो हुनोज है और नौकरी में रहे तो लनखा ही जावे -
 २५ आदमी तो हमेशा रात को भी कोठ में रहें और काम पड़े जखूरन ही -
 जितना हाजिर होवे और जैसलमेर में तो आदमी बघोड़ने को बलदा-
 रणा और दूसरी जगह कौट फतहगढ़ पर जोधपुर की फौज संगी फनैरा
 ज ले आया और यहां से भी फौज गई वक्त सुकाविले के आदी आगमने
 पनडों ने फतह पाई सोरठा

रिवसीया खेत सी होत पग टाभ्या बाबां मद पना ।

ताहर ने तखोट अब चण शरंव ईखरी ॥ १ ॥

और वार ने ताहर से फरमाया कि किल्ला फिशन पद का क्यों हाने
 दिया अर्ज करी बना हुआ लेहंगा और वहां जाकर सुरंग बना
 ई पर कोठ वाले चेतने से ताहर बाहर जाना क्यों करे गये काम जाव
 नहुस मगर इतबारी भरोसेदार समझ गये कि यही सी साहजी के सफर
 में तम्बू के अगाड़ी भारी रूपही और पिछाड़ी उचड़ी का देश होता है ॥

सांहरा के बेटे डेहर का डेहर मंथु कम मंथु बांगारो का
 डेले का काकिला और बीसे के बेटे लहड. काम लहड. हींगो
 ली का हींगोला कहीजे है दोनों के घर २०० लोड लहड और
 बहुत से बलाक हार है ॥

जमीनानम्बर (२)

इतहासकीमखालतजो १२पाडन है

सफा १६४ परगनेरामगढके हालमें सन ४ के बाद पढना चाहिये

मौजे टुकरोलेके सोलंखी राजे मूलराज का कुं. महेसदास खुट्टवा के पुवार राय सांवतसी भागा भोज की पुत्री परनीजे और तगोट में आरहे इसके कुं. पेतसी को नानी हुलशवतीरेखालच कहा जिससे खालतक हीजे - खेतसी के बेटे रूपसी के ३ पुत्र १ देवराज ने श्री घंटीयालराय काथान व १ कुंवा जो चूडाले विजैराव का बनाया हुआ मिसमारथा तयार कराया दूजे विजै देवराज तीजे सिद्ध देवराजका बेटा मायेथी ने राम गढ से पश्चिम कोस ६ मायेथी नामकुंवा बनाया वजुद्धार हुआ सो पुजी जै है और देवराज के ७ बेटों में दूजे रतनु कुंवा २ रतखीया बनाया और बड़े बेटे चामूड का बेटा मारु को सरवाड के ओढारागां मार कर तगोट लूटी और मारु का बेटा वीसल अपने नानेरे गांव जसोल में नाबालिगथा सो जवान हुआ तब मौजे हाडे में आकर महारावल श्री बाकुजी से रुपया व फौज की मदद लेकर ओढारागां को बफांत दी और सरवाड लूट दरवाजेका किवाड ले आया - और श्री दरबार में सालीयांनारकम जिसको माल कहते है लिख दीया सो हनोज भरता है तथा - तगोट में कुवाणक चौतीना जो मौजूद है बनाया और सक पगवाव बनाई थी पानी खारा होने से अकवाव कह कर बूरही और मौजे राम गढ में श्री दरबार से कोट बनाया जब खालत भी यहां आरहे ॥ वीसलकेपुत्रजैतकोकेश

भोजने कुवा ५ जो सरा नाम से बनाया सो बूरा हुआ भोजरा कहते हैं ॥
 और भोजक कुवा १२ मध्ये बड़े चूड़े का चांवड गांव बाहू में रहते हैं दूजे
 नाराक ने रणाड नाम ही कुवा बनाया और दूसके बेटे जैपाल कावेटा भाग
 चंद्र ने भागसर नामी कुवा जो रणाड से पूर्व १॥ कोस बूरोडा है बनाया-
 और तीजे भार का भारा कहीजे और चौथे सालरासी के बेटा अर्द्धकमल
 के ७ बेटों में से चार का बंसचला एक सरा का सरा पालत मुसलमान गांम
 सतोष वगैरे में है तीजे मांडरा कावेटा सेठ वसांयत का सेठ वसांयत क-
 हीजे है और चौथे सूरजन के बेटे सजन का सजन कहीजे व तलाई १ सजन
 की खुदाई ॥ और दूजे लूंबे के ३ बेटों में दूजे राधीर का राधीर क
 हीजे है - और तीजे उद्दैराव व बेटा तीगायत दोनों को पीयेने मारकर
 जासोनाईकी उद्दैराव की औलाद का गांम महेरी में भायां के विराड से न्या
 रा रहते हैं और बड़े बेटे अर्जे के १२ बेटे हुए जिसमें एक जोगे का जोगा
 जो साल में चहराम भरते हैं चौथे कोले के बेटे राघव का राघव सुहन गढ
 में वदसवे गौड का गौड और बारहवें मीहे का मीहा व इग्यारवें पीये के ९
 बेटे हुए जिसमें दूजे राम के हेम वनेनसी वपेरासर पर है व पांचवें सिदे-
 का सिदा गांम कांरांघमें वछटे सतै के वस्ती का वस्तांरां गांम छांयरा
 में है व आठवें आंवे का आंवा और बड़े बेटे धारे के तीन बेटों में से महेसके
 दो बेटा बडातो भोजरा का पाड़ा भोजराज जो सबका जासो तखेरड पर रहते हैं जासो
 तका नाम आज पयंत नीचे लिखा गया और दूजे रुजे का मुजा कहीजे है भोजराज के
 भोपत भोपत के देवी दान २ के सुजांरा २ के जगननाथ २ के आपमल ३ के भीसा २
 के सरुपा ३ के सैरा २ के मूला-मूला के बाहादरा ॥

जमीना तवागिरवजैसलमेर. नं. (३)

जो इस देश में नीमा पहाड बहुत लंबा चौड़ा बज्जचा जिससे पानी का भरना व अच्छे २ दरख तो कोरन्दी नाम का भाखर जिसको हुंगर वमगर कहते हैं तफसील जैल है अब्बल शहर गेरहरा जिसपर गठ है सामने सुली हुंगर से उत्तर सरी वगेरह २ कोस बराबर गां० चाहडू वकाले हुंगर तक वहा से खचम गां० वर्मसरव रूपसी फेरदः गां० कुल थर व काकनय वहांसे प० मुहार फेर पू० तेमंडे वहासे उ० जायग फेर पू० धनवा व सागांसा वहांसे वा० गां० हमीरां तक चौडातो २से २ कोस और लंबाई में लगता हुवा पेशा शहरसे चौनर्फ ५० कोस बोगा नाम हास्क ग्राम के पास जुदा २ होते हैं तथा इससे जुदी हुंगरी मोलासर नाचनरी भभेटों वगेरह कई हैं . त्या काले हुंगर से काकनय तक मगर सजीवन है चुनांचे कबीरेरीसाल वह भीमरो गोडो ब्रह्म कुंड रामकुंड रुचीकाकुंड सुंदडी भुवांद में कहतसा ली में भी पानी बहुततरदा शहर में भी वही से आता था जिसमें अनुमान होता है कि इस मगरे व ब्ढालों में खोदने से पानी नजदीक ही निकलेगा और सुना भी है कि ब्रह्माजी ने वैशारखी पर यग्य किया था जब माव रिषि देवता वनदी आये थे जंत्र से नही गोमती यहां गुप्त चलती है इसके गुप्त गति का साखा सिकंद पुगण में है कि रुब रिषि के बेटे अग्नि को मारने के लिये नदीयों को ब्रह्माजी ने आज्ञा करी जब संरस्वती वगोमती बीडा उटाय अग्नि की धकेल समुद्र में वैटाया सा सरस्वती के कुंडल में वैठा हुवा है गोमती अग्नि की धकेलने से तपजाती थी तब जमीन में घुस कर ठंढा होने बाद प्रगट होती थी इस से संभव है कि यहा भी गुप्त चलती है खैर क्यों ही हो पानी तो बेशक नजदीक है और पबतो का हाल खाने में लिखा है और परगनात में पहाडियों का नाम नीचे

लिखा है बाकी हाल लंबा चौड़ा ऊंचा वदूर दिसा बगैरह का नकाशा में लिखा जावेगा तथा इस देश के भाखरों व मगरों में बाज २ जगह कुं भटिया गुंदया गूमल बलसी डा के सिवाय कुद भी पैदा नही होता है - ॥

अ० जेसलमेरमें सूरमाली २ कीतांका हुंगरा ३ बाभगीया ऊहरिका भाखर
प्र० देवीकोटमें १ - - - २ - - -

प्र० लखोमें १ रयाधांवालो २ गुचरीयेरमाडी ३ - - -

प्र० देवामें १ भूरो हुंगर २ बालाडी हुंगरी ३ सिल्लाडी हुंगरी ४ पालाडुंगरी ५ चाचोली हुंगरी ६ कालो हुंगर ७ हईखाको हुंगर ८ प्रासदेयंको-
९ गोसीरसर १० उहीयेरो ११ जरखवालो १२ जोगणीयावालो १३ चेशालो १४ बंहाडो १५ जगांवालो - ॥

प्र० वापमें १ चटोररीमाली २ तीषीमाडी ३ कोडीयो भाखर ४ गेदायतमाडीवारह ५ तोडेरीमाडी ६ मनुजीरोपहाड ७ जावमरोपहाड ८ भोजालवा रोपहाड ९ रनेपीरो १० कोठीवाडो ११ मोटीढाठरेदवालो १२ लखुवालो १३ कुभारीयेरीमाडी १४ गोतरडीमाडी १५ देगडरीभा १६ कीतोतमाडी १७ मोतीसेरोभा १८ बंभणरीभा १९ गोव भा २० चंहरारेटेचरी २१ चांपलासरोवलो २२ बोवणीभा २३ चीचोभाभा २४ मेसा गठीया भा-होय-

इस मंडलमें सिध्व संत जमाने साविक में बहुत थे
उनमें से ठिकाना बनाया सो हाल वरहने वालों के नाम
जमीमानं (५) अतीत मंडीयां

आयस कामठ - रावल जोगीरतन नाथ वाले शहर से वाहिर सं० १३०७ म्हा
सुद ५ (१) गणेशी नाथने मठ बनाया भीमीयांके गांवांके कटाला व सेर
में भी भिक्का का लगमान है (२) धरनाथ (३) फतेनाथ (४) धननाथ

(५) सिध्नाथ (६) समनाथ (७) रत्ननाथ (८) रामनाथ (९) पीथानाथ
 (१०) सांवतनाथ (११) गोपीनाथ (१२) जीवननाथ (१३) आदनाथ (१४)
 सतीनाथ (१५) भानीनाथ (१६) ध्याननाथ (१७) फूलनाथ (१८) लालना
 थ (१९) गोपालनाथ (२०) लहनाथ (२१) जीवनाथ (२२) किशननाथ
 (२३) गंगानाथ (२४) हीरानाथ (२५) वादलनाथ (२६) खेमनाथ जी
 अब मौजूद है - ॥

(वावडी) आसके मठ में जीवननाथा का भार (१) बडनाथ जुदा हुवा (२)
 दरयानाथ ठिकाना बनाया (३) सिध्नाथ (४) सीधरनाथ १९ न्याली की
 रक्खी जबसे घरवारी हुये (५) विजेनाथ (६) रूपनाथ (७) उत्तरनाथ (८)
 प्रागनाथ (९) भगवाननाथ है - और चतरनाथ के भेरुनाथ का चे लाने
 नाथ है सु नारा वदरजी सेवक है - ॥

(धुनीनाथ का मठ) यहा एक कोटा में आसव वेराग नाथ का पादक रहनेसे
 वेरागनाथ का मठ भी कहते है - गंगा पार से रमता सामी एक धुनीनाथ आ
 या - श्रीमूलराज जी साहवा को कैद दीकर फिर राज करने का चमत कार
 बताने से सिलावटां के वास्त में मठ बना दिया सो पातरीयां का गुरद्वार
 है फिर नाथजी बीकानेर ऊस तां को लाने गया ऊसी वक्त भीराज का वर
 भाटी ले गया सो नाथजीके बचनसों सांटीया पीछी और जब राजा
 जी ने मठ को कड़ी फेर दी थी १ वे रघासे दो सर खेलने थे उसके सतां
 की रक्षा से लंगोट खोला और लडका हुवा सो चेला (२) मस्त नाथ
 घरवारी हुवा (३) देवनाथ का चेला मोजनाथ तो सिध्नीपाने से रमता
 रद्धान वेटा (४) लालनाथ अब है (५) रठयानाथ - ॥

(महादेव का मठ) रमता सामी (१) हरवस गिर आया सो दाल अमर

सिंहजी के हालमें लिखा है (२) लालगिरम हंत हुवा (३) जगरूपगिर (४) धानगिर (५) हरनाथगिर (६) जनगिर (७) सिधगिर (८) दरीगिर (९) भावगिर (१०) पेमगिर (११) धनीगिर सं० १८६५ से कच्चा मट था सो पक्का बनाया (१२) रतनगिर अब म्दंत है कड़ी नगारा भी है इनको कदागंया कि इस मंडल के ठिकाने में अतीत हुये व हैं सो नाम वरीत रसम वगेर हाल पंचायती बही में लिखो - भंडारनाथ के तो ठिकाने में बाकी सबके - वैसाखी कामेला में होता है - और जमाती इनसे जुदे है सो गुरु महाराज के निशान फते है - ॥

(कपुरी या का मठ) रमता फकड (१) सुंदरपुरी जो सिधथे गांव में आर दे (२) बालपुरी ने जो राम कुंडा का साध को ईगातरामजी व डायथा एक चमार की पुकार पर ५ भाई भोमिया जुनकी गती मरने से जमीन में द्रव पाया व गांव में सीव व वसी जुदी करी (३) हरवरपुरी ने शहर में (४) गुणेशपुरी ने गांव में पक्का मठ बनाया (५) निरमलपुरी (६) चंचलपुरी के हरीयालपुरी तो जोगी राज रमता रहैता है (७) बालपुरी तक सिधथे (८) सागरपुरी त्रीनागके काठीये को बचाता है त्या गणेशपुरी के दुजा चेलान मनपुरी का कुत्रपुरी ने गाव सुंदरे का सोढा गथे ले गया किसन सिंहजी सोंठा को पनाह दी जिससे गाव सतोरे में समाधली जबसे सतोरे में अती तन्ही रहै सकता और कुवा का पानी भी बिरावा हो गया चमारों ने धुई की ट हल करी थी उसका कुवा अच्छा द्वा चेलान गोयंदपुरी के मनदापुरी के जो रातरपुरी के चेलानो अब है : ॥

(श्री जेमथा जलार में) से जनाथ वनोख में देववन - व बेसाखी में फतेपुरी वाप में हलनाथ के ठिकाना का चीत्रु जेले लिखा है और गाव देवा में पीरे को टारी ने तक बीर ला होला में ओधड व शहर में अजबपुरी वाले रुखड

कहाते हैं तथा सतपुरी रत्नाथदेवचन्देसपुरी का मठ - नीलकण्ठ-डुगरपुरी-चंपापुरी-दीकर
नाथबगोरेकेठिकाने शहरमें श्रीरामवमे बहुतश्रतीतरहतेहैसोकहा तक लिखे टीव गांव
भाडली में भी तीगिरसिधदे - ॥

(जमीना) न० (५) साध

(रामकुंड) रामानंदी रमताराम (१) इगत रामजी जो सत ये यहा आकर श्रीश्रग
रसिंहजी साहिवके गुरु हुयेठिकाना वमठ बनाया बहुत वर्ष बाद खाली समाध बना
जमालूमचोलाकहाछोडा (२) तुलशीदास (३) वालकदासतकसिधतथी (५) राम
दासके समयसे सिधककिलोझमीयाने १ महल बनवादिया जहा इगत रामजी की गुद
ही-टोप-माला-वाधंवर-विराजेहै (५) बदरीदाससामदास (७) माधोदास (८) किश
नदास (९) जीवरादास (१०) लक्ष्मणदासने विलाणी करानेवगोरेमरजाद तोडीव शहर
की हवेलीबिचीतो भीकरजारहा-खडीन भीगिरवीरकवाथा (११) गोपालदासजीश्रवमहंतहै
मंडलके साथाका जोइसठिकानेके कठी बंधहै दिल द्वाथमेलेकरकरजा भीउतारा औरमरजा
दसे चलतेहै शहरमें बहुमानकाठिकाना भीरामकुंडकाहै - (कबीरपंथीसाध) इस
दासजीने सिधदेरआवादमें मसजिदपासपेशाव करनेसे मुसलमानकांचादतबलंगोटखोल
कर १०० इंदीयांदिखायकमुसली हुयेसोकाटो करेगा द्वाथीसंधकी विनतीसेगांव खुडडीमें
ठिकाना बांधकर बहुतलोगोंको कठी बंधकिया औरगुरुभाइबोलकदासआकर यहादीरहातथा
चेलाश्रीदासके तो चेलानदी रहा और पाठवीमगनीरामके जगजीवन दास भीग्यानी थे इनके
चेनारतनदासके श्रवगरीवही दासहै और दूसरेदुपरीदासके जेरामदासने जुदाठिकाना गां०
धोवावपोक्रनमें भीकारके लोगोंको मंत्रोपदेसकरतेहै इनका चेला पीतांबरदासश्रवहै जिसके सारंग
दास (मुनीजीकाठिकाना) रामसनेदीसाधूका चेला जो परडित था धोकरनसे आकर १२ वरस
मुनरखसीसोपलीवालने छोडा यहुदुमानके चौतरफठिकाना बनाया और लगमांन्त्री था धदियायदांश
स्त्रग्रंथपहुते परन्तु पीकेकोइसाधूपसडितन्हरीरहा-ठिकानेके चोकमें पार्नाकाटांकाधनानाजघूरहै-
तथा बरकत वाले मुसलमान फकीरोंका जिक्कितावमें मोका २ परलिरवागचाहै बाकी लकिया वपीरमु
कामती शहर वइलाकेमें बहुतजगहहै सोफसानकलिखा जावे - ॥

* यह ठिकण असलीलेखमें ऐसा ही है ठीकन्ही पढागया -

(जमीना) न० (६)

रियासत भावलपुर

इस रियासत का रकबा ३८२-८६ मील मुर्ब्बा है जिसमें सन १८-८१ ई० की भरदुम शुमारी (मनुष्य गिणना) के अनुसार ४,२५६,६७० आदमीय सते है आमदनी सालाना ५७,३४-८४ रुपया है खिराज माफ है अहदना मे मे दोस्ताना मदद देने का सरकारने वादा किया है रईस कोम अब्बासिया दाउद पुत्रा कहलाते है सलामी की १७ तोपें सरहोती है भावलपुर के जनूब व मशरक में जैसलमेर और बीकानेर कारेगिस्तानी मुल्क है और शिमांल व मगरब मे सरकारी इलाका है चूंकि पैगम्बर साहिब के चचा हरत अब्बास से कोम अब्बासी सुलतान इस के खानदान से ८४ पुश्त बाद कुरेशी दाऊद खां मुल्क सिंघ मोजे बरवी मे आरहे शिकार की जगह शहर शिकारपुर ^{या} दाऊद पोते २०६ जार से उपर है १ केहर के १२ बेटों के केहर रानी २ अफ के अफानी ३ प्रोज के पीर प्रजानी ४ आर्ब पाशवानीया के अरबांसी केहर १४० मनुष्यो से खडीन भालारी जो देरावर से उत्तर ३२ कोस है जावैते बेटे नूरका गा० नूरवाला वसाह जहां अबकोट में हाकिम रहता है देरावर रावलजी से आया २ रखने का शर्त पर बहुत सा मुल्क लैने बाद रावलजी कहा जैसलमेर ले दोतो यह सब तुम्हारा बर्ना निकल जाओ जिसपर फतेखाने देरावर ही लेकर बाप के कहने से प्रोज के बेटे फतेखाने को मारुफखा किल्ले शिकारपुर मे कंधार के बादशाह का साल्ता नवाब सैफुल्लाखां दुरानी जो इनकी वरि सहित सोयाथा मारुफ कैंद से निकालला था था गादी बैठाय मालिक मुल्क करके आप सलामी हुये फिर गठ व शहर बनाये सो लिखे है और छोटे २ गांव तोसदहा बसाये इनकी बहादुरी व वल्ली पने के लताक हां तक लिखे जावे गादी धर नवाब याने सांसाहिब के नाम लिखे गये है १ फतेखां २ सादिक मुहम्मद ३ भावलखां ने देरावर से ७० ई० ३२ कोस

कनौर दर्या के अन्तर् भावल पुरबसाया राजधानी करी परन्तु गादी बैठने का दस्त
 रदेरावर मे ही होता है ५ मुबारकरवां ५ ब्हावलखां मुल्कगीरने मुल्कव
 थायाद्सादक मुहम्मद ७ ब्हावलखां सालिस विलखैर वडे ही आकल
 थे दूरअंदेशी से सरकार हीलतमदार अंग्रेजी की मदद हाजरी याने मुलतानव
 गारहकी लडाइयों मे ७ सो दावद पोते मारे गये सरकार आली ने मुल्क दरिया पा
 को जो सिरख रनजीत सिंह ने ले लिया था दिया सो पीछा देकर रियासत वअरत
 तियाररहने याने सरकार दस्त अंदाजी नकरने व मदद देने वगेरद कलमालिख
 वाली ८ फतेरवां फिर ५ म्हीने पासवानी याद्दाजी रवांने भी राज्य किया था.
 २ ब्हावलखां १० सादक मुहम्मद ७ वर्षके सं० १६२२ मे राज्य बैठे ज
 ब दरब्यास्त पर सरकार से मीचन सादिव मुखतार हो कर आबादी वतणी वगे
 रद से आमदनी बहुत वधाइ फिइनको अखतियार मिला बाद पुस्तों का खजा
 निकाल कर मोजां करते है खुदा खैर करे ॥

नकशह गठ व शहरों का जो इलाके जात में नामी हैं

केहरके मारुफके २२ही बेटे नकार बंधोके					क्र. सं.	नामठिका ना	जमीन का मालिक	किसने बनाया	अब किसके पास है
क्र. सं.	नामठिका ना	जमीन का मालिक	किसने बनाया	अब किसके पास है	५	हासल गठ	५० मू	हासल सो	हासलखां
					६	मुबारक गठ	६० मू	मुबारक खां	खां
१	खैरपुर	२५ मू	खैरमुहम्मद	दुरमुहम्मद	७	शहपुरा	२५ मू	शहमुहम्मद	खां
२	मीरगठ	५५ अ	मीरखां	खालसे	८	गढीअखतियारखां	६६ मू	अखतियारखां	अलावरत
३	मौजगठ	२५ मू	मोजदीन	खां	९	अलागाद	५० मू	अलागाद	नजरमुहम्मद
४	दुरपुर	१६ मू	दुरमुहम्मद	खां					

१०	कायमपुर	१५	कायमखों	खा०	५	रूकणपुर	७२	से
११	सबजल्दा कोट	१०० ५	सबजल खां	खा०	६	धानगळ	५०	से
१२	खानगळ	१८	खानमुह म्मद	खा०	७	खेरपुरातोहरी	३२	खेरमुहम्मद
१३	लतीफगळ	२०	लतीफखां		अगलं बने हुय			
१४	गोरदाशा	२५	नवलअली	खा०	१	वीभराटे	६०	
१५	शहरफरीद	१००	फरीदखां	स्माइलखां	२	भरोट	२५	
१६	दुहा कोट	१५	दुहाखां	अलीदाद	३	न्हवर	७२	
१७	रवनदीगोठ	१६	रवनखां	खा०	४	जजा	४६	
१८	त्रेहाडा	२४	त्रेहाडेखां	खा०	किल्ला देह नूर उफे उच . मदी पीर गिल्यानी व बुषारी है . ॥			
१९	अहमदपुर	२०	अहमदखां	खा०	केहरसे ५ पुस्त दालाके दालाजीयोनै			
२०	सेकादरेदा	२२	कादरेखां	खा०	१	नवसारा	८०	नवलअली
२१	स्माबैदाकोट	४८	स्माधेखां	खा०	२	दीनगळ	७२	बुटेव्हाहर खा
२२	ताजगळ	६८	ताजमुहम्मद	सरफराज खां	३	ताजगळ	७०	ताजमुह म्मद
प्रजाणीगदी धरें नै . ॥					४	वदली	८६	राज्यजैसल मेर
१	फतैगळ	१००	फतैखां नं १		५	संजरपुर	६०	संजरखां
२	सुवारकपुर	५८	सुवारकखां नं ४		६	मुहम्मदपुर	६०	मुहम्मदखां
३	खानपुर	४०	व्हावलखां नं ५		७	जाफरपुर	६०	जाफरखां
४	हेर:व्हावल खां	२२	व्हावलखां नं		८	कबूलवाला शहर	८०	कबूलखां जालमुहम्म दकावेदा

(जमीना) नं० ७ दुकान -
 राजकी दुकान जो नुयका कोठार सं ५ से हुवा श्रीगिरधारीजी के मंदिर व रसोडा

व घोड़ा हाथियों का सतत संज मसाला व पेठियों सरोपाव वगैरह जिन्स का-
खर्च व दूसरे मन्दरों सरदारों व धर्मदे वगैरः के रुजगार का हिसाब साहू
कारि रीत ज्यों तो रक्खा ही था सं० ४१ से हर एक हिसाब समझने की सु-
गम तरकीब की गई है- और कामदार के ई पलटे मगर वधत व उड़-नीकी
हिसाब कि सीने नहीं दिख साल भर में २४ से ३० हजार का खर्च है- क-
हत साली व बीका सरदारों के रहने से ४० के ऊपर रहा - ॥

जमीमा नं० ८ कोठार अन्न पूर्णा

जो राजका अव्यय खर्च का कदीम स्थान है- खास तवेला व वारगीर वगैरह
घोड़ों का दाना बतेलका खर्च व ज़नाना सरदार दराजियों व हज़ूरियों का रुज
गार देनगी व कई जाकरो व धर्मदे का पेठिया व सिपाहियों व कारीगर हर कौम-
का बतबायफ वगैर लोगों को बखानि हिसाब का दस्तूर अद्दत है- सो मुफ़्त लिख-
लिखने में जुड़ी किताब चाहिये- ज्यों बहुत लोगों की नगदी तनरबाह होगई व जिस
को नही हुई है- सो भी होने की सलाह है- जिससे पुराना दस्तूर लिखना ज़रूर भी-
नही रहा- तथा उह ज़ी नहीं निकलने के कार्या विजेसिंह पूनमचन्द वगैरे- कामदार व-
दरोगा याने ४। ५ आदमी शामिल होकर कोठार खोलते है- यहां कोई आंकर पल्ला वि-
कावे सो निरास नही जाता- और तहसीब कामहकना भी इसके प्रामूल है- सं० ४१ से हर
पष बाडे- हिसाब समझने की ठीक तज़वीज़ खरी गई है- इस काम पर बहुत वर्षों से-
कामदार सुखतार व्यास पोलजी व दरोगा हज़ूरी साखजी है- और जिन्स खरीद फरो
रूप पर मोकाती बलदेव दास जिसके ताल के तलाव व साठियों वगैरे का काम भी है- ॥

जमीमा नं० ९ तजवीज़

चौपाया-देवाकी घोड़ियों कउंट सांडों का बरग व गापो भैंसियों की थारों जो
लारवों रुपये का माल है- इसका जूटा महकना होकर वाजिब तजवीज़ से काएवाई

काकायदा विसी मूजव होने कीजवके भी श्रीजा साहब मंजूर फ़रमावंगे तो बहुत मा
लव धने वराज का ठाठ रूपक दीखने व बहुत से मुलाजम परवशी जाने व कई काम आ
सानी से होकर आराम रहने के अलावा वधती खर्च निकलकर २० पचीस हजार रुपये
साल का फायदा होहीगा -

राज्य काम से अलाहदा फन की आमदनी में खास शहर व जोधपुर बालोतरा के रास्तों
ई० हाज़ा में वंगला व पोह धर्म साला बहूसरे रास्तों सिंध व गैरे के में कुवा व गैरा जो
मुनासिब हो - बनाया जावेगा - और हर उपाय से लोगों के कराने उपंत राज में
१० हजार साल का देस में जावजा कुवा बनाने व गैरे आराम व फायदे के काम में लगा
ने की तजवीज़ है - सोजमाना अछा आने से होगी - ॥

जमीना नं० १० महकमा गिराई

इस काम पर सं० २१ से कभी २ महता फूलचंद जी व अखैराज जी व गैर ह दीरा
के तोर पर जाते थे - सो दीवानी फौजदारी का काम करने से प्र० के हाकमी के हुकम से
जोफ़ आने के बायस आपसकी तकशर व गैरा क भायते रहेती थी सं० ४९ से यह तज
वीज़ ठहराई कि इलाके जात में ४ गाई की जावे जि सरकारी पोर्ट ती महकमे सदर में
अदालत में होवे - और मुकदमात दीवानी फौजदारी का हर प्र० के हुकम को शामिल
रख कर किया करे व पैदा हो सो भी प्र० का हाकिम लेवे - और इनका खर्च कामदार की
तनखा हमैये अताव जो सवार व गैर ह का मुकररा किया जावेगा हर महीने चीरा आने
पर रफ़्ताने खास चा हुकूमत गैरे से दिला जा जावेगा चुनने कोट जाठी से उत्तर देस
में महता अखैराज जी को रख कर - जाठी सू दक्षिणा प्र० लखात क जहां अकसर चीरि
यों का गुमान रहता है - गिराई का जुदा महकमा किया - और महाजलार पांभा संम
साहा गढ़ घोड़ु - का इलाका मूलचंद जी के तालुकर खा - तथा कोट खारा से मोहन
गढ़ तक में कर वरहा था - और इसमें व भी तजवीज़ थी कि गिराई वाले तालुके का काम

के अलावा हरसकगांवका जुगराफिया वर्तमान हालत लिख भेजे और गांवके
आराम व फायदायाने मुल्क में आवाही आमदनी व धनेकी वावत जो खाने दारुं सुंन
यादिलसे सम भें सो सुफससिजलिरवकर कौन्सिलमेरिपोर्ट किया करे तो मुना
सिब तजवीज होती रहेगी - परं कइत साला वकामदारोंके आपुसकाररक व
कइ स्वबसेसे हुये कि मन्शामूलव यह काम भी नहीं चला सो भी अच्छे होनेके समय
मे होवेहागा - ॥

जमीन नं० ११

सुत अह्निके इतिहास पूगलरावरानगदेवके लया जी व
चाचा जी व गैरह

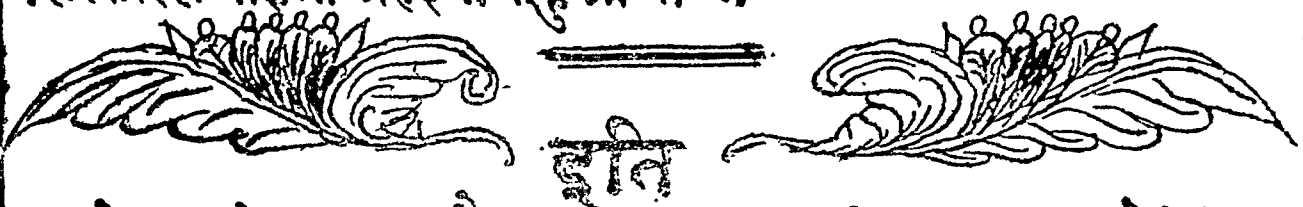
जोतवापिखके सफे १११ पर आनुका है

चाचा जीके बसलके शेरवा जीराव भी कनीजी की क्रापासे नामोग्रामी हुस - कइ
वायो सेवेरे लेने आदि बहुत प्रवाङ्ग में वीरत देखाथ अपनी मृतुका पूछी जब कनी
जीने कहा कि येर की छाया आक की खट पी पका पारा भूसे मेः का दही स्या घेटा
का पल एक जगह मिलैगा तब मरेगा - सो ऐसा मेल हु आता आपही कहा कि सेपे
भाता आचा जब से मृतुके मौका परये ओ वारा हे तथा किशनावत पारवाउमेंना मीदु
पदमारही नपल सिंघजी गोपाल सिंघोत सपूत है - सं० मेजे शवमेर भी आपेथे - ॥
सुसेई शंभोजीके यां नाल उर्या योजी भी सूरवीर हुये - गट्ट नामेके नाम से वास
पुरखना वा वबा दगाही ख जना मुलतान से गूट लाया - जब फौज आई तो साका करके
कुंभैतसिंह बाखलपुर - ॥ बहूजे कने अमरा साईदास गोपाल दास चन्द्रसेन -
जगतसिंह देवीदास परगसिंह इन्दुसिंह खेतसी भोमसिंह हंडवतमिंदुं कान
नी रावत जोमलसर जो अब ईद बाकाने रहे - ॥ तीजे धनराज खेतसी - सेरसिंह - राधे
दास - माधोदास अमो गलाने - बालनसिंह - किरतसिंह - भाजिसिंह - आमना -

मदूजी जयमाल. मुकुनजी. कुं. जोरजी. ठा. वीठनोक भो अरव इ. वीकानेर - ॥

जमीना नं० १२ रियासत खैरपुर सिंध

यह रियासत १५८ मील सुरवा औरसन १० ई १ इ. की मरदुमशुमा
के मुचाविक १३१८ ई. आदमीयो की आवादी. आमदनी सात्ताना ७१६००० रु.
की है. खराज माफ है. मगर जरूरत के वक्त फीज की मदद देने का इकरार है. इस
यहां का मीर अली मुरादवा साहब है. जो बिलोची पठान है. सन १८३५ ई.
में सरकार से पहिला अहदनामा हु आया - ॥



कोटानकोट धन्यवाद है श्री सन्यतानन्द जगदीश्वर महाराज को जिनकी.
कृपासे आज दिन जबकि २० दिसम्बर सन १८८२ सुनाविक ११ रवी उल आरबर सन
१३१० हिजरी वअगहन सुदी १२ सं० १८५० बिक्रमी वफसली अगहनकी २० सन १३०१
है. यह ग्रंथ समाप्त हुआ. पाठक विचार कर सकते है कि जैसलमेर जैसे उजडदेस का
इतिहास लिखना श्री महताजी नथमलजी हीरेसे पुर्ष का काम था इनके प्रीश्रम से
जाना गया कि हमारे सूबे के पिछले रजी इन्द करनलसर डूडन साहब बहादुरने इन
की सच्ची तारीफ की थी. हम भी महताजी साहब को धन्यवाद देते है. किउनकी महनत
का फल परामुहत्ता - ॥

خاتمة الطبع

ہزار ہزار شکر ہے پروردگار عالم کا جسکی عنایت سے آج ۲۰ دسمبر ۱۹۱۲ء کو پھر کتاب ختم ہوئی۔ یہ ہفتہ تھیں
ہی ایسے عاقل اور محقق شخص کا کام تھا کہ جیسلمیر الیہ او جڑہ ملک کی تواریخ ہندی میں تیار کی ہم ہی ہفتہ تھیں
لو مبارکباد ہیں۔ اہل العلیین او کو خوش رہی۔ کہ اونکی یہ یادگار ہزاروں برس تک دنیا میں بنی رہے گی۔
غرض نقش و است کر مایا ماند ہے کہ ہستی رانی بنیم بقائے
جرہ خاکسار محمد مراد علی ہوشیار
مالک مطبع راجھو مانہ گڑٹ ورا اور اجستان آجیہ

नितम्बः तवारीखजैसलमेर नम्बर (१)

अबमें अपार अफ सोसके साथ घो हा सापि छला हा ल निरव ताहुं कि सं०
 ४७ फागुन को श्रीजी सादिव वैकुण्ठ पथारे नो मात्र जीव जडव चैनन को अ
 सा गम हुअ किकलम को लिखने का ताकत नहीं गोयाराज का जहाज दो शोक
 समुद्र में डूव गया फिर राजा श्रीखुसाल सिंह जी के कुंवर साम सिंह जी को जो ३
 वर्ष के थे राजवैठाकर वमूजिव वसीअत के नाम शान्तिवाहन जी रखा और इसख
 याल से सवने दिल को तसल्ली व सवर दिया कि इसजमाने में आली सरकार अं
 ग्रेजव हापुर मालिक मुल्काव दा किम व न्नारियास्तों के खास दोस्त हैं - जहां नाचा
 लगी दांगी है तो अपनी निगरानी से असी तजवीज फरमाने हैं कि रियासत खातिर
 ख्याह तग क्ली पर आने के सिवाय मान लोंग जो रियासत में है अपने इनतवद मूजि
 व रुकव इनसाफ पाने से आसूदे होकर व आराम रहते हैं और यहा तो आगे व मे
 हजूर श्रीगजसिंह जी सादिव वैकुण्ठ पथारे व श्रीराजो नसिंह जी कांजां २॥
 वर्ष के थे नाचना से बुलाय राजवैठांय जब माजी श्रीरानावतजी सादवाने दान
 ईवदूर अन्देशी से अपना कामदारी भजन को रख कर राजीत वटाव वदस्तूर
 रखने के लिये मुखतार राज श्रीकेसरी सिंह जी के रहने का दरख्यास्त सरकार
 में की थी सो मनजूर होकर सरकार की मदद व महरवानी से राजवनारहा . फि
 रसं २१ में श्री वेरी सालजां सादिव राज विराजे जब बाजे लोगोंने अपना मतल
 व निकालने को मार्जा नो की जी को मुखतारी का प्योखा देकर ठाकुर केसरी सिं
 ह जी की भूटी गिकायते व सब को बदका कर भारी बखेडा कराया था परन्तु जना
 व काला सादिव कनेल इडनसा दिषधदापुर जी सदर से मंजूरी मंगाकर पहां नगम
 पत्ताये और वाद नहकी कातशिका यगों के वें हा ठाकुर सादिव को कुल मुखतार
 रखकर भदता नथमलजीगी राजकी मच्ची खेरख्याने दधानतदारी देकर

अपनी रजा मन्दी को खबर लिखवा दी वदीवान रखा था सो अब तो कर्नेल पौलटसा
 हिव बहादुर जी बहुत बर्षों से रजी डन्ट सा हिव रियास्ती के रिवाज से वाकि फ मुनसि
 फ मिजाज हैं सो जहर वैस ही करावेंगे १६ मार्च सं ८१ को आये उस वक्त तो कुबर् शि
 वदान सिंह जी को ले जाने या को ई और खयाल दोगा गोलमोल काररवा ई रख कर
 फरमाया था कि ताहु कप्तानी अब है जियो ही रहे इसमें युं जाना था कि बिल फेल
 बखेडा होने के गुमान से सै सारखा है परन्तु सद्दर से मनजूरी मंगा कर सरकार की बु
 गुईव अपनी नेकनामी रखने को साबक मजिबत जबीज करावें हीगे - फिर थोड़े
 ही दिनों बाद कि अभी सो ग ही न्हीं बदला था मांजी सा हिवाने वत्मा अपनी मुखता
 रीके धोरवा खा कर दीवान जगजीवन जी को पैरमें सो नाइनायत करके आवूजी
 भेजे उन्हीं ने अपनी मुखतारी का बन्दो बस्त करके सरदारों को तब ध्वान देने का हु
 क्त भेजा तब भी यह उभे दरही कि अभी सद्दर से हु क्त आने का न्हीं फरमाया है सो
 जब हमारे रजी डन्ट सा हिव कलां सा हिव से पकी सलाह करके आवेंगे वैशक स
 बतरह कालि हाज दर एक के वाजिब हु क्त वरिया सतके कदी मरिवाज का फरमा
 वें हीगे सब खा मो शरदे - यही खयाल खा म हो कर विजास्त व अदालत से मान
 काररवा इविला का यदे नाजे बा बेजा इन्सा फ के रिबला फा होने लगी और रजी
 डन्ट सा हिव बहादुर जी भी स० ४८ के पहो सुदि २ को फिर तसरी फलाये जब
 सा हिव मौसूफ की मुनसफी के भरो से पर राजवी आ हि सब सरदार वसा हु कार
 बे पारी वगैरह सद्दालोग अपना वाजिब हु क्त बइन्सा फ पाने के लिये नालसी
 हो कर दीवान जी की नाफह भी वहा कि म अदालत की बे बन्दो बस्ती वगैरह इन्सा
 फी केशा की होने पर वाजिबत जबीज की उ मे द हुई थी उसी रात को दीवान जी ने
 सा हिव जी को दास मे लेकर कहा कि ये सब लोग नात्मीज आ पा भूल हैं सिर्फ सिं
 खावे से शाकी हु ये वाकी कु छ न्हीं कर सक्ते ज्यों ही राजवी व सरदारों को धमका

करदबालिया और जैसे चाहा साहिवसे कराया चुनाचे राज के खैर खुवा होंकी सलाहसे
 नथमलजीने भीजी काम छोडने वाद किसीके शा की सिफारशी नही है अपनी शिका
 यतकी तद्की कात कराने और दिसाव वरोजगंर की वावत नबूजी साथ कैफित भेजी
 सो ले कर १० बजे मिलने का हुक्म दिया था फिर दीवानजीके भूठे कदनेसे कहलाया
 कि आपलोगोंसे फितनह कराने है और २० वर्षसे दरसाफ न्हीं मे नाराजहू मिल
 ना न्हीं चाहता - नबूजीने हरचंदकहा की यही लिखा है कितह की कात हो करअस्तन
 भेद और सच भूठ तो समझिये किसबब क्या है परन्तु कुछ भी न्हीं बोले जिसपर फिर कै
 फियत भेजी सो न्हीं ली जब डाकमें चिठ्ठी भेजी नौ भी खयाल न्हीं किया सो बड़ी गल्ती
 करी कियो कि नाराजगी का जो सबब फरमाया सो मद्ज गलत और खुद्गर्जियोंकी को
 ता अदेशीका जालहे इनसे मिलनेमें तो दीवानजी को भी काममें आसानीसे राज्य
 का बहुतही फायदा होता कियो कि ४० वर्षस च्ची खैर ख्याहीसे नोकरी दीवानी कर
 कि अपनी खुशी से काम छोडा है सो सबके हकमें अच्छे होनेकी सलाह देते - मगर
 मालूमहुआ कि साहिव मौसूफ को राज्यके फायदे व अपनी मुनसफीके गर्ज न्हीं सि
 फी दीवानजीका कहना - - - रखना था वरनह इतना तो जरूरही था कि श्रीहजूर साहि
 व पास या खुशहाल सिंहजीका रखकर डोढी परलायक शखसको मुकरफर
 माते बसबलोगोंको दिकमतअमलीसे हीतसल्ली वरवा तिरनो करते ही ही
 न्हीं किया जो २ फरियादी थे इनसा फनपाकर सबमद्दरुमरदे सो सारी उमररो
 नैही रहेंगे कियो कि किसीही तरहसे औसी ताकतको इन्हीं रखता कि जो श्री वडे
 लाट साहिव जीतकतो वया बडे साहिव जीतकही पहुंच कर कामयाव होसके
 सबलोग यही समझते हैं कि कलां साहिवजी भी दिकमतअमलीसे अर्ज टोके
 कहनेको ही सही रखते है किसी फरयादीने दादनही पाई कियो खराबहुये आगे
 जैसी न्यतहा कर्मोंकी न्हीं है - वार २ यह कहते हैं कि यहको ताह अदेशी व हिमात

हार की बात है लिखना तो चाहये फिर चाहे सो हो मगर बहुत लोग ना उमेद हो कर क
 हते हैं कि कुछ नहीं होगा हो न हार तो देखो कि मुतवा तिरसात कैत का पडना वनथम
 लजी जैसे सब तर ह लायक सच्चे साम धर्मी का काम छोडना और श्री वैरी सालजी सा
 हित सब क सच्चे भावा पका धाम पधारना वदो नो माजी सा हिवः शतुजी खुसाजी
 की सबल पर चलने से खैर न्वा हो को लायक न समझकर धोखे बाजों पर एत बार र
 खने से शल्य काज का अधिकार हाथ से खोना व शिव दान सिंह जी जो बोल चाल मे
 ला व कर राजवी धे निकालने और कछी जी की लाफ हम कारवाई जो कच्चे सलाह
 की गेले बाब स हो ती है व पंजावी की गैर इनसा फी सा हिव जी की बख्शी मालूम होने
 पर ही इत को ही सुख तार र खना दूसरे किसी ही की वाजि व अर्ज सुन कर इनसाफ न क
 रना दिवे श्रियो में किसी का अतवार नहीं होना व गैरः २ स्वरा बी ही र खरावी का बा इस
 हो गया है इस के सिवा य खुदा का कहर है कि इस ११ महीने में शहर व देश में च ह
 जार आहमी तो मर गये व बहुत से हेदाती लोग इला के सिं धमे जा रहे हैं सो तो फिर
 सुख होने पर शा थद के पीछे भी आवेंगे मगर शहर के लोग सावा बी तने बाद निक
 लना कहते हैं सो खुदा अमान करे वरनः यह लोग पीछे नहीं आवेंगे - महाशोक
 की बात है इस रियासत में श्री कृष्ण चंद्र भगवान औतार से आदिले कर देव राज सि
 ह से वैरी सालजी पर्यन्त वडे २ नामी ग्रामी राजा हुये सबने राज का बो भव लाज
 गाल देशियो पर खने से अपने मुत्क मे आप ही हुकम रान रहे अब तो साखी मि
 ली जो लूरा कान जी के हात में लिखी है कि बिला चुंचिरा के जादवों से जैसे लमे
 जावेगा - इस का बदनामी काटी का कर्ने ल पौल्ट सा हिव जी ने ला गा था कि श्री जी
 उनका कहना नहीं मानने से बहुत क ही रहे थे सो सर ह द के निकालने में बहुत सानुक
 सान देने पर ही ध्यान ला कर श्री जी के वैकुंठ पधारने बाद उनकी व सी अंत न सी ह
 न का कुछ भी लिहाज न करके सा हिव जी का मन शा धा ज्यों किया वरनः ना बालगी

तो श्री रंग जी नसिंह जी वबैरी साल जी साहिब राजबिराजे जब ही था बल कि पिछले वक्त तो आपस की फूट का भी भारी रोल था तो भी नेक नाम जनाव कला साहिब ने बंसला हम ह तान थम लजी दूर अन्देशी से कि भाटी बंस में १ नाम की रियासत भी सिफ़ी यही है दस्त अन्दाजी न करके राजा श्री केसरी सिंह जी को जिम्मे वार रखने से यहां के सब लोग जो देश विदेश में रहते हैं दुआय खैर से साहिब ममदूह को याद कर रहे हैं और अब जो रियासत की तरफ़ी के लिये निगरानी रखनी थी तो भी नाम का मुखतारी श्री मानसिंह जी या खुशाल सिंह जी कारख कर बेजा खर्च घटाना वाजिब पैदा बढाना करजाउतारना चोरी चोडे आदि सब तरह से मुल्क का बन्दो बस्त रखना वगैरह २ जो २ बातें जरूर व फर्ज हैं हिदायत करके साहिब रजी डंट बहादुर जी को रिपोर्ट देने और सलाह व मदद ले कर दे सी ठंग कायदे से कार्रवाई करने का हुक्म लिखा देते तो दोनों बातें रह सकती थी और अब तो रियासत सरस बज हो कर आमदनी दुचन्द से चन्द होनी सद्ज है कियो कि राज धिराज की मरजी से बाल्नाई खर्च व नुकसान का काम होता था सो नही रह कर जो ही तजवीज फायदे व सुखारे का रजी डन्ट साहिब की मनशा मूजिब की जावे हो सकती है सो अगरे इनसे औसा नही होता तो साहिब मौसूफ को अखतिया र ही था कि दूसरा मुखतार कर देते तथा सब जानते हैं कि नथमलजी ने राज वरखत के फायदे व आरम्भ की जो २ बातें सोची व लिखी है उस मूजिब कार्रवाई होती या अब इस तफसील से होवे तो सद्द में हाजरी की रिपोर्ट का मौका जल्दी हासिल हो सक्ता है मगर बडा ही अ

फ सोस है कि साहिब मौसूफ ने वह कारिवाइ देखी जो सुनी बल कि खुश
 गर्जियों के धोखे में आकर दरयाफ़ न्हों फ़रमाया सो तो उमेद है कि हा
 कि मआला वदूसरा रजीडन्ट साहिब जो इसरियासत का अच्छा होना च
 हेंगे तो पूछे हीगे परन्तु तअज़ुब है कि पौलट साहिब वहा दुर जों ने रिया
 सत जो थपुर व सिरोही को देशके रिवाज का लिहाज रख कर बहुत तरह
 परलाने मे सरदार मुसाहिब वगैरह किसी ही का ह तक व हर्ज न्हों किया या
 बरखिलाफ कर के कियों जुलमी कह लाये और सरकार से सुपरिन्दवटी
 ही करनी चाही तो किसी युरोपियन साहिब को मुखतार रख ना चाहिये
 ताकि अहाबत से किसी का बुरा नहो कर सब लोग अपना वाजिब हक
 व इन्साफ पाने से इत्तिउल व सःहर तरह हाजरी दि यावे कि जिसमें रा
 जब लोगों के फायदे का काम आसानी से हो तारहे ज्यादः क्या लिखा
 जावे - भावीजोग भया सो देखा - होगा सो देखेंगे - ॥ परन्तु बिलफैल
 अच्छे हीनेकी कोई सूत नजर में न्हों आती कारण कि यहां के आला वअ
 हला मात्र आदमी आपा थूलहोगये कि देसी जात जो ४० पी डी से हक
 हारी का घमंड रखते थे किसी लायक न्हों रहने का खयाल ही नहो कर आ
 पास के वसवको थवइरखा में यहां तक भर रहे है कि एक दूसरेके जीव
 जीवाइ जीवका वइज्जतजाने में खुश हो कर हत्तुलवसा गुमाने की को
 शिशमें को ता ही न्हों करते यह न्हों समझते कि इस नि धीन देश मे जो
 आगे औ सी अकिलवरी होती तो इतनी पुशतों तक बड़ी नाम वरी के सा
 थ कियों कर निबाह होता और अकिलवनीयत का फल परमे श्वर देवे
 ही है कि इसही वर्ष में स्वपना की माया ज्युं क्या था और क्या होगया जिस

को अच्छी तरह से देखने पर भी किसी को किसी ही तरह से कुछ भी खयाल नहीं
 सिर्फ अपने पेट का फिकर धर्म अधर्म से रख कर वाहियात गलत मारने व
 हंगर की गिला करने में जैसे हरी भक्त भजन करने में संतो शव आलस न
 हीं करते ज्युं हो रहे हैं और यह भी नीत धर्म का कौल है कि **दोहा** कपटी
 कृत धन अधर्मी । मूख हीन बढी नार । बाल निबल अधनीत पति । सुरपु
 र होत नुजार ॥ १ ॥ ऐसे होने से उजड़ने में आश्चर्य क्या है - बडे हज़ूर श्री वै
 री शाल जी साहिब को अपने बुजुर्गों की रियासत रयत वरीत को निभाने व
 खास कर इस दूर अंदेशी से कि यहां के लोग देशावरो से धन्य कमाय यहां
 ला कर खर्च करते हैं इनकी हर तरह से इज्जत व खातर रखने से ही जर हेंगे
 इसलिये कारमुख तार दे शी ही जर खना मुना सब जाना चुनांचे **नथम**
लजी के काम छोडने बाद गिर धारी लाल जी व नथम लजी की सिफार
 श से लायक बिदेशी जैसा जान कर **कछी जी** को बुलाया था कि सब
 के वाजिब हक व कहर वगैरह इनसाफ कालि हाजर खेंगे इन्होंने कच्चे
 लाहि गीरों की अकिल पर चल कर श्री जी साहिबों की दूर अंदेशी और ग
 नशा का कुछ भी खयाल नहीं किया और ना जेब्रा काररवाई जो इस देश
 के ठंग से बिरुध है करने से मात्र लोग नाउमेद हो कर हद से परेशा की ह्ये
 गये जिससे तरकी व सुधार होना तो दरक नार रहा काम का आराम व
 य सब भी हर गिज नहीं रहेगा सो जो नेक नामी व अपनी बात का खयाल क
 रेंगे तो बेशक इस तीफा देवेंगे वरनः दिल में पशे मान हो कर बहुत पछ
 नावें हींगे कियों कि जैसल मेर को सिंधों की सुजाक तो आगे ही कह
 तेथे इस वक्त में तो यहां के लोग विधाता बल कि परमेश्वर को ही कुछ

नहीं समझते हैं इस हालतमें कच्चे सलाह कारों की अकिल परचल
 नेसे अच्छे बन्दे वस्त होने की उमेद कैसे हो सकती है वस खुदा ही हाफि
 ज है और जनाब कलां साहिब बहादुर जी तो रजी डन्ट साहिब के
 अगे से पर हैं और रजी डन्ट पौल्ट साहिब जी किया सो सबने देर वलि
 यासि फी १ हुकम वाजिब दिया था जिसकी भीता भी लन्हीं हु ई अब
 हरिदये नये रजी डन्ट साहिब बहादुर जी क्या सुना सिब जान कर तज
 बी ज करंगे - ॥

बिनयपत्र अज्ञतरफ

खाक सारस हसद मुराद अली होशि यौर मुहं तं मम राजपूताना गजठ अजमेर - चुंकि कनेल
 प्रसी डब ल्यु - जनाब पौवल्ट साहिब बहादुर रजी डन्ट गरवी राजि स्थानकी सलाह वमहा
 राजाजि राजनहारा वलश्री वैरीसाल जी साहबों की आज्ञा अनुसार महतान थमल जी ही
 वान श्रीद्वार जैसलमेरने पूर्वर्ष परम करके से दगलखमी चंदनी देवह किताबत धार करार
 की पाख खवा ई है - इस जिल्दमे ३ भाग तवारीख महाराजगानरियासत मौसूफ वजगराफिया
 लुल्क भांड ३ हिस्से मे रियासत हाया (जपूताने की तवारीख) के नाम वगैरह जो २ हात्मा त है नजर मे गुज
 रने से मालूम होगे - अगर चेला इलमी के वायसत हरीर वगैरह कायदे से न्हीं मगर मि अत भा
 षा सबके समझने को रखी है और यह किताब इस देश के लिये का आर्माद या ने बहुत ही वाकफी
 का याद गार जान कर पसंद फरमावेगे और नुक्त हो या कम चवेश करना वाजिब हो सो बराह
 कदरदानी वमि हर बानी से लिखावेगे ताकि दो बार ह छापने में ठीक हो जावे औसी आशा है
 सं० २६४८ कामिति मः मुराद अली

التماس

یہ کتاب حسب الطکم سر بیخورد بہار اول پیری سال جی صاحب بہادر سورگ باشی سابق والی جیلیر خراب
 شہل جی صاحب بہادر دیوان ریاست مدوح نے بڑی جانفشانی و سرکاری کاغذات وغیرہ کے حوالے سے بیرون
 جی سے پانچ برس کی محنت میں تیار کر کے طبع کرائی ہے اول حصہ میں دہلیان جیلیر کی تواریخ (۲) جیغرافیک مائٹ
 (۳) تمام خود مختار ریاستہائے راجپوتانہ کی تواریخ سے حالات اجیر اور اکثر روستا و شرفا ہندوستان کے حالات ضروری امور
 نقشہ درج ہیں - کسے تو یہ ہے کہ ایسی مبسوط کتاب آج تک ہندی میں تیار نہیں ہوئی - امید کہ ناظرین کوئی غلطی یا غلط
 عیانت اطلاع نہیں تاکہ دوبارہ طبع ہو سکے - خاکسار محمد راہی ہوشیاراگ و مہتمم مطبعہ چراغ اجستان و راجپوتانہ گزٹ اجیر المرقوم

Sunder Laddad

श्री सरतःगण्डीय शान मन्दिर, जयपुर